ई-बुक : उपन्यास - चाँदी की हंसुली

टीप : इस ई-बुक का फ़ॉन्ट परिवर्तन स्वचालित फ़ॉन्ट परिवर्तक द्वारा किया गया है अतः वर्तनी संबंधी गड़बड़ियों के लिए क्षमायाचना सहित.

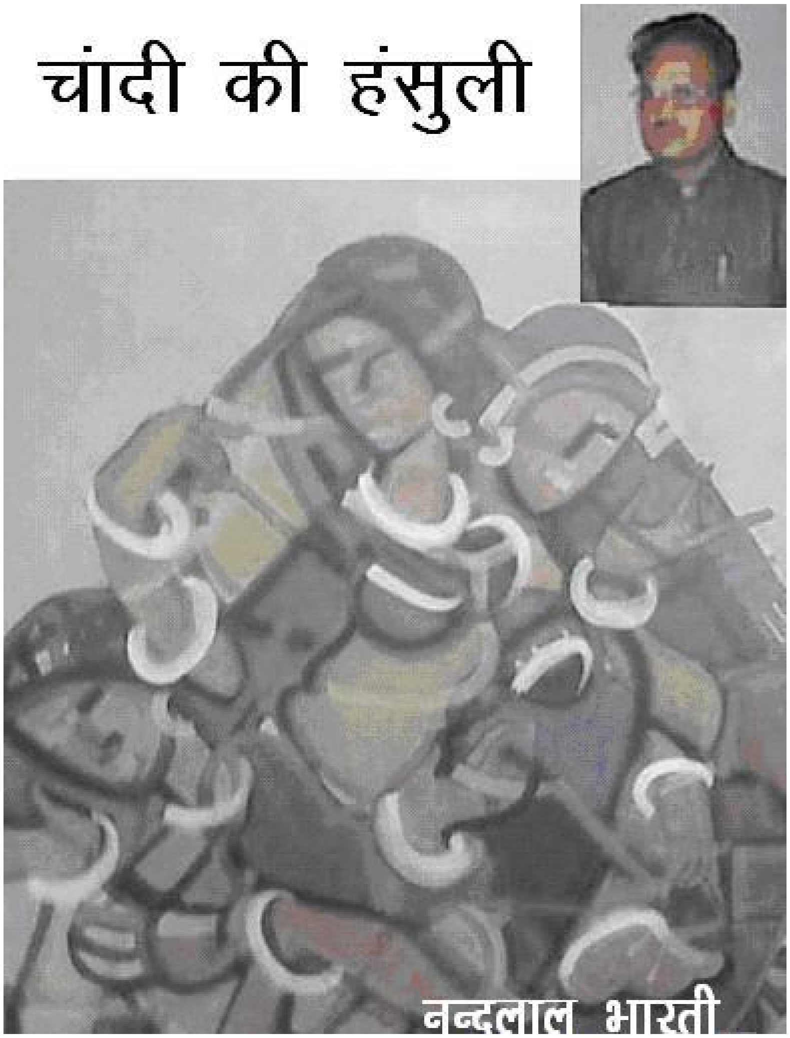

चांदी की हंसुली
उपन्यास

लेखक

नन्दलाल भारती

....

सर्वाधिकार-लेखकाधीन

आवरण चित्र- शशि भारती

बचपन से ही चित्रकला की तरफ रूझान था ।स्कूल में अव्वल दर्जे की चित्रकारी करती थी । घर से लेकर स्कूल तक काफी प्रोत्साहन मिला ।कालेज में भी मुख्य विषय चित्रकला ही रहा। चित्रकला में बी.एफ.ए.की िषाक्षा के साथ ही पूरी तरह से चित्रकला में जुट गयी । देवलालीकर कलाविथिका,इंदौर चित्रकला की प्रर्दषनी,2003-04,200-05,2005-06, प्रिण्ट मेकिंग कैम्प-नेशनल आर्ट फेस्टिवल-07, कलारग-कला संग, ग्वालियर।म.प्र.। एवं स्प्रिट आफ इण्डिया-2007,अलीबाग,मुम्बई में अपनी चित्रकला का हुनर दिखाया ।

....

सम्पर्क सूत्र-द्वारा श्रीमती मनोरमा भारती,

आजाददीप, 15-एम वीणा नगर

इंदौर-452010 । मध्य प्रदेष ।

दूरभाश- 0731-4057553 चलित-

0975081066/09826613883

॥ एक ॥

जाडे की रात । हाडफोड शीत लहर। सियारों की चिल्लाहट । रह रहकर कुत्तो का रोना भय पैदा करने को काफी था । ज्यो ज्यो रात बढती जा रही थीे जाडे का असर और अधिक होता जा रहा था । रह रह कर रिमझिम बारिस उपर से उसर की गलन से हाड हाड कांप रहा था । गुदरीराम ओलाव पर हाथ सेंक रहा था । उससे यह ठण्ड बर्दाश्त नही हो रही थी जबकि वह इसी गांव में पैदा हुआ था जब उसे ज्यादा ठण्ड लगने लगती तो वह साेनरी की मां को आवाज देने लगाता । वह बेचारी कुछ लकडी कण्डा और लाकर ओलाव में झोंक देती । जलती आग को वे निहाल होकर तापता । सोनरी की मां मंगरी को बोलता तुम कही ना जाओ यही आग के पास बैठो । वह बोलती अरे आग तापनेे से ही काम चलेगा क्या ।रोटी भी तो बनानी होगी । बच्चा को भूख लग रही होगी । ये जाडा तो रात में ही ज्यादा हाड फोडती है । दिन में तो काम धंधा में बित जाता हैं । रात बडी मुश्किल से कटती है । गुदरीराम पत्नी की हां में हां मिलाता । कलकता में उसे इस तरह की हाड फोड ठण्ड का मुकाबला नहीं करना पडता था । हां मेहनत मजदूरी तो वहां भी उसे करनी पड ही रही थी । साल भर के बाद गांव आया हुआ था जाडे के सीजन में । गांव के कुछ और लोग ओलाव को घेरे हुए हाथ पांव सेंक रहे थे । कोई कलकतिया खैनी खाकर उसी आंग में थूक रहा था । कोई गांजे का धुआं उडा रहा था । गांजा नही पीने वाले हुक्का गुडगुडा रहे थे । इन लोगो को जाडे का जैसे कोई असर ही नही हो रहा था । गुदरीराम था कि थर्र थर्र जाडे से कांप रहा था जैसे पूरी

जाडा उसी को लग रही हो । गुदरीराम की कंपकंपी को देखकर मंगरी गुदरीराम की धर्मपत्नी ने ओलाव में और लकडी ला कर डाल दी। लकडी डालते ही आग और तेज जल उठी । गुदरीराम खूब हाथ पांव सेंकने लगा निहाल हो होकर । हां तेज आंच से गजेडियों की रस्सी की आग गल गयी । उन्हे फिर से नारियल की रस्सी की आग बनानी पडी थी । एक चिलम खत्म ही नही हुई थी कि एक गंजेडी दूसरी चिलम चढाने की बात झेडते हुए बोला-लगता है भोले बाबा अभी खुश नही हुए है । देखो गुदरी भइया की ठण्ड इतनी तेज आंच से भी नही गयी। हम है कि ससुरी हमारे पास फटकने का नाम ही नही ले रही है । गुदरी भइया आज तुम भी एक दम लगा ही लो । देखना,दम लगाते ही ठण्ड ससुरी कोसो दूर भाग जायेगी । गुदरीराम नही नही कर रहा था कि इसी बीच सोनरी गुदरीराम की छाटी बीटिया, आकर बीच दरवाजे में खडी हो गयी । मां मंगरी की हंसुली गले में डाले हुए । हंसुली के भार से मानो वह दबी जा रही थी । उसकी गर्दन हंसुली का भार तो सम्भाल ही नही पा रही थी । सब ओलाव तापना भूलकर सोनरी को निहारने लगे ।

सोनरी बोली अरे काका क्यों ऐसे देख रहे हो मुझे । नही देखा है क्या कभी । काका लगता है पहली बार देख रहे हो । अरे काका मैं सोनरी हूं । तुम सब के बीच में ही तो खेलती रहती हूं । कभी ये काका तो बेर देते हैं । कभी गन्ने का टुकडा दिखाकर ललचाते हैं । ये दादा तो गुड दाना दिखाकर फिर थैली में रख लेते है । ना जाने आज कोई क्यो पहचान ही नही रहा है । पुनः सोनरी बोली अरे सभी लोग क्यो अचम्भित हो । नजर लगा दोगे क्या । कोई हाथ में गांजा लिये है । कोई मुंह में बीडी । कोई हुक्का पीना ही जैसे भूल गया है मुझे देखकर। अच्छा अब बात समझ में आयी इन लोगो की नजर मेरी हंसुली पर लगी है । ये काका दादा लोग मुझे नही देख रहे है । हंसुली निहार रहे है । काका पक्की चांदी की हैं हंसुली । मेरी मां के ब्याह की निशानी है । मेरे दादा ने बनवाया था क्यो बापू । सोनरी की बात को सुनकर सब खिखिलाकर हंस पडे ।

मंगरी बोली-ना बेटी हंसुली नही तुमको ही देख रहे है कि हमारी रानी बीटिया कितनी सयानी हो गयी है । अब ये छुटकी,छुटकी नही रही बडी हो गयी है । बडी बडी बाते करने लगी है । ये छुटकी कितनी बडी बडी बातें कर लेती है । ब्याह कर जिस घर में जायेगी उसके तो भाग्य ही खुल जायेगे । छुटकी की सास तो नाच उठेगी इतनी गुणवन्ती बहू पाकर । हां बीटिया ये काका दादा लोग तेरे गले की हंसुली भी देख रहे हैं । तुमको देख रहे है तो हंसुली तो अपने आप ही दिख जायेगी । बीटिया ये चांदी की हंसुली तेरे गले में बहुत बढिया लग रही हैं ।

मंगरी की बात सुनकर देवराम गांजा का धुआं उपर मुंह करके छोडते हुए बोला सोनरी अभी से मां की हंसुली पर कब्जा जमा रही है। भइया गुदरीराम बीटिया को भी हंसुली अब बनवा ही दो हल्की फुल्की सी। बीटिया की शौक पूरी हो जायेगी । रूपाया पैसा तो हाथ की मैल हैं । बच्चों की खुशी में ही तो अपनी खुशी हैं । भइया जब कलकते से

आना तो बीटिया को हंसुली जरूर बनवा कर लाना । बीटिया को खूब जंचेगी छोटी और नई हंसुली । बीटिया ने फ्राक भी बहुत अच्छा पहन रखा है । लगता है कलकता से ही लाये हो भइया । नन्ही सी लडकी ।गहने का भारी ाौक अभी से । मां की हंसुली पहनने लगी है । देखो इससे सम्भल भी तो नही रही हैं फिर भी जर्बदस्ती पहने हुए हैं आधा किलो भार की हंसुली ।

मंगरी -अरे देवर जी ये तो बोल रही है कि मां अपना कडा मेरे पैर में पहना दो । कब से जिद कर रही थी । देखो मेरे पैर का कडा इसके पैर में कैसे रूकेगा । बडी मुश्किल से तो मानी है । बताओ इतना भारी गिलट का कडा और आधा किलो की हंसुली इससे सम्भालेगी । कह रही थी कि मां तू अपना गहना मुझे देना ही नही चाहती हो । इसको अभी से गहने से इतना मोह ।

देवराम बोला-भौजी तुमको भी तो ऐसा ही ाौक रहा होगा ,तभी तो ये गुण बीटिया में हैं । बीटिया को भी तुम्हारे जैसा ही मोह गहने से अभी से ही होने लगा है । हां वैसे भी और जात की कमजोरी तो गहना ही है । औरतों का गहना प्रेम शादियों पुराना हैं जब आदमी होश सम्भाला होगा तो शायद सबसे पहले गहने की खोज किया होगा ,औरत को खुश करने के लिये ।

मंगरी- अरे क्या बोल रहे हो देवराम । लगता हैं मोतिया की मां से कुछ खटपट हो गयी हैं क्या ।भइया देवराम गहना सौन्दर्य सामग्री के साथ सामाजिक सांस्कृतिक विरासत ही नही एक परम्परा भी हैं क्यों भूल रहे हो । मैं तो पढी लिखी नही हूं पर इतना तो जानती ही हूं । भइया परम्पराये सदैव जागरूक होती है । भइया परम्पराये वर्तमान के साथ समनव्य करके ऐसे रूप्ा कर सृजन करती है जो प्राचीन होकर भी वर्तमान की आवश्यकताओ के अनुरूप्ा होती है । भइया देवराम परम्पराये सामुहिक चेतना की प्रतिबिम्ब होती है । इन्ही परम्पराओं में ादियों के विश्वास छिपे होते है । भइया ऐसा ही विश्वास हैं हंसुली को लेकर भी ।

देवराम अरे वाह रे भौजी एक बार कलकता क्या गयी तू तो पढी लिखी औरतो जैसे बोलने लगी । सच भौजी मेरा भी विष्वास हैं तुमने मेरे विश्वास को और दृढ कर दिया । मै मान गया भौजी गहना सौन्दर्य को तो निखारते ही हैं ,साथ ही एक परम्परा और आस्था के केन्द्र का निर्माण भी करते है । गहना शारीरिक सामाजिक एवं आिथ्र्ाक रूप से सम्पन्नता की निशानी तो है । जीवन की एक लालसा हैं और आस्था का प्रतीक भी है भौजी ।

मंगरी- अरे वाह देवर जी तुम तो छुपे रूस्तम निकले क्या उपदेश दे लेते हो । काश गांजा दारू में तुम लोग रूपया नही बर्बाद करते ....

इसी बीच सोनरी जोर से बोली क्या काका तुम बहस में लग गये । मेरी बात तो सुने ही नही

देवराम-बोल बीटिया तू भी बोल अभी तो तेरी मां की सुन रहा था अब तू भी सुना दे ।

सोनरी-काका मेरी मां से कहो ना वह मुझे अपनी हसली दे दे । काका मां अपना हंसुली मुझे देना ही नही चाहती है ।
गुदरीराम-बीटिया अभी तू गहना पहनने लायक थोडे ही हैं । कभी चोर ले गया तो । बीटिया हंसुली ,हु मेल, कडा झडा,झुमका तो बडी उम्र की औरते पहनती है । वह भी ब्याह के बाद तू तो नन्ही से बच्ची हैं । अभी क्या गहना पहनेगी । तू तो खुद ही नही चल पा रही है । गहना क्या पहनेगी । गहना सम्भालना मुिश्कल का काम है बीटिया और जोखिम भरा भी । इसालिये तो ब्याह के बाद औरते गहना पहनती है ।
सोनरी- बापू मैं बडी हो गयी हूं । मुझे गहने चाहियेऔर हंसुली भी बिल्कुल मां के नक्शे वाली । बापू मेरा भाी ब्याह करवा दो । मुझे मां जैसी हंसुलीे चाहिये ।
सोनरी की बात सुनकर सब हंस पडे । सोनरी कहने लगी बापू इस बार जब ाहर से आना तो मेरे लिये हंसुली जरूर लेकर आना । देखो मैं दौड सकत हूं मां की हंसुली को पहनकर । बापू तुम मुझे हंसुली नही बनवाना चाह रहे हो ना । अच्छा सही सही बताओ ना बापू मुझे हंसुली बनवा दोगे ना ।
मंगरी बेटी सोनरी ये हंसुली मंहगी हैं । तेरे बाप कमाई की यही तो एक निशानी हैं । तुम भी इसी के लिये जिद कर रही हो । कही पहन कर सो गयी तो चोर गर्दन काटकर हंसुली ले उडेगा । तुम तो रोओगी ही मुझे भी रोने को छोड दोगी । बेटी यही हंसुली तो मुिश्कल के समय का सहारा है ।
सोनरी रोते हुए बोली ना मां मुझे तो हंसुली चाहिये । तुम बहाने पर बहाने बनाती जा रही हो । मैं तुम्हारी हंसुली तब तक ना दूंगी जब तक तू और बापू हंसुली बनवाने की हामी नही भर लेते हो ।
देवराम-अरे भाैजी इसको पहनने दो । रात भर में गर्दन दुखने लगेगी तो सुबेरे खुद ब खुद निकाल कर रख देगी । रात भर में बीिटया का शैाक भी पूरा हो जाऐगा । देखना कल से हंसुली की मांग भी नही करेगी ।
मंगरी अरे देवर जी ऐसा तो हो ही नही सकता सोनरी मना कर दे कि हंसुली नही पहनेगी । कब से जिद करके तो मेरे गले से निकलवायी हैं । तुम नही जानते औरत जात की सबसे बडी लालसा और कमजोरी यही गहना तो हैं औरत जात का । सोनरी भी तो एक लडकी ही हैं । भला उसे गहने का मोह कैसे छोड सकता हैं ।
देवराम-गुदरी भइया बीटिया का ब्याह जल्दी करवाना पडेगा तभी तो हंसुली के साथ भी और गहने भी मिलेगे ।

॥दो॥

गुदरीराम देश के पिछडे इलाके को छोटे से एव अति पिछडे गांव का रहने वाला था । गांव में ना आने जाने का साधन था । ना ही रोजगार का कोई पुख्ता साधन बस पारम्परिक खेती ही रोटी रोजी का सहारा था । अंग्रेजो का जुल्म जोरो पर था पर देश के लोग भी कम ना थे । जातिवाद के नाम पर बटे हुए थे । बेखैाफ छोटी जातियों पर अत्याचार हो रहा था । गोरो को भी इससे बहुत मजा आ रहा था । आपस में ही देशवासियों का बटना उनके लिये फायदे का सौदा था । गुदरीराम के पास दो बीघा जमीन तो थी । पैतृक धंधा भी खेती बारी का ही था परन्तु जमीदारी और जातिवाद का पीडा ने उन्हे बहुत गहरे गहरे घाव दिये थे । वे जातिवाद के दंश से लहूलुहान होकर कलकता चले गया था । वह चटकल में नौकरी करने लगा था । गांव में छोटी जातिवालो की कोई धाक न थी तो भल गरीब गुदरीराम की कहां से हो सकती थी । उसे तो हर समय आतंक के साये में जीना पड रहा था । वैसे भी छोटी जाति के लोगो के साथ बदसलूकियों,अत्याचारो के अलावा इस देश में हुआ ही क्या है । गुदरीराम जब गांव की भेदभाव वाली ताकतो से हारकर शहर गया था तब शायद ही उसके गांव का कोई शाहर गया हुआ था । बहुत कम लोग शहर जाते थे । गुदरीराम जब शहर से आता था तब अच्छी महफिल सजती थी। उसकी बिरादरी के लोग देर रात तक उसके साथ बैठकर गांजा,बीडी,सुर्ती हुक्का चिलम पीते ।

सोनरी गुदरीराम की सबसे छोटी बेटी थी । तीन भाई दो बहने कुल मिलाकर पांच सन्ताने थी । कुछ बरस पहले ही गांव के कुछ जुल्मियो ने मिलकर गुदरीराम को खूब मारा था । छोटी बिरादरी का गुदरीराम तो था पर छोटा काम कभी भी नही किया । वह कर्म ही पूजा है के रास्ते पर चलने वाला महान व्यक्ति था । वह अपनी बिरादरी के लोगो की जागृति के लिये अथक प्रयास करता था ताकि ढकोसला एंव अन्य बुराईयों से छोटी बिरादरी के दबे कुचले लोग निजात पा सके पर यह दिग्भ्रमित लोगो को पसन्द न था । वे जुल्म पर जुल्म ढाहते रहते थे। पूरी छोटी बिरादरी के लोग आतंकित थे । छोटी जाति के लोगो को देवस्थलो तक जाना वर्जित था । हां गुलामी के लिये पशुओ जैसा उपयोग करते थे। मजदूरी भी पूरी नही देते थे उपर से तरह तरह के जुल्म भी करते थे जातीय भेदभाव के नाम पर। गुदरीराम पढा लिखा तो नही था पर ज्ञान की देवी की कृपा उस पर बहुत थी । बडे बडे ग्रंथ उसने लिख डाले थे । महन्थ जो था ।गुदरीराम को जब खेतीबारी के कामो से फुर्सत मिलती समाज के उत्थान के कार्य में लग जाता था । वह छोटी बिरादरी के बडे बूढे बच्चों को शिक्षित करने का प्रयास करता था । उस समय छोटी बिरादरी के बच्चों को स्कूल में भी नही जाने दिया जाता
था । बच्चे भी गुलामी में लगे रहते बडों की तरह । गुदरीराम ने ऐसा नही किया । वे शिवनरायनी पंथ से जुडकर बडा महन्थ बन गया था । छोटी बिरादरी के लोगो के भजन के माध्यम से जागृत करना लगा था। गुदरीराम के चेलो की सख्या बढने लगी थी और अनुयायी भी खूब बढ रहे थे । इस पर बडी बिरादरी के लोग चिढ गये थे। बेचारे

गुदरीराम का जीना हराम हो गया था। वह अपना ही गांव ओर अप नही गांव वालों की डर से जान बचाकर कलकत्ता भाग गया। महीने भर में तो वह कलकत्ते पहुंचा था । लाख परेशानिया झेलकर भी वह अपने इरादे पर खरे उतरते रहा था परन्तु बुद्ध के देश में उसे क्या पूरी छोटी बिरादरी के लोगो को जातिवाद का जहर पी कर भय एव पेट में भूख लिये जीना पड रहा था।

मंगरी बच्चेंा के साथ गांव में रहती थी । उसे भी सामाजिक समस्याओं से लम्हा लम्हा तो जुझना ही पड रहा था । मंगरी भी हिम्मत नही हारी । वह भी गुदरीराम के संकल्प को पूरा करने का बीडा उठा ली थी । शहर में गुदरीराम से जो बच जाता उसका मनीआर्डर कर देता । मनीआर्डर को लेने में भी मंगरी को एडी चोटी का दम लगाना पडता था तब जाकर अपने पति की कमाई कीे रकम ले पाती थी। उसी रूपयेेे और दो बीघा उसर जमीन के भरोसे मंगरी अपने बच्चों का पालन पोषण कर अपनी जिम्मेदारी निभा रही थी । गुदरीराम की कोई बडी नौकरी तो नही थी । हां ाहर में अकेले रहता था । खुद का पेट काटता पर बच्चाेें को कोई तकलीफ नही पडने देता था। गुदरीरा का कोई शाैक तो नही था पर कलकता में रहकर कलकतिया सुर्ती खाना जरूर सीख गया था। इसके अलावा उसमें कोई ऐब ना था । उसकी कमाई से घर का खर्च अच्छे से चल रहा था। खेती से कोई फायदा न हो पाता कभी विषमतावादी लोग हरी भरी खेती पशुओ से चरवा लेते या कटवा लेते । खोत भी उसर दादर ही था । मंगरी किसी ना किसी तरह जुता बुवा लेती पर पैदावार पूरी घर नही आ पाती। बेचारी क्या कर सकती थी । मर्द को वनवास दे दिया था रूढिवादी लोगो ने । जुल्म से हारकर ही तो गुदरीराम शहर भागा था । सोनरी से कोई पूछता कि क्यो सोनरी तेरे बापू कहा गये है तो वह कहती अरे वे तो शहर गये है । गांव वाले उन्हे कहां रहने देते हैं । शहर से भी जब आते हैं तो डर डर कर ही पांव रखते हैं गांव में। अरे जो लोग अपने को बडा कहते हैं । वे बडे कहा हैं । वे तो बहुत छोटे लोग है । जो लोग आदमी के साथ जानवरों जैसा व्यवहार करे क्या वह बडा आदमी हो सकता हैं । नही बिल्कुल नही ना ।बताओ आदमी होकर भी आदमी नही हैं । अरे बापू हरवाही चरवाही नही करते थे । इसीलिये मेरे बापू का गांव में रहना लोगो को खलने लगा था। जान पर आ गयी तो बेचारे भाग कर कलकता चले गये । मेरे बापू का गांव अपने ही गावं के लोगो ने छुडवा दिया । खैर अच्छा भी हुआ । बापू गांव से तो अच्छे ही है शहर में ।हम लोगो को खाने पहने को तो भरपूर मिल रहा है । हां बापू परदेसी हो गये ।यही दुःख है । फुदक फुदक कर सोनरी कहती ।

ुादरीराम जब भी शहर से आते बच्चों के लिये कपडा लता लाते ही सोनरी के लिये खिलौना लाना नही भूलते । सोनरी को खिलौने से ज्यादा मोह गहने से था नन्ही सी उ में । वह खेल भी खेलती तो गहने वाला ही । बच्चे उकता जाते । उसके साथ खेलने में कतराते । कहते सोनरी के साथ खेल खेलो तो घास फूस के गहने पहनाे नही तो उसकी

मार खाओ । सोनरी को गहने वाले खेल खेलने में मजा आता है । बाकी लोगो को भले ही न खेल में मजा आये उसकी परवाह उसे नही रहताी । उसे तो बस अपनी धुन सवार रहती हैं । कभी सोनरी गुडिया के गले में हंसुली पहनाती तो कभी पैर में कडा छडा और हाथ बाहु बन्द घासफूस का बनाकर । सोनरी को हंसुली के अलावा दूसरा गहना भी नही भाता था । एक बार गुदरीराम शहर से गुरिया की माला लाए ।सोनरी को ये बिल्कुल नही पसन्द आयी । उठाकर फेंक दी थी । सोनरी को हर वक्त हंसुली की धुन सवार रहती । धीरे धीरे सोनरी को उदासी घेरने लगी और हंसुली की अभिलाषा जोर मारने लगी । वह गुदरीराम से बार बार बोलती बापू मुझे भी मां की तरह की हंसुली लाकर दो ना।

ुादरीराम हंस कर बोलते आ जायेगी बीटिया तेरे लिये भी एक ना एक दिन हंसुली ।

सोनरी- कल लााओ ना बापू । तुम तो हमेशा झूठ बोलते हो । लाते तो हो नही । मुझे बच्चा समझकर बहकाते रहते हो ।

ुादरीराम-नही बीटिया तुमको बहका नही रहा हूं । तुम बहकने वाली हो क्या बीटिया तुम लोगो के लिये ही तो गांव छोडकर परदस भागा । नही तो बदमाशाे का मुंह नही तोड देता । भले ही पूरी जिन्दगी जेल की चक्की पीसना पडती । ससुरा गोरे तो अत्याचारी हैं ही पर ये काले भी कम नही । बीटिया तुम बच्चों का मुंह देखकर ही तो परदेस भागा । बीटिया तुम बच्चों के अच्छे कल के लिये ही तो परदेस भागना बेहतर समझा ।

बाप की दलीले सोनरी को रास न आयी । वह अपनी मां के पास गयी । मां के आंचल में खुद को लपेटते हुए बोली- मां मुझे अपनी जैसी हंसुली बनवा दो । बापू तो बहाना करते आ रहे हैं तब से ही जब से मैं छोटी सी थी। मां मुझे हंसुली लाकर दो । भले ही मेरा ब्याह कर दो पर मुझे हंसुली चाहिये ।

मंगरी मुह फेरकर हंसते हुए बोली बेटी वह तो महंगी बनेगी । तेरे बापू के पास अभी पैसा तो हैं नही । मेरे ब्याह की हंसुली में थोडी और रकम डाल कर यही एक हंसुली तो बनवाये है तेरे बाप । इसी हंसुली पर तुम्हारी निगाह टिकी हुई है । बीटिया मेरा भी जी तरस गया हैं गहनों के लिये

सोनरी- मां तुम तो बापू से कहकर बनवा लेती हैं । मेरे लिये कहता हो महंगी हैं । मेरे लिये भी बनवाओ मां । मेरे लिये हंसुली नही बनवाकर अच्छा नही कर रही हो ं । मेरे लिये बापू से कहकर बनवा दो हंसुली मां ।

म्ंागरी-नकली मुस्कान बिखेरते हुए बोली बेटी अब तो ना मैं ना ही तेरे बापू तेरे लिये हंसुली बनवा पायेगा सोनरी-फिर कौन बनवायेगा ं ।

मंगरी- तेरे ससुराल वाले ।

सोनरी- क्या ।

मंगरी- हां तेरे ससुराल वाले ।

सोनरी- वह क्यो ।

मंगरी-तू ब्याह कर अपनी ससुराल ही तो जायेगी । तुम्हरी गहने की ख्वाहि ों तेरे ब्याह से ही पूरी होगी । तेरे दूल्हाजी लेकर आयेगे हंसुली और भी गहने तेरे ब्याह में तब तू रानी लगेगी ब्याह का गहना पहनकर सोनरी-सच मां । तब तो जल्दी करवा दो ना ब्याह ।

मंगरी-हां बीटिया गहना तो तेरे ब्याह में ही चढेगा ।हंसुली,कडा ,छडा,नत्थुनी, मांग टीका और बहु त कुछ । सब ब्यह के दिन ससुराल से आता है बीटिया । तेरे लिये भी आयेगा ।

सोनरी आशकित थी क्योंकि उसकी कई सहेलियों के ब्याह में तो मन चाहा गहना आया ही नही था । गौने में देने का वादा भी किये पर मिला ही नही । क्या गारण्टी की ब्याह में मन चाहा गहना मिले । सोनरी का प्राण मानो मां की हंसुली में अटका पडा था । सोेेते जागते बस मां की हंसुली पर ही उसकी नजरे टिकी रहती पर उसकी ख्वाहिश तो ब्याह से पूरी होने वाली थी । सपने में सोनरी को हंसुली लिये उसका दूल्हा दिखता था ,कभी कभी हाथी पर सवार होकर । अब सोनरी की हंसुली की ख्वाहिश ब्याह पर जा टिकी थी।

॥तीन॥

गुदरीराम परदेसी हो गया था । कलकता में किसी चटकल में काम करता था । साल छः माह में गांव आ जाया करता था । गांव में उसका पूरा खानदान रहता था । उसके पूुरे पुरखों की हडिडया यही गली थी । उसे गांव से बहु त मोह था । वह दबे कुचले तबके के लोगो को शिक्षित करना चाहता था । भेदभाव मिटाना चाहता था । मानव मानव बराबर है उसका दृढ विश्वास था पर गांव के धर्मान्धों काे यह सब पसन्द ना था । वे लोग गुदरीराम की जान के दुश्मन बन बैठे थे । बेचारा भाग करा कलकता चला गया था जान बचाकर । गुदरीराम का पूरा खानदान गांव में ही रहता था वही अकेले परदेसी था । बडी मुश्किल से दो जुन की रोटी खाता था । वह चाहता था कि एक पैसा भी न खर्चना पडे । पूरी कमाई गांव भेज दे ताकि बच्चों को कोई तकलीफ न पडे । गोरों के राज में जो जहर पीना पडा उसका तो मलाल था ही पर रूढिवादिता के नाम पर जो जुल्म झेले थे उसके घाव ज्यादा गहरे थे । भरने का नाम ही नही ले रहे थे ।उनका गावं में रहना मुिश्कल हो गया था । तब उनके ाुभ चिन्तको ने उन्हे शहर जाने की सलाह दी थी ।

वे भी सलाह मानकर चले गये थे । बेचारे बडी कठिनाई से कलकता पहुंचे थे । महीने की पैदल यात्रा और कोयले वाली रेल से यात्रा करके । पैसा तो कमा रहे थे पर उन्हे वहां जरा भी चैन नही था गांव वालों की तकलीफ उन्हे चैन नही लेने देती । उस जमाने में चिटठी भी महीनों में पहुंचती थी । समाचार का माध्यम चिटठी ही थी । चिटठी मिलने

पर तब बहुत सकून मिलता था । पूर गांव में चिटठी की खबर हो जाती थी । घर परिवार के समाचार के साथ पूरे गांव के छोटें का आशीर्वाद और बडो को चरण स्पर्ष जरूर लिखा होता था ।

ुादरीराम भेदभाव की बीमारी से नही उबर पाये । वे हमेशा मानवता के पक्षधर रहे । उन्हें शहर में चैन नही था । उसें अंग्रेजी शासन से सख्त नफरत थी । वे कई बार बगावत भी किये । उनकी हडडी भी टूटी पर उनकी आजादी के प्रति दीवानगी नही टूटी। वे देश की गुलामी और जातिवाद की बीमारी से बहुत दुखी था।खैर उनकी आखों के सामने दे ा आजाद हो गया । वे कहते चलो दे ा तो गोरों से आजाद हो गया काश देश के माथे से जातिवाद का बदनुमा दाग भी मिट जाता । बस्ती वाले गुदरीराम की बातो को सुनकर कहते काश कालू भइया गुदरीराम काले रंग के थे इसलिये बस्ती वाले उनकी दिलेरी को देखकर कालू भइया की उपाधि दे दिये थे । बस्ती वाल कहते सभी गुदरी भइया जैसा सोचने लगते तो सचमुच हमारा देश सोने की चिडिया हो जाता एक बार फिर से । गुदरीराम कलकते में थे पर उनकी जडे गांव में ही थी । वे लोगो से कहते दुनिया में चाहे जहां रहना पर गांव कभी ना छोडना । साल दो साल में जब गुदरीराम गांव आते पूरी बस्ती में मानों खुशी की लहर दौड जाती थी । कभी कभी वे अपने बच्चों को भी एक दो माह के लिये कलकते ले जाते । सोनरी भी एकाध बार कलकता गयी थी अपने बाप गुदरीराम के साथ । गुदरीराम एक दो माह में बच्चों को गांव छोड जाता ।घर और खेतीबारी उनके सगे सम्बन्धी देख लेते तब तक जब तक मंगरी बच्चों सहित कलकते में रहती । मंगरी को शहर में बहुत अच्छा लगता था क्योकि वहां भेदभाव तो था पर कम था परन्तु वह गांव से कदापि नाता नही तोडना चाहती थी ।गुदरीराम का भी तो विचार ऐसा ही था । गुदरीराम को भी अपनी बस्ती का सोधापन नही मिल पा रहा था नही गांव की आहो हवा ही पर लाचारी थीा जाितवाद की बीमारी थी इसलिये शहर में थोडा सकून था । गांव जैसी शहर में पग पग पर भेदभाव का जहर नही पीना पड रहा था न ही मारपीट का सामना की करना पड रहा था ।

आजादी के पूर्व पचास रूपाये माहवार की नौकरी से घरबार बहुत अच्छी तरह से चल रहा था। बच्चे कपडे लते को नही तरस रहे थे । गुदरीराम को बच्चों को पाढाने की बहुत ललक थी पर वह भी नही पूरी हो सकी क्योंकि गुदरीराम की बिरादरी के बच्चों को स्कूल में घुसने ही नही दिया जा रहा था तब । बेचारे गुदरीराम के लडके नाच गाने की मण्डली में ाामिल हो गये थे । समय निकालकर घर में पढलिख लेते थे जैसे गुदरीराम पढा था ।आजादी के पहले तो दबे कुचले वर्ग का जीवन तो जानवरो जैसा कर दी थी भेदभाव वाली व्यवस्था ने । हां आजादी के बाद बहुत कुछ सुधार हुआ ।

भारतीय समाज में जाति एक सामाजिक यर्थाथ है कहकर गुदरीराम आंसू बहाने लगता । यदयपि मनुस्मृति इसे सामाजिक व्यवस्था के आदिकाल के कार्यगत बंटवारे के रूपा में प्रतिपादित करती है लेकिन किसी को उचा नीचा नही मानती । अस्पृश्यता एक

सामाजिक समस्या है । कानून अपनी जगह है लेकिन इस समस्या के निवारण के लिये सामाजिक जागृति की अति आवश्यकता है ।अस्पृश्यता और सामाजिक भेदभाव की समाप्ति के लिये सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक स्तर पर ईमानदारी के साथ स्थानीय नेतृत्व के साथ केन्द्रीय नेतृतत्व को आगे आना चाहिये पर सब तो अपने ही रंगों में रंगे हुए हैं कहते हुए गुदरीराम माथा ठोंकने लगता। उसको इसी भेदभाव ने तो गांव छोडने पर मजबूर किया था ।मन ही मन गुदरीराम तडपता रहता था कि इसी बीच सोनरी की मां गंगरी आवाज देने लगी- अरे सोनरी के बापू रोटी ठण्डी हुये जा रही हैं । खा लो । इसके बाद रात भर गप्पे लडाते रहना । दो दिन के लिये आये हो । रात भर बैठे रहोगे क्या । अरे बच्चें को भी तो खाना खिलाना है कि नही । बच्चे तुम्हारा इंन्तजार कर रहे हैं । सब कह रहे है बापू के साथ खाना खायेगे । तुम हो कि कुछ ख्याल ही नही । तुम भी तो धुआं नही उगलना सीख रहे हो ।

गुदरीराम-मंगरी की बात सुनकर ऐसे सिर हिलाये जैसे मंगरी की बात ही नही सुने हो । उनके सिर पर पहाड का बोझ पडा हो

मंगरी- अरे सोनरी के बापू क्या बात हैं । बहुत बडे मुददे पर सोच रहे हो क्या।

ुादरीराम- सोनरी की मां तुम को कुछ पता है ।

मंगरी-क्या नही पता है तुम ही बता देते ।

ुादरीराम-सच तुम्हारी अक्ल घुटने से भी नीचे चली गयी ।

मंगरी-हां चली गयी हैं । तुम ही बता दो ।

ुादरीराम-सोनरी की हंसुली की मांग ।

मंगरी-हंसुली बनवा रहे हो क्या ।

ुादरीराम-अरे नही रे ।

मंगरी-फिर क्या ।

ुादरीराम-हंसुली मांगते मांगत वह सयानी हो गयी । इस बात का ख्याल है ।

मंगरी- है ना ।

ुादरीराम-क्या है ।तुम को कुछ ख्याल नही है । जब दूसरी बात कलकते से आया था तब सोनरी तुम्हारी हंसुली पहनने की जिद कर रही थी । कितना बरस बित गये ।

मंगरी-अरे कितना बित गये ।

ुादरीराम- अरे जितने भी बिते हो पर सोनरी के साथ की कई लडकियों के ब्याह तो हो गये । बीटिया सयानी होती जा रही हैं । गौना ब्याह सब साथ करने का इरादा है क्या ।कोई ढंग का लडका मिल जाता तो ब्याह कर देता।

मंगरी-इतनी बुझनी क्यों बुझा रहे थे । क्या यह मुझे मालूम नही है कि बीटिया का ब्याह करना है । खैर चलो मान लेती हूं तुमने याद दिला दिया ।लडका तो ढूढना ही पडेगा । कहां लडको का अकाल पडा हुआ हैं पर अच्छे लडके के लिये तो बडी रकम की

भी जरूरत होगी । अपने पास तो ज्यादा है भी नही । बेटी का ब्याह करना हैं कुछ ना कुछ तो देना ही होगा

ुादरीराम-हां धन हो या ना हो लडकी का ब्याह तो करना ही होगा क्या गरीबों की लडकियों के ब्याह नही होते जो जितने में हैं

उतने में करता हैं । घर में बेटी को तो बिठाकर नही रख सकते । ब्याह तो करेगे ही । हम गरीबों को उपर ही तो सारी मुश्‍िक्‍लें अपना वर्जस्व दिखाती है। सामाजिक बुराइर्यों का भी हलाहल पीना पडता हैं ।गरीबी के साथ उत्पीडन का भी सामना करना पडता है ।

मंगरी-इस समस्या में ही देश की गरीबी छिपी हुई है पर किसी का ध्यान ही इस ओर नही जा रहा हैं । सब अपने आप का बडा साबित करने में लगे हैं । बेचारे हम जैसे लोग नरक भोग रहे हैं ।खैर तुम बीटिया के ब्याह की बात कर रहे थे ।

ुादरीराम-ठीक कह रही हो बीटिया के ब्याह की बात कर रहा था । हां सोनरी की मां तुम्हारी बात मानता हूं बीटिया अभी छोटी है पर इससे छोटी छोटी लडकियों के ब्याह तो धडले से हो रहे है । ब्याह के बाद गौना तो देना हैं । कहां आज ही विदा कर रहा हूं ।

मंगरी- गौना ब्याह दोनो एक साथ हो जाता तो एक खर्च तो बंच जाता ना । साल भर में तो ब्याह करना ही हैं । दो तीन साल बाद और करे तो गौना ब्याह दोनो साथ निपट जाता ।

ुादरीराम- लगता हैं अब तुम्हारी अक्ल उपर उठ रही है ।

मंगरी-देखो मस्सखरी ना करो । बात कर रहे तो जो वही बात करो ।

ुादरीराम-ठीक हैं । तुम भी ठीक ही कह रही हो । बेटी के ब्याह में तो पैसा खर्च तो होगा ही । दो चार साल बाद करेगे तो कुछ और पूंजी जोड लेगे । ब्याह गौना में तो पैसा लगता ही हैं । उसी की चिन्ता तो हमें भी लगी हैं । दो चार सेैा रूपया तो वैसे ही टीमटाम में उड जायेगा पता ही नही चलेगा। वैसे भी आपन कौन साहेब सुब्बा हैं । ादियों के सताये हुए मजदूर ही तो हैं ।

मंगरी- बात तो सही कह रहे हो । गहना गुरिया तो लडके वाले ही लायेगे । फिर भी तो अपने को कुछ देना ही होगा । लोग कहेगे लडकी के बाप तो कलकता में नौकरी करते हैं । इसका भी तो ख्याल रखो ।

ुादरीराम- ठीक तो कह रही पर अपना को भी तो खर्च करना ही पडेगा । बिरादरी का खर्च । नाच तमाशे का खर्च। तम्बू ये सब भी तो करना होगा ही । इस सब के लिये रूपया तो चाहिये की नही । सच बेटी का बाप होना खर्चीला काम हैं । बेटी से सम्मान भी बहुत मिलता हैं ।

मंगरी-रोओ चाहे गाओ । बेटी के बाप हो । सब कुछ करना पडेगा । चाहे तुम्हारा बोझ हल्का हो या भारी ।

ुादरीराम-यदि लडका ढंग का मिला और लडके वाले मांग रख दिये तो ।

मंगरी-देखो जी वह तो करना ही होगा । भले ही अपना पेट काटना पडे । हां इतना तो अपनी बिरादरी मे है कि अभी दहेज का ज्यादा प्रचलन नही हैं । जबकि बडे लोगो मे खूब है । अभी तो ऐसा नही सुनने में आया कि दहेज के लिये किसी वंचित कि बेटी का ब्याह नही हुआ । खैर बेटी का ब्याह करेगे तो कुछ ना कुछ तो देना ही पडेगा । देना भी चाहिये । इससे बेटी की गृहस्थी जमने में मदद होता हैं । लेकिन दहेज मांगने वालों के मुंह पर थूंक देना चाहिये । जो कुछ देने का सामर्थ्य हो देना भी चाहिये ।

ुादरीराम-ठीक हैं जो होगा करना तो होगा ही ।

मंगरी-देखो बीटिया का ब्याह अच्छे घर में करना हैं । यह बात खूंटे गठिया लो । कुछ दहेज में दे देगे तो कोई बुराई नही हैं । मांगने वाले के घर बीटिया कदापि नही देना हैे ।

ुादरीराम-देखो अपनी औकात में रहकर काम करना ठीक होता हैं ।

मंगरी-अरे ठीक हैं हम गरीब हैं । सताये हुए हैं । अपने बराबर के घर में बेटी ब्यहेगे । काई जरूरी ो नही कि सोर में गोड डालकर तोडे ।

धीरे समय बितता रहा । गुदरीराम कई बार कलकते से आया गया । बीटिया सोनरी भी कुछ बडी हो गयी । गुदरीराम को बीटिया के ब्याह फिक्र सताने लगी । जब शहर से आता नातो हितो से लडके को तलाशने की बात कर शहर चला जाता ।

गुदरीराम को शहर से आते ही प्रेमनाथ की खबर लगी । वे मंगरी से रायमशविरा करने लगा । । वहे मंगरी से बोलाे लो सोनरी का मां बीटिया के लिये एक लडका नजर में आ गया है ।

मंगरी- कहां है ।

ुादरीराम- मैेें थेैले में थोडे ही रख रखा हूं । सुना है लौटन भइया के चार लडके हैं । बेचारे दुनिया में नही हैं । हमारे जैसे ही परदेस गये थे । पता ही नही की कहां मर खप गये। बडा बेटा दीनानाथ घर का मुखिया हैं । तीसरे नम्बर का प्रेमनाथ हैं । खेतीबारी की जगह जमीन तो सब जमीदारो ने हडप लिया हैं । खैर मेहनत मजदूरी करके दाल रोटी अच्छी चल रही हैं । उनकी कोई मांग भी नही हैं । चाहे दो या मत दो परन्तु हम तो लडकी वाले हैं अपनी औकात के मुताविक तो करेगे ही ।

मंगरी-तिलक में भी कुछ ना कुछ तो देना हो होगा । पच्चीस पचास में काम तो चल जायेगा । हां गहने की बात कर लेना ।

ुादरीराम-तुम औरतो को तो बस गहना सबसे पहले चाहिये । अरे अभी कोई बात ही नही हुई गहना पहले। अरे अभी जाउूंगा घर वर देखूगा । पसन्द आता है कि नही । और तुम हो कि गहना ही मांग लाओ ।

मंगरी-क्यो मन खराब कर रहे हो । बीटिया की बरसो पुरानी ख्वाहि ोे भी तो पूरी करनी हैं ।

ुादरीराम-मुझे याद हैं ।

मंगरी-हमें भी मालूम हैं पर.............

गुंदरीराम-पर क्या ।

मंगरी-अरे पर क्या का क्या तुम नही समझे ।

ुादरीराम-तभी तो पूछ रहा हू ं ।

मंगरी-देखो इतने भोले ना बनो । मैं सब समझती हू ं । सब समझ कर भी तुमको याद दिलाती रहती हू ं । बीटिया को जब से आंख खुली तभी से गहने का ाौक है। उसका ब्याह करने जा रहे हो तो गहने की मांग कोई बुराई तो नही हैं । बीटिया की ख्वाहिशें पूरी होनी चाहिये । याद रखना । हंसुली के लिये जरूर कह देना । हंसुली तो चाहिये ही ।यह हमारी ओर से मांग रहेगी । जब से ये लडकी होश सम्भाली हैं तब से ही इसे हंसुली पहनने का ाौक चढा हैं। अब तो चाहिये ही । हां सोने की ना सही तो चांदी की ही भली लेकिन चांहिये जरूर । वैसे भी सोने की हंसुली तो सपने की बात हैं ।काश हम लोग भी बडे जमीदार होते सेठ साहू कार होते । खूब गहना बनवाते ।पहनते ।

ुादरीराम-ब्याह बीटिया के होने की बात चल रही हैं मन में तुम्हारे लडडू फूट रहे हैं गहनों के वाह रे औरत ।तुम्हारी भी चाहत जवान होने लगी हैं ।

मंगरी-क्यों कभी चाहत भी बूढी होती हैं ।ठीक कह रहे हो मेरी भी चाहत जवान होने लगी हैं । मुझे अपने ब्याह की याद आने लगी हैं ।

ुादरीराम-ठीक हैं याद का ही आनन्द ले लो ।कुछ कमाई धमाई भी तो होनी चाहिये ।

मंगरी-देखो गौना के पहले तो तुम भी कुछ नही कमाते धमाते थे । मेरे आते ही कमाने लगे । पूरी बस्ती में तुम ही तो सबसे अच्छे परदेसी हो ।वैसे ही दमाद भी कमाने लगेगा । बेटी गहने के लिये नही तरसेगी ।देखना ब्याह होते ही दमाद की किस्मत चमक जायेगी । बीटिया गहने से लदी रहेगी । देखना चांदी की ही नही सोने की भी हंसुली पहनेगी ।

ुादरीराम-भगवान करे वह दिन आये अपने लोग भी तरक्की करे ।सभी सुख,शान्ति और समानता के साथ जीवन बसर करे । काश तुम्हारी बात सही हो जाती सोनरी की मां ।

मंगरी-जरूर सही होगी देर सबेर शायद तब हम दुनिया में ना हो पर हमारी औलादे जरूर सकून भरा जीवन जीयेगी । समय बदल रहा हैं सानरी की मां । अपने भी दिन बदलेगे । काश बीटिया का ब्याह अच्छे लडके से हो जाता ।

ुादरीराम-होगा । हमने तो किसी को कुछ नही बिगाडा हैं । हमारा क्यों बुरा होगा ।

मंगरी-भगवान से प्रार्थना करने लगी ।

ुंादरीरामबोले- बीटिया का ब्याह हो जाता तो हम गंगा नहा लेते ।

मंगरी-जरूर होगा । जोडे तो भगवान के घर से ही बनकर धरती पर आते हैं । हौसला रखो । भगवान अच्छा ही करेगा । उसी पर ो विश्वास है विषमता की खेती करने वाला आदमी तो बराबरी का हक भी नही दे ।

ुादरीराम जब चिन्ता के बोझ से दबने लगता तो कहता सोनरी का मां जरा हुक्का तो चढा दे । सिर चकरा रहा हैं । यही तरीका था चिन्ता से निपटने का गुदरीराम का ।

॥चार॥

गुदरीराम नेक दिल इंसान था ।उसे किसी से मलाल न था । वह मानवतावादी था ।उसे अंग्रेजी शासन के डबते सूरज के वक्त लोग शम्भुख ऋिष कहते ना थकतेे थे । उसे भूख थी तो मान सम्मान की । वैसा ही वर पक्ष मिल गया । दूल्हा चार भाई एक बहन और विधवा मां । दोनो बडे भाइयों का ब्याह हो चुका था। तीसरे नम्बर के प्रेमनाथ का ब्याह होना था । जिसके ब्याह की बात गुदरीराम की बेटी सोनरी से चल रही थी ।चौथे नम्बर का काशीनाथ था । सोनरी का ब्याह प्रेमनाथ के साथ तय हो गया । बात तय होते ही तिलक का दिन पड गया । गुदरीराम को भी शहर जाने की भी जल्दी थी ।

ुादरीराम के घर तिलक चढाने जाने की तैयारी होने लगी ।गुदरीराम तिलक चढाने जाने के लिये अपने कुछ खास भाई बन्धुओ को तिलक में जाने का न्यौता भी दे आये । गुदरीराम के घर तिलक जाने की तैयारी चल ही रही थी । अचानक एक दिन दीनानाथ प्रेमनाथ दूल्हे के बडे भाई गुदरीरा के घर आ धमके और बोेले तिलक का दिन तो जस का तस रहेगा पर हम लडकी देखकर ही ाादी करेगे ताकि बाद में परेशानी न हो। ब्याह के दिन लडकियां बदल जा रही हैं सुनने में आ रहा हैं । इसलिये ब्याह से पहले लडकी देखना जरूरी हो गया हैं । पास के गांव में एक के साथ ऐसा ही हो गया हैं । अंधी लडकी से ब्याह हो गया हैं । लडकी को बहुत कम दिखायी पडता हैं । अपने भाई प्रेमनाथ का ब्याह मैं तो लडकी देखकर ही करूंगा । लडकी लडका देखकर ही ब्याह होना चाहिये । आने वाले समय में तो लडके लडकी आपस में बात करके ही ब्याह करेगे । वह भी समय आने वाला हैं ।देश आजाद हो गया हैं । तरक्की की बयार हमारी झोपडियों तक भी पहुंचेगी । बच्चे पढेगे लिखेेागे । सुना हैं जातीय भेदभाव मिटाने के भी प्रयास होने शुरू हा गये है। अपनी बिरादरी के लोग भी अब तरक्की करेगे । अभी तो हम लडकी देखने की बात कर रहे हैं । एक समय आयेगा लडकी लडके खुद फैेसला करेगे अपने ब्याह गौने का । तब तक कोई बोला क्यों दीनानाथ लडकी वालों का ही खर्चा करवाना चाहते हैं । दीनानाथ चुप रहे ।

ुादरीराम- दीनानाथ बेटा जो उचित समझो कर लो । मुझे तुम्हारी ही खुशी में खुशी हैं । जब चाहो लडकी देख जाओ । लडकी कानी कोतडी नही हैं । मुझे भी यह बात अच्छी लगी । तिलक बरक्षा के बाद तो ब्याह में बिघ्न आना बहुत बडी नमुसी का कारण होता हैं । बेटा अच्छी बात हैं । जल्दी करना । मुझे भी परदेस जाना हैं ।दीनानाथ लडकी देखाने का दिन तय करके अपने गांव चला गया ।

दीनानाथ लडकी देखने की तैयारी में जुट गया । लडकी के लिये एक नथिया बनवाया । कपडा लता मिठाई आदि लेकर दो चार नात हितों के साथ लडकी देखने गया । वहां

गुदरीराम ने बहुत अच्छी आव भगत की ।रात के खाने में गोश्त के साथ दारू भी परोसी गयी।

दीनानाथ को लडकी और उनके साथ गये लोगो को लडकी ठीक लगी । दीनानाथ का व्यवहार गुदरीराम का दिल जीत लिया। तिलक का दिन पूर्व निधार्रित था । गुदरीराम अपने नजदीकी नातहित भाई बन्धुओं की मदद से तिलक की तैयारी में जुट गया ।

मंगरी- गुदरीराम से बोली देखो लडके वाले थे तो निथ्ाया,कपडा लता लेकर आये थे। तिलक चढाने जाना तो इस बात का ध्यान रखना । खैर हम लोग तो गरीबी की चक्की में पीस ही रहे हैं । बेचारे लडके वाले भी अपने जैसे ही हैं । तिलक में कुछ ज्यादा हो जाता तो बढिया होता खैर एक आदमी कमाने वाला तेरह खाने वाले । सच कहा हैं एक अनार सौ बीमार ।

गुदरीराम-मंगरी की तरफ देखते हुए बोेले भगवान मालिक हैं । दीनानाथ ने कोई कोर कसर नही छोडा तो हम भी अपने फर्ज पर खरे उतरने का भरसक प्रयास करेगे । एक बात है सोनरी की मां परिवार अच्छा हैं । शारीफ लोग हैं । गांव वाले बताते है कि लडके के बाप बडे भले आदमी थे । वे भी हमारे जैसे ही भाग कर शहर थे । अच्छी कमाई कर रहे थे । परिवार का रोटी कपडा अराम से चल रहा था । कई सालो तक तो बढिया चला पर अचानक सब कुछ बन्द हो गया चिटठी पतरी का आना भी । बाद में पता चला की मर गये । यह पता नही चला कि कैसे मरे । घर वालो को मृत देह भी देखने को नही मिली । लोग कहते हैं बहुत भले आदमी थे ।

मंगरी-नेक बाप की औलाद हैं तो नेक तो होगे ही । भगवान करे सोनरी के जाते ही उस घर के भाग्य खुल जाये । सोनरी राज करेगी प्रेमनाथ के साथ ।

गुदरीराम निर्धारित तिथि पर दीनानाथ के घर प्रेमनाथ की तिलक करना गया । टीके में 21 ाये दिया जो ं कम ना था ।

मंगरी बोली- सोनरी के बापू मिलक में 21 ाये दे आये हो । दरवाजे पर भी तो अपने कुछ लेन देन करना ही होगा । दीनानाथ अपने भाई प्रेमनाथ की बरात लेकर दरवाजे पर आयेगा ता मसन तो रखना ही पडेगा।

गुदरीरा-जरूर देना होगा और देगे भी । भागवान चिन्ता का बात नही हैं। भगवान तो अपने साथ हैं । वही अपनी इज्जत रखेगा।इतनी पूजा पाठ करता हूं ,उसका भी तो कुछ असर होगा । आज तक किसा का बुरा तो किया नही । भला ही किया हूं चाहे जाति का रहा हो या परजाति का । हां लोगो ने हमारे साथ जरूर बुरा किया है । मै अपने दुश्मनों तक का भला चाहता हूं । भगवान हमारी इज्जत जरूर रखेगा ।

सोनरी की मां ठीक हैं । हम गरीब है । इज्जतदार तो हैं । हम दूसरों की इज्जत को भी समझते है। दीनानाथ बहुत भला आदमी हैं । प्रेमनाथ भी भला ही होगा । चारो भाई हाथ जोडे हमेशा खडे रहते थे । आगे पीछे लगे रहते थे जब तक हम लोग उसके घर रहे । इज्जतदार लोग तो वैसे ही पहचान में आ जाते हैं । वे लोग जरा भी हेकडी नही दिखाये

कि हम लडके वाले हैं । हम तो बेटी वाले हैं हमें तो लटक कर ही रहना हैं ।दीनानाथ मान सम्मान में कोई कसर नही छोडा।

उधर दीनानाथ के घर प्रेमनाथ को तिलक में दी गयी 21 रूपये की रकम भारी पडने लगी ।

दीनानाथ भाई प्रेमनाथ का ब्याह धूमधाम से करने की पहले से ही ठान रखा था । चांदी की हंसुली,हुमेज और गिलट के कडे बनवा लिये कुछ नगद कुछ उधार करके ।दीनानाथ गरीब तो था ही पर अपने भाई की बरात ऐसी ले जाना चाहता था कि लोग देखते ही रह जाये । पहले दूल्हे की सवारी के लिये डोली ले जाने का विचार था । कहारों के माना का देने से विचार बदलना पडा और ईक्का करना पडा था । दीनानाथ की मित्रता बहुत दूर दूर तक थी । उसकी अच्छी जान पहचान थी । गरीब था पर इज्जतदार था । बिरादरी में अच्छी जगह प्राप्त थी । दीनानाथ को नाच मण्डली लेकर दूर दूर तक भी जाना होता था । हर गांव में उसके कदरदान थे । उस वक्त नाच मण्डली की पूछ परख भी अच्छी थी । आजकल तो सिनेमा की वजह से नाच मण्डली का अस्तित्व ही समाप्त हो चुका है । सिनेमा ने सांस्कृतिक गतिविधियों और पुराने मनोरंजन के साधनो पर कब्जा कर लिया हैं । हीरो अरब खरबपति हो रेहे हैं । बेचारे नौटकी वाले रोटी के लिये नस्तवान हो रहे हैं । बेचारे ग्रामीण कलाकार खेतो में मजदूरी करने को बेबस है । कभी वक्त था नाच मण्डलियों का पर अब तो बहुत बुरा वक्त आ गया हैं । उस जमाने में दीनानाथ की मण्डली भी अच्छी चलती थी ।

दीनानाथ रीन कर्ज से नही डरता था । इज्जत का उसे बहुत ख्याल था । दीनानाथ को उसके पीछे लोग परशुराम कहते थे। दीनानाथ तो परिवार इज्जत के लिये समर्पित था । जिदी भी बहुत था । जिस काम के लिये जिद पर अड गया उसे पूरा करके ही दम लेता था । एक नम्बर का दिलेर,मेहनती और अपने वसूलो पर मर मिटने वाला इंसान था । गुस्सैल भी बहुत था । भजन बहु अच्छा गाता था । भाई के ब्याह के लिये अातिशबाजी का समान खुद बनवाया था खडा होकर । उसे रात दिन की परवाह नही होती थी । उसे काम अच्छा होना चाहिये इसकी परवाह थी । ब्याह में क्षेत्र के माने जाने दफला वादक बटंकी का किया था दीनानाथ ने जबकि वटंकी महंगा था । दीनानाथ परिवार की आन मान के लिये जान तक देने को तैयार रहता था । दीनानाथ को भीखराम का आसरा तो था पर उसे ससुराल ज्यादा प्रिय थी । दीनानाथ और प्रेमनाथ भीखराम को बहुत मानते थे । भीखराम बहुत बडा मतलबी था । अच्छी कमाई के बाद भी पैसा नही देता था खुद के लिये छिपा कर रखता था । धीरे धीरे करके प्रेमनाथ के ब्याह का भी दिन आ गया । प्रेमनाथ को सजा संवार दिया गया । उसके फूफा अपने कंधे पर लेकर खडे हो गये । गांव की औरते मांगल गीत गा गा कर परछन ।आरती। कर रही थी । परछन खत्म होते ही प्रेमनाथ के फूफा प्रेमनाथ को कंधे पर लिये आगे आगे चलने लगे और पीछे पीछे महिलाये मांगल गीत गाते हुए धीर धीरे चलने लगी ।

संवरी सुरतिया के प्रेमनाथ हो काहे रहनै कुंवार
बाबा आगे गुनवा पसारो बाबा करिहै विआह
माई आगे गुनवा पसारो माई करिहै विआह
संवरी सुरतिया के प्रेमनाथ हो काहे रहनै कुंवार..........

॥पांच॥

घराती लोग बरात की इंतजार में नजरे बिछायें बूढे हो रहे थे । दूर दूर तक बरात के आने का कोई सुराग ही नही मिल रहा था । कन्यादान करने वालों के गले सूखे जा रहे थे । दिन भर भयंकर लू भी तो चली थी पछुवा हवा के साथ । दोपहर में तों जैसे आग की लपटे उठ रही थी । खैर बरात समय पर ही निकली थी लू की परवाह किये बिना । रास्ता दूर का था आने जाने का कोई पुख्ता साधन भी ना था । बराती कुछ पैदल कुछ बैलगाडी चार छः ईक्के से गिने चुने साइकिल से जा रहे थे । हां बसे भी सडको पर दौड रही थी पर गांव की पहुंच से दूर थी । गांव वाले बस के हार्न की आवाज को भोपू की आवाज कहते थे । ट्रेन तो बहुतो ने देखा भी न था ।

सूरज लाल चादर ओढने लगा था । पक्षियां अपने अपने घोसले की ओर लौटने लगी थी । गांव के कच्चे घरो को छेदकर धुआं आरपार हो रहा था । बरातियों का भी पहुंचने की जल्दी थी । उधर घराती लोग बरात के न पहुंचने पर व्याकुल हो रहे थे । आने जाने का कोई साधन तेज रफतार वाला तो था ही नही ।ना ही उस लायक रास्ते बडी मुश्किल से पगडंडियों के सहारे जाया जाता था ।घोडागाडी,बैलगाडी थे । ये साधन नदी पर पुल नही होने कीे वजह उस पार नही जा सकते थे। इन साधनों से नदी पार करने के लिये कई कोसो का और अधिक सफर करना होता था । नदी मे से होकर जाने के लिये साइकिल वालो को साइकिल सिर पर रखकर पार जाना होता था । बरात जा रही थी पर विलम्ब हो रहा था ।

उधर गुदरीराम और उनके नातहित एकटक पिश्चम दिशा की ओर निगाहे गडाये हुए थे उधर ही सूरज डूबने वाला था और बरात उधर से ही आने वाली थी । सूरज भी डूबने को उतावला था ।अंधेरा भी उजाले पर कब्जा धीरे धीरे जमाने लगा था । लू में तेजी और लपट भी खूब थी । इसी बीच कुछ लोग आगे बढे जा रहे थे पता लगाने के लिये बरात कहा तक पहुंची हैं । इतने में कुछ साइकिल सवार रूक कर गुदरीराम का पता पूछने लगे । घराती लोगो को जान में जान आयी । घराती आदमी के मुंह से निकल गया चलो बहुत अच्छा हुआ आप लोग आ गये । हम लोग तो परेशान हो रहे थे यह सोचकर कि रास्ते में कोई बदमाश उचक्के तो नही मिल गये । पिछले साल ही तो नदी पार करते समय एक बरात को ही लूट लिया था डाकूओ ने । वहा तो पुलिस भी नही पहुंच सकती हैं । पुलिस पहुंवते पहुंचते कई दिन लग जाते हैं । भइया आपलोग सकुशाल पहुंच आये खुशी हुई ।

धीरे धीरे कुछ ही देर में सारे बराती पहुंच गये और गुदरीराम के घर के पास दक्षिण वाले कुआं के पास इक्टठा हो गये । यही बरात के रूकने का बन्दोबस्त था ।कुआं में पानी भी खूब था । नीम के पेड की छाया पूरा एक तम्बू थीै ।

इधर बरात के आने की खबर लग गयी। द्वारपूजा की तैयारी होने लगी । बरात को कुएं के पास लगे छोटे से तम्बू में रूकने का संदेश लडकी वालो की ओर से आया । बरात वही रूक गयी । टोकरी में गुड के लडडू वही कुएं पर रख दिया गया । लोटा बाल्टी लेकर दो आदमी खडे हो गये । दो लोग पानी निकालने लगे । कुछ लोग पीलाने लगे । बराती लोग हाथ पांव धोने लगे । थक भी तो खूब गये थे । ज्यादातर लोग पैदल आये थे । हाथ पांव धोकर बराती लोग गुड के लडडू खाकर पानी पीने लगे । कुए से थोडी ही दूर पर छोटा सा तम्बू लगा हुआ था । तम्बू के नीचे खटिया पड रही थी । खटिया पडी ही नही कि बराती खटिया पर पसरेे जा रहे थे ।

इसी बीच घरातियों की ओर से द्वारपूजा की रस्म पूरी करने का संदेश अगुवा लेकर आया और बरातियों से बोला द्वारपूजा की रस्म पूरी करके जलपान कर लेना जल्दी मत मचाओ वैसे ही देर हो गयी हैं । इक्ट्ठा ही जलपान कर लेना । रात तो अपनी ही हैं । कहां बरसात हो रही हैं । हां बरसात के दिन तो सिर पर हैं । आज के मौसम से तो ऐसा नही लगता है कि बारिस होगी । खैर यह तो उपर वाले के हाथ में हैं । भगवान गरीब की इज्जत का ख्याल रखना । छिछलेदर नही होने देना । बरातियों के बैठने की जगह कही नही मिलेगी । जब तक ब्याह की रस्म पूरी नही होगी खाना भी नही मिलेगा ।

थोडी ही देर में सारे बराती बनठन कर तैयार हो गये बस घरातियों के कहने भर की देर थी । मिनटों में पूरी बरात तैयार हो गयी ।कृछ लोग तो इत्र रूई में लगाकर कान में रखे थे तो कुछ तन पर लगाये थे सोधी सोधी से खूश्बू बरात से उठ रही थी ।

दूल्हा प्रेमनाथ को भी उसके फूफा ने सजा संवार लिया । थोडी ही देर में बरात गुदरीराम के दरवाजे पर द्वारपूजा के लिये आ लगी । बाजा बजने लगा ।दफले की थाप पर नाचने वाला खूब कूदकूद कर नांच रहा था । जोकर भी बढिया जोकरई कर रहा था । खूब समां बधी हुई थी । पूरे गांव की औरते बच्चें नाच देखने में मग्न थे । लडकियां ठिठोली करने से बाज नही जा रही थी अपनी सहेलियों से । एक सखी दूसरी सखी स बाली सखी तुम्हारे भी ब्याह में ऐसी ही नाच आनी चाहिये ।देखो दफला वाला क्या कूद कूद कर बजा रहा हैं । नाचने वाला भी खब कूद कूद कर नांच रहा हैं । जोकर भी बहुत कमाल का हैं हंसा ंहंसा कर पेट फुला दिया । कई सखियां तो धत कह कर मुंह घूमा ले रही थी । कोई कहती ये तो बहुत दूर की मण्डली हैं । मेरे ससुरावालों को तो ये मण्डली वाले मिलेगे ही नही । जब तक कोई पहुंचेगा तब तक सट्टा भी लिखा गया होगा । बेचारे दूल्हा पक्ष वाले फालतू में दौड लगायेगे । कोई कहती भले ही अपने ब्याह में यह मण्डली न आये पर नाचने वाला बहुत बढिया है । इतना सुनना था कि एक सखी बोली क्यों सखी नाचने वाले पर दिल आ गया क्या ।

तब दूसरी सखी बोली धत नाचने वाले से थोडे ही ब्याह करूंगी । दिन भर सास अगुली पर नचायेगी और रात में बलमुवा की थाप पर नाचना होगा । ना बाबा ना ऐसी नाच नही नांचना हैं मुझे । भगवान बख्श देना मुझ अबला को ।
इतने में दूसरी बोली तुम से पूछेगा कौन । किसी से भी ब्याह हो सकता हैं, जिसके साथ मां बाप करना चाहेगे । क्या ब्याह के लिये लडकी लडके की राय ली जाती है कि ुझस ली जायगी ।
तब वह सखी बोली - ठीक कह रही हो सखी अपने दूल्हे को ब्याह से पहले देख भी नही सकते न । मां बाप किसी के साथ सा फेर दिलवा कर अपना बोझ हल्का कर लेते है।वैसे ही तुम्हारे भी मां बाप कर लेगे ।
तब दूसरी सखी बोली अरे नाच देखो बाकी बाते बात में कर लेना । देखा क्या नाच हो रही हैं । बजाने वाला क्या कमाल कर रहा हैं बजाते बजाते नाच भी रहा हैं । बजाने वाला भी लाजबाब हैं । क्या धुन दफले पर निकाल रहा हैं । दूल्हा भी कितना सुन्दर लग रहा हैं ।
तब तक एक सखी बोली देखो नजर ना लगाना अपनी सहेली का दूल्हा है। लडकियां अपनी ठिठोली में मस्त थी । उधर द्वारपूजा की रस्म भी भलीभांति पूरी हो रही थी । दूल्हे को कोई छाते की छांव कर रहा था तो कोई गैस उपर उठाये हुए था ।
महिलाये गीत गा गाकर दूल्हे की आरती उतार रही थी ।
द्वारपूजा के बाद जलपान के लिये खटिया पड गयी । इसके बाद ढंकनी ।मिटटी का पात्र। बुनिया।मिठाई। बरातियों को दी जाने लगी तथा पुरवा।मिटटी का पात्र। पानी पीने के लिये बांटा जाने लगा । सभी बरातियों ने तसल्ली से जलपान किया । जलपान करने के बाद तम्बू में जाने लगे । बरातियों के जलपान कर लेने के बाद घरातियों ने जलपान किया । उधर भोजन व्यवस्था का काम जोरो पर चल रहा था । गुदरीराम के घर के सामने बडे कडाह में चावल,हण्डे में दाल पक रही था । लडकिया मिटटी के चूल्हें पर रोटिया गा गाकर बना रही थी । मधुर संगीत के साथ माटी की सोधी सुगन्ध नथूनों को खूब सकून दे रही थी । जिससे तन मन प्रफुलित हो रहा था ।
उधर द्वारपूजा के बाद भी आतिशबाजी रूकने का नाम ही नही ले रही थी जबकि द्वारपूजा लगने से पहले ही आतिशबाजी का काम शुरू हो गया था ।बहुत देर तक आतिशबाजी होती रही । पूरा गांव आतिशबाजी का आनन्द लेता रहा । बच्चों को ता बहुत मजा आ रहा था । दफला वाला भी गजब ढाह दिया था । आतिशबाजी काफी अच्छी थी ।रंग बिरंगी रोशनी से मानों आकाश में इंद्रधनुष बन गयी हो । आतिशबाजी की जहाज जैसे तार पर चलना शुरू की तो ऐसा लगा कि सचमुच का जहाज उतर रहा हो । बच्चे भागने लगे थे जहाज को देखकर । गांव के बच्चो ने तो दूर से भी जहाज नही देखा था । बडे बूढे आपस में बात कर रहे थे चलो सचमुच का जहाज तो नही देखे थे सोनरी के ब्याह में आतिशबाजी वाली जहाज तो देख लिये । कोई कह रहा था

आतिशबाज लोग भी कमाल के होते हैं । क्या आतिशबाजी का समान बनाते हैं देखो जहाज तो लग रहा है कि सचमुच का हैं। सब ओर दफले वाले और आतिशबाजी की चर्चा चल रही थी ।
सोनरी को आतिश बाजी से लगाव ताे था पर आज कोई आशंका उसे घेर रखी थी । उसे आतिशबाजी अच्छी नही लग रही थी जबकि पूरी बस्ती में खूब चर्चा थी । सोनरी मडई में बैठी बैठी सब कुछ देख रही थी पर उदासी उसके माथे पर डेरा डाले हुए थी । वह चोरी छिपे अपने दूल्हे को देखने की फिराक में थी । द्वारपूजा के समय उसकी सहेलियां उसी खींच लायी थी दूल्हे राजा को दिखाने के लिये पर उसकी साध पूरी नही हो सकी क्योकि जब तक आतिशबाजी और नांच होती रही तब तक बराती लोग भी दरवाजे पर ही जम रहे । पूरी तरह आतिशबाजी बन्द होेने के बाद ही बराती लोग दरवाजा छोडे और तम्बू में गये । भोजन की तैयारी तो दोपहर से ही चल रही थी । दाल रोटी चावल के साथ अच्छी परवल की सब्जी की सब्जी परोसी गयी । हां कुछ गैर बिरादरी के लोगो ने खुद अपना खाना बनाया था । गुदरीराम के घर से आटा दाल चावल तेल सब्जी नमक मिटटी के बर्तन लेकर ।
उधर दफला बज रहा था नाचने वाला खूब कूदकूद कर नाच रहा था । गांव के लोग बडे चाव से देख रहे थे । सोनरी को नाच से भी कोई लगाव नही लग रहा था । वह तो बस व्याकुल थी अपने कल को लेकर । वह सुक छिप कर अपने दूल्हे को भर आंख देखना चाह रही थी जिसके साथ उसका भाग्य लिखा जाने वाला था मांग में चुटकी भर सिन्धूर पडते ही ।
द्वारपूजा जब जोरो पर था औरत दूल्हे राजा की आरती कर रही थी त सोनरी की सहेलियां उसे खींच ले गया थी तब सोनरी ने प्रेमनाथ की झलक देखी थी वह भी छिपकर मडई के पिछवाडे से । पहली बार प्रेमनाथ को देखकर सोनरी की थोडी उदासी के बादल छंटे थे पर वह व्याकुल तो थी ही ।
द्वारपूजा के बाद बरात तम्बू में चली गयी थी । हर काम के लिये दफला बज उठता था । वर के पानी के लिये । खाना खाने जाते वक्त यानि हर मौके पर दफले का धुन गूंज उठती थी । गांव का हर काम वैसे भी गीत संगीत से ही शुरू होता हैं । दफला बजा बजा कर नाचने लगता । हर काम बडी हंसी खुशी से सम्पन्न हो रहा था । विवाह देर रात को सम्पन्न हो गया । हंसुली के साथ और भी जेवर वर पक्ष की ओर से दूल्हन को पहनने के लिये दिये गये ।लावा परछाई में सोनरी के भाई को एक गमछा मिला । वह भी लावा परछ कर बहुत खुश लग रहा था । जैसे उसके बाप गुदरीराम खुश लग रहे थे कन्यादान देकर ।
मडवा जाने से पहले दफला बनजे लगा ।सुबह मडवा के समय सारे घर भर की औरतों के लिये साडियां ,नेग में देने वाली साडियां और िमठाई के टोकरे । कपडो से भरी सन्दूके देखकर घर में कौतुहल मच गया कि सोनरी के ब्याह में इतना सारा समान लडके

वाले लाये हैं ।बच्चो तो अधिक उतावले थे मडवा को लेकर उन्हे किसी समान से तो सरोकार था नही बस मडवा में लुटाई जाने वाली मिठाई रेवडी से ही सरोकार था ।
दीनानाथ एक एक करके जेवर दिखाने लगे क्या झुमका,कडा,चांदी की हंसुली और भी छोटे मोटे गहने । कुला मिलाकर दीनानाथ ने भाई प्रेमनाथ के ब्याह में कोई कसर नही छोडा था । औरतेें गहने की बडाई और आलोचना दोनो ही शुरू कर दी । औरते चुहुलबाजी कर रही थी यह कह कर कि गिलट का कडा सोनरी को खूब जंचेगा । कोई कह रही थी बाप बात तो बडी बडी कर रहा था। चढा है गिलट का कडा । तब तक दुखिया बोली अरे हंसुली नही चढी है क्या । मडवा में तो दिखाई ही नही दे रही है । तब तक कीनु हंसुली दुखिया के हाथ पर रखते हुए बोला अरे- तुम औरतो को तो गहना के अलावा कुछ दिखायी ही नही देता हैं । जो होता हैं वह तो दिखाई नही पडता हैं । जो नही होता हैं उसकी मांग उठने लगती हैं । क्या इनकी सोच हैं । सब गहने की दीवानी हैं । अरे ये नही सोच रही हैं कि कैसे कैसे गरीबी में बेचारे बनवाये होगे ये सब गहने । जबकि दूल्हे के बाप बहुत पहले ही मर गये या बेचारे मार दिये गये या कही शहीद हो गये । आज तक पता ही नही चला । बिन बाप के लडके इतना किये हैं कम तो नही हैं ।
इसी बीच मंगरी बोली रहने दो भइया मत चिल्लाओ धीरे से बता दो हंसुली आयी हैं ।
कीनु- हां बहन आयी तो हैं हंसुली। अब तो देख ही लीं । बहन थोडा धीरज रखो । सब दिखा दूंगी ।
मंगरी-हंसुली तो आयी हैं काश मांग टिका होता तो कितना जंचता बीटिया की मांग में । बीटिया महरानी सरीखे दिखती ।
तब तक गुदरीराम से न रहा गया वे बोल उठे-नाम बडे दर्शन छोटे। अरे अपनी किस्मत में गरीबी लिखी हैं । बेटे बेटी राजा रानी कहां से बनेगे । चलो जो हैं । अच्छा हैं । खुशी का मौका है । क्यों मन दुखी करती हो ।
मंगरी- कहां मन दुखी कर रही हूं । मैं तो भगवान से दुआ करती हूं कि बीटिया के जीवन में हर खुशी मिले । सदा खुश रहे मेरी रानी बीटिया ।
गुदरीराम- वही तो हम भी चाहते हैं । बेचारे जो लाये हैं अपनी औकात से ज्यादा ही लाये हैं । अरे रीन कर्ज किये होगे तो भरना तो उनको ही पडेगा ना । दूसरा कोई तो नही भरेगा । कहते हैं ना बकरे की जान जाये खाने वाले सुवाद ही नही पाये । वही हाल तो यहां हो रही हैं । सब कुछ मिल गया । वर अच्छा है तो सब अच्छा हैं ।
मंगरी- ठीक कह रहे हो ।
गुदराराम-बीटिया की किस्मत में लिखा होगा तो इन्ही गहनो में और ढेर सारे गहने जुड जायेगे । बीटिया सोने चांदी से लदी रहेगा । वैसे भी गहने से तो जीवन पार होना नही हैं । जीवन तो प्रेमनाथ के साथ पार होना हैं । वह भला रहे । अच्छा कमाये खाये यही दुआ करो । प्रेमनाथ ही बीटिया का सबसे अच्छा गहना है । वैसे भी गहना पहनकर कहां

जाना हैं । साल में एकाध बार ब्याह गौने में चले गये यही ना फिर तो साल भर चौकीदारी करो ।

तब तक खिचड़ू काका बोले- ठीक कह रहे हो भइया हम कमेरी दुनिया के लोग मेहनत मजदूरी पर बसर करने वाले हैं । कहां हमारी बहू बेटियों को महलों में बैठे रहना हैं । खेतीबारी का काम तो करना हैं । सोना भी पास रखना खतरे से खाली तो है नही । चोर डाकूओ का तो देख ही रहे हैं । गावं वालों को कभी कभी तो पूरी रात जगकर बिताना पडता हैं ।सुना है सोने कि हसुली के लिये एक औरत का गला ही डाकूओ ने काट दिया ।

बिहारी काका तब तक बोल पडे- हां खिचड़ू ठीक कह रहा हैं पर औरते माने तब ना । खैर यही तो मौका जीवन में आता हैं । जब गहना चढता हैं बाकी तो जीवन भर दुख सुख लगा रहता हैं । बेचारी औरतो की मांगे भी जायज ही लगती हैं ।

हां में हा मिलाते हुए देवी दादा बोल पडे तुम सभी ठीक कह रहे हो । अरे दूसरे काम भी हैेें कि नही । गहना जितना फायदेमंद हैं उतना ही नुकशान भी हो जाता हैं । चोर डाकूओ की नजर पड जाती हैं तो परिवार बर्बाद हो जाता हैं । ऐसा ही तो हुआ था हमारी रिश्तेदारी में एक बार बेचारी दुल्हन विदा होकर आयी रात में ही डाकूओ ने धावा बोल दिया । बेचारे दूल्हे की भी जान को खतरा हो गया था। बडी मुश्किल से जान बची थी पर सारे गहने ले उडे डाकू । सोनरी को तो हंसुली तो चढ ही गयी हैं बाकी छोटे मोटे भी गहने हैं जो है उसी में सन्तोष करना बेहतर है । बेचारी सोनरी अपने घर परिवार में सुखी रहे । यही दुआ करो सभी बाकी रूपाया पैसा तो हाथ की मैल हैं । आज जो गरीब हैं कल अमीर भी बन सकता हैं अपनी मेहनत के बल पर लेकिन यहां तो सबसे ज्यादा दिक्कत भेदभाव वालेे बूढे समाज से हैं । बीटिया को खूब मान सम्मान मिले सदा सुखी रहे । यही तो अपनी ख्वाहिशें हैं । बीटिया की चांदी की हंसुली में बरक्कत बरसे । सुहाग सदा बना रहे । भगवान बीटिया की मनोकामना पूरी करें । खूब फले फूले ।

उधर कच्चे घर की दीवारे छेद की पक्की बाते सोनरी के कानो को छू रही थी । कभी ये बाते गालों को जैसे सहला देती तो दूसरे पल मानो थप्पड जड देती । उसे रह रह कर गुदगुदी होने लगती । रहकर क्षोभ के भाव उसके चेहरे पर उभर आ रहे थे ।उसका दिल की गति सेकेण्ड दर सेकेण्ड बदलती जा रही थी । वह आगा पीछा सोचने पर विवस थी ।

वह अपने भविष्य को लेकर चिन्तित थी । बेचारी काठ की गुडिया से खडी सबकी बाते सुन सुनकर बेचैन हुए जा रही थी । वह खडे खडे मौन मन्त्रणा में उदास सी खडी थी कि इसी बीच उसकी कुछ सहेलिया आ गयी ।

सहेलियों में से महूरी चुहुलबाजी करते हुए बोली सखी सोनरी तुमने बडी तपस्याकी थी लगता हैं भगवान ने तुम्हारी तपस्या कबूल कर ली हैं । कितने सुन्दर बहनोई मिले हैं काश ऐसे ही सबको मिलते ।

इतना सुनना ही था कि गुलाबो हंसते हुए बोली क्या सोनरी की जगह तुमको जाना है महूरी।

महूरी-ना बाबा ना । बहनोई तो पहलवान लगते हैं । सखी सोनरी को ही मुबारक हो । मैं अपनी नियति क्यों खराब करूं ।

महूरी की बात का अभी फेलाव भी नही हुआ था कि हंसी की गूंज खपरैल की छत से बाहर निकल पडी ।

तब तक पुप्पा चहक चहक कर कहने लगी-सच बहनोई बहुत सुन्दर है ।

सोनरी लम्बी सांस खींची और प्रसन्नचित नेतो से अपनी सखियों को देखकर जैसे सकून महसूस की ।

महूरी-देखो सोनरी के गालों पर लाली आ गयी बहनोई का बखान सुनकर । जब उनकी बाहों में खेलेगी तो हम सहेलियों को भूल जायेगी ।

पुप्पा-क्यो महूरी तुम्हारा इरादा हैं क्या ।

महूरी-सोनरी सखी ही खेले सदा खुश रहे बहनोई के साथ । हम सखियो को और क्या चाहिये । हम तो परायी अमानत हैं क ना एक दिन सब बिछुड जायेगे जैसे आज सोनरी बिछुड रही हैं ।

उधर सोनरी सखियों की बातो से बेखबर अपने ही विचारों में मगन थी । वह शायद यही सोच रही थी कि उसकी बचपन की चाह पूरी हो गयी अच्छे से दूल्हा के संग हंसुली भी मिल गया । जब छोटी थी तो गुडे गुडिया के ब्याह का खेल खूब खेलती थी। आज वह खुद गुडिया दुल्हन के रूप् में थी और गुडा था प्रेमनाथ के रूप में । पुराना सारा समय आज सजीव हो रहा था सोनरी के आंखों के सामने । आज उसका गुडे गुडी के ब्याह का खेल जीवन्त हो उठा था । सचमुच में प्रेमनाथ दूल्हा बनकर आज उपस्थित था और वह भी तो दुल्हन के यौवन में जंच रही थी भले ही उम्र में छोटी थी पर थी तो दुल्हन ही । प्रेमनाथ से ही तो उसकी बचपन की ख्वाहिशें पूरी हुई थी । वही प्रेमनाथ तो ब्याह में चढावा के रूप में हंसुली और छोटे मोट गहने तो लाया हैं । ब्याह से ही तो उसकी गहने की तमन्ना पूरी हो रही हैं । सब बाते उसे परेशान भी कर रही थी और कुछ कुछ बाते सकून भी दे रही थी । इसी उधेडबुन से वह जूझ रही थी कि अनायास उसके मुंह से निकल पडा हां सखियें जो तुम सब कह रही हो ठीक ही हैं । इतना सुनना था कि सारी सहेलियों ने एक साथ हंसी के धमाके कर दिये ।

सोनरी के शब्दों में प्रसन्न्ता, दुख और रहस्य भी छिपा हुआ था परन्तु उसकी सहेलिया ना समझ पायी । सभी सहेलियां बावली बनी सोनरी को देखे जा रही थी । इतने में सोमवती आ गयी ,जिसका गौना साल डेढ भर पहले ही हुआ था । उसकी गोद में खुबसूरत सा बच्चा और मांग में सोने का मांग टिका चमक रहा है । मांग टिका देखकर सोनरी का मन मचलने लगा । वह भी सोचने लगी काश मेरे भी ब्याह में मांग टिका चढ गया होता । हंसुली के साथ मांग टिका बहुत अच्छा लगता । सोमवती बहुत अच्छी

लग रही हैं मांग मे मांग टिका पहनकर और गोद में बच्चा लेकर । काष मुझे भी मांग टिका िमल गया होता तो मैं और भी अच्छी लगती । मांग टीका तो िसन्दूर से भरी मांग पर सोने के साथ सोहागा लग रही हैं । सोमवती का ब्याह गौना तो अलग अलग हुआ था । मेरा तो मेरे बापू सब एक बार में ही कर रहे हैं परदेसी होने के कारण । मेरा गौना बाद में होता तो शायद और गहने बनते । सोनरी का मन अनिि‍श्‍चतता के झूले में झूल रही थी । एक बात से निश्चित थी कि सोनरी का मन गहने के लिये लालायित ही था छोटी सी उम्र में ब्याह होने पर भी ।

॥ छः॥

दीनानाथ की उमंग भाई प्रेमनाथ के ब्याह के बाद ठण्डी पड गया थी ।ब्याह के समय तो बहुत उमंग था । सोनरी को गृहलक्ष्मी के रूप में पाकर पूरा कुनबा प्रसन्न था । एक खटकने वाली बात थी लेन देन कम हुआ था । लेनदेन की वजह से थोडा उत्सह कम था क्योंकि लेनदार तगादा पर तगादा करने लगे थे । गुदरीराम ने वैसे अपनी औकात के मुताविक कम लेनदेन नही किया था अच्छा ही किया था । लेकिन जो लेनदेन में नगद नरायन मिला वह सब ढोल तमाश्‍ो ,ईक्‍का भाडा में खिसक गया । सोनरी का बाकी रह गया ।दीनानाथ कहते काश नाच तमाशे में खर्च कम कर देता । कुछ ना कुछ तो बचत हो ही जाती । मांगने वालों में से एकाध का मुंह तो बन्द हो ही जाता ।दीनानाथ को अब पश्‍चाताप हो रहा था । वह खुद को गलत भाई प्रेमनाथ को सही ठहरा रहा था । कई बार तो प्रेमनाथ ने कहा था भईया इतना हाथ खुला करना ठीक नही हैं ।वही हुआ । वह मन ही मन कहता काश मान गया होता । मन ही मन खुद पर खूब गुस्सा आ रहा था दीनानाथ को साथ ही उसे सकून भी मिल रहा था बहुगूणी बहू पाकर। पूरा कुनबा खुश था रंज था थोडा तो देनदारी को लेकर।

ब्याह बिते हफता भर नही बिता की सोनार आ धमका बाकी रूप्‍ाया लेने । बात भी तो ब्याह के बाद ही देने की हुई थी । वादे के मुताविक ही तो सोनार आ धमका था । दीनानाथ को क्या पता था कि लेनदेन इतना कम होगा कि सोनार का भी नही भर पायेगा । वह अपनी गलती पर सिर नोच रहा था नाच तमाशे पर अधिक खर्चा कर । ब्याह में चढाये जाने वाले गहने तो इसी वादे पर बने थे कि ब्याह के बाद रूपये दे दिये जायेगे पर ऐसा हुआ नही ।सोनार की रकम दी जाती उसके पहले ही पाई पाई खिसक गयी थैले फटे के फटे ही रह गये ।

दीनानाथ अपने वसूल का पक्का था । उसमें कुछ कहो कुछ करो की आदत ना थी पर मजबूर हो जाता लक्ष्मी की बेवफाई से । वह रूप्‍ाये के न होन की वजह से निराश था । वादा ना पूरा होने की स्थिति में वह अपराधी की भांति सोनार के सामने खडा हो गया । सोनार भी पानी पानी हो गया । हां रूपये की किस्त बांध कर चला गया ।

सोनार चला गया । दीनानाथ को क्षणिक सुख मिला कि चलो रूपये किस्तो में धीर धीरे दे दूंगा । दूसरे ही क्षण गम ने आ घरा कि रूपया आयेगा कहां से । चिन्ताकी बदरी में उदासी के बवण्डर मडरा रहे थे । इसी बीच सुखिया दीनानाथ की मां आकर जोर से बोली अरे दीनानाथ खाना कब का बना हैं । खाना खाओगे कि नही । अंधेरी रात हैं । तुम हो कि उठने का नाम ही नही ले रहे हो । क्या बात हैं बेटवा जमीन ने ताे तुम्हे नहीं पकड रखा हैं ।

अरे अब तो समय से खा लेता । तुम लोग जहां बैंठते हो वही के होकर रह जाते े हो । पूरी रात ऐसे ही बैठ कर निकालनी है क्या । कोई चिन्ता खाये जा रही है । क्यों उदास हांेेे बेटवा । माथे पर पसीना के निशान साफ झलक रहे हैं । क्यो परेशान हो बेटवा । क्या बात है ।

दीनानाथ मां की आवाज एकदम सुनकर भौचक्कारह गया ।वह अपनी मां की ओर ऐसे देखा जैसे उसके सिर पर कोई बहुत बडा वजन पडा हो । वह धीरे से बोला मां खाना तो खाना ही होगा । पापी पेट है कि मानता ही नही । भगवान ने साथ इतना बडा कुआ जोड दिया है कि ससुरवा भरता ही नही । सब कुछ तो इसी की वजह से करना पडता हैं । मां अभी तो भूख नही लगी है पर खाना तो खाना ही होगा ।

सुखिया घुडक कर बोली- क्या बोला । भूख नही लगी हैं । झूठ मां से बोलता हैं । ये क्यों नही कहता कि तुम्हे चिन्ता सता रही है । सोनार के कर्जे की चिन्ता सिर पर है । अरे एक चांदी की हंसुली तुम चार भाईयो ने मिलकर बनवाया हैं । उसके लिये इतनी चिन्ता । अरे सोने की बनवाते तब क्या होता दीना बेटा । एक चांदी की हंसुली भयहू ।छोटे भाई की पत्नी। के देकर इतनी चिन्ता । बेटा ज्यादा चिन्ता ना करो । अभी तो छोटे भाई का ब्याह करना हैं । छोटी बहन बैठी हैं । अभी से चिन्ता के बोझ तले दबोगे तो बाकी काम कैसे होगा । अरे ये सोनार लोग ताे अपने बाप के नही होते तुम्हारे कहां से होगे । जब नही उससे बनवा रहे थे तो रोज चक्कर काटा करता था कहता था कि घर की बात हैं । जब रूपाया हो जाये तो दे देना । वही सोनार है कि जीना हराम कर दिया है । अरे कौन सी खैरात दे दिया है । तीन के तेरह करके लेगा । पहले तो कहता था कि हमारे यहां से ही हंसुली बनवाना पैसा भले ही बाद में देना । अब देखो रोज रोज तगादा कर रहा है। लगता है कि गांव छोडकर भाग रहे है ।

दीनानाथ-हांे मां धंधेबाज लोग हैं । चिकनी चुपडी बातों में ही तो फंसाते हैं । हमे भी तो बनवाना ही था । इसके यहां से नही तो कहीं और से बनवाते । उसे भी तो पैसा देना होता । कहां वह फोकट में बना कर दे देता ।

सुखिया-ठीक है बेटा पैसा देना तो था ही चाहे जिससे बनवाते । इस सोनार की तरह तो नही कि किसी भी नक्ाे की हंसुली गले तो नही मढता । हंसुली भी अच्छे नक्ाे की नही हैं । वही पुरानी घिसी पिटी डिजाइन तो हैं । आजकल क्या डिजाइनें आ रही है

।देखते रह जाओ । पैसा बाजार भाव से ज्यादा देना हैं । बेटा बाजार भाव का पता करके ही बनवाना था ।

दीनानाथ- पता किया था मां ।ये सोनार तो पीछे ऐसे पड गया कि जब तक बनवाया नही परछायी की तरह लगा रहा । खैर डिजाइन भले ही अच्छी ना हो पर चांदी तो सही हैं । यह बात तो मानना ही पडेगा । अपना सोनार मिलावट नही करता । यह बात उसमें अच्छी हैं । पैसा तो हर किसी को देना पडता । गारण्टी तो अपने सोनार जैसी कोई नही देता । इसीलिये तो विश्वास रहता है । इस आदमी पर भरोसा भी तो हो गया हैं ।

सुखिया- तुमको तो हो गया हैं । उसको तो नही हुआ हैं ना ।

दीनानाथ- मां सेठ साहूकार हैं लेनदेन पर उनका काम चलता हैं । लगन में ढेर सारे अपने जैसे उधार ले जाते हैं । तगादा ना करे तो कौन बिना मांगे देगा ।

सुखिया-लगे तरफदारी करने ।

दीनानाथ- तरफदारी नही मां सच्चाई हैं ।

सुखिया-बेटा ये सोनार लोग एक लगन में इतना कमा लेते है कि हम जिन्दगी भर कमाते रह जाये ।

दीनानाथ-मां लाखो लगा कर बैठे हैं । सोना चांदी कितना महंगा हैं । कमाने के लिये तो दुकान खोले है । ।

सुखिया- बेटा जितना पैसा अभी बाकी हैं । मुझे नही लगता कि उतने की हंसुली होगी । साल भर का सूद भी उसमें जुडा हैं । तुम उसको समझ ही नही पाये । उसकी मीठी चिकनी चुपडी बातों में आ गये । ये देखो मेरे गले की हंसुली । कलकते की चांदी हैं । कितनी ठोस हैं । मेरे ब्याह वाली तो बेच कर खा गये परिवार के लोग । यह तो तेरे बापू बाद में कलकते से ही बनवाये थे । देखो अभी भी चमक जस की तस हैं जमाना बित जाने के बाद भी । वजन भी बहुत हैं । सोनरी की हंसुली तो इसकी आंधी होगी । इसका नक्शा देखो यहां के सोनार बना पायेगे ।

दीनानाथ- सब बन जाता हैं नक्शा । ऐसा कौन सा काम हैं जाे नही हो सकता हैं ।

सुखिया-ठीक हैं बन जायेगी । देखो ना मीठी मीठी बात करके सिर पर कर्ज का बोझ तो रख दिया ना । बैठा दिया चिन की चिता पर । जलत रहो सुलगते रहा कज्र क ीाार सें । तुम से बेटा गलती तो हो गयी हैं । बनवाने से पहले बाजार भाव जानना था ।

दीनानाथ मां की बातो से चिढ गया । वह बोला मां जले पर क्यो नून डाल रही हो । मैं हूं कि हंसुली के कर्ज की चिन्ता से दबा जा रहा हूं और मां तुम हो कि.......

सुखिया-दीनानाथ के सिर पर हाथ फेरते हुए बोली बेटा भाई का ब्याह किया हैं । अरे घबराता क्यो हैं । शादी ब्याह में तो रीन कर्ज होता ही है । हम लोग ठहरे गरीब और इज्जतदार चिन्ता तो होगी ही । बेटा तू कहा जमीदार है । मजदूर हैं । मजदूरो का तो जीवन मरन कर्जे में ही होता हैं । गरीब मजदूर कर्जे में ही मरता हैं । बेटा तुमने किसी गलत काम के लिये तो कर्जा नही किया है । भाई का ब्याह किया हैं फक्र की बात हैं ।

रही कर्जे की बात तो वह भी भरा ही जायेगा । चिन्ता से तो कुछ होगा नही । कर्जे की रकम भारी लगती हैं पर हंसुली तो भारी नही लगती ।

दीनानाथ- मां जो बनना था बन गयी । बाकी प्रेमनाथ बनवाता रहेगा । जैसा पहनाना चाहे पहनायेगा खुद की कमाई से ।

सुखिया-बेटा खेतिहर मजदूर क्या गहना बनवायेगा । दो जुन की रोटी की व्यवस्था हो जाये वही बहुत हैं । क्या किस्मत भवान ने अपनी बना दिया हैं । उधर जमीदारो साहकारो की किस्मत देखो । जमीदार की बीटिया के ब्याह में उनके समधी हाथी पर चढकर रूपाया लूटा रहे थे । आधा किलों सोने की हंसुली चढी थी उनकी बीटिया के ब्याह में । काश हम भी अमीर होते तो इस तरह पाव भर हंसुली के कर्जे से ना दबते । हम भी सोने की हंसुली खरीदते बहू को पहनाते । क्या करे तकदीर अमीरों की चौखट पर जैसे गिरवी पडी हैं ।

दीनानाथ- हां मां ठीक कह रही हैं । ना जाने क्यों इतनी मेहनत करने के बाद मजदूर भर पेट रोटी के लिये तरसता रहता हैं । अमीर लोग दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करते चले जाते हैं । हम गरीबो का खून चूसकर ही तो अमीर अमीर बनता जा रहा हैं । गरीब और गरीब ।

सुखिया- हां बेटा । यह तो एक साजिश हैं जातिवाद पर आधारित व्यवस्था की। हमारी ही किस्मत क्यों खराब हैं । और भी लोग तो हैं कोई जमीन पर कब्जा किये हैं तो कोई व्यापार पर तो काई मंदिर पर हम तो सिर्फ हाडफोडने को पैदा हुए हैं । इसके बाद भी रोटी कपडा और मान सम्मान के लिये तरसते रहते हैं । हम गरीबो की किस्मत तो कैद होकर रह गयी हैं । भगवान गुनहगार नही हैं ये आदमी लोग हैं जो आदमी को आदमी नही समझते जीतिवाद के कई हजार टुकडे बांट रख है ।

दीनानाथ- हां मां सचमुच इसी भेदभाव वाली व्यवस्था के जरिये हम गरीबो के घर की ओर लक्ष्मी के आने वाले सारे रास्ते बन्द हो चुके हैं । किस्मत में बस हाडफोडना ही लिखा हैं ।

सुखिया -ठीक कह रहा हैं बेटा । मुझे याद हैं पुराने दिन जब तेरे बापू लापता हुए तब से तो और भी बुरा हाल हो गया । सब कुछ ठीक हो जाता यदि सम्मान के साथ बूढे समाज में जीने का हक होता । सचमुच तब निश्चित रूप से अपनी तकदीर संवर जाती । बेटा समय बदल रहा हैं । अपने भी दिन कभी ना कभी अच्छे आयेगा । उम्मीद मत हारो । अपने मकसद के लिये दृढ निश्चयी बने रहो । चलो बेटा खाना खा लो । सोच विचार में रात ना गंवाओ । दो रोटी रूखी सूखी खा कर अराम करो । बहुत रात हो गयी हैं ।

दीनानाथ- हां मां खा लेता हूं । पापी पेट हैं । बिना खाये चैन नही लेना देगा । इसी रोटी के लिये तो दिन रात मेहन मजदूरी करनी पड रही हैं । इसके बाद भी सकून की रोटी नही मिल रही हैं । लोग पेट भरने के लिये लोगो का गले तक काटने लगे हैं ।

आदमियत का खून कर रहे हैं अपने स्वार्थ के लिये । जातीय भेद बस आदमी को आदमी नही समझ रहे हैं ।

सुखिया- बहुत हो गयी बातचीत । अब बन्द करो चलो खा लो ।

दीनानाथ-चलो मां तुम भी खा लों । खाने के बिना तो काम भी नही चलेगा । काश पिताजी दुनिया में होते तो अभी से इस भंवरजाल में नही फंसना होता ।कही शहर परदेस जाकर दो पैसा कमा कर घर भेजते । क्या करे गृहस्थी में फंसकर रह गया ।

सुखिया-बेटा दीनानाथ जीवन मरन,मिलना बिछुडना, सुख दुख लाभ हानि सब उपर वाले के हाथ मैं है । इस रहस्य की चाभी तो भगवान के ही पास हैं । इस रहस्य का कोई सुराग आज तक इंसान को तो समझ में ही नही आया । हम अदना लोग कहां से समझ पायेगे ।

दीनानाथ-गमछा मुंह पर फिराते हुए बोला हां मां ठीक कह रही हो । मां सोनरी को समझा तो कि देर होती हैं तो वह खा लिया करे । हम लोगो का इन्तजार न किया करे । हम कब आयगे कब खायेगे । कोई निश्चित तो नही रहता । मेरा खाना पानी रख दिया करे शिकहर पर ।

सुखिया झुझला कर बोली तुम ही बोल दो । वह अपने नारी धर्म का पालन कर रही हैं । पूरे परिवार को खाना खिलाकर ही खायेगी । यही तो मर्द औरत में फर्क हैं । बेटा तुम क्या समझों औरत का त्याग । औरत अपना फर्ज निभाना अच्छी तरह से जानती है ।

दीनानाथ- मां कब तक वह बैठी रहेगी इंन्तजार में । तीनों भइयों का अलग अलग समय हैं।खैर बाद में वह खुद ही समझ जायेगी । चल सोनरी ला खाना पानी यही बाहर ही खा लेता हूं ।

इसी बीच प्रेमनाथ नई लुगी बनियाइन पहने कही बाहर से आया एकदम पहलवान सरीखे । वह सबकी आंखों से बंचकर सोने जाना चाहता था ।

प्रेमनाथ को देखते ही सुखिया बोली अरे प्रेमनाथ कहा जा रहा हैं । खाना तो खा ले । अब तो समय से खाना खा लिया कर बेटा । कब तक नई नवेली बहू तुम लोगो के लिये खाना पानी लिये बैठी रहेगी । बहू का ख्याल रखा करो । कब तक तुम लोगो की थाली सजाकर भूखी प्यासी बैठी रहेगी ।तुम लोगो का भी तो पतोहू के प्रति जिम्मेदारी बनती है ।

प्रेमनाथ- हां मा ।

पूरा परिवार खाना खाया इसके बाद सोनरी अपना फर्ज पूरा की । सब अपनी अपनी खाट पकड लिये रात्रि विश्राम के लिये ।

॥सात॥

सुखिया-बेटा दीनानाथ क्यों कुछ सोच रहा हैं । सोचना बन्द करों चिमनी बुझाओ और सो जाओ । क्यो चिन्ता में ही सोता जागता हैं । क्यों चिन्तित रहता हैं ।

दीनानाथ- मां नीद आ रही हैं ना ।

सुखिया-क्यो नही सो रहा हैं जब नीद आ रही हैं तो । क्यों जाग रहा हैं । आज न जाने कुत्ते इतने क्यो भूंक रहे है ।कीह चोर उचके तो बस्ती में नही घूम रहे हैं ।
दीनानाथ-हां मां । रात में ध्यान रखना । नई बहू घर में हैं । चोरो की नजर गहने पर हो सकती है । बडी मुष्किल से तो हंसुली बनी हैं । वह भी चोर न ले उडे ।
सुखिया-बेटा तू सो जा थका मांदा हैं । चिन्ता फिक्र ना कर । चिन्ता से क्या होगा । जो किस्मत में लिखा होगा वही तो होगा ।
दीनानाथ-मां मैं भी समझता हूं पर क्या करू ।
सुखिया-बेटा तू समझता है कि मैं नही समझती । बेटा सब समझती हूं । तेरी मां हूं । तेरे माथे की लकीरों से मुझे पता चल जाता हैं । भले ही तू ना बता बेटा ।
दीनानाथ-मां चिन्ता करता नही हूं । हो जाती है । बडा कठिन जीवन हैं । वह भी हम गरीबो का तो और भी कठिन हैं । सुबह खाओ तो रात की चिन्ता रात को खाओ तो सुबह की चिन्ता । कुआ खोद कर पानी पीने वाली बात हैं गरीबो का जीवन ।

मेरी तकदीर का सुमन ना खिला, कर्म के दामन घाव मिला ।
ये क्या कर दिया, भरी महफिल में एक और नया घाव दे दिया ।
हम इतने बदनाम ना थे, पसीने से प्यास बुझाने की आदत है मेरी,
आज भी कायम हूं, सीने में हैं घाव दी हुई बूढा समाज तेरी ।
मैं घाव के बदले घाव नही देता, नफरत बोना मुझे आता नही
चला था सुमन की आस में अब तो हंसते घाव संग मुस्का लेता ।

सुखिया-बेटा तुम लोगो के हाव भाव से सब पता चल जाता हैं । तुम लोगो की आंखों में सपने हैं बेटा और माथे पर चिन्ता की लकीरे । सब जानकर भी मैं कुछ नही कर पाती । हरदम चिन्ता में डूबे रहना अच्छी बात नही हैं । तू ही बता बेटा तेरी तरह से मै भी चिन्ता में डूबी रहती तो क्या होता मेरा मैं तो कब की मर गयी होती । तेरे बाप का वियोग तुम बच्चं की वजह से मेरा कुछ न बिगाड सका । मैं कितनी पत्थर दिल हा गयी थी तुम बच्चो के प्यार में ।
दीनानाथ- हां मां तेरे त्याग को समझता हूं ।
सुखिया-बेटा मुझे भी चिन्ता सताती हैं । तुम लोगो को देखकर खुश हो लेती हूं । तू ही बता तेरे बाप के लापता हुए कितने बरस बित गये । आज तक कही थाह पता नही चला । तेरे पिता ऐसे परदेसी हुए कि कभी लौटकर ही नही आए । पता ही नही चला था कि वे किसी हादसे के या गोरो की गोली के शिकार हो गये । मुझे भी चिन्ता है बेटा । मैं तुम लोगो को सुखी देखना चाहती हूं । तुम लोग खूब तरक्की करो ताकि मैं चैन से मर सकूं ।
दीनानाथ-मां मरने की कहां से बात आ गयी ।

सुखिया-बेटा तुम लोग खूब तरक्की करो यही मेरी तमन्ना हैं । भगवान से दुआ करती हूं कि तुम चारो भाई अपनी मेहनत मजदूरी के बलबूते दुनिया में उच्चस्थान बना लो । दिन दुनी रात चौगुनी तरक्क़ी करो । विषमतावादी समाज के मुंह पर अपनी तरक्की की अीट लकीर खींच दो ताकि मेरे दिल को भी ठण्ठक मिल सके । बेटा जब ये बूढी आंखे बन्द हो तो सकून से । दुनिया कहे के बिन बाप के बेटो ने अपने मां बाप का नाम रोशन कर दिया । लोग तुम लोगो से कुछ सीखें । भगवान तुम लोगो की कमाई में बरक्क्त दें । यही दुआ हैं बेटा तुम लोगों के लिये ।

दीनानाथ -क्या करूं मां एक भाई परदेस जाकर बस गया । अच्छा हुआ । खूब तरक्की करे गांव समाज का नाम रोशन करे । परदेस जाने का मलाल नही हैं लेकिन वह दूर होता जा रहा हैं रोज रोज । लगता हैं वह हम भाईयों से नाता तोडना चाहता हैं ।तनख्वाह भी तो उसे अच्छी मिलती हैं पर वह देना नही चाहता । देखो ना गांव के और कई्र लोग उसी के साथ काम करते हैं ढेर सारी खेती की जमीन लिखवा लिये हैं । घर मकान बढिया बनवा दिये है पर अपना भाई तो आखें मूंदे पडा हैं । हम लोगो का तो उसे जरा भी ख्याल नही ।

सुखिया- हां बेटा भीखा से तो बहुत अरमान थे । उम्मीद थी कि बाप की मझधार में फंसी नैय्या को किनारा मिल जायेगा । लगता हैं वह बहक रहा हैं । उसे स्वार्थ ने डंस लिया हैं ।

दीनानाथ- हां मां । पिताजी भी छोडकर ना जाने कहां चले गये । जमीन खा गयी या आकाश निगल गया ।छुटकी के पैदा होने के बाद ही तो वे परदेस गये थे । छुटकी भी ब्याह गौने लायक हो गयी हैं ।उसकी की भी डोली उठानी हैं मां । प्रेमनाथ के ब्याह में इतना रीन कर्ज हो गया । बहन का ब्याह कैसे होगा । कोई आढत तो दिखती नही है । कहां से पैसा आयेगा । भीखा बहन के ब्याह से भी तो हाथ नही खींच लेगा । यही सोच सोच कर बूढा हुए जा रहा हूं ।

सुखिया- हां बेटा बडा होने के नाते तो ये सब जिम्मेदारी तुमको ही उठानी हैं । तेरे बाप होते तो कुछ भार कम होता ।

दीनानाथ- हां मां पिताजी को ना जाने क्या हो गया कि मझदार में ही छोडकर न जाने कहां चले गये ।

सुखिया-हां बेटा यह तो सभी जानते हैं । क्या कर सकते हो । भगवान की यही मर्जी । अब तुम ही सभी भाई बहन में बडो । जिम्मेदारी तुम्हारे सिर पर हैं । बेचारा प्रेमनाथ भी तो भरपूर साथ दे रहा हैं ।

दीनानाथ- हां मां प्रेमनाथ ही तो सहारा हैं ।

सुखिया-बेटा चिन्ता ना कर । भीखा नही मुंह मोडेगा । क्या दुनिया को मुंह नही दिखाना हैं उसे । भाईयों के साथ छल करके क्या वह सुखी रह पायेगा । कदापि नही । मान लो

मुंह भी मोड लिया तो क्या हुआ प्रेमनाथ तेरा लक्ष्मण तो हैं तेरे साथ कंधा से कंधा मिलाकर चलने को ।
दीनानाथ-मां प्रेमनाथ ही के भरोसे तो हौसला बढता रहता हैं । भीखा जरूर दगा करेगा ।
सुखिया-अब उसके मन में क्या हैं । वही जाने पर उसे ऐसा तो नही करना चाहिये । उसके व्यवहार से मुझे भी डर तो लगने लगा हैं । पहले तो ऐसा ना ।अब मुझे भी शंका होने लगी हैं । नही तो भाई के ब्याह में बनवायी गयी हंसुली के कर्जे की ओर ध्यान नही देता । खैर बेटा चिन्ता ना करो । सब ठीक हो जायेगा । उपर वाले पर विश्वास रखो । अपना करम करो । विश्वास के धागे को मत तोडो । इसी में परिवार की भलाई हैं । भले ही भीखा विश्वास पर खरा ना उतरे ।
दीनानाथ-मां ऐसा ना बोल मेरा भाई । मां परिस्थितियों के मारे हुए हैं । एक भाई दूसरे की मदद नही करेगा तो कौन करेगा । इन्ही भाईयों के भरोसे रीन कर्ज करके काम चलाता रहता हूं । भाईयों के ही हित के लिये ही तो सब कुछ कर रहा हूं ।
भाई का ब्याह इतनी धूमधाम से किया हूं । गहना हंसुली भी बहू को ज्यादा नही तो कम भी तो नही चढाया हूं । भाई का ब्याह कितना बढिया से निपटा हैं । छोटे बडे सभी ने तारीफ की । यह बात तो सभी बस्ती वाले मानते हैं । भाईयों के सहयोग से ही तो इतना बढिया ब्याह हुआ हैं । भगवान की कृपा से बहूं भीगुणवन्ती ही मिली हैं । हमे तो भाईयों के हित के लिये ही जीना हैं । भले ही भीखा न माने उसकी मर्जी । देखना मां छुटकी का ब्याह और भी धूमधाम से होगा पर भीखा साथ ना छोडे ।यही दुआ करो मां ।
सुखिया-हां बेटा । वह तो मैं सदा ही करती रहूंगी ।
दीनानाथ-मां तू अब सो जा । सोनरी को सुबेरे समझा देना । वह सावधानी से रहा करेगी । आजकल चोर गांव पर ही धावा बोल देते है । किसी बेचारी का तो चन्द्रहार गला रेत कर निकाल ले गये डाकू लोग । कल दुखी दादा बता रहे थे कि यह हादशा उनकी रिश्तेदारी के पास वाले किसी बडें घर की औरत के साथ हुआ था।
सुखिया-बेटा कल समझा दूंगी । नई नवेली दुल्हन हैं दिन भर खटती रहती हैं । थक कर चूर हो जाती हैं । चोरो का क्या उन्हे तो बस सुगबुगाहट होनी चाहिये कि फला के घर में माल हैं भल ही ना हो । धावा बोल देते हैं । वैसे चोरी भी किसी ना किसी की मिली भगत से ही होती हैं । कोई ना कोई सुराग देने वाला तो होता ही हैं ।
दीनानाथ- हां मां ठीक कह रही हो । चोरी में तो आसपास का कोई ना कोई मिला रहता ही है तभी चोरी होती है । कह देना गहने मौके झोंके पर ही पहने जाने चाहिये । गहना दिखावा की चीज तो होती नही हैं । यह तो औरत पवित्र रिश्ते का सूचक होता हैं । औरते कहां मानती हैं हमेशा लदी रहती हैं । चाहे सोने का हो या लोहे का ।

सुखिया- सच कह रहे हो बेटा बाजार हाट जाओ तो क्या मोटी मोटी हंसुली हुमेल पहनकर तरकारी भांजी खरीदते नजर आती हैं औरते। पूरा बदन गहने से लदा रहता हैं । चोरो का मन नही होगा तो क्या होगा । कोई अनहोनी हो गयी तो रोने बैठ जाते हैं ।
दीनानाथ-मां बहुत बात हो गयी । जो सो जाओ ।छोटे नबाब साहेब को जल्दी जगा देना । मुझे नही जगाना पडे। अभी से इतनी नालायकी । भीखा शहर का हाकर रह गया । प्रेमनाथ दिन रात हाड फोड रहा हैं ।छोटे नबाब उठाईगीरी करने लगे हैं ।दोपहर तक सोने को चाहिये । काम धाम कुछ नही । तीनों टाइम समय से खाने को चाहिये । एक पैसा कही से लायेगे नही । खाने को चाहिये । हथलपाकी तो अपने खानदान में कोई नही किया था । भले ही अपना परिवार गरीब रहा पर इज्जतदार रहा । ये काशीनाथ नाक कटवा कर ही रहेगा ।
सुखिया-नही बेटा वह भी एक दिन समझदार हो जायेगा । अभी बचपना हैं ।
दीनानाथ-मां कब तक बचपना रहेगी । उसके साथ के लडके सोने की डाल हिला रहे हैं । मेरा भाई काशीनाथ है कि खाने को तो चाहिये अच्छा अच्छा पर काम नही होगा उनसे ।
सुखिया- नही बेटा वह भी करेगा । उसे भी अपना फर्ज पूरा करना ही होगा ।
दीनानाथ-देखता हूं कब उसे फर्ज की याद आती हैं । ऐसा कामचोर भाई भगवान किसी को ना दे ।सुना है शौक पूरा करन के लिये नबाबसाहब छोटी छोटी चोरी करन लगे है ।
सुखिया-बेटा ऐसे ना बोल । तेरा भाई हैं । उसे तुम कंधे पर बिठाया हैं तू ही ऐसे बोलेगा ।
दीनानाथ- मां उसकी करतूत देखकर खून खौल उठता हैं । मजबूर हूं वरना ऐसा सबक सिखाता कि फिर कभी गलत काम की ओर आंख उठाकर नही देखता । मां इस काशीनाथ के लक्षण अच्छे नही हैं ।मां समझाओ नालायक को ।
सुखिया- हां बेटा । समझा दूंगी । तेरे मरे बाप की कसम देकर । सुधर गया तो ठीक हैं नही तो वो जाने उसका काम ।
दीनानाथ - मां काशीनाथ को सुधारना ही होगा । यदि नही सुधरा तो मानो हाथ से गया । हाथ से तो जायेगा पर परिवार की इज्जत खाक में मिल जायेगी ।
सुखिया- ऐसा नही होगा बेटा मेरे जीते जी ।
दीनानाथ-अरे छोटी मोटी चोरी करने लगा हैं । कभी घर के सरसमान ले जाकर कही बेच दें । कल सोनरी की हंसुली कभी बेच दिया । मां मुझे डर लगने लगा हैं । समझाओ काशीनाथ को । सुधर जायेगा तो अच्छा होगा वरना पुलिस वाले हडडी तोड डालेगे । मां ये नालायक परिवार की मर्यादा ना तबाह कर दे । अगर ऐसा हो गया तो किसी को मुंह दिखाने लायक नही रहेगे । छोटी मोटी चोरियां भी करने लगा हैं । पूछो तो हाथ में पानी लेकर कसम खाने लगेगा। । यह नालायक ऐसा कैसे हो गया ।
सुखिया-बेटा सोहब्बत का असर हैं कही ना कही इसे चोर उचके मिल गये हैं । उन्ही के चक्कर में आकर यह हथलपाकी करने लगा है ।

दीनानाथ-कही शहर में तो यह नही सीख गया । अभी एक बार ही तो शहर गया हैं । नबाबो जैसे रहने खाने को चाहिये । काम तो कुछ नही करेगे । इसीलिये तो शहर से भाग आया पर उठाईगीरी सीखकर आया है ।

सुखिया- कुछ ही महीनों बुरी संगत कर बैठा ।

दीनानाथ - हां मां । तभी तो छोटी मोटी चोरी करने लगा है ।

सुखिया- किसने कहा ।

दीनानाथ-एक दिन रंगे हाथ पकडा गया तो पहचान लेना । लोग पहचानने लायक भी नही छोडेगे । मार मार कर ुंह बिगाड देगे । खुद को आईने में देखकर खुद को नही पहचान पायेगा ।

सुखिया-ऐसा तो नही होना चाहिये ।

दीनानाथ- मां होना तो नही चाहिये पर हो रहा हैं । एक दिन बांधकर मारता हूं इस काशीनाथ तभी हथलपाकी छोडेगा । इधर की उधर करना छोडेगा । घर बिगाडन बनेगा । चोर बनेगा । नही मां ऐसा नही होने दूंगा । अगर ऐसा हो गया तो जान दे दूंगा ।

सुखिया-नही बेटा ऐसा न कहो । अब इस काीनाथ के भी गले में जुआठ डालनी होगी ।

दीनानाथ- क्या ।

सुखिया- हां बेटा । काशीनाथ का ब्याह करना होगा ।

दीनानाथ-मां इस नालायक का ।

सुखिया- हां बेटा । इसकी घरवाली ही सुधार सकती हैं । अगर ऐसा हैं तो ।

दीनानाथ-मां भीखा शहर जाकर भूल गया । उसका तीन ब्याह किया । कितना रीन कर्ज किया । तीसरी काली नागिन जब से आयी हैं । घर के सकून को छिनने लगी हैं । लगता हैं परिवार तोड कर रहेगी । भगवान मेरे परिवार की रक्षा करना । भाईयों के प्रेम में कमी ना होने पाये ।

सुखिया- बेटा सो जा । मुझे भी नींद आ रही हैं । किसी को कोसने से कोई फायदा नही हैं । सब समझदार हैं । अपना अपना हित सबको दिखायी देने लगा हैं । सो जा बेटा । रात बितती जा रही हैं ।

दीनानाथ- मां बहुत तकलीफ होती हैं । गांव गाव घूम घम कर नाच गाकर रूप्या लाता हूं । बेचारा प्रेमनाथ खेतो में मजदूरी करता हैं। इतनी मेहनत की कमाई खाकर भाई नालायकी करे तो दुख नही तो और क्या । खुशी होगी नही ना ।प्रेमनाथ हैं एक मददगार बाकी तो दोनो लुटेरे हो गये हैं । भीखा जाकर शहर सबको भूल गया । अब तो नाचं मण्डली का जमाना धीरे धीरे खत्म हो रहा हैं । बाइस्कोप चलने लगा हैं ।

सुखिया-हां बेटा वह तो हैं ।

दीनानाथ-मां अब तो लगन भी धीरे धीरे कम मिलने लगी हैं । आसपास कई नाच मण्डलियां भी तो हो गयी हैं । उपरे से बाइस्कोप भी कब्जा करने लगा हैं । आने वाले

समय में ब्याह में सिनेमा आया करेगा । नौटंकी का भविष्य भी सुरक्षित नही लग रहा हैं । प्रेमनाथ बेचारा खेंतिहर मजदूर होकर रह गया हैं । वह भी परदेस चला गया होता तो ठीक रहा होता । लेकिन भीखा के लिये वह भी बलिदान कर दिया । छोटे नबाब काशीनाथ का हाल तो देख ही रही हो मांं।

सुखिया-हां बेटा ठीक कह रहे हो । बेचारे प्रेमनाथ की मेहनत मजदूरी से दो जुन की रोटी नसीब हो जा रही हैं । काशीनाथ और भीखा के भरोसे तो पानी भी नही मिलता ।

दीनानाथ-मां अपनी किस्मत ना जाने कहां कैद हो गयी । बचपन में ही बाप का साया उठ गया । किसके पास हाथ पसारे । काका थे वे भी ससुराल में जा बसे । उनसे हम लोगो से कुछ लेना देना ही नही । जमीन थी उस पर दादा बहादुरो जमीदारो ने हथिया लिया । हम भूमि मालिक होकर भी भूमिहीन खेतिहर मजदूर हो गये ।

सुखिया- हां बेटा चहुंओर से मुसीबतो ने ही घेरा । खैर अपने परिवार के भी दिन अच्छे आयेगे । एक ना सारी सामाजिक बुराईया भी मिट जायेगी । बेटा सदा बदनसीबी थोडे ही अपनी चौखट पर बैठी रहेगी । भगवान को तुम लोगो की किस्मत फिर से लिखनी होगी । बेटा काशीनाथ का भी ब्याह करने की सोचो । बेटा कब मेरी बूढी सांस साथ छोड दें । छोटे बेटे और छुटकी का ब्याह देखे बिना आंखे बन्द हो जाये । इस बूढी सांस का क्या भरोसा ।

दीनानाथ- मां मेरी उम्र तुमको लग जाये ।

सुखिया- ना बेटा ऐसा ना कहते । तुम युग युग जीओ । तुम्हारे कंधे पर मैं श्मशान जाऊं ।

दीनानाथ- मां तुम भी बार बार मरने की बात कहती हो ।

सुखिया-बेटा जीवन की डोर तो उपर वाले के हाथ में हैं । कब बुला ले वही जाने । बेटा काशीनाथ के ब्याह की सोचो ।

दीनानाथ-मां मैं भी यही सोच रहा हूं ।काशीनाथ का ब्याह हो जाये । इसकी शादी करकेे तकलीफ मोल लेना हैं । अंवारा दिन भर घूमता रहता हैं । हथलपाकी करता रहता हैं । कभी किसी की सुतली बेच आता हैं । किसी की कटोरी लोटा बेच आता हैं कभी कुछ । मां बताओ कैंसे ब्याह होगा । ब्याह के लिये रकम की भी जरूरत होगी । गहना कितना महंगा हो गया हैं । प्रेमनाथ तो परिवार पाल ही रहा हैं । यह भी जरा सहारा दे देता तो गृहस्थी की गाडी गति पकड लेती पर नही ।

सुखिया -बेटा काशीनाथ भी करेगा देखना एक दिन ।

दीनानाथ-कब वह दिन आयेगा । हमे भी इंन्तजार रहेगा । हाल तो अभी ये है कि प्रेमनाथ मेहनत मजदूरी ना करे तो रोटी नसीब न हो ।काशीनाथ का भी खर्च उठाना पड रहा हैं । उसकी घरवाली का भी उठवाना । चाह रही हो मां ।

सुखिया-नही बेटा देखना घरवाली के आते ही वह भी चेत जायेगा ।

दीनानाथ-मां ब्याह के अलावा और कुछ नही सूझता तुमका । गहना भी तो बनवाना होगा । गहना के लिये रूपया चाहिये । ऐसे लग रहा है कि ब्याह कोई खेल हैं । अपने पास दूसरा कमाई का जरिया भी तो नही हैं । ना जाने हम जन्मजात गरीब कैसे हो गये इतना हाडफोड मेहनत के बाद भी । उपर से सामाजिक बुराईयो का जहर भी पीने को मजबूर हैं । ना जाने रिसता घाव कब ठीक होगा ।

सुखिया-हां बेटा गहना तो चाहिये ही बिना गहना के कैसा ब्याह । औरत की जिन्दगी का सबसे सुखद लम्हा यही तो होता हैं । जब उसकी मुरादे पूरी होती हैं । योग्य वर के साथ गहना चढता हैं । इसी दिन के लिये तो लडकियां मन्नते मानती हैं ।व्रत उपवास रखती हैं ताकि उन्हे कोई योग्य वर मिले और उनकी सारी मुरादे पूरी हो जाये । लेकिन हम गरीबो के भाग्य में कहां ।

दीनानाथ- मां तुम भी क्या लेकर बैठ गयी ।

सुखिया- हां बेटा ठीक ही तो कह रही हूं । प्रेमनाथ के ब्याह में रो धोकर एक मजबूती हंसुली बनवा पाये । बेचारी सोनरी आते ही गृहस्ती में फंस गयी । क्या करे वह भी बेचारी गरीब घर की बहू हैं ।

दीनानाथ- मां हम लोग तो दिन रात मेहनत तो कर ही रहे हैं पर अपनी किस्मत है कि बदलने का नाम ही नही ले रही हैं । अपनी किस्मत तो कैद होकर रह गयी हैं बडे लोगो की चौखटो पर । यहां लोग है कि किस्मत को कसूरवार मान रहे है। सच मां,

मेरी किस्मत को क्यो दोप दे रहा जमाना,
याद नही जमाने को हक हजम कर जाना ।
ाजिश की हिस्सा है मेरी मजबूरियां,
पी लेता हू ये विप कस लेता हूं तन्हाईयां ।
रार नही ठानता मैं, खैरात चाहता ही नही,
हाड को निचोडकर दम भर लेता हूं तभी ।
हाड खुद का निचोडना आता नही,
सच तब ये दुनिया वाले जीने देते नही ।
सारेआम सौदा होता गरीब इंसान का,
जहां लोभी सौदागर चाहते बेचते वही ।
खुदा का शुक्र्र मजदूर हो कर रह गये ,
खुद ना बिके श्रम बेचकर जी गये ।
जमाने से रंज नही तो फक्र कैसा,
जी लेता हूं दीन होकर भी दीनदयाल जैसा।

सुखिया-ठीक कह रहा हैं बेटा । लोग अपनी सत्ता कायम करने के लिये किस्मत का हउवा खडा कर रखे हैं ताकि गरीब किस्मत के जाल में उलझा रहे । कोल्हू के बैल से चाकरी में लगा रहे ।

दीनानाथ- भगवान ना जाने गरीबो कि किस्मत में रोना क्या लिख देता हैं । हाड फोडना अपनी किस्मत बन गयी हैं ।

सुखिया- सुना है कि सोनरी को बचपन से गहने का बहुत शौक था । बेचारे उसके मां बाप कोई गहने की मांग नही किये । बडे भले लोग हैं । कहते हैं कि सोनरी अपनी मां की हंसुली गले मे टागे घूमा करती थी । बडी मुश्किल से उसके ब्याह में ण्क हंसुली बनवा पाये । हंसुली बनवाने के लिये भी रीन कर्ज करना पडा ।

दीनानाथ- हां मां जब हम लोग सोनरी को देखने गये थे तो सोनरी का मां ने बताया था ।

सुखिया-बचपन से सोनरी को गहने की प्रबल इच्छा होने के बाद भी बेचारी को इच्छा पूरी नही हुई । अपनी मां से गहने की जिद करती थी । अपनी मां का गहना पहनने की जिद करती थी । नही देने पर मां से बात तक नही करती थी ।

दीनानाथ-हां मां देखो वही सोनरी गाय की तरह गृहस्ती के खूंट में बंध गयी हैं । उसकी सारी लालसााओ का दमन हो गया । गरीबी की धूप उसे डंस रही हैं अभी से । भगवान बेचारी सोनरी कि किस्मत में ही थोडा सुख लिख देता । हमारी क्या महारी तो बित गयी । बाल बच्चे सुखी रहे यही भगवान से विनती हैं । भगवान मदद करो । बेचारी राज करे । सोनरी के लक्षण से लगता हैं कि उसके दिन जरूर बदलेगे । बहुत गुणवान बहू हैं इसकी औलादे जरूर नाम रोशन करेगी। ागवान मदद करो । मां बाप अच्छे हैं तो बेटी बेटा तो अच्छे होगे ही । मां बाप के गुण सोनरी में भी हैं । लगी रहती हैं गृहस्ती की तपस्या में ।

दीनानाथ-हां मां सब गुदरीबाबा जैसे थोडे ही मिलेगे ।उपर से अपना प्रेमनाथ भी तो कमाऊ पूत भी तो हैं ।काशीनाथ को कौन अपनी लडकी देगा । बहू बेचारी को रोटी के लिये मार डालेगा तडपा तडपा कर ।एक नम्बर का लफंगा हैं । अपनी इतनी औकात तो नही है कि दोनो पति पत्नी को बैठाकर खिलायेगे । मां तुम ही काशीनाथ को समझा सकती हो । अपनी सुनने से रहा । कुछ कमाने धमनो लगे तो ब्याह गौना ठीक भी लगता हैं । अरे रीन कर्ज करके ब्याह कर दूं पता चला कि ब्याह का कर्ज अपने सिर पर मां ऐसे नालायक को पहने लायक बनने दो । ब्याह तो हो जायेगा । कहां लडकियों के टोंटे पडे हैं । मां कामचोर आलसी का ब्याह करवाना किसी लडकी के साथ धोखा होगा । हम लोग कब तक इसका खर्चा उठायेगे ।

सुखिया-ठीक हैं बेटा ।समझाऊंगी ।

दीनानाथ-हां मां इस नालायक को उसकी जिम्मेदारी की याद तो दिलानी ही पडेगी । चाहे मारकर दिलाओ ।समझाकर दिलाओ जैसे भी दिलाओ । मां इस नालायक को आदमी

बनाओ ताकि दो पैसा कमाये । अपनी घर गृहस्ती चलाये । कब तक हम सम्भालते रहेगे ।

सुखिया-देखना ब्याह के बाद काशीनाथ भी कमोन लगेगा ।औरत आते ही ऐसी नकेल डालेगी कि होश आ जायेगा । देखना खूब दौड दौडकर कमायेगा । अभी तक तो भाईयों की कमाई पर गुलछर्रे उडा रहा हैं । यदि लडकी सपूत मिल गयी तो बना देगी । सपूत नही मिली तो बिगाड देगी और भी या तो ले जाकर कही शहर परदेस बस जायेगी । अब तो लडकियों ऐसा भी करने लगी है । बेटा कही लडकी देख काशीनाथ के लिये । गरीब घर की लडकी लाना हैं याद रखना

दीनानाथ-मां तू इतनी चापलूसी क्यो कर रही हो । काशीनाथ पर मुझे भरोसा तो नही लगता ।सच मां मुझे तो डर लगने लगा हैं । इसकी चालढाल देखकर ।

सुखिया- अरे नही रे दीनानाथ काशीनाथ भला ऐसा कैसे हो जायेगा । सिर पर जब बोझ पडेगा तब खुद ही सीख जायेगा ।

दीनानाथ-मां तू काशीनाथ नालायक का ब्याह करवा कर ही दम लगी ।

सुखिया-बेटा तेरी बूढी मां तुम सबको आबाद देखना चाहती हैं । नाती पोते का सुख भोगकर मरना चाहती हूं बेटा । अरे तुम्हारे बाप का सुख तो नही भोग पायी कम से कम बेटा बेटी नाती पोता पोतियों को देखकर ही इस जीवन का सुख तो भोग लूं ।

दीनानाथ-मां तुम नालायक के गले में जुआठ डलवा कर ही मानोगी ।

सुखिया-हां बेटा उसकी घरवाली आ जायेगी ना तब देखना वही भी जिम्मेदारी बन जायेगा ।उसे भी अपन बाल बच्चो की फिक्र सतायेगी । परिवार की जिम्मेदारी का एहसास करा देगी।एक स दा दो से तीन होगा से चार होगा। बाल बच्चों के खान खर्च की चिन्ता दखना उसके मेहनत मजदूरी करना सा ीखा देगी ।घरवाली के आते ही देखना काशीनाथ को अपनी जिम्मेदारी का एहसास हो जायेगा । अभी तो तुम भाइयों की कमाई पर मटरगस्ती कर रहा है ।काशीनाथ को सही रास्ते पर लाना है तो उसका ब्याह जल्दी करना होगा ।बहू अच्छे घर की संस्कारवान मिल गयी तो काशीनाथ इंसान तो बन ही जायेगा ।अच्छी बहू परिवाद की मर्यादा भी बढायेगी । सच बेटा गुणी लडकी तलाश कर काशीनाथ का ब्याह कर दो।नही तो काशीनाथ हाथ से निकल जायेगा ।अभी तो हथलपाकी कर रहा हैं । बाद में क्या करेगा । बेटा ठण्डे दिमाक से सोच ।

दीनानाथ- हां मां तुम जीती मैं हारा ।

सुखिया-बेटी पहले ब्याह करना । गौना बाद में लना। तब तक काशीनाथ भी अपने पैरो पर खडा ही हो जायेगा । मेरा दृढ विष्वास है ।

दीनानाथ- मां अब एक और हंसुली की तैयारी ।

॥आठ।

रात का घनघोर अधंेरा धीरे धीरे पूरी बस्ती को अपने आगोश में लेने लगा था । नीद की मदिरा का असर शुरू हो गया था । गांव के घरों से धुये का उठना अब बिल्कुल

शान्त हो चुका था । रह रह कर कुत्ते शान्ति भंग कर रहे थे । सोनरी अपने कमरे में खटिया पर लेटी हुई थी । खपरैल के अन्दर से होकर चांद की राशनी उसको स्पशर् कर रही थी । ना जाने क्यो उसे आज गुदगुदी सी क्यो हो रही थी । मात्र चांद की रोशनी से ही । पसरे सन्नाटे के बावजूद सोनरी की निगाहे खपरैल चीरकर आती रोशनी पर ही टिकी हुई थी । उसे याद आ रही थी पुराने दिनों की । कल के सुखद भविष्य की । ब्याह के बाद तो पंक्षी जैसे एक चहरदीवारी में कैद हो गयी थी । बार बार सोच कर उसका सिर चकरा रहा था । छोटे भाईयो के साथ बिते पलों का दृश्य उभर रहा था । उसे सच का एहसास होने लगा था । मां की याद आते ही उसके आखों से आसूं बह निकल रहे थे । दूसरे ही पल बडी भाभी की ठिठोली याद आते ही होठो पर मुस्कराहट की बाढ उमड जा रही थी । सबेरे सबेरे मां की डांट का ख्याल तो कर्म पथ पर लाकर खडा कर देता था । कभी भाभी का मजाक याद आ जाता कि ससुराल में देर से सोकर उठोगी तो ननद कहेगी क्यों भौजी रात भर क्या होता रहा था कि सबेरे सबेरे नीद लगी थी । क्यों भौजी भइया ने उठने नही दिया क्या । उधर सास की भी सुननी पडेगी । उसे सब कुछ लग रहा हो जैसे आज की ही बात हो । कभी दादा की अंगली पकड कर हाट जाने की बात । कभी मेहनगर रसवाली पकौडी का स्वाद । कभी चोटे वाली जलेबी की मिठास की याद । कभी इन्ही यादों की बरातों के बीच सहेलियों की हुडदंग,हंसी ठिठोली बचपन की यादो में रस घोल रही थी ।

सोनरी ख्वाबों में खोई हुई थी कि सहसा प्रेमनाथ गमछा हाथ में लपेटे चुपके से कमरे में पैर दबाकर प्रवेश किया और सोनरी को बाहो में लेकर खटिया में समा गया ।

सोनरी झट उठ बैठी और बोली गमछा की गठरी क्यो बना रखे हो ।

प्रेमनाथ-खुद बताओ ।

सोनरी-मैं क्या बताऊॅं ।

प्रेमनाथ- कुछ तो सोचो ।

सोनरी-क्या सोचूं रसवाली पकौडी या जलेबी है क्या । कहकर हंस पडी ।

प्रेमनाथ-उससे बडी चीज हैं ।

सोनरी - बताओ । क्यों मीठे मीठे सपने दिखा रहे हो ।

प्रेमनाथ-क्यो ब्याह के बाद सपने बहुत आने लगे है । अभी कितने दिन हुए तुमको को आये कि बच्चो की चिन्ता सताने लगी । सपने बहुत आने लगे है इस घर की चौखट पर पांव पडतें ही । अरे बाल बच्चो की फिक्र अभी से ना करो।

सोनरी-अब ना आयेगे तो कब आयेगे ।

प्रेमनाथ-अरे वाह क्या बढिया बात हैं ।

सोनरी-ये तो बताओ गमछा में क्या हैं ।

प्रेमनाथ-अरे कुछ नही हैं । प्यार की गठरी हैं ।

सोनरी-अरे बाप रे प्यार की भी गठरी बनती हैं ।

प्रेमनाथ- क्यों नही होती हैं । अगर होती नही तो मैं बनाता कैसे ।
सोनरी-लाओ गठरी खोलो । आपस में मिल बांट लेतें हैं ।
प्रेमनाथ-आओ कहते हुए बगल में हाथ डाल दिया ।
सोनरी- खिलखिलाकर हंस पडी । उसे गुदगुदी छूट रही थी पति के बसन्त से प्यार के झोके का सुख भोग कर ।
प्रेमनाथ-एक लम्बी सांस खींचा जैसे रात रानी की खुश्बू उसके नथूंनों में समा गयी हो । वह निहाल हो रहा था सोनरी के बदन से लग कर ।
सोनरी-अरे इतनी लम्बी लम्बी सांसे क्यों खींच रहे हो ।
प्रेमनाथ-खुश्बू का झोका जो आ रहा हैं ।
सोनरी-कहां से ।
प्रेमनाथ- मेरी कस्तूरी से ।
सोनरी- वो कौन हैं । कहा रहती हैं ।
प्रेमनाथ- मेरे ही दिल में रहती हैं । मेरे तन से चिपकी हुई हैं ।
सोनरी-धत कैसी कैसी बाते करते हो ।शर्म नही आती है तुमको ।
प्रेमनाथ-भला शर्म क्यों आएगी । अपनी जीवन संगिनी के प्रेमरस में निहाल हो होकर डूब रहा हूं । अच्छी नही लगती हैं मेरी बात सच सच बताओ।
सोनरी- तुम्हारी नही तो किसकी अच्छी लगेगी ।
प्रेमनाथ-चल गया तुम्हारा जादू ।
सोनरी-प्रेमनाथ के प्यार में डूबा गले में हाथ डाले कहने लगी । तुम कितने अच्छे हो । ऐसे ना घूर घूर कर देखा करो । तुम्हारी आंखों में झांकने भर से ना जाने भय क्यो लगने लगा है ।
प्रेमनाथ-क्या तुको अपन आदी पर यकीन नही है ।हम एक दूसरे के भरासे ही तो जीवन जंग को जीतना है ।भला मेरी आंखों मे तुमको कुछ और नही दिखायी दो है । भय दिखायी दा हैं कैसे ।
सोनरी -चोरो की तरह देखते हो। मुझे शरम आती हैं बार बार की ताक झांक पर तुम्हारी ।हरदम भौर की तरह तुम भी तलाश मे ही रहते हो ।
प्रेमनाथ-सच मैं तो हूं ही । तुम्हारा रस चूसने वाला भौरा ।
दोनो एकाकार होकर खो गये । आंखों में नव नव सपनो लिये सो गये । अभी पहली नीदं के पलने में झुलना शुरू ही किये थे कि मुर्गियां जोर जोर से चिलाने लगी । मुर्गियों के चिल्लाते ही सोनरी उठ बैठी और प्रेमनाथ को जगाने लगी ।
प्रेमनाथ-हडबडा कर आंख मलते हुए बोला अरे क्यों जगा रही हो भागवान । देखो रात अभी बहुत बाकी हैं । सो जाओ । चांदनी भी जवान हैं और हम तुम भी ऐसे पल का आनन्द लेने की बजाय चिकोटी काट रही हो । कितना अच्छा सपना देख रहा था भंग हो गया । तुम्हारे साथ इन्दरलोक का सुख भोग रहा था।

सोनरी-अरे मेरे राजा जी सपने से हकीकत में आओ । मुर्गियों को सम्भालों । कब से चिल्ला रही हैं । इतना कह कर सोनरी झटपट डेबरी ।चिमनी । जलाने के लिये बोरसी।आग का पात्र। की आग जलाने लगीे । इतने में प्रेमनाथ खटिया से उतरकर दरबे को तरफ कदम बढाया ।

सोनरी-देखो एक कदम भी आगे पैर नही रखना । जहां हो वही खडे रहो । सांप हैं वहां । सांप की आहट पाकर ही मुर्गिया चिल्ला रही हैं । डेबरी जला लेने जाने दो । मैं भी तुम्हारे साथ चलती हूं । डेबरी मैं हाथ में ले लौ हूं तुम हरहकना ले लो । सिरहाने हैं हरहकना भी ।

प्रेमनाथ-जल्दी लाओ डेबरी ।

सोनरी- जल्दी में कोई काम होता है क्या कि डेबरी जल जायेगी । आग है कि जल ही नही रही हैं ।

प्रेमनाथ- तुम्हारी डेबरी तो जल ही नही रही हैं ।

सोनरी- अरे आग जलगी तब ना डेबरी जलेगी ।

प्रेमनाथ- आग जलाओ ।

सोनरी-लोग आग भी जल गयी और डेबरी भी । लाठी हाथ में ले लो ।मैं डेबरी लेकर चलती हूं । दरबे के आसपास सांप तो हैं । सावधनी से चलना नीचे देखकर ।

प्रेमनाथ-तुम तो मास्टरानी लग रही हैं ।

सोनरी- बताना तो पडेगा ही चाहे मास्टरानी समझो या नौकरानी ।

प्रेमनाथ-ना मास्टरानी ना नौकरानी मेरे दिल की रानी ।ं

सोनरी-देखो तुम्हारी बकबक सांप भी सुनकर घबरा जायेगा ।

प्रेमनाथ-अरे बाप रे हमने तो सांप के विषय में सोचा ही नही ।

सोनरी-तुम तो बडे अक्लमंद समझ रहे थे ।

प्रेमनाथ-क्या तुमने अक्ल पायी हैं ।तनिक भर में तो भारी नुकसान हो जाता । सांप की फुफकार से ही मुर्गिया मर जाती । गरीबी में आटा गिला हो जाता ।

सोनरी-लाठी सम्भालो । सांप अभी दरबे में नही घुसा हैं ।

सोनरी और प्रेमनाथ दरबे के पास पहुंचे भी न थे कि दूर से ही उन्हे दो हाथ का मोटा सा सांप दरबे पर चढते हुये दिखायी पड गया । प्रेमनाथ कूद गया । सोनरी और प्रेमनाथ की आहट पाकर सांप सर्रसराता हुआ निकल गया । पता ही नही चला किधर चला गया ।

प्रेनाथ दरबे का ढक्कन खोलकर हाथ डालने लगा ।

सोनरी-प्रेमनाथ का हाथ जोर से झटकते हुए बोली यह क्या कर रहे हो ।

प्रेमनाथ-क्या गलत कर दिया ।

सोनरी-क्यो गलत नही कर रहे हो ।

प्रेमनाथ-मुर्गियों को देखना गलती हैं ।

सोनरी-नही कहां गलती हैं ।कहीं सांप दरबे में हो तो ।

प्रेमनाथ-धत तेरी की । मैं ये सब बाते क्यो नही सोचता । जितनी बारीकी से तुम सोचती हो ।

सोनरी- छोडो बक बक करना ।डेबरी के उजाले से देखो। मुर्गियां सुरक्षित हैं । सांप चला गया ।

प्रेमनाथ-हां ये बतासपंक्षी कहां एक जगह टिकते हैं । तनिक भर में तो गरीब की लुटिया डुबो देते । बाहर जाता हुआ सांप तो दिखायी ही नही दिया।ना जाने कैसे सर्र से निकल गया हमारे सामने से हम देख भी नही पाये ।हमारे जमीन पर पांव रखते ही सांप को पता चल गया और वह फुर्र से निकल गया। कहां निकल गया । यहां आसपास तो नही हैं ।

सोनरी-सावधानी बरतले में क्या बुराई हैं ।

प्रेमनाथ-ठीक कह रही हो उजाला दिखाओ ।

सोनरी दरबे के मोहाने पर डेबरी दिखाने लगी ।

प्रेमनाथ बोला- भगवान का शुक्रर हैं मुर्गियां बच गयी हैं। थोडी देर और हो जाती तो सब मर जाती।कुछ आमदनी तो इन्ही मुर्गियों से हो जाती है । तनिक भर में तो सांप हमारी उम्मीदो पर वज्रपात कर जाता ।

सोनरी-अरे तुम जैसे पहलवान की डर से सांप भाग ही गया ।

प्रेमनाथ- क्यों मजाक करती हो । सांप तो तुम्हारी वजह से भागा हैं।

सोनरी- अरे नही । तुम्हारे बाजू में इतना दम हैं कि सांप कहां लगता हैं । लोग तुमसे घबरा जाये । जानवर जीभ निकल दे तुम्हारे एक मुक की मार से ही सच तुम बडे पहलवान हो ।

प्रेमनाथ- आखिरकार तुम्हे भी पता चल ही गया मेरी ताकत का । अच्छा सच सच बताओ मजाक तो नही है कोई ।

सोनरी-नही सची मुची । कोई मजाक नही ।

प्रेमनाथ-बहुत मक्खन लगा रही हो । क्या इरादा हैं । चलो सो जाओ ।

सोनरी- अब तो सोना ही होगा । नीद खराब हो गयी ।

प्रेमनाथ-चलो बिस्तर पर नींद आ जायेगी ।

सोनरी-क्यों नींद के हकीम हो ।

प्रेमनाथ-प्रेम पुजारी कहो । हकीम नही ।

सोनरी-कब से पुजारी हो गये वह भी प्रेम के ।

प्रेमनाथ-जब से तुम्हारे मोहफांश में पडा ।

सोनरी-अच्छा तो अब पुजारी हो गये ।

प्रेमनाथ-सबूत दूं ।

सोनरी-ना बाबा ना। सो जाओ । सुबह उठकर काम धंधा भी तो करना हैं ।

प्रेमनाथ-ठीक हैं ।

दोनो एक दूसरे के गले में हाथ डालकर सो गये । कुछ देर के बाद ही चोर चोर का ाोर मचने लगा । चोर आगे आगे गांव वाले पीछे पीछे भाग रह थे । प्रेमनाथ की नींद टूट गयी । सोनरी बेधडक सोई हुई थी । प्रेमनाथ सोनरी को जगाते हुए बोला -अरे तुम घोडा बेचकर सो रही हो बस्ती में चोर उपद्रव मचा रहे है ।

चोर का नाम सुनते ही सोनरी हडबडा का उठ बैठी । अपने गले पर हाथ फेरते हुए बोली चलो अच्छा हुआ हंसुली तो बच गयी । पहन कर सोने से कुछ तो फायदा हुआ वरना चोर ले उडता ।

प्रेमनाथ-मैं बाहर देखता हूं ।

सोनरी- बिल्कुल नही । चोर आसपास हो तो ।

प्रेमनाथ-बाहर नही जाने दे रही हो तो । डेबरी कहां रखी हो जलाओ । डेबरी जलने के बाद ही बाहर जाता हूं ।

सोनरी-डेबरी जलने पर ही किवाड खोलना । चोर मेरी हंसुली ले भागा तो । छिना छपटी में मेरी गर्दन उडा दिया तो भागते रहना चोर के पीछे पीछे । पानी में लाठी पीटते रहना । थोडी सी तसल्ली नही रख सकते क्या । हर काम में जल्दी मचाने लगते हो । अफरातफरी मचाते देते हो ।

प्रेमनाथ-जैसी आपकी आज्ञा देवी जी । यह गुलाम आपकी हिफाजत में अपना गला कटवाने को तैयार हैं ।

सोनरी-कैसी अशुभ बाते करते हो । लो डेबरी जल गया । दरवाजा खोलो।

प्रेमनाथ-अब तो दरवाजा खोलने का मन ही नही हो रहा हैं ।

सोनरी-क्यो चोर चले गये ।

प्रेमनाथ-चोर जाये भाड में । अब तो इरादा बदल रहा हैं ।

सोनरी-ज्यादा इरादा ना बदलो । जल्दी करो । दरवाजा खोलो । पूरी बस्ती के लोग बाहर खडे हैं । क्या कहेगे । तुम ना जाने क्या सोचने लगते हो । अपने इरादे को मजबूत बना कर रखा करो ।

प्रेमनाथ-ठीक हैं कोिशश करूंगा । अब तो दरवाजा खोल दूं । बहर निकलू । अच्छा मंैं बाहर निकलता हूं । तुम दरवाजा अन्दर से बन्द कर लो । मैं माजरा समझ कर आता हूं । अपना ध्यान रखना । ठीक हैं। मैं आता हूं ।

बाहर निकल कर प्रेमनाथ देखता है कि गन्ने के चारो तरफ लोग घेरे हुए हैं यह मानकर कि चोर इसी गन्ने के खेत में लुप्त हो गये हैं ।लोग हो हल्ला कर रहे थे । हां चोर भागते भागते खाली बक्षा फेंक गये थे । सारा समान गहना गरिया लेकर चंपत हो गये थे । प्रेमनाथ भी वापस आ गया । जिसके घर चोरी हुई थी वहा रोना चिल्लाना मचा हुआ था ।

प्रेमनाथ-दरवाजा खटखटाया ।

सोनरी-दरवाजे की खाली जगह से झांकने लगी ।
प्रेमनाथ बोला- मैं हूं ।दरवाजा खोलो ।
सोनरी दरवाजा खोली ।वह घबरायी हुई थर्र थर्र कांप रही थी । चोर का भूत उसके सिर पर जैसे तांडव कर रहा हो ।
प्रेमनाथ-क्यो इतना घबरा रही हो । चोर तो भाग गये ।
सोनरी-भाग गये सचमुच ।
प्रेमनाथ-हां भाग गये । चोरी पास वाले गांव मे हुई हैं । तुम क्यो पसीने पसीने हो रही हो । वह सोनरी के माथे से बह रहे पसीने को पोछने लगा ।
सोनरी प्रेमनाथ से लिपट गयी । घबरायी हुई बोली हंसुली बंची लाखों पायें ।

॥ नौ॥

हंसुली के चारी होने का डर सोनरी क दिल में बैठ गया । दूसरी तरफ दीनानाथ को हसुली की उधारी दन का । एक दिन दीनानाथ चुपचाप कुएं की जगत पर बैैंठकर कंकड उठा उठाकर फेंके जा रहा था । इस तरह बेचैन कंकड फेकते हुए देखकर सुखिया की चुन्नी गरम हो गयी । हवाईयां उडने लगी बेटे को इस तरह देखकर । वह इस चटकन से गश खाने की स्थिति में आ गयी पर सम्भल गयी । सम्भलेत हुए दीनानाथ के सामने खडी हो गयी । दीनानाथ मां की आहट से बेखबर कंकड उठा उठाकर फेंके जा रहा था । सुखिया पत्थर की मूर्ति बनी रही । दीनानाथ को ध्यान ना थी । वह लगातार कंकड फेके जा रहा था । एक कंकड सुखिया के पैर पर जा गिरा। वह छटपटा गयी । उसके मुंह से आह निकल गयी । मां के आह की अावाज सुनकर दीनानाथ के कंकड फेकने का क्रम टूटा ।
सुखिया-बेटा दीनानाथ क्या हाल बना रखा हैं । क्यो परेशान हो ।
दीनानाथ-मां की बात सुनते ही भडक उठा । बडबडाते हुए कहने लगा । अरे औरतो को ना जाने गहने का इतना मोह क्यो रहता है । अपनी औकात देखती नही गहने के मोह में मरती रहती हैं । मरते दम तक भी गहने का मोह नही छोडती ,जबकि मरने के पहले लोहे तक की मुनरी निकाल ली जाती हैं ।
सुखिया-डांटते हुए बोली अरे तेरी मां तो तेरे सामने खडी हैं । वह भी तो एक औरत है कौन सा गहना अपनी कमाई से बनवा कर दिया हैं । औरतो को बदनाम कर रहा हैं । अरे औरत इतनी निप्ठुर तो होती नही की बुरे दिनों में गहना के सहारे घर परिवार के लिये न देती हो । जरूरत पडने पर तो इस गहने का उपयोग तो मर्द ही करते हैं ना । जो मन में आया बके जा रहा हैं । बेटा बता तुमने अपनी मां के लिये क्या गहना बनवाया है आजतक । अरे तेरे बाप गढवा ही नही पाये तू क्या गढवायेगा । खाली बडी बडी बाते करता रहता है । औरत जात को बदनाम कर रहा है।कुछ ो बटा शरम किया कर । कोई गहना गढवा कर दिया है अपनी मां का आज क ता बता । अपनी तो

किस्मत ही खोटी है । तेरे बाप नही गढवा पाये तो तुमसे क्या उम्मीद करूंगी मैं । तुम चारो अपनी घरवालियों को गहना पहिनाकर खुश रख लो । इसी में मै खुश रहूंगी बेटा । दीनानाथ मां के ताने से आहत हो गया । उसके दिल में मानो तीर आरपार हो गयी । वह तिलमिला उठा ।दीनानाथ बोला मां आलतू फालतू की बातें कर मुझे घाव ना दो । मै। तो वै ेा ही परेशान हूं । एक भाई के ब्यहृ का कर्जा चैन नही लेने दे रहा हैं । तू है कि जख्म और खरोंच रही हो । हंसुली का बाकी रूप्ाया खिचडी ।मकरसंक्रान्ति। तक देना हैं । इसका ख्याल हैं । खिचडी सिर पर खडी हैं । सोनार का पैसा चुकता करना जरूरी हैं । रूपया देने की जबान दे चुका हूं । मां तू है कि तुम्हेगहने का चाह लगने लगी हैं । इस उम्र में भी । सच ही किसी ने कहा हैं औरत जात को रोटी भले ही ना मिले पर पहनने को गहना जरूर चाहिये ।

सुखिया-क्या कहा बेटा इस उम्र में । तू बता कभी इच्छायें बूढी हुई हैं । नही ना । मेरी कहां से होगी । बेटा तू सच कह रहा है । इच्छा तो होती ही है। । हां यह बात अलग है कि पूरी भी होती हैं कि नही भी । मालूम हैं बेटा गरीबो की जिन्दगी जोडते तोडते ही बितती है । हम तो वैसे ही भाग्यहीन हैं । आदमी ना जाने कहां खो गया । लौटा ही नही । बीस साल हो गये । नन्हे नन्हे तुम बहन भाईयों को किस तरह पाली हूं । तुमको तो याद ही होगा । तुम ही तो थोडे सयाने थे । बाकी तो सभी छोटे छोटे ही थे । मेरी सारी तमन्नायें सुलग गयी बेटा अपने ही दिल में । रोटी भर पेट मिल जाये वह कम हैं क्या । गहना कहां से मिलेगा । हम तो किस्मत के मारे हैं । अरे इतने किस्मत के धनी होते तो राजा महाराजा के घर पैदा ना होते ।

दीनानाथ- मां क्यों जूते मार रही हैं सिर पर मेरे ।

सुखिया- बेटा सही कह रही हूं । इसे तू जूते मारना मानता हैं ।

दीनानाथ- और क्या कहूं मां ।

सुखिया-बेटा हर औरत की इच्छा होती हैं कि वह गहने से लदी रहे तेरी बात तो सही हैं पर होना भी तो चाहिये । हां कुछ की पूरी हो जाती है कुछ बेचारी गरीब जिन्दगी भर तरसती रहती हैं । यह तो उपर वाले की लीला है ।

दीननाथ- हां मां काश बापू जिन्दा होते तो लालसा पूरी हो जाती ।

सुखिया- बेटा यही तो नसीब नही था ना ।

दीनानाथ-मां आखे ही नही खुली कि खुद को मेहनत मजदूरी करते पाये ।

सुखिया- हां बेटा ठीक कह रहा हैं ।

दीनानाथ- जन्म लेते ही बदनसीबी चौखट पर आ पडी मां ।

सुखिया-बेटा जो हैं समझौता तो करना ही पडेगा । तभी तो जी सकेगे ।

दीनानाथ- हां मां वही तो कर रहा हूं ।

सुखिया- बेटा कमाओ तरक्की करो । मेरी दुआ हैं । बस दुआ ही तो दे सकती हूं । बाकी धन तो देने के लिये हमारेे पास नही हैं ।

दीनानाथ-हां मा वह तो कर ही रहा हूं । तुम तो देख ही रही हैं जो कुछ कमा कर लाता हूं घरपरिवार पर ही खर्च हो रहा हैं । इसी कुफुत में घरवाली अपने बाप के घर जा बसी हैं । उसकी जरूरतो के लिये घरपरिवार को नही छोडा । ना ही उसे गहना गढवाकर दे पाया । वह बच्चों को लेकर चली गयी । मैं किसको किसको गहना गढवाऊॅं । मां तुम हो कि काशीनाथ के ब्याह पर अडी पडी हो । उधर एक हंसुली का पैसा बाकी हैं । मेरी समझ में ही नही कुछ आ रहा है कि क्या क्या करूं ।

सुखिया-अरे वाह बेटा तुम तो ऐसी बात कर रहा हो जैसे तुमने मुझे चन्द्रहार गढवाकर दे दिये हो ।अरे जिसकी कमाई से भरोसा था वह ही ना जाने किस हालात में कहां चला गया ।किस परिस्थिति का शिकार हो गया । बेटा तुम लोग क्या बनवाओगे हमारे लिये।अपना परिवार बढिया स पाल लो । उन्हे लायक बना लो यही ेरे लिये गहना होगा ।

दीनानाथ-मां क्यों खून के आंसू दे रही हो ।

सुखिया-क्या कह रहे हो बेटा । तुम्हारे दुश्मनों को भी ना खून के आंसू बहे । भला मैं तुमको ऐसा क्यों कहूंगी ।

दीनानाथ-मां एक भाई के ब्याह में एक हंसुली बनवाया । वह भी उधारी में ।तू है कि थप्पड मारे जा रही हैं । चन्दहार का ताना दे रही है । कितना बदनसीब हूं मैं कि अपनी मां की तमन्नाओं को भी पूरा नही कर सकता ।

सुखिया-अरे बेटा तू कहा से देगा । तेरे बाप तो दे ही नही पाये । तुम लोग तो अपनी औरतो को गहने गढवा दो । उनकी लालसा पूरी कर दो । मैं समझूंगी कि मैंने ही पहन लिया । मेरे लिये किसी तीर्थ से कम ना होगा ।

दीनानाथ-मां आज तक कोई पूरा कर पाया है । हम गरीब कहां से पूरा कर पायेगे गहने की लालसा ।

सुखिया-मर्द लोग बस औरत जात की कमियां निकालते रहते है । अरे इसके आगे पीछे भी कभी साेचते तब ना पता चलता । ये गहना औरत के लिये कितना जरूरी हैं शरीर और स्वास्थ के लिये । अरे पुरखों ने ऐसे ही तो गहने औरते के लिये नही बनवाये होगे । उपर से हारेगारे काम भी तो बहुत आता हैं गहना । तुम सारे मर्द औरतों के गहने के पीछे पडे रहते हो ।

दीनानाथ- मां जो कह रही हो ठीक होगा पर अपनी हैसियत भी तो देखना चाहिये ।

सुखिया-क्या कहा ।

दीनानाथ- मां मैंने जो कहा सुना नही क्या ।

सुखिया-क्या बहरी हो गयी हूं ।

दीनानाथ- नही मां हमने तो ऐसा कुछ नही कहा ।

सुखिया-क्या कहोगे । हैसियत की बात कर रहे हो । तुम चार भाईयों की इतनी हैसियत नही कि अपनी बहू बेटियों को ब्याह गौने में गहने तक ना चढा सको । रोते रहते हो ।

अच्छी बात नही है। कमाओ खाओ और बचाओ । अरे यह नही कि गांजा दारू में उडाओ । अरे ब्याह गौने में तो लडकी को गीने से लादा जा सकता है। ऐसा तो नही कि औरत तुम्हारी दी हुई थाती को बेचकर खा जाती हैं । अपनी जान से ज्यादा हिफाजत करती हैं । बुरा समय आने पर कुर्बान भी तो कर देती हैं ।

दीनानाथ-मां तू अपना गुस्सा मेरे उपर क्यों उतार रही हो ।

सुखिया- बेटा गुस्से की कोई बात ही नही हैं । मंैं तो हकीकत बयान कर रही हूं ।

दीनानाथ-मां मेरी परेशानी को तुम अच्छी तरह जानती हो ।

सुखिया-इसका मतलब कि तुम चारो बैठो घर में मैं मजदूरी करके तुम्हरी जरूरते पूरी करो ।

दीनानाथ-मां क्यों नरक में ढकेल रही हो ।

सुखिया-सही बात खराब लगती हैं ।

दीनानाथ-मां गहना से तो अपनी औरतो को धनिखा लोग ही लाद सकते हैेंं । हम मजदूरो के बस की बात कहा ।गरीबों के लिये रोटी के साथ मिर्च मिल जाये वही बहुत हैं । मां तुम ही बताओ अपने पास कौन से जमीदारी हैं कि उसके भरोसे हम जरूरते पूरी करें।ं हाडफोड मेहनत से तो बस रोटी ही नसीब हो सकती है । पिताजी के गुम होते ही सारी जिम्मेदारी मेरे माथे आ पडी। इसके बाद भी सारी जिम्मेदारी उठाया कि नही ।ब्याह गौना भाइयों का किया । हां भले ही ज्यादा गहना नही चढा पाया कुछ तो दिया । मां तू है कि मुझे निखट्टु मान बैठी हैं ।

सुखिया- बेटा मैेंं तो ऐसा कुछ भी नही कही ।

दीनानाथ-अब कैसे कहोगी मां ।

सुखिया-बेटा मैं तो ऐसा कुछ भी नही कही । हां इतना जरूर कह रही हूं कि ब्याह गौाना में चढाया गया गहना एक सुरक्षित पूंजी होती हैं और मर्यादा भी ।

दीनानाथ- मां इस पूंजी को बनवाने के लिये भी तो पूंजी की जरूरत होती हैं ।

सुखिया-बेटा सब काम से बडा यह काम होता हैं । इस काम में हमारी संस्कृति ,परम्परा समाहित होती हैं और एक सुरक्षित पूजीं तो होता ही हैं गहना । रूपश्रृंगार तो गहना बढाता ही हैं । यह तो जग जाहिर है । तभी तो औरत का गहने के प्रति अथाह मोह होता हैं ।

दीनानाथ-मां तू ठीक कह रही हें पर गहने खरीदने के लिये धन भी तो चाहिये । यहां तो पीढियों से गरीबी चौखट पर पसरी पडी हैं । उसका कोई इलाज ही नही मिल रहा हैं ।

सुखिया- इलाज तो हैं पर ।

दीनानाथ-पर क्या मां ।

सुखिया-हमारी छिनी हुई सम्पत्ति वापस मिल जाती । हम मूल वासियां को स्वार्थ सत्ता के मोह में हाशियं पर लाकर पटक दिया है बूढी एवं सामाजिक बुराईयां के पोषको ने ।हमे तो रंक बनाकर रख दिया हैं अमानुषो ने ।

दीनानाथ- अब तो सपना हा गया है ।मां बडा कठिन काम हैं वापस मिलना ।हम दोयम दर्जे के होकर रह गये है । हम तो अपने ही धन धरम और जमीन से बेदखल हो गये है ।गरीबी की आग मेें सुलग रह है । काश धन और धरती पर फिर से हमारा कब्जा हो जाता तो मां तुमको चांदी की ही नही सोने की हंसुली गढवाता । यह तो सत्ता परिवर्तन से ही सम्भव हैं पर वे लोग भी नही चाहेगे । हां इतना कर सकते हें खैरात के नाम पर दो चार बीसा उसर दादर दे दे बस । लेकिन इससे कुछ नही होगा । हमें तो अपनी जमीदारी चाहिये पर वह अब मुमकिन नही हैं । बस अपनी मेहनत मजदूरी के बलबूते नया आसमान गढना होगा । बाप दादा का जो भी था उस पर अतिक्रमण हो गया । इसके बाद भी गरीबी का दंश झेलते हुए भी हमने अपनी बहू बेटियों के लिये कुछ ना कुछ गहने तो गढवाये ही है मां । प्रेमनाथ के ब्याह में गुदरी बाबा ने भी तो अपनी बेटी को कुछ तो दिये ही हैं ।

सुखिया-बेटा दीनाथ बेटी वाले हजार दे दे पर लडकी की चाहत तो अपने पति के घर से होती हैं ।ब्याह गौना ही ो ऐसा मौका होता हैं जब बह बेटी को गहना मिलता है ।बहू बटी तो बस गहन की रखवाली करती है । मौका आने पर उतार कर दे भी तो देती है घर परिवार की मुसीबत के दिनों में।औरत जात तो अपने मोह का भी त्याग करने से नही चूकती । उसके लिये घर परिवार ही तो सब कुछ होता हैं ।अगर गहने से मोह रखती भी हैं तो कहां वह अपन साथ ल जाती है । घर परिवार के बीच ही तो छाेेडकर जाती है।

दीनानाथ- हां मां बात तो सच कह रही हो ।

सुखिया- बेचारी लडकी चुटकी भर सिन्धूर के भार से दब जाती हैं । वह अपने मां बाप का घर छोडकर परायी हो जाती हैं । उसकी तसल्ली और सुरक्षा के लिये तो कुछ चाहिये की नही पति के साथ।

दीनानाथ- हां मां जरूर चाहिये । क्यो नही चाहिये । कितना बडा त्याग करती हैं । अनजान घर परिवार के लिये समर्पित हो जाती हैं । लेकिन मां खुश रहने के लिये गहना ही तो जरूरी नही हैं सुखिया- बेटा मेरी बात नही समझा तू ।

दीनानाथ-समझ गया मां ।

सुखिया-क्या ।

दीनानाथ-औरतो का मोह गहने से अधिक होता हैं पर उसमें कही ना कही संस्कृति की रक्षा होती हैं घर परिवार का कल्याण होता है । कही परम्परा की । कही दायित्व की । कही सुरक्षा की । कही स्वास्थ की । कही पूंजी के ंसंचय का नेक इरादा होता है । यही ना मां ।

सुखिया-बेटा जो समझा ठीक ही हैं । लेकिन याद रखना औरत को कभी कम नही आंकना । ना बदनाम करना । किसके लिये वह गहना पहनती हैं । किसके लिये परम्परा का निर्वाह करती हैं । किस की संस्कृति की रक्षा में त्याग करती हैं । किसकी आन मान

के लिये खुद को स्वाहा कर देती हैं सिर्फ मर्द समाज द्वारा बनाये गये रीतिरिवाजों के लिये ना ।

दीनानाथ- हां मां समझ गया औरत के त्याग को ।

सुखिया -बेटा तू क्या पूरा मृत्यु लोक ही नही देवलोक तक मानता हैं ।

दीनानाथ-हा मां कहते हुए कुयें की जगत से उठा और चल दिया हंसुली की रकम चुकाने के बदाेबस्त में ।

॥ दस॥

दीनानाथ हसुली के कर्जे के भारत स जैसे बूढा हुये जा रहा रहा था अक्सर वह दर से आन लगा वह कर्जा भरने के बन्दोबस्त में लगा रहता एक दिन उसको आते ही सुखिया रास्ता रोककर खडी हो गयी और डाटत हुए बाली-बेटा दीनानाथ कहां से आ रहे हो । कब से परेशान हो रही थी । तुम्हारा रास्ता देख देख आंख दुख गयी बेटा ।कहां चला गया था । कुछ तो बता के जाते कहा जा रहे हो । कब तक आओगे ।

दीनानाथ-कही तो नही मां ।

सुखिया-कही नही । अच्छा तो मेरा बेटा मुझसे ही छिपा रहा हैं । अब बडा हो गया है मेरा बेटा । रकम का इन्तजाम हो गया ।

दीनानाथ- मां अभी तो नही । मां तू चिन्ता ना कर हो जायेगा जल्दी ही । मैं उसी बन्दोबस्त में लगा हुआ हूं ।

सुखिया-बेटा सूदी रूपाया नही लेना । हां भले ही देर में देना और मोहल्लत ले लेना पर एक कजार् भरने के लिये दूसरा कर्जा लेना समझदारी नही होगी । ये साहूकार लोग तो सूद पर ही पलते हैं । बेटा मूल धन से अधिक तो इनका सूद ही हो जाता हैं । तीन के तेरह कर लेते हैं । बेचारा कर्जदार गुलाम बना रहता हैं ।

दीनानाथ मां ठीक तो कह रही हो पर करे क्या ।

सुखिया-बेटा मेरे इस गिलट के कडे से कर्ज भर जाये तो ले जाओ ।

दीनानाथ- ना मां ना ऐसा ना कह । तेरे गिलट के कडे हो या सोने के तेरे जीते जी तो नही बिकेगे । मां तेरे पास तो वैसे ही कोई मजबूत गहना हैं भी नही । जो कुछ था हम लोगों के पालने पोसने में लगा दी । मां तेरे पास एक कडा और पाव भर चादी की हंसुली ही बची हैं अब तो इसे दांत से दबा कर रखो मां।

सुखिया-बेटा कर्जा भरने के लिये तो कुछ ना कुछ तो करना ही होगा । यदि ज्यादा देरी हुई तो एक के दस होने में देर ना लगेगी ।

दीनानाथ- हां मां मैं भी समझ गया हूं साहुकारो को । बेचारे अनपढ लोगो से अगुठा लगवा कर धन धरती सब हडप लेते है उपर स इज्जत स ीाी खिलवाड करते है ।

सुखिया-बेटा साहूकार लोग तो सौ देकर हजार पर अंगुठा लगवा लेते थे । अब लोगो में थोडी सी जागरूकतता आयी हैं पर क्या करेगा गरीब आदमी छल बल धन सब तो उनके ही पास हैं ।

दीनानाथ- हां मां यह भी तो बात हैं । गरीब जाये तो जाये कहां आगे कुआ पीछे खाई । दोनो तरफ मौत ।
सुखिया-हां बेटा वो बडा बडा चन्दन का टिका तो बस दिखावा होता हैं । इन साहूकारो का । बेचारे गरीब भोले भाले इनके शिकार बन जाते हैं । इनकी तिजोरी हमेशा भरी रहती हैं । गरीब के घर न तो खाने को ना पहनने को । हां खाने को धोखा और पीने को गम के अलावा और कुछ तो होता ही नही ।
दीनानाथ- मां आदमी कर्ज तो किसी ना किसी मजबूरी में ही लेता हैं । खैर हमने कौन सा ज्यादा कर्ज लेकर सोनरी को अधिक गहना दे दिया हैं । वैसे गहना तो और होना ही था पर नही हो पाया ।दुल्हन के पास तो रकम तो होना ही चाहिये । यही संचय तो बहुत काम आता हैं । क्यों मां
सुखिया-हां बेटा। लेकिल अपनी किस्मत ऐसी कहां ।
दीनानाथ-मां अपने भी पास किसी जमाने में कम तो नही रहा होगा । जग दादा परदादा के पास जमीन पर मालिकाना हक रहा होगा । मां यह सब तो बाद में हुआ हैं । धीरे धीरे जमीदारो साहूकारो ने अगूठा जोरजर्बदस्ती लगवा कर सब हडप लिये । किसी ना किसी समय तो हमारे ही पुरखे इस देश के राजा महाराजा तो थे ही ।
सुखिया- रहे होगे । हमने तो नही देखा । बस गरीबी भूखमरी,,उत्पीडन ,छल कपट और आदी के बीच लकीरां के हमें तो और कुछ नही देखने को मिला हैं अभी तक ।
दीनानाथ- हां मां पर देखना एक ना एक हम लोग जरूर तरक्की करेगे । अपनी छिनी हुई जायदाद वापस ले लेगे अपनी मेहनत,दूरदृष्टि और नक इरादे के बल पर और खुद के खून पसीने से की गयी कमाई से । मां भगवान के दिये हुए हाथ पांव सलामात हैं । मेहनत मजदूरी करके चूल्हा तो गरम ही कर लेते हैं । बढिया नही हैं तो क्या तन ढंकने का भी इन्तजाम तो हो ही रहा हैं । मां जीवन यापन तो हो ही रहा हैं ।
सुखिया-हां मेरे लाल । तुम ही लोग तो हमारे सबसे कीमती गहने हो ।
दीनानाथ-मां मेहनत मजदूरी तो कर ही रहे हैं । देखो परिश्रम कब तक रंग लाता हैं ।
सुखिया-बेटा हमे मलाल नही है कि हमारे पास सोने हरे मोती नही हैं । हमे खुशी है कि हमारी आलादे लायक हैं ।
दीनानाथ-काश पिताजी ना बिछुडते ।
सुखिया-बेटा होनी को कोई नही रोक पाया हैं । बाप के बिछुड जाने के बाद भी तुम चारो भाई साथ रहकर पेट परदा चला रहे हो । खुशी की बात नही तो और क्या हैं । मन प्रफुलित हो जाता हैं । तुम सबको देखकर । बस काशीनाथ का ब्याह गौना हो जाये । वह भी अपनी जिम्मेदारी समझ जाता ।बेटा तुम लोग आस्था विश्वास के साथ लगे रहो । तुम लोगो की सेर भर कमाई में सोना बरसेगा जरूर ।

दीनानाथ- हां मां । दुनिया ही तो आशा पर ही टिकी है । हम भी आशा मे ही जी रहे है ।दुख है कि अपनी किस्मत कैदी होकर रह गयी है । गमो में तो जीना मरना लिख गया हैं अपनी तकदीर में सच मां,

गमों के दौर हैं, मेरा क्या कसूर,
हालात के सताये हो गये मजबूर ॥
छांव की आस, धूप में बहुत तपे हजूर,
बदकिस्मती हमारी काटें मिले भरपूर ॥
शूल पर चलना,मान बैठा दस्तूर ,
आसूओ से खेलना,तकदीर बन गया हजूर ॥
टूटे हुए ख्वाब,उम्मीद से खडा हूं बहुत दूर,
गमों के दौर हैं,मेरा क्या कसूर.।।

सुखिया-बेटा गमों के बादल जरूर छटेंगे ।देखना आने वाले समय में तुम अपने नाती पोते पोतियों के ब्याह में खूब गहना गढवाओगे ।

दीनानाथ- हर बात में गहना लाती हो ।बिना गहना के ता बात ही पूरी नही होती है ।

सुखिया-बेटा जमाना बदल गया हैं । जब मैं इस घर में आयी थी तो देश गुलाम था । सोनरी जब आयी हैं तो देश आजाद हो चुका है । तरक्की तो होगी ही देर सबेर ।बेटा जिस दिन औरत ने गहने के मोह को छोड देगी वह उसी दिन अस्तित्व खो देगी । जब तक धरती पर औरत है । जीवन हैं । औरत है तो गहना मोह भी हैं । गहने के बिना औरत अधूरी हैं । औरत के बिना तो संसार की भी कल्पना नही की जा सकती । गहना महत्वहीन हो जायेगा औरत का मोह खत्म होते ही । कोई नही पूछेगा सोने चांदी हीरे मोती को । औरत हैं तो सब मूल्यवान हैं । औरत नही तो सब कुछ व्यर्थ । बेटा दीनानाथ तू है कि कह रहा है कि मां हमेशा गहने की बात करती हो ।देखना वह भी दिन आयेगा जब तुम अपने नाती पोते के ब्याह में सोने की हंसुली चढायेगा । हीरे मोती लुटायेगा ।

दीनानाथ-मां मैं भी तुम्हारी कमजोरी को समझ गया हूं ।

सुखिया- क्या ।

दीनानाथ-हा मां औरत की सबसे बडी कमजोरी गहना होती हैं ना ।

सुखिया-हां बेटा । भाई के ब्याह में एक हंसुली बनवा दिया क्या कि सारी अक्ल आ गयी ।

दीनानाथ-मां बहुत हो गया । अब कोई राय सुझाओ ताकि हंसुली का कर्जा दे सकूं ।

सुखिया-बेटा भीखानाथ को चिटठी तो लिखवा दिया होता कि सोनार का पैसा देना हैं । उसे पता है कि नही कि भाई के ब्याह का कर्जा भरना हैं । उसको भी तो जिम्मेदरी का एहसास करवाओ सारी मुसीबतो खुद के माथे लिये तडपते रहोगे ।

दीनानाथ- हां मां चिटठी तो दिया था । आज तक कोई जबाब ही नही दिया भीखा ने ।

सुखिया- जब भीखा पैसा भेजगा तब वापस कर देना । और कोई उपाय तो नही हैं ।
दीनानाथ-मां कर्जे का सूद तो बढ ही रहा हैं । भीखा भी बदला बदला लगने लगा हैं ।
सुखिया- कैसा बदला बदला रहने लगा हैं । मैं नही समझी ।
दीनानाथ- मां अब तो वह खुद को कमासुत और हमे मक्कार समझने लगा हैं । अब वो भीखानाथ नही रहा बदल गया हैं । उसे लगने लगा है कि उसी के कमाई के भरोसे परिवार चल रहा हैं । प्रनाथ का ब्याह उसी के कमाई के पेसे से हुआ हैं । मांं तुम भी तो जानती हो वह कितनी भारी रकम दिया था प्रेमनाथ के ब्याह में ।
सुखिया- ना बेटा ना ऐसा ना कह । तुम्हारा भाई हैं । भाई भाई का दर्द समझता हैं ।
दीनानाथ- क्या समझता हैं । अरे चाहा होता तो कब का कर्ज भर गया होता । छोटी सी रकम तो हैं । उसे कहा भान है । मैंने अपने लिये तो कर्ज नही किया ना । परिवार के लिये ही किया हूंॅ क्या यही मेरा कसूर हैं । घर परिवार के लिये मै मरू और मेरा ही भाई जरा भी ध्यान न दें ।
सुखिया-बेटा ऐसा नही होगा । कोई मुश्किल में फंस गया होगा । क्यों घबराता हैं जल्दी कर्जा भर जायेगा ।एक नन्ही सी हसुली का कजा्र तुम चार भाई नही भर पाओगे। अरे पगला कहा बडी रकम है तुम हसते हंसते भर दोगे ।हौशला रखो सब दिन बरोबर नही होते ।
दीनानाथ-मां चिन्ता तो मुझे खाये जा रही है ।तुम आश्वासन की आक्सीजन पर मुझे जीवन दे रही हो ।हम तो दया की दौलत पर जी रह है मां भगवान की ।
जानता है वह भी हैं मेरे पास क्या ।
बिगडी तकदीर के मालिक है तरसने के अलावा है क्या ॥
जी रहे है हम भगवान की दया की दौलत पर ।
मेरे दिल पर बोझ झर रही आसूंओ की दौलत झराझर ॥
सुखिया-बेटा चिन्ता ना कर । चिता और चिन्ता दोनो बहने है । चिता एक बार में जला देती हैं चिन्ता धीरे धीरे । हौशला रखसय बदलेगा ।तुम भी सोने चादी में खेलेगा ।
दीनानाथ- हां मां समझता हूं पर क्या करूं होे जाती हैं चिन्ता।
सुखिया-बेटा छोटे से कर्ज के लिये इतनी बडी चिन्ता अच्छी बात नही हैं । अरे भीखा मदद नही करेगा तो मत करे । प्रेमनाथ तो हैं । क्यो बिना वजह चिन्ता करता हैं । तुमने खुद के लिये तो कर्ज किया नही हैं । भाई के ब्याह के लिये किया हैं । अरे भीखा की भी तो जिम्मेदारी बनती हैं कि नही । कहां जायेगा । भरेगा । जरूर भरेगा । कोई चिन्ता की जरूरत नही हैं । बेटा कहावते भी सही बयान करती है । सच किसी ने कहा है ।
भाई भाई का सदा रहा सहारा हर मुश्किल में साथ निभाया है ।
भाई की मति ना हुई भ्रष्ट गर वह लक्ष्मण भी कहलाया है ॥
तकदीर का क्यो मढता दोष वक्त ने खल रचाया है ।

होगे पूरे सपने श्रम की लाठी साथ प्रेमनाथ आगे आया है ॥

दीनानाथ-हां मां उपदेश और सच्चाई में अन्तर होता है । प्रेमनाथ रात दिन पसीना बहा रहा है तब जाकर बडी मुश्किल से तो रोटी का इन्तजा हो रहा है । ना जाने भगवान किस जन्म का बदला ले रहा हैं । मुझे और मेरे परिवार को गरीबी का अभि ाप दे दिया है । दूसरे औरतों के साथ गहने का मोह जोड दिये है ।

सुखिया-बेटा औरतो के साथ गहने का मोह ना होता तो इस सोने चांदी का कोई मोल न होता । बेटा तुमको ये बात कई बार बता चुकी हूं फिर भी तुम एक ही बात रटते रहते हो ।तुम को पता हैं मोह ही तो हैं जा रिश्ते को प्राण वायु देता हैं और ये गहने का मोह रिश्ते की पवित्रता को नया रूप देता है जो आस्था को सुदृढ बनाता हैं ।इतना ही नही संस्कृृति और परम्पराय भी पुर्नजीवित होती रहती है। मर्दो का इतना नही महत्व होता ।बेटा ये सब बाते चिनतन की है । ये औरते ही ता है कि सबको महत्वपूर्ण बना कर सहेजे हुए है।

दीनानाथ-ठीक कह रही हो मां ।

औरत के मोह का क्या बखान करूं ।
हंसी या रोऊं गहने का इन्तजा करूं ॥
तू भी सच कहती मइया मोरी ।
गहना मोह ना बुरा समझ गया मोह तोहरी ॥

सुखिया-हां बेटा औरत की मोह की वजह से ही दुनिया परिवार के धागे में बंधी हुइ्र है । बेटा तुमने तो देवीेदेवताओ की मूर्तियों को भी देखा ही हैं ।

दीनानाथ- हां मां देखा तो हैं । ऐसा क्यो पूछ रही हो ।

सुखिया-बेटा देवियां भी तो गहने से लदी रहती हैं,उन्हे चढावा भी लोग गहने का भी चढाते हैं ।

दीनानाथ- हां मां चढाते तो हैं देवी देवताओ की तरह आज की नारी को भी सोने चांदी के आभूषण से लदा रहना चाहिये। यही ना मां । भले ही घर में फांके चल रहे हो । भगवान अगर नारी के साथ गहने का इतना ही भारी मोह जोडना था तो गरीबी क्यो बनाया ।

सुखिया- बेटा गरीब हो या अमीर सब अपनी औकात के अनुसार ही काम करते है। तुम्ही बताओ देवियों को गहने का इतना मोह हैं ।लक्ष्मी हो या कोई अन्य देवी सभी गहनो से लदी रहती हैं तो हम औरतो को गहने का मोह नही होगा क्या ।

दीनानाथ- हां मां लेकिन.......

सुखिया-लेकिन क्या बेटा ।

दीनानाथ-मां देखो गहने की चाहत से राहत चाहता हूं ।

सुखिया-क्यों ।

दीनानाथ- मां एक हंसुली बनवाकर परेशानी में पड गया हूं । मां तुम हो कि तुम्हे गहने के अलावा कुछ सूझता ही नही उपर से नालायक काशीनाथ का ब्याह करन का दाव बना रही हो ।

सुखिया-बेटा मैंें तो पहले ही कही थी कि कर्ज उतारने के लिये मेरे गिलट के कडे बेंच दो । तुम मेरी बात माने ही नही । यही कडे तो तेरे बाप की निशाानी हैं । इन्हे भी तुमको खशी खुशी देने को तैयार हूं ।

दीनानाथ- मां क्यों बार बार चोट करती हो ।

सुखिया-बेटा मैं झूठ तो नही बोल रही हूं । बेटा मेरे पास इसके अलावा और कोई कीमती गहना बचा तो नही हैं ।तुमसे कुछ छिपा तो नही हैं । बेटा मेरा भी मन करता है कि मैं भी अपनी बहूओ को महंगे महगे सोने चांदी के गहने बनवाकर दूं । हार जाती हूं अपनी गरीबी से । मैं भी गहना पहन सकती हूं । नसीब में ही नही लिखा है तो मैं क्या करूं। नसीब में तो गरीबी लाचारी लिखी है उसी का दंश झेल रहे हैं हम सभी । मेरे पास तो बस गिलट के कडे के अलावा और कुछ नही बचा हैं बेटा मेरी लाचारी का माखौल ना उडा ।

दीनानाथ-मां बार बार कडे को क्यो बेचने को कहती हो । बार बार कडे का नाम लेने पर दिल रो जाता है मां ।मैं कितना अभागा हो गया हूं कि अपनी मां की ख्वाहिशोें नही पूरी कर पा रहा हूं ॥ मां अब फिर कडा बचने की बात ना करना ।

सुखिया-बेटा अगर तुम भाई के बिआह में चढाई गयी हंसुली का दाम नही दे सकते तो वापस कर दो । वापस करन स ही तुम्हारी इज्जत बढती है तो । बाद में मेरा दोष ना देना ।

दीनानाथ-मां क्या कह रही हो । गहना वापस कर दूं । नाक कटवा दूं जाति बिरादरी समाज में ।

सुखिया- हां बेटा ।

दीनानाथ-ना मां ना ऐसा कैसे हो सकता हैं । समाज में नाक कट जायेगी ।ं लोग थू थू करेगें । क्या इज्ज्त बचेगी । नई नवेली का गहना उतरवा कर कर्जा भरूं ।

सुखिया- तेरी हिम्मत नही पड रही हैं तो बोलो मै। सोनरी से बात करूं । तू उसकी हंसुली के कर्जे के भार से दबा जा रहा हैं तो। बेंच दो उसकी हंसुली । चाहे वापस कर दो । सोच लो । कहो तो मैं बात कर लेती हूं । बहू बिना गहने के ही रह लेगी ।वैसे भी सोनरी बहुत सन्तोषी है । घर परिवार की मर्यादा के लिये चांदी की हंसुली ही नही कडा छडा बाजूबन्द सब वापस कर देगी। देख नही रहे हो ब्याह कर आते ही पूरे घर की जिम्मेदारी सम्भाल ली ।बस तेरे हुक्म की देरी है बहू जरा भी देरी ना करेगी ।वह अपनी सारी तमन्नाओ को तिलांजलि दे देगी । मैंं जानती हूं उसे गहने से बहुत मोह हैं वह तो नन्ही सी ीाी स चांदी के हंसुली पाने के लिय ब्याह करने की जिद करती थी ।

बेटा तेरे कर्जा का भार उतारने के लिये वह वही चांदी की हंसुली दे भी सकती है ।बेटा आरतो को गहना से मोह तो होता ही हैं पर जरूरत पडन पर उसे उतार भी सकती है ।
दीनानाथ-ना मां ना मैं व्यवस्था कर लूंगा अब मुझे ना जलील कर । एकाध महीने का सूद ही लगेगा ना दे दूंगा । हंसुली ही तो एक मजबूत गहना सोनरीे पास हैं वह भी उतरवा लूं । नही मां नही । हमने बेचारी को दिया ही क्या हैं । मडवा में गहना देखकर सोनरी के मायके की औरते मजाक उडा रही थी । गुदरी बाबा सबको डांट दिये थे । मालूम हैं क्या बोले ।
सुखिया- अरे बतायेगा तो जानूंगी ।
दीनानाथ- मां बाबा बोले थे अरे गहने से नही रे लडके से ब्याह किया हैं । गरीबी अमीरी तो धूप छांव हैं ।मां मेरा सिर नीचा हो गया था बाबा की बाते सुनकर । उनकी बाते सुनकर उनकी कद्र और बढ गयी हैं मेरी नजरों में । मां तूं हंसुली बेचकर कर्जा भरने की बात कर रही हो ।नही मां नही बिल्कुल नही होगा ऐसा । उसे तो और गहना बनवा कर देना चाहिये । उतरवाने की बात कर रही हो मां ।
सुखिया-आ गयी समझ ।
दीनानाथ- नही मां ।
सुखिया- पांव पटकते हुए बोली अरे ज्यादा जरूरी हैं कर्जा भरना तो हंसुली वापस कर दो बाद में हाथ पांव चलेगा तो भारी बनवा कर दे देना ।
दीनानाथ -मां दूसरा कोई उपाय बताओ । मां तुम तो ऐसा सोच भी नही सकती हो कैसे कह रही हो बहू से हंसुली वापस लेकर कर्जा भरने की । मां तू मेरी मजबूरी को देख रही हो । बहू की ओर से जरा सोचो । उसकी निगाहों में तो हम गिर जायेगे । बिरादरी में तो नाक कट ही जायगी । ऐसा क्यो सोच रही हो मां ।
सुखिया- बेटा तेरी दीनता को देखकर .....
दीनानाथ-ना मां ना कभी नही ऐसा करूंगा ।
सुखिया-बेटा तुम खुद ही विचार करो । जिससे इज्जत भी बनी रहे । हां बेटा ऐसा ही करो ।
दीनानाथ-ठीक है मां कहकर उठा और चल पडा रूपये की जुआड में ।

॥ ग्यारह ॥

दीनानाथ कर्जे से बनवायी गयी हंसुली का बकाया रूपया देने की जुआड में तो निकला पर बहुत देर रात मे वापस लौटा । घर में हंसुली के कर्जे की हो रही रोज रोज की बात सोनरी के कान को भी दुखाने लगी ।एक दिन वह प्रेमनाथ से आंख लते हुए बोलीक्यों जी ब्याह में भइया ने ज्यादा कर्ज कर लिया है क्या ।
प्रेमनाथ-क्या यार तुम औरतो को भगवान ने कितना जिम्मेदार बना दिया हैं ।
सोनरी-क्या कह रहे हो मुझे तो समझ में ही नही आ रहा हैं ।
प्रेमनाथ-अच्छा तो अब मेरी बात भी समझ में नही आ रही हैं ।

सोनरी- हां जी सच में ।

प्रेमनाथ-भागवान तुमने घर में कदम रखा नही । पूरी जिम्म्ेदारी अपने सिर पर ले ली ।

सोनरी-कैसी जिम्मेदारी

प्रेमनाथ-तुम्हे कर्ज की चिन्ता क्यों सताने लगी अभी से ।

सोनरी- क्या बात कर रहे हो । मुझे नही तो किसको चिन्ता होगी ।

प्रेमनाथ-अभी से इतनी चिन्ता ना करो ।

सोनरी -क्यो नही ।

प्रेमनाथ-बडे भइया हैं ना ।

सोनरी - बडे भइया ही सबके जिम्मेदार हैं हम नही ।

प्रेमनाथ-हमने तो ऐसा नही कहा ।

सोनरी - देखो इस घर में ब्याह कर आते ही हमारी जिम्मेदारी भी बढ गयी हैं । मेरी अर्थी भी तो इसी घर से उठेगी ना ।

प्रेमनाथ-क्या बात करने लगी ।

सोनरी -सच कडवा होता हैं । यही सही हैं । अरे इस घर परिवार की चिन्ता नही तो किसकी चिन्ता करूंगी । इस घर का दर्द अब हमारा दर्द हैं । यही जीना यहीं मरना हैं । मैं अपने घर परिवार के बारे में नही सोचूंगी तो दूसरा सोचेगा क्या। इस घर के हर सुख दुख में मेरी बराबर की हिस्स्ेदारी हैं । मेरी डोली इस घर में आयी हैं अर्थी यही से उठेगी ।यह घर नही मेरे लिये तो मंदिर समान हैं ।

प्रेमनाथ -अरे अभी तुमको आये कितना दिन हुआ । तुम मरने की बात करने लगी ।

सोनरी-मेरी बात का मतलब समझो ।

प्रेमनाथ -अब तुम मुझे पढाओगी ।स्कूल में नही पढ पाया।चलो अब से तुम ही पढा दिया करना ।

सोनरी-क्यों मजाक करते हो ।

प्रेमनाथ -तुम मरने की बात कर रही हो अभी से । मुझे तकलीफ नही हो रही है क्या ।

सोनरी-अरे मैं तो जमाने का दस्तूर बता रही हूं । तुम सच मान रहे हो । अरे मरना भी तो हैं एक ना एक दिन ।

प्रेमनाथ - तुम हमारी मुश्किल भरी जिन्दगी के बारे में नही जानती ।

सोनरी- जानने की भी क्या जरूरत हैं । यह तो जरूरी नही कि भोगे हुए दर्द को छाती से लगाये रहो। जितना चादर हैं अपने को उसी में हंसी खुशी जीवन बिताना हैं बस । इतनी सीधी बात हैं ।

प्रेमनाथ -माना हम गरीब हैं पर हमारी गरीबी बूढे समाज की थोपी हुई हैं । हम लोग भी खेतीबारी वाले होते पर सब छिन गया । पिताजी बेचारे परदेस गये वे भी लौट कर नही आये । ना जाने किस जंग में ाहीद हो गये । हम खेतिहर बधुवा मजूदर होकर रह गये । भइया दीनानाथ बाप समान हैं । ब्याह में कर्जा तो हुआ ही होगा। इस घर में तो

इतनी रकम थी नही कि ब्याह में खर्च करते । तुम्हारे पिताजी तो ाहर मे नौकरी करते हैं उनकी बराबरी तो हम कर नही सकते । भइया लगन भर नाच गा लेते हैं । कुछ कमाई हो जाती हैं । हमे मजदूरी में तो दो सेर ही मिलता हैं दिन भर की मजदूरी । इतने से क्या होगा । हां भइया को यह काम पसन्द नही हैं । उन्हे मण्डली चलाने में ही मजा आता हैं । कहा जाता हैं नाचने बजाने वाले के पैसे बचते नही हैं श्रृंगार पटार में ही खर्च हो जाते हैं । मेरे भइया ऐसे नही हैं । भइया बचत कर लेते है । भइया को बस हुक्का और खैनी का शौक हैं बाकी कोई ऐब नही हैं । पाई पाई का हिसाब दे देते हैं । बेचारे कितने दुखी होगे फिर भी परिवार के लिये मिशाल हैं । भौजाई मायके में जाकर बस गयी । भईया बिल्कुल नही गए । कहते हैं भाईयों के लिये जीना मरना हैं । लेकिन भौजाई को तो अपना पेट के अलावा और किसी की चिन्ता नही । भइया के सामने कोई हमारे परिवार की ओर अंगुली नही उठा सकता । भइया कहते हैं जमाना बदल गया हैं । हमारी भी औलादे पढ लिखकर अफसर बनेगी । अपने भी दिन अच्छे आयेगे । भइया बहुत त्यागी इंसान हैं । भइया के आशीर्वाद से देखना हमारी औलादे खूब तरक्की करेगी ।

सोनरी-अभी से औलाद के सुख का सपना देखने लगे । वो दिन अभी बहुत दूर हैं ।

प्रेमनाथ -हां जानता हूं पर रिसते जख्म को सहलाने के लिये कल से ही तो आशा हैं ।

सोनरी-बहुत दुख झेले हो समझ गयी ।

प्रेमनाथ -हां सोनरी ।

सोनरी-बडे भइया ने तो मां बाप का फर्ज निभाया हैं ।

प्रेमनाथ-हां सोनरी।अगर भइया ना होते तो हम ना जाने कहां होते । सोच कर ही डर लगता हैं ।

सोनरी-बडे भइया और तुम सभी ने मिलकर बहुत मेहनत किया हैं । तभी तो यह घर पूरी बस्ती में सबसे अलग है ।

प्रेमनाथ - हां सोनरी । भइया की सोच समझ का नतीजा हैं । आने वाले समय में और भी उम्मीदे हैं भइया को हम से हमारी औलादों से भी । भइया की औलादे भी भौजाई की ही सुनती हैं ।

सोनरी-भइया का त्याग बेकार नही जायेगा ।

प्रेमनाथ - हां सोनरी भइया थोडे गुस्सैल तो हैं पर उनकी बातों का बुरा ना मानना ।

सोनरी-समझ गयी हूं भइया को । वे तो छोटी बहन जैसा स्नेह करते हैं । मेर बापू ने भी बहुत दुख झेला था ।पैदल चलकर तो रेलवे स्टेशन पहुंचे थे कई हप्तों में । उन्हे कलकत्ता पहुंचने में पहली बार महीना लग गया था । बडी मुश्किल से मां ने हम लोगो का लालन पालन किया । मां के सारे गहने साहूकारों के भेट चढ गये पर पेट नही भरा । कलकत्ते की कमाई से बापू ने बडी भारी हंसुली बनवाया था ।

प्रेमनाथ - अच्छा वही हसुली तुम बचपन में मां से लेकर पहनने की जिद करती थी ।

सोनरी-धत तुमको कैसे पता चल गया ।

प्रेमनाथ -भइया बता रहे थे मां से ।

सोनरी-अच्छा तो मेरे बचपन की बाते मुझे आने से पहले यहां चहुंच चुकी हैं ।

प्रेमनाथ -हां । यह भी सुना है कि लोग कहते थे कि बीत्ता भर की छोकरी किलो भर की हंसुली पहनने की जिद करती हैं । गरदन कटवाना है क्या । तुम अपनी मां जैसी ही हंसुली बनवाने की जिद भी करती थी ।

सोनरी-हां सच कहा । लेकिन मेरे बचपन की सारी बाते यहां तक पहुंच गयी।

प्रेमनाथ -तुम्हारा मन मां की हंसुली पर आ गया था । अरे औरत जात होती ही ऐसी हैं । गहने के मोह में अंधी हो जाती हैं । कुछ भी करने को तैयार हो जाती हैं । देखो ना तुम खुद को बचपन में मां की हंसुली उतरवाने पर तूली हुई थी ।

सोनरी- नही जी ऐसा थोडे ही हैं । कुछ भी कैसे कर सकती हैं । ये तो लोगो ने बदनाम कर दिया हैं औरतो को उसकी गहने की चाहतो को देखकर ।

प्रेमनाथ - बात तो सही हैं ।

सोनरी-माना औरतो को गहने से मोह होता हैं । श्रृंगार पटार करना औरतो को अच्छा लगता हैं । किसके लिये करती हैं अपने मर्द के लिये ही ना ।

प्रेमनाथ-हां ठीक ही कह रही हो । यह ाौक नया नही हैं जन्मजात हैं । थोडे से बदलाव की जरूरत है ।

सोनरी-गहने का मोह छोडना तो बदलाव नही है ।

प्रेमनाथ-खैर मैं जेवर की बात नही कर रहा था । जब बात चल ही पडी है तो कह ही देता हू।

सोनरी-क्या कहना चाह रहे हो ।

प्रेमनाथ-जेवर का मोह की वजह से रीन कर्ज करना पडता हैं ।

सोनरी-अच्छा तो तुम मूल मुददे पर आ ही गये ।

प्रेमनाथ - कैसा मुददा मैं समझा नही ।

सोनरी-अपनी ाादी के कर्जे की बात कर रहे हो ना । सब अपने जैसे थोडे ही हैं । कुछ लोग तो बहुत धनी मनी भी है । सोने की थाली में खाना खाते है । चांदी के लोटे में पानी पीते है ।

प्रेमनाथ - हो सकता हैं । लेकिन हम लोग तो नही हैं ना ।

सोनरी-ठीक कह रहे हो । लक्ष्मी जी अपनी चौखट से ही ना जाने क्यो रूठी रहती हैं ।

प्रेमनाथ - इतनी मेहनत के बाद भी जरूरते नही पूरी हो पा रही हैं । हसरते दिल में ही दफन हो जा रही हैं । ना समाज में मान सम्मान हैं ना ही पेट भर रोटी और बढिया धन ढंकने के वस्त्र का ही इंन्तजाम । मेहनत मजदूरी के भरोसे बस दम भर सकते हैं ।

सोनरी-ठीक कह रहे हो । बहुत से लोग तो ऐसे है कि दुल्हन को सोने चांदी से लाद देते हैं ।

प्रेमनाथ -ठीक कह रही हो । एक हम है । एक हंसुली के कर्ज से दबे पडे हैं ।
सोनरी-अरे नही चढानी थी हंसुली ।
प्रेमनाथ -तुम्हारी बचपन की ख्वाहि ों कैसे पूरी होती जब ब्याह में हंसुली नही चढती तो ।
सोनरी- जब दिन अच्छे आते तो बनवा देते तुम ही । बडे भइया बेचारे हंसुली के कर्जे के भार से दबे पडे हैं । मैं तो थोडे ही चाहती हूं कि मेरी ख़ुशी के लिये परिवार दुखी रहे । नही चढाते हंसुली तो क्या हो जाता ब्याह ना होता ।अरे जरूर होता बापू को जो तुम पसन्द आ गये थे । मां की हंसुली मुझे मिल ही जाती ।
पे्रमनाथ्देखो मेरी गरीबी का मजाक ना बनाओ ।
सोनरी-कैसा मजाक । तुम्हारा मजाक क्या मुझसे अलग हैं । मैं कभी भी मजाक नही बनने दूंगी अपने घर परिवार को ।
प्रेमनाथ -इसी शान में तो भइया ने बडी हंसुली बनवायी थी ।
सोनरी- वह भी कर्ज करके ।
प्रेमनाथ -ब्याह गौने में तो कर्ज होता ही हैं । कोई नई बात तो नही है खास कर हम गरीबो के लिये ।अरे हम लाग धनिखा तो नही है कि धन का ढेर पडा रहेगा जो कुद करना है मेहनत मजदूरी के भरोसे । रीन कर्ज करने के बाद कर्ज भरने के लिये दिन रात और अधिक हाडफोड मेहनत मजदूरी करना होता है पट में भूख लेकर भी।
सोनरी-ज्यादा कर्ज भी अच्छा नही होता हैं ।कहावत हैं गरीब कर्ज में जन्मता हैं और कर्ज में मरता हैं । इतना ही नही विरासत में भ ी कर्ज ही हिस्से आता हैं ।हमे ें इस कहावत के विपरीत कुछ नया करना है। गरीबी के आतंक मं जीवन बसर करते हुए नयी मिशाल काय करना है । कर्ज का घी लेकर तन्दुरूस्ती नही बनाना है। मेहनत मजदूरी से कमाई गयी रोटी मिर्च नमक के साथ खाकर अपनी तरक्की का रास तैयार करना है ।
प्रेमनाथ -बात तो सही हैं पर ब्याह गौना तो रोज रोज नही होते । हमारे भइया तो जिस पर अड गये वही करके दम ले े हैं । तभी तो लोग परशुराम कहते हैं ।कभी कभी उदास होकर बैठे रहते हैं तो पूछ लो भइया क्यों उदास हो । तब कहते हैं नही रे मैं क्यों उदास बैठूं । मेरे दुश्मन के पास भी उदासी ना फटके कहकर हंस पडते हैं । अपने को लगता हैं कि भइया खुश हैं पर नही रे वे तो हम लो ागे को खुश रखने के लिये खुद खुश रहने का नाटक करते हैं । भइया ने बहुत दुख उठाया हैं हम लोगो की परवरिस को लेकर । तुम्हे धीरे धीरे सब मालूम हो जायेगा ।
सोनरी-हां जी । मुझे क्या पता । कभी बताने की भी जहमत तो नही उठाया । कैसे मैं जानती । तुम भइया को नही समझोगे तो कौन समझेगा । उनके आगे ही तो ठुमक ठुमक कर चलना सीखे हो । चलो आपन एक काम करते हैं हंसुली वापस कर आते हैं । कर्ज उतर जायेगा ।

प्रेमनाथ-भइया मानेगे तो नही । यह विचार वैसे बुरा भी नही हैं । लेकिन भइया को बहुत दुख होगा । यह सुनकर कि उनके दुखी चेहरे को देखकर हंसुली वापस करने की बातकर रही हों । हां एक खास बात होगी ।

सोनरी-वह क्या -

प्रेमनाथ -भइया की निगाहों में तुम्हरी इज्जत बढ जायेगी ।

सोनरी-भइया क्यो नही मानेगे । कर्ज करके शौक पूरी करना ठीक तो नही है । यह हंसुली ले जाकर वापस कर दो । मुझे नही चाहिये ऐसा गहना जिससे घर परिवार दुख का जहर पीये । बेचारे बडे भइया की आंखों से नींद उडी हुई हैं कई दिनो से देख रही हूं । रात भर सासुजी से बाते करते रहते हैं । बूढा कहती है कि तुम्हारे बडे भइया बडबडाते रहते हैं ।

प्रेमनाथ-तुम ही बात करो भइया से । मेरी तो हिम्मत ही नही पडेगी इस तरह की बात करने की । भइया ढेर सारा उपदश देना शुरू कर देगे । उनको गुस्सा आ गया तो समझाने वाला भी कोई नही मिलेगा ।

सोनरी-देखो मैं नही चाहती की मेरी छोटी सी खुशी के लिये पूरे परिवार की खुशी पर ग्रहण लगे । मैं चाहती हूं कि सभी सुख चैन से रहे । घर में जो नमक हैं आपस में मिल बांटकर खाकर अपनत्व का अमृतपान कर हंसी खुसी से रहे । अरे हंसुली क्या तुम सही सलामत रहे तो ये चांदी की क्या सोने की हंसुली गढवा दोगे । हां मैं जानती हूं आज की तारीख में यह हंसुली चांदी की होकर भी हीरे के बराबर हैं हमारे लिये । मेरे सुहाग की निशानी जो हैं । मैं इस हंसुली का परित्याग करने को तैयार हूं ताकि जेठ जी की ओर अंगुली ना उठ सके किसी की । दुनिया औरत के बलिदान से खूब परिचित हैं । घर परविार के लिये सब कुछ न्यौछावर कर सकती हैं एक औरत। ये गहना किस खेत की मूली हैं । हां औरत को गहने से ज्यादा मोह होता हैं ।लेकिन औरत को सबसे ज्यादा मोह अपने पति से होता हैं उसके घर परिवार से होता हैं । मुझे नही चाहिये ऐसा गहना जिससे घर में अशान्ति बनी रहे ।

प्रेमनाथ-कहा अशान्ति हैं ।

सोनरी- सिर्फ मेरे लिये नही हैं । बाकी सभी के लिये तो हैं ।

प्रेमनाथ-देखो सोनरी तुम्हारी बात मानता हूं । लेकिन यह बात तुम्हारे लिये चिन्ता की बात नही होनी चाहिये । घर में बडे लोग तो हैं । ब्याह में चढाया गया गहना औरत के लिये सुरक्षा प्रदान करता हैं । घर परिवार के लिये एक अमानत भी तो होता हैं यह गहना । मैं भी बहुत कुछ करना चाहता हूं पर किस्मत खेतिहर मजदूर बनाकर छोड दी है ।भइया कहते थे कि प्रेमनाथ कि दुल्हन को गहने से लाद दूंगा । नही हो सका । उन्हे इसका अफसोस हैं । हम भूमिहीनता तंगहाली शोषण उत्पीडन से हार गये ।ना जाने कब इस देश के शोषितो उपेक्षितों वंचितो का उध्दार होगा । भइया तो कहते हे औरतो को जितना अधिक हो सके गहनो से लाद देना चाहिये । यही गहने तो बुरे वक्त

में काम आते हैं । परम्परा संस्कृति को हस्तान्तरित करते हैं यही गहने । लेकिन चाहकर भी नही बनवा पा रहा हूं अपने भइयो की औरतो के लिये। इस बात का मलाल भइया को तो बहुत हैं ।

सोनरी-देखो जी मुझे गहने से मोह ही नही बहु ोह है ।खुद के जान से प्यारे है गहन मेरे लिये । खैर होना भी चाहिये । यही गहने तो औरत जात को असली पहचान देते हैं । लेकिन गृहस्ती की गाडी में सवार होकर अब गहने का मोह दूर होने े लगा है। हमारी एक इच्छा तो पूरी हो गयी मनचाहा घर वर तो मिल गया । बाकी इच्छाये तो ईश्वर के हाथ में हैं चाहे तो पूरी करे या ना भी । इसका जरा भी मलाल न होगा । तुम सदा सुखी रहो ऐसे खिखिलात रहो ताकि अपनी गृहस्ती की गाडी अपनी रफतार से चलती रहे । किस्मत में गहना लिखा होगा तो जरूर मिलेगा । तुमसे नही तो अपनी औलादो से ही गहने का मोह पूरा होगा पर होगा जरूर ऐसा मेरा विश्वास है। देखो जेठ जी बेचारे कितने सदविचारवान हैं । तुुम कितने अच्छे हो । हमे और क्या चाहिये गहना गुरिया तो बनता बिगडता रहेगा । सासु जी थोडी रूखी स्वभाव की है। हमे तो उनसे भी कोई मलाल नही हैं । उनकी नाक पर हमेशा गुस्सा सवार रहता हैं । वे भी कहती हैं जीवन बितता जा रहा हैं गहने का सुख नही मिला । इतना ही नही आगे कहती हैं अपने पति से नही पूरा हुआ तो बेटो से क्या उम्मीद करें । वे तो दो रोटी दे दे टाइम से वही बहुत हैं ।

प्रेमनाथ-अरे मां भी तो औरत ही है ना उसको भी तो गहने से मोह होगा कि नही । प्रेमनाथ कहकर हंसने लगा ।सोनरी प्रेमनाथ हंसी को देखकर खुद भी खिलखिला कर हंस पडी । प्रेमनाथ सोनरी का हाथ थामकर और जोर से ठहाका मारने लगा ।

॥ बारह॥

सोनरी के मन में बार बार विचार उठ रह थे कि वह अपने जेठजी को हंसुली वापस कर दे ताकि कर्जा उतर जायें ।वह इसी उद्देश्य से किवाड के पास आकर खडी हो गयी ।सोनरी को उदास देखकरदीनानाथ पूछ बैठा-सोनरी क्यों बडी उदास खडी हो कया प्रनाथ स काई कहा सुनी तो नही हो गयी । कया तुमको ज्यादा काम पडने लगा है ।मैं अपने आप बडबडाय जा रहा हूं तुम हो कि कुछ बोल ही नही रही हो । बोलो क्या बात हैं । बहुत देर से एक ही जगह खडी हो । मायके की याद आ रही हैं । प्रमनाथ ने कुछ कह तो नही दिया । अरे कह दिया हो तो कोई बात नही हंसी मानकर भूल जा । अरे पगली कुछ बोलेगी कि मैं ही बडबडाता रहूंगा । क्यों मौन खडी हो कुछ तो बोल या ऐसे ही चुपचाप खडा रहने का कोई व्रत तो नही लिया है

सोनरी- नही जेठ जी ।

दीनानाथ- कया बात है क्यों नही बोल रही हो ।

सोनरी-डर लग रहा हैं ।

दीनानाथ-कैसा डर । तू तो मेरी छोटी बहन के समान हैं । बोल जो बोलना हो बेहिचक ।

सोनरी-घूघट को नीचे की ओर खींचते हुए बोली आपसे एक निवेदन करना हैं ।

दीनानाथ- कैसा निवदेन सोनरी । कोई भूल मुझसे तो नही हो गयी ।
सोनरी- कैसी बात कर रहे हैं आप जैसे देवता समान इंसान से भूल हो सकती है क्या ।
दीनानाथ-सोनरी मैं कोइ्र् देवता नही हूं।ंमैं भी इस घर का तुम्हारे जैसा ही एक सदस्य हूं ।तुम अपनी बात कहो । क्या कहना चाह रही हो । बोल दो । ज्यादा सोच विचार नही करो।
सोनरी-बस निवेदन करना चाहती हूं।
दीनानाथ- सोनरी जोर से बोलो । क्या कह रही हो सुनाई तो पडे।तुम्हारी आवाज तो घूघट के बाहर ही नही निकल पा रही है । अरे मुझे भी तो सुनाई पडना चाहिये कि तुम कह क्या रही हो । तुम जो कुछ कह रही हो थोडी उुंची आवाज में कहो ।
सोनरी-हिम्मत करके जोर से बोलने का प्रयास तो कर रही थी पर दिल गवाही नही दे रहा था । जेठ जी के सामने उुंची आवाज में कैसे बोले भले ही वह गरीब घर की बहू थी पर संस्कारवान बडो का मान सम्मान करना उसे अच्छी तरह से आता था ।वह तो प्रेमनाथ के सामने गाय की तरह ही खडी रही थी ।कभी उंची आवाज में नही बोलती थी। घर के काम लगी रहती थी ।पर निन्दा तो उसे कभी छूं भी नही पायी थी । ये सब संस्कार तो उसे मायके से ही मिला था।
सानरी के मौन को तोडने का प्रयास करते हुए दीनानाथ बोलाकुछ नही कहना हैं सोनरी तुमको ।
सोनरी-जेठ जी की आज्ञा मानकर बोली जेठ जी हंसुली........
दीनानाथ-अरे बाप रे क्या हुआ हंसुली को ।चोर तो नही ले गया ।
सोनरी-नही चोर कैसे ले जायेगा ।मैं उसका जान नही ले लेती ।मेरे जीते जीे तो कोई चोर मुझसे छिन नही सकता ये चांदी की हंसुली ।
दीनानाथ-फिर क्या हो गया । हंसुली कही इधर उधर रखकर भूल तो नही गयी ।
सोनरी-नही जेठ जी हंसुली तो मेरे हाथ में ।
दीनानाथ-हंसुली हाथ में क्यों । हंसुली तो गर्दन में पहनते हैं ना ।
सोनरी-हां ।
दीनानाथ-चादी की हंसुली ुको पहनन के लिय बनी है । पहन कर रखा करो । हाथ में क्यों ले रखी हो । कोई छिन कर भाग गया तो । हंसुली हाथ में नही लेकर घूमने की चीज हैं । गले मे पहनने की चीज हैं ।
सोनरी-जी गले में ही तो पहनी थी ।
दीनानाथ- हाथ में क्यों ले रखी हो ।
सोनरी-मेरा जी भर गया है इस हंसुली से ।अब मैं नही पहनना चाहती ये चांदी की हंसुली।
दीनानाथ-क्याे नही चाहती ये हंसुली । इससे वजनी चाहिये क्या ।या सोने की हंसुली बनवा दूं तू कह कर तो देख अपने जेठ को ।

सोनरी-नही जेठ जी ।

दीनानाथ-क्या चाहती हो सोने की ही ना ।थोडा सब्र रखो । समय आने दो वह भी इच्छा पूरी हो जायेगी । जरा कमाई धमाई तो भाईयों की बढ जाने दो । िशकायत का मौका नही दूंगा । सब कुछ तो तुम्हारे सामने ही हैं । भीखानाथ परदेसी हो गया है ।उसको सुध ही नही रही घर परिवार की । प्रेमनाथ मेहनत मजूदरी करके परिवार पाल रहा हैं । तुम तो देख ही रही हो। कुछ छिपा तो अब तुमसे रहा नही । मैं गांव गांव लगन भर नाच गाना करता हूं । इससे कितनी कमाई होती हैं सब जानते हैं । करे तो क्या करे दूसरा कोई काम भी तो मुझसे नही होता । लगन खत्म होते ही घर में बैठकर मक्खी मारता हूं । तुम इस हंसुली को चांदी की नही सोने की ही मानकर अभी पहनो । भगवान तुम्हारी लालसा एक ना एक दिन जरूर पूरी करेगा । सोनरी मैं औरत की प्रकृति से वाकिब हूं । उसके गहने के मोह को भी खूब अच्छी तरह से जानता हूं । औरते को तो गहना मोह अधिक होता है ।

सोनरी-नही जेठ जी मैं ऐसा कुछ नही चाहती ।

दीनानाथ-तब क्या चाहती हो बताओ तब ना जानूं ।

सोनरी-कर्जा से उबरना ।

दीनानाथ- कैसा कर्जा रे सोनरी ।

सोनरी-जेठ जी हमारी ाादी में आपने अधिक कर्ज कर लिया हैं । हमे ऐसा लगने लगा हैं ।

दीनानाथ-अरे तुमको कर्जे से क्या लेना देना हैं । अभी चार दिन तुमको आये हुए पड गयी भंवजाल में । देखो कर्जे से तुमको कोई सरोकार नही होना चाहिये । तुमसे किसने कह दिया । अगर रीन कर्ज हुआ भी है तो भर जायेगा । कर्ज लिया भी हैं तो क्या हुआ सभी लेते हैं । कर्ज लेकर कोई बुरा काम काम तो नही किया हैं । अच्छा ही काम किया हैं । रीन कर्ज यदि हुआ हैेें तो अपनों के लिये ही हुआ हैं । तुमको चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नही हैं । अभी तो तुम्हारे खेलने खाने के दिन हैं । तुम हो कि अभी से दादी अम्मा जैसी चिन्ता में पड गयी घर परिवार के रीन कर्ज की चिन्ता तुमका सतान लगी अभी सेे । चिन्तामुक्त रहा करो । तुम्हारा काम चिन्ता करने का नही हैं हम हैं ना ।

सोनरी-जेठ जी हम भी तो इसी परविार के अब हैं । यही तो जीना मरना मेरा अब लिख गया । कैसे मेरी चिन्ता की बात न होगी इस घर की मुिश्कलें ।

दीनानाथ-क्यो नही । तुम ही तो इस घर की असली मालकीन हो । मां के बाद तो अब तुमको ही यह घर सम्भालना हैं । बाकी तो सब स्वार्थी हैं । अपने अपने बाल बच्चेंा को लेकर किनारा काट रहे हैेंं । तुमने ऐसा कैसे सोच लिया की तुम इस घर की नही हो ।सोनरी दुख सुख में सब एक रहना । अपने दायित्वों पर खरे उतरना । जीवन के लक्ष्यों की ओर बढना । इसी मे भलाई हैं । अरे ये गहने गुरिया कहां साथ जाने वाले हैं

। सब माया का खेल हैं बाकी कुछ भी नही है । आदमी के कर्म ही तो लोगो को याद रह जाते हैं । जब तक जान है तब तक जहान हैं ।आशावान बनी रहो ।भगवान जरूर मदद करेगा ।

सोनरी - हां जेठ जी मैं भी तो यही सोच रही हूं । कर्ज लेकर घी पीने से बढिया हैं कि घी ही नही खाया जाये ।

दीनानाथ- क्या कह रही हो सोनरी ।

सोनरी-ठीक ही तो कह रही हूं ।

दीनानाथ- तेरी बात ही मेरी समझ में नही आयी तू कह क्या रही हो । कोई गूढ रहस्य की बात हैेें क्या ।

सोनरी- जेठ जी मैं क्या रहस्य की बात करूंगी अनपढ गंवार । मुझे तो बात करने का भी तरीका मालूम नही हैं कि अपन से बडां से बात कैसे की जाती है। मैं तो अपने मन में उपजी बात कहने की कोिशश कर रही हूं बस ।

दीनानाथ- मन नही छोटा करते । किसने कह दिया की पढे लिखे लोग ही समझदार होते हें । दुनिया में बहुत से लोग ऐसे हैं जो कभी स्कूल ही नही गये पर दुनिया के साामने मिशाल कायम कर दिये तू अपने पिताजी को ही देख कितने बडे महन्थ है।तू अपने आपसे क्या तू किसी पढी लिखी नारी से कम है ।गृहस्ती की गाडी चलान के लिये स्कूली शिक्षा से ज्यादा नैतिक दायित्वो और संस्कारो की जरूरत होती है ।हम भी तो स्कूल नही गये क्या मुझे सामाजिक भेदभाव ने स्कूल में कदम ही नही रखने दिया ।तू नही पढी लिखी होने के बाद भी पढी लिखी औरतो से कम तो नही है। गांव में बहुत से बडे घरों में पढी लिखी बहुये हैं। उनकी हालत देखो अनपढ औरतो काई बेहतर ता नही लगी है। वे भी वैसे ही कर रही हैं जैसे अनपढ औरते गोबर फंक रही है ।चूल्हा फंक रही है।मन छोटा । तू भी वही कर रही हैं । चिन्ता ना कर समय जरूर बदलेगा ।देखना मास्टर ास्टरानी घर घर खाज खाज कर पढायेगे । अरे स्कूली शिक्षा नही पायी ता इसका मलब य नही हो गया कि तूं गंवार हो गयी तू कितनी बुध्दिमान हैं मै जान गया हूं । अपनी जिम्मेदारी का एहसास हैं तुमको क्या यह कम हैं । अपनी बिरादरी की कोई तो पढी लिखी नही हैं तू कहां से पढ लिख जाती । हमारी सामाजिक व्यवस्था ही ऐसी दोगली हैं । लडको को अभी बडी मुिश्किल से स्कूलों में दाखिला मिलने लगा हैं । वहां भी उनकी हालत कुत्ते बिल्लियों से गयी गुजरी हैं । वे स्कूल में रखी बाल्टी से पानी भी नही पी सकते ।बाल्टी से पानी लेकर पीने पर प्रतिबन्ध है। बताओ लडकियों का क्या हाल होगा । चिन्ता ना कर हमारी औलादे पढी लिखी होगी । हम अपनी औलादो से पढ लिख जायेगे । हम अपनी औलादों को खूब पढायेगे देर से ही सही पर काले बादल छंटने शुरू हो गये हैं ।

सोनरी-मैं इन सब बातो से चिन्तित नही हूं ।

दीनानाथ- फिर बात क्या है।

सोनरी- में आपकी चिन्ता से परेशान हूं ।

दीनानाथ-मैं कहां चिन्तित हूं ।

सोनरी-जेठ जी आपसे ज्यादा इस घर में चिन्तित कौन है । कोई नही ना ।जब से मैं आयी हूं तब से आपका उदास और चिन्तित ता ही देख रही हूं ।सच जठ जी आजकल बहुत उदास आप रहते हो । उदासी के बादल आपके माथे पर छाये रहते हैें । मुझे यही चिन्ता खाये जा रही हैं । आपकी चिन्ता का कारण मैं ही हूं ना ।

दीनानाथ-मैं कहां चिन्ता में हूं ।

सोनरी-जेठ जी आप चिन्ता में हो कर्जे कीे । मैं आपके चेहरे पर खुशी देखना चाहती हूं ।

दीनानाथ-क्या कह रही हो ।

सोनरी-सही कह रही हूं ।

दीनानाथ- मां ने तुम्हे सब कुछ बता दिया क्या । देखो तुमको परेशान होने की जरूरत नही हैं । चिन्ता फिकर तो घर के मुखिया का काम हैं ।तू क्यो अपना खून जला रही हो ।

सोनरी-आप चिन्ता में रहो हमे अच्छा तो नही लगेगा ।

दीनानाथ-देखो मां की बातों पर ना जाना ऐसे ही कुछ कह दी होगी । मां का स्वभाव ही हैं । मां तो छोटी छोटी बातों पर बापू से लड जाती थी । बुरा नही मानना । मां दिल की बुरी नही हैं । उसकी बडबडाने की आदत हैं। आदत छूटने में वक्त लगता है ना । उसकी भी छूट जायेगी देखना एक ना एक दिन ।

सोनरी-मुझे सासुजी की बातो की चिन्ता नही हैं मैं तो आपकी उदासी से परेशान हूं ।

दीनानाथ-क्या मै उदास हूं । मैं तो बहुत खुश हूं तुम्हारे आने से । समय पर खाना पानी हुक्का तमाखू सब तो मिल जाता हैं । बहू कर्जे की चिन्ता ना करो तुम ।

सोनरी- वो बात नही हैं जो आप सोच रहे हैं ।

दीनानाथ-तब क्या बात हैं । बताओ क्या खास बात हैं ।

सोनरी-जेठ जी हंसुली वापस कराना चाहती हूं ।

दीनानाथ-क्यों अच्छी नही हैं ।

सोनरी- है ना । डिजाइन कितनी सुन्दर हैं । इस डिजाइन की हंसुली मिलना मुश्किल हैं । अच्छी तो होगी हैं आपने जो बनवाया हैं ।

दीनानाथ- बढिया हैं इसके बाद भी वापस करना चाहती हो ।

सोनरी- हां ।

दीनानाथ-क्यों ।

सोनरी-जेठ जी भार ज्यादा हैं ।

दीनानाथ-क्या ।

सोनरी-हां जेठ जी भार ज्यादा हैं ।

दीनानाथ-इतना तो वजन नही हैं।पाव भर की तो हंसुली हैं।जब तू चल भी नही पाती थी तो अपनी मां की आधा किलों की हंसुली पहन की दौडती थी। अब पाव भर की भारी लगने लगी हैं ।

सोनरी- जेठ जी तब की बात कुछ और थी ।

दीनानाथ-अच्छा अब बडी हो गयी हैं ।

सोनरी-हां जेठ जी बडी और जिम्मेदार भी ।

दीनानाथ-बडी,समझदार और जिम्मेदार अच्छा ये बात हैं ।

सोनरी-जी जेठ जी ।

दीनानाथ-झूठ ।मुझसे कुछ छिपा रही हो । एक औरत गहना वापस करे बात हजम नही होती । कुछ ना कुछ जरूर छिपा रही होैं ।बोलो तो मैं बता दूं ।

सोनरी-जेठ जी क्या कह रहे हैं ।

दीनानाथ-ठीक कह रहा हूं ।सोनार के तगादे की खबर तुम तक पहुंच गयी हैं यही ना ।

सोनरी-चुपचाप खडी रही ।

दीनानाथ-पगली तुम्हारे सुहाग की निशानी हैं । सम्भाल कर रख । कोई मांगे भी तो नही देना । इसमे तो विश्वास,संस्कार और मर्यादाये बंधी हुइर् हं इतनी आसानी से तुम हंसुली के परित्याग की बात सोच भी कैसे सकती हो । हंसुली के कर्जे की चिन्ता तुमको करने की जरूरत नही है। वह तो भरपायी कर आया कब का ।

सोनरी-एकदम घर में भागी और हंसुली को चूमने लगी ।

॥ तेरह ॥

कर्ज भरपायी हो गया सुनकर सानरी के पौ बारह हो गये ।माथे की तपन बरफ सी होनें लगी थर पर जेठ की तपन और तेज गति से बढ रही थी । ेठ तपन से लोगो की हाल वैसे ही हो रही था जैसे चूल्हे में पक रहे आलू का हाल होता है। अन्दर बाहर सब ओर भयावह लू का असर चरम पर था। चूल्हे से लपट भी खूब उठ रही थी पर रोटी का तवे पर खेलना काफी आनन्ददायी लग रहा था ।इसी से तो पेट की आग बुझने वाली जो थी ।सोनरी भयावह गरमी में भी चूल्हे की लपट से तपकर भी गीले आंटे को आकार दे रही थी प्रसन्नचित मुद्रा में । गांव के बच्चे लू से बेखबर आम जामून के पेड पेड दौड रहे थे आम जामून के लिये। इसी आग उगलती लूं में गोदना गोदने वाली आवाज देने लगी । अरे गोदना गोदा लाे लहरी । आवाज लगाते हुए नटिन दीनानाथ के दरवाजे पर आ गयी । नटिन की आवाज सुनकर सुखिया घर में से ही आवाज देने लगी । अरे वो गोदना गोदने वाली रूक जाना । मेरी पतोहूं को गोदवाना हैं । नटिन दीवाल की छाया में सिर से टोकरी उतार कर जमीन पर रखकर बैठ गयी ।

ुखिया- सोनरी को आवाज देने लगी ।

सोनरी-हडबडायी हुई आयी और बोली क्या हुआ अम्मा ।

सुखिया-अरे क्या होगा । कब से बुला रही हूं । गोदना गोदवा ली होती ।

सोनरी-गोदना ।
ुाखिया- हां गोदना ।
सोनरी-जरूरी हैं ।
ुाखिया-हां जरूरी हैं ना ।यही तो एक गहना हैं जो साथ जाता है । ब्याह गौने के बाद ससुराल का गोदना मंगलकारी होता है ।यह भी एक परम्परा हैं सोनरी । इसको भी पालन करना चाहिये बहूं । मेरी सास तो कहती थीं जब तक बहू के हाथ पर गोदना ना गुद जाये तब तक पतोहू के हाथ का पानी भी नही पीना चाहिये । देर हो गयी हैं गोदना गोदवाने में । देर से ही पर गोदवा लो एक नन्हा सा ही ।
सोनरी-अम्मा डर लग रही हैं ।
सुखिया-कैसी डर । क्यो डर रही हैं ।
सोनरी-सुई से हाथ छिद जायेगा । खून बहेगा । मुझे डर लग्ता ं खून से अम्मा ।
सुखिया-सोनरी गोदना मंगलकारी और पवित्रता का सूचक है । यह भी एक परम्परा हैं । तुमको पहले ही बता चुकी हूं । ससुराल में गोदना गोदवाया ही जाता हैं । चलोउठो अब तो गोदवा लो । सिफारिश ना कराओ बहंूं ।ऐसे डरोगी तो जमाने के साथ कैसे चलोगी । बड बूढो का कहना भी मानना चाहिये। तुम तो संस्कारवान हो ।तुम्ह गोदना के नाम पर डर अच्छा नही लगता । देखो नटिन बेचारी कब से बैठी हैं लू में । तुम्हारी बांट जोह रही हैं । जल्दी करो उठो ।
सोनरी-अम्मा बहुत डर लगा रहा है ।
सुखिया-डर लगने की तो कोई बात नही होनी चाहिये । बस चींटी जैसे काटती हैं वैसे ही तो महसूस होता है ।मेरे हाथ पर देखो पूरा हाथ गुदा पडा है गोदने से । तू नई नवेली होकर डर रही हो । अरे गोदना पक्का श्रृंगार होता है। गोदना से डरना नही चाहिये। अरे यही तो ऐसा गहना हैं जो कोई तन से कोई उतार नही सकता । हर ब्याहता नारी के दाहिने हाथ पर मायके का और बायेे हाथ पर ससुराल का गोदना तो होना ही चाहिये ।यही गहना तो साथ जाता हैं । सोने चांदी सब तो उतार लेते हैं । घट से प्राण निकलने से पहले ही सगे सम्बन्धित नोंच नोच कर गहने उतार लेते हैं ।गोदना कोई नही उतार सकता । यही गोदना तो साथ जाता हैं ।
सोनरी- हां अम्मा ठीक कह रही हैं मेरी दादी के साथ भी ऐसा हुआ था ।
सुखिया-हां सोनरी ।
सोनरी- अम्मा जिस गहने को जिन्दगी भर दांत से दबा कर रखों घर परिवार वाले मरने से पहले खींच खींच कर उतार लेते हैं ।
सुखिया- हां सुनरी गहना तो गहना मुरदही में डोम तो मृत तन पर से कफन तक खींच लेते हैं । सोच गोदना रूपी गहना कौन ले सकता हैं । यही तो गहना जीते मरते साथ निभाने वाला होता हैं । तू है कि गोदना गाुदवाने के लिये मना कर रही है । पहले ही तुम्हे गोदना गोदवा देना था पर नही गोदा जा सका । नटिन ही नही आयी । कहते हैं

ब्याह के बात जब दुल्हन अपने ससुराल आती हैं ,जब तक गोदना रूपी गहना दुल्हन को ना मिल जाये उसके हाथ की बनी रोटी नही खानी चाहिये पर आजकल लोग कहां मानते है । पहले यह खूब चलन में था ।अब धीरे धीरे कम होती जा रही हैं गोदना गोदवाने का चलन । आजकल तो बाहं पर ना जाने क्या क्या चिपका लेती हैं लडकियां ।सानरी देर ना कर चल गोदवा ले ।तू तो गोदवा ले भले ही तू अपनी पतोहू का ना गोदवाना ।

सोनरी-अम्मा गोदना गोदवाना परम्परा हैं तो मैं जरूर गोदवाऊंगी । आपकी बात भी तो माननी होगी ।अब ता आप ही मां बाप हो । कहते हें मां बाप धरती के भगवान होते है तो आपका कहना न मानकर मुझे नरक नही भोगना है ।

सुखिया-जरूर गोदवाओ बहू ।

सोनरी-अम्मा गोदना गोदने वाली से बोलना कि वह गा कर गोदेगी।

सुखिया-तू तो गोदवाओ । देखना कैसी कैसी बाते करती हैं रोता इंसान हंस हंस कर लोट पोट हो जाये। गीत तो एसी गाती ही हैं कि नींद आ जायें ।

सोनरी-मायके मे छोटा सा गोदना गोदवायी थी । एक हाथ मां पकडी थी दूसरा हाथ बडे भइया । दादी पंखा झल रही थी । मेरा तो रो रो कर बुरा हाल हो गया था ।

सुखिया -तब की बात और थी । अब तो तू सयानी हो गयी हैं ।सुहागिन हो गयी है।घर परिवार वाली हो गयी। दो चार साल में बाल बच्चेदार हो जायेगी । इतना डरेगी तो कैसे निभ्ाोगी । अरे औरत जात तो गहना की लालासा में ही जीती मरती हैं । ये गोदना किसी कीमती गहने से कम तो नही हैं । सदा साथ निभाने वाली भी । चोर चाहे तो चुरा भी नही सकता । कोई छिनना चाहे तो छिन भी नही सकता । बहुत अनमोल गहना हैं गोदना सोनरी ।

सोनरी- हां अम्मा मेरी मां भी ऐसे ही कहती थी ।

सुखिया-देर ना कर चल एक पक्का गहना ले लेती हूं तेरे लिये गोदना के रूप में ।

सोनरी- अपनी सासु सुखिया के साथ गोदना गोदवाने के लिये चल पडी ।वैसे भी उसकी हार्दिक इच्छा तो थी गोदना गोदवाने की भला कौन संस्कारित बहूं परम्पराओं के पालन के लिये आगे नही बढेगी । सोनरी सारे डर को भूल कर गोदना गोदवाने के लिये घूघट निकालें नटिन के सामने बैठ गयी ।

सुखिया-नटिन से बोली देखो नई डिजाइन का गोदना गोदना । वही पुरानी घिसी पिटी डिजाइन का गोदना नही गोदना ।

नटिन - हां बीिटया ।

सुखिया-आजकल तो खूब नई नई डिजाइन के गोदने गोदे जा रहे हैं ।

नटिन-हां बहिन नई डिजाइन का ही गोदूंगी । चिन्ता ना करो । आपकी बहू मेरी बहू हैं ।

सुखिया-अच्छा गोदना गोदोगी तभी पैसा मिलेगा । पहले बताये दे रही हूं ।

नटिन-बहन जी धमकी क्यो दे रही हो ।

सुखिया-धमकी नही सच में कह रही हूं ।

नटिन- बहूं का गोदना देखकर आपका भी मन ललचा जायेगा । ऐसा गोदन गोदूंगी । पैसा देना चाहे ना देना । मैं गोदना तो बढिया ही गोदूंगी । मैं सोचूंगी कि अपनी पतोहूं को गोदी हूं। अब तो न की मैंल उडा दो खिलखिलाकर आधे गाल मुस्करा दो । सच कह रही हूं देखना बहू को गोदना देखकर आपका भी मन जरूर ललचा जायेगा । मै दुगुना पैसा लूंगी बहन जी आपसे याद रखना ।

नटिन की बात सुनकर सुखिया के दिल पर मानो सांप लोट गया । उसका भी मन करने लगा ।नटिन सोनरी के हाथ पर गोदना गोदे जा रही थी ।बढिया बढिया गीत भजन भी गा रही थी । देखते ही देखते सोनरी के हाथ पर एक खूबसूरत सी डिजाइन उभरने लगी । सोनरी के आंखों में आसूंओ की बाढ आ चुकी थी । सोनरी की आंखों के बाढ का पानी नटिन के उपर झराझर झर रहा था ।

नटिन बोली अरे बहू इन मोतियों को सम्भालो । क्यो बहा रही हो ।इन्हे रोको । मंगल बेला में आसूं क्यो बहा रही हूं । पिया जब हाथ पर हाथ फेरेगे ना तब दुनिया का स्वर्ग तुम्हारे दामन में उतर जायेगा । तन झनझना उठेगा तन तब मेरी याद भी नही आयेगी । खो जाओगी स्वर्ग के सुख में कहते हुए नटिन हंस पडी ।

नटिन का हंसना था कि वहा उपस्थित सारी औरते खिलखिलाकर हंस पडी और बोली सोनरी सच पिया का हाथ पडते ही सुधबुध खो जाओगी । पिया और पिया का तन तो जन्नत का सुख देने के लिये ही होता हैं ।सोनरी लजा गयी।अपने आंखों में उमड रहे मोतियों को घुघट में छिपाने लगी ।

नटिन-अरे बहू इन मोतियों को घूघट में समेटकर साडी गिला कर रही हो ।

नटिन की बात सुनकर गांव की लडकी रधिया बोली भौजी सब यही बहा दोगी तो भइया को क्या दिखाओगी ।अरे सम्भालो भइया से भी तो सेवा करवाना है कि नही ।

रधिया की बात सुनते ही जैसे हंसी की आंधी आ उमडी ।सोनरी भी हंसे बिना ना रह सकी । नटिन सोनरी की हंसी को देखकर अपनी गति और बढा दी । बीच बीच में हंसी के बम फोडती रही ।गीत गा गाकर गोदना गोदती रही ।

नटिन की गति देखकर बुधिया बोली-सोनरी गोदवा ले रोटी की चिन्ता ना कर । चूल्ह चौका तो प्रेमनाथ से करवा लेना उपर से खातिरदारी भी । आज तो तुम खटिया से नीचे पांव नही रखना ।

रधिया-क्या भौजी का पांव भारी हो गया।भौजी बडी जल्दी उन्नति कर ली ।

सुखिया-क्या बक रही हो तुम लोग अपनी औलादे ऐसी नही है कि घरवाली को रोटी बनाकर खिलायेगे । एक गिलास तो दुख में कोई पानी देने को तैयार नही । खटिया पर राेटी दे रहा हैं वह भी प्रेमनाथ । यह तो हर देहाती औरत की हाल है । बेचारी कितनी तकलीफ में क्यों न हो चूल्ह चौका तो करना ही पडता हैं । मर्द का रोटी बनाकर घरवाली को देना सूरज का पच्छू की ओर से में उगने के बराबर हैं । मर्द लोग तो अपनी घरवाली को पानी देना भी अपनी तौहीनी समझते हैं ।

नटिन-अरे बहन आजकल की बहुये क्या कोई भी देहाती औरत अपने पति से नही करवा सकती । मर्द चाहे भी औरत करने नही देगीं क्योंकि उसका पति तो उसका भगवान होता है। कई कई औरते तो बहुत जुल्म झेलती हैं । अभी भी मर्दो की सोच नही बदली हैं । जब तक गांव की औरते पढी लिखी नही होगी तब तक ऐसे ही पीसती रहेगी । बूढी कुप्रथाये भी तो औरतों के लिये जंजीर हैं खासकर छोटी बिरादरी के लिये । बेचारे लडके भी तो नही ्पढ पा रहे हैं चौखट पर गरीबी जा पसरी हुई है। एक बात तो तय है जब सब पढ लिख जायेगे तो तरक्की की बाढ आ जायेगी । औरतो को जुल्म भी नही झेलना पडेगा । औरत बेचारी गृहस्ती के बोझ से दबी पडी रहती हैं । लेकिन औरत चाहे तो घर को मंदिर बना सकती हैं ।सच कहा गया हैं बिना घरनी के घर भूत का डेरा ।

सुखिया-हां तू ठीक कह रही हैं । हां मर्द लोग कमा कर दो पैसा लाते हैं इसी में समझते है कि उनकी जिम्मेदारी पूरी हो गयी । बेचारी औरत कोल्हू के बैल सरीखे पीसती रहती है रात दिन ।

नटिन- लो सुखिया बहन अपनी पतोहू का हाथ देखो ।

सुखिया-क्या देखू गोदना तो पूरा करो ।

नटिन-गोद दिया और तो नही गोदना हैं ।

सुखिया- नही इतने में ही बेचारी बेसुध हो रही हैं ।

नटिन-बहू का गोदना देखो कितना अच्छा गोदी हूं ।बहू बचाकर रखना किसी की नजर न लगने पाये ।रात में प्रीतम से पूछना कैसा गोदना है ।

सुखिया-देखना तुम्हारी ही नजर न लगे ।गोदना बढिया गोदी हैं ।मान गयी तुम्हारे हाथ को ।

नटिन-ठीक कह रही हो बहन कभी कभी मां की भी नजर लग जाती हैं बच्चे को । भगवान मेरी नजर बहू को न लगे । बचाना कहते हुए खुद का कान पकडने लगी ।

सुखिया-ठीक बात हैं । ऐसा भी हो जाता हैं ।

नटिन-ठीक है बहू की नजर उतरवा लेना । नजर उतारने वाले को कहां ढूढोगी लाओ सरपत मैं ही झाड फंूक देती हूं । बहू देख लो पक्का गहना अच्छा हैं ना । तुम कहोगी तभी मेरी मजदूरी मिलेगी ।

सोनरी -हां कहते हुए उठी और अन्दर चली गयी हाथ पर एक पक्का गोदने का चन्द्रहार लेकर ।

॥चौदह॥

गोदना दर्द दे रहा था पर मंगलकारी और पवित्र गोदना रूपी गहना पाकर प्रफुलित थी ।प्रेमनाथ सोनरी के होंठ कुलाचें मार रही मुस्कराहट का ताडं गया और पूछ बैठा बडी मौज मे लग रही हो भागवान ।लगता है आज कोई बडी सौगात मिल गयी हैं या कोई तोहफा यादगार । क्या मिल गया कुछ तो बताओ । मुह तो खोलो ।

सोनरी-क्या तोहफा मिलेगा । अपनी किस्मत कहां ऐसी कि घर की दीवारों में कहां सोना चांदी गडा पडा हैं कि गहना गढवा दिया गया है ।

प्रेमनाथ-क्यों कटार चला रही हो । हमे भी मलाल है अपनी बिगडी किस्मत पर ।

सोनरी-क्यो नही किस्मत वाले हो ।

प्रेमनाथ-अरे इतने किस्मत वाले होते तो चारो तरफ सोना चांदी गडा पडा नही रहता ।

सोनरी-छोडाे ।हंसी मजाक की बातों को बुरा ना माना करते ।

प्रेमनाथ-बुरा तो नही माना । अपनी हालत को देखकर पर तकलीफ तो होती ही हैं ।

सोनरी-अपनी किस्मत में कहा तोहफा लिखा है जो मिलना था मिला ही नही । अब क्या मिलेगा । अब तो आखिरी ब्याह पर ही जो कुछ मिल जाये । यह भी नसीब की ही बात होगी ।

प्रेमनाथ-भागवान क्यों चैन छिन रही हो । दिल तो वैसे ही छिन लिया हैं । सपनों तक पर कब्जा कर लिया हैं । चैन छिनने की क्यों सूझ रही हैं ।

सोनरी-मैं क्या चैन छिनूंगी । मेरा तो खुद ही छिन गया हैं । जो कुछ बचा था वह भी अब छिन गया कहते हुए सोनरी प्रेमनाथ की तरफ हाथ बढा दी ।

प्रेमनाथ- बाप रे ये हाथ को क्या हो गया । हाथ तो सूजा हुआ हैं । यह कैसे हो गया ।तुमने तो इसकी जिक्र ही नही की । कैसे हुआ कोई कीडा मकोडा तो नही काट लिया ।

सोनरी- चुप रहो तब तो मैं कुछ कहूं । मुझे बोलने का मौंका ही नही दे रहे हो ।खुद बोले जा रहे हो । इतना ना हडबडाओं । कोई चिन्ता की बात नही है । गोदना गुदवायी हूं । यह पक्का गहना हैं ससुराल का । इस गहने को कोई चाहकर भी मुझसे अलग नही कर सकता । गोदना की वजह से हाथ सूज गया हैं । आज तो तुमको बहुत प्यार आ रहा हैं । इतना प्यार ना दिखाओं । लोग नही तो कहेगे कि........

प्रेमनाथ-अरे क्या कहेगे । तुम खुद ही अपने मुंह से कह दो ना ।

सोनरी-क्या कह दूं ।

प्रेमनाथ-यही ना कि मैं मजनू हो गया हूं ।अरे अपनी जीवनसंगिनी का हाल जानना कोई बुराई है क्या ।भगवान ना जाने तुम को कब अक्ल देगा ।देखो सारा हाथ छेदवा डाली हैं ।दर्द को भूल कर बावली सी आग सुलगा रही हैं । बाप रे क्या गहने का मोह हैं इन औरतो को ।

सोनरी-अरे अपनी कमाई का तो एक लाकर दिये भी नही इतना ताना मेहना मार रहे हो । मालूम हैं ना मरने से पहले सोना चांदी के गहने तन से उतार लिये जातेे हैं । गोदना कोई नही उतार सकेगा । इसलिये तो पक्का गहना हैं ।सदा साथ निभाने वाला । तुम मर्द लोग क्या जानों गहने का मर्म । गहने से मोह तो औरत ही कर सकती हैं।मर्द अपनी घरवाली से कर ले वही बहुत हैं ।

सोनरी की अंगडाई उसके होठ पर जैसे ठहर सी गयी थी । हाथ खूब सूजा हुआ था। गोरे हाथ की कलाई काली पड गयी थी । इसके बावजूद भी सोनरी चहक चहक कर प्रेमनाथ

को गोदना दिखाये जा रही थी ।प्रेमनाथ का ध्यान तो गोदना पर न होकर गोदने से होने वाली दर्द पर जा टिका था । गोदने की तस्वीर दीया के उजाले में साफ साफ दमक रहा था । हाथ पर नटिन द्वारा उकेरी गयी तस्वीर भी अच्छी लग रही थी ।

प्रेमनाथ-भागवान तुमको दर्द नही महसूस हो रहा हैं ।

सोनरी-क्यो दर्द होगा । पिया के प्रति समर्पण का भाव जो हैं ।

प्रेमनाथ- पिया के प्रति समर्पण या गहना का मोह ।

सोनरी-जो भी कहो गहने का मोह या समर्पण सब तो पिया के लिये ही है ना ।ससुराल तो एक लडकी के लिये असली कर्मस्थली है यही तो लडकी के भाग्य के ताले खुलते है ।हर श्रृगार पत्नी अपने पति देवता के लिये ही तो करती है ।चाहे चादीं की हंसुली पहने या सोने का चन्द्रहार या हीेरे ातियों की माला सब पति के उपर ही ता न्यौछावर करती है । पत्नी का हर मोह पिया के लिये ही हुई ना । तुमको गोदना के बारे में जरा भी जानकारी नही हैं ।

प्रेमनाथ-क्यो नही हैं । हैं ना । गोदना से हाथ छिद जाता हैं । खूब दर्द होता हैं ।खून बहता है गोदवान में ।गोदना गोदते समय नटिन गीत गाती है ।

सोनरी-अरे इतना ही नही ।और भी बहुत कुछ हैं गादना का महात्मय । गोदना एक परम्परा हैं और सुहागिन की पहचान भी । औरत को हर परम्परा का निर्वाह भी करना होता हैं । परम्परायें भी तो निभाने के लिये ही होती हैं ।परम्पराये ही तो आदमी का आदमी होने का एहसास करती है बस अमानवीय परम्पराओं को छोडकर । अमानवीय परम्पराये आदमी के बीच खाई खोदती है ।पारम्परिक सास्कृतिक एवं खानदानी परम्पराय तो समाज के लिये गहना होती है ।अच्छी परम्पराओ को निभाना ही चाहिये ।

प्रेमनाथ-क्यों ना । खूब निभाओ । दोनो हाथो पर गोदवा लेना था तब पता चलता ।

सोनरी- क्या पता चलता ।दर्द । नही जरा भी नही। और अधिक अच्छा लगता है। अरे पति के लिये कोई भी दर्द हसते हंसते सहन कर सकती है एक पत्नी।

प्रेमनाथ-और गोदवा लेना था । जब दर्द सहने की इतनी ही लालसा थी तो गोदवा लेना था माथे पर दाढी पर आर जहां जहा मन करता। दो चार दिन के लिये भले ही चल्हा ठण्डा हो जाता ।

सोनरी-अरे छोडो मेरे रहते चल्हा ठण्डा तो नही हो सकता । चूल्हा तो जलेगा । खैर रोटी की चिन्ता छोडो । ये बताओ इतना बडा गोदना गोदने को कितना पैसा लगा होगां । मालूम है पैसे देने में आंख निकल गयी । तुम रोटी की चिन्ता ना करो रोटी बनी पडी हैं । इसी हाथ से बनी हें वह भी गा गाकर बनायी हूं आज । जब तक घट में प्राण हैं । तुमको चूल्हा नही फूंकने दूंगी । भला कोई औरत अपने पतिदेवता से चूल्ह चौका करवाती हैं कि मैं करवाऊंगी । ना बाबा ना । इतने बडे पाप की भागी तोमैं नही बनूंगी । गोदने की परम्परा को निबाह कर मुझे बडी राहत मिली हैं । तुम हो कि दर्द कि चिन्ता कर रहे हो ।आज तो मैं मन नाचने का हो रहा हैं पक्का गहना पाकर ।

प्रेमनाथ-तुम सचमुच खुश हो । तुम्हारी खुशी में ही मेरी खशी हैं पर दर्द भी तो हो रहा है ना । देखो हाथ कितना सूजा हुआ हैं । हाथ देखकर ही मुझे डर लग रहा हैं । कहीं पक गया तो क्या होगा ।

सोनरी-गोदना नही पकता । यह तो अपने पति के प्रति अथाह प्रेम की पहचान हैं । तुम चिन्ता ना करो कल देखना बिल्कुल ठीक हो जायेगा ।

प्रेमनाथ-दर्द तो खूब हो रहा होगा । तुम जबान पर नही लाना चाह रही हो गहना प्रेम के कारण । एक कांटा धंस जाता हैं तो कितना दर्द होता हैं । यहां तो हजारो बार सुईयां धंसी हैं तुम्हारे हाथ में । तुम हों कि दीवाली मना रही हो । वाह रे गहने की दीवानी हमारी घरवाली ।

सोनरी-तुम मुझको कम क्यों आंकते हो ।

प्रेमनाथ-हमने क्या ऐसा कह दिया ।

सोनरी-कैसे कहोगे ।

प्रेमनाथ-भागवान हमने तो ऐसा कुछ भी नही कहा हैं जिससे तुम्हारे मन को ठेस लगी हो । अनजाने में कुछ कहा गया हो तो याद नही ।

सोनरी-औरत तो त्याग की मूर्ति हैं। तभी तो अपना जीवन पराये घर को अपना बनाने में खपा देती हैं ।आती है डोली चढकर और जाती है अर्थी चढकर ।

प्रेमनाथ-हां देवी जी ठीक कह रही हो तभी तो औरत को कल्या ी कहा गया है।

सोनरी- बिना मर्द के साथ के औरत अकेले क्या कर सकती हैं । बिना औरत के मर्द अधूरा हैं और बिना मर्द के औरत।

प्रेमनाथ-ठीक कह रही हो । लेकिन जितना औरत का महत्व है। उतना मर्द का नही तभी तो औरत सृजनकारी मंगलकारी ममतायी, सरस्वती लक्ष्मी तक कहलाती हैं । घर परिवार पति बच्चों के लिये जीती हैं । सम्भवतः औरत को भर्मित रखने के लिये ही गहनो का मायाजाल रचा गया हो । औरतो को गहनो से मोह होता हैं ठीक हैं पर यह मोह किसके लिये । अपने घर संसार के लिये ही न । औरत का लुभाने के लिये ही गहनों का इजात हुआ होगा । ये गहने भी तो औरत की खुबसूरती में चारचांद लगा देते हैं । औरत के गहने का मोह को पूरा करना मर्द समाज का दायित्व हैं । दुर्भाग्य है मेरा चाह कर भी तो पूरा नही कर सका ।खैर उम्मीद पर दुनिया कायम हैं । हम भी उम्मीद करते हैं । जहां तक सम्भव हो सकेगा तुम्हारी हर इच्छा पूरी करूंगा ।

सोनरी-तुम इधर उधर की बातें में क्यों उलझा रहे हो ।ये देखो ।

प्रेमनाथ-क्या दिखा रही हो ।

सोनरी-चूडी । है ना सुन्दर सोने जैसी पर है कांच की है।

प्रेमनाथ-अच्छा तुम्हारी चहक का राज हैं ये चूडियां ।

सोनरी-ऐसा क्यों कह रहे हो । मैं तो तुमको ही देखकर मगन होकर नांच उठती हूं ।

प्रेमनाथ-हमने तो मना नही किया । एक बात कहूं आज तू रोज से सुन्दर लग रही हो ।

सोनरी-सचमुच ।

प्रेमनाथ- हां सचमुच । तुम ऐसे ही मुस्कराते रहो इस घर में । तुम्हारी मुस्कराहटो से इस घर परिवार में रौनक बनी रहगीे । तुम ऐसे ही खिलखिलाती रही । गले में पहनी हंसुली की तरह । खैर हंसुली तो चांदी की हैं । तुम तो इस घर के लिये हीरे की खान हो ।आज तुम्हारी चाल भी मोरनी सी लग रही है ।बोल में कोयल का सुर हावभाव स फूल की मादकता झलक रही है ।

सोनरी-तुम और तुम्हारा ये चमन तो मुझे रास आ गया हैं ।

प्रेमनाथ-सच मुझे पाकर खश हो ।

सोनरी-हां सचमुच । मालूम हैं जब हमारा ब्याह हुआ था तो हम और तुमनेे कहा एक दूसरे को देखे थे । इसके बाद भी हम दोनो ने एक दूसरे को चुन लिया आस्था समर्पण और परिवार की मर्यादा के रक्षा के लिये। देखो हमारी गृहस्ती की गाडी भी अच्छी तरह चलने लगी है ।

प्रेमनाथ- भले ही हम दोनो ने एक दूसरे को नही देखा था पर आज एक दूसरे के तो होकर रह गये है । एक दसरे से बेइन्तहा मोहब्बत करते है । एक दूसरे पर यकीन करते है । । तुम्हारे बारे में चोरी छिपे सुनकर ही अन्दाजा लगा लिया था कि तुम्ा जैसी कली से प्रेमनाथ पगला सुगन्ध से सरोबार हो जायंवऔर वही हुआ भी ।

सोनरी-क्या कहा सुगन्ध । नही जी नही । तुम्हारी वजह से इस सोनरी को एक नई पहचान मिली हैं ।इसका जीवन धन्य हो गया है तुमको पति के रूप में पाकर । तुम्हारी वजह से विरान सी जिन्दगी में बहार आ गयी हैं ।सोने चांदी के गहनों के साथ तुम्हारा जन्म जन्म का साथ मिल गया । मेरा जीवन सफल हो गया तुम्हारे हाथ से चुटकी भर सिन्धूर मांग में पडते ही मेरे जीवन का मकसद पूरा हो गया ।

॥ पन्द्रह ॥

चुटकी भर सिन्धूर के महत्व,औरत के त्याग और गहन के रहस्य की दास्तान सोनरी के मुंह से सुनकर उसकी अर्न्तरात्मा जैसे जाग उठी ।वह औरत को अबला कहने वाली हर बाते का तिरष्कार करने लगा । वह कहता क्या वास्व ं नारी अबला है कदापि नही । पुरूष का जन्म देन वाली दध मुंहे व असहाय,निर्बल कमजोर को बडा करने वाली नारी अबला कसे हो सकी है नारी तो पुरूष समाज की सम्बल है । नारी के बिना पुरूष तो अस्तित्व बिहीन है ।नारी त्याग तपस्या,क्षमा,बलिदान प्यार व सहिष्णुता का कल्याणकारी रूप है। औरत को अबला कहना दैवीय शक्ति का अपमान है । एक दिन प्रेमनाथ नीम की छावं में बैठा उधेड बुन में मगन था इसी बीच सोनरी प्रेमनाथ के पीछे खडी होकर धीरे धीरे पांव पटकने लगी ।पायल की छनछन सुनकर वह चौका और पीछे मुडकर देखा तो सोनरी अल्हड सी मन्दमन्द मुस्कान बिखेर रही थी चांदी की हंसुली को सहलाते हुए ।वह सोनरी के रूप को देखकर बोला-अरे वाह सिर से पैर तक सरसों के खेत की तरह सजी हो ।तुम्हें देखकर लगता हैं कि बसन्त दस्तक दे चुका हैं । ओठ पर पनबुकनी का

रंग पैर में महावर तो किसी गुलाब के फूलों से लदे खेत की तरह लग रहा है ।वाकई तुम सरसो के खेत की परी लग रही हो ।
सोनरी-कब से इतने रसिक हो गये । ऐसे तो ना थे पहले ।लगता है महुवे का असर तुम पर भी चढने लगा हैं । महुवे की छांव में बैठे थे क्या। कुंचे की महक नाक के रास्ते तुम्हारे पूरे बदन में उतर चुकी हैं ।
प्रेमनाथ-अरे वाह क्या बात हैं । तुमने मेरे मन की सुगन्ध को सूघ लिया । मेरा रसिक मिजाज तुमको भा गया । अब तुमको माटी के तन से सोधेपन की महक के साथ महुवे की भ्ीनी भींनी महक भी आने लगी है । तुम तो बसन्त के रंग में रंगकर बिल्कुल बसन्ती हो गयी हो ।
सोनरी-तुमने आखिरकार मेरे दिल की बात सुन ही लिया ।
प्रेमनाथ-तुमने भी तो । खैर तुम्हारे अलावा और तो कोई नही.........
सोनरी-देखो जी मत जलाओ ऐसी वैसी बात करके ......
प्रेमनाथ-ना जी मैं ऐसी वैसी बात कैसे कर सकता हूं ।सरसो के फूलो की सजी सेज पर कांटो की चुभन का दर्द मुझे नही सहना हैं । सरसों के फूलो की चुनरिया का रसानन्द कर जीवन का असली सुख भोगना है की नही ....
सोनरी-तुम्हारी बात मेरी समझ में नही आ रही हैं ।
प्रेमनाथ-भौरे को रिझा रही हो बात समझ में नही आ रही हैं ।
सोनरी-अच्छा भौरा जी भनभनाओ नही । कुछ मीठी मीठी बाते करो ।धरती अपने यौवन में मुस्करा रही हैं । बसन्त की बहार हैं । तुम कोई संगीत छेडो जो मन को भा जाये ।बसन्त के रंग में रंग जाओ ।हमारे प्यार की महक से कोई खबसूरत सा फूल खिल जाये ।
प्रेमनाथ-अरे तुम से अच्छा बसन्त हैं क्या । मुझे तो बसन्त से ज्यादा भा रही हो । बसन्त तो आता जाता रहता हैं। हम तो तुम्हारे बसन्त में सदा ही भौरे की भांति आनन्दित रहते हैं ।
सोनरी-आज तुम भौरा बन रहे हो ।
प्रेमनाथ-क्यों ना बनू इतनी सुन्दर सजी संवरी तुमको पाकर ।तुम सरसों के खेत की परियो न ही तो हो तो बसन्त को बसन्त बनाया हैं वरना बसन्त को कौन जानता ।
सोनरी-अच्छा औरत की साज सज्जा और गहना ने बसन्त को उसकी सुन्दरता का एहसास कराया हैं ।यही कहना चाह रहे हो ।
प्रेमनाथ-सच तो यही हैं ।मर्द औरत के सानिघ्य में ही खुबसूरती का आनन्द ले पाता हैं बसन्त से नही । यह तो मौसम है आज हैं कल नही । मेरा बसन्त तो तुम ही हो ।
सोनरी-अच्छा ऐसा हैं ।
प्रेमनाथ-बिल्कुल सही समझी ।
सोनरी- भौरे की तरह गुनगुनाओ ना ।

प्रेमनाथ-हम तुम कहां अलग हैं । तुम ही गुनगुनाओ ना । भौरा फूलों पर आश्रित रहता हैं हम तो तुम पर है ना ।भला मैं तुम्हारा कहना कैसे टाल सकता हूं जब तुमने मुझ भौरा ही बना दिया हैं तो लो गुनगुना भी देता हूं ।

बूढा खेत हुआ जवान सरसो ने ली अंगडाई ।
मैं बन गया भौरा जब से सोनरी हाथ मिलाई ॥
भौरे और फूल का मिलन देख वक्त हरसाया है ।
सोनरी की दख अंगडाई प्रेमनाथ बौराया है ॥
हम दोनो मिलकर गढेगे सपने सुहाने ।
कोयल गाएगी हमारी दीवानगी के गाने ॥

सोनरी-अरे अब रहने भी दो । तुहारी दीवनगी की मैं हो गयी कायल। अब ऐसी बात ना करो जो मैं समझ ना सकूं । और ना ही चापसूली के राग अलापों ।

प्रेमनाथ-इल्जाम ना मढों मेरे माथे । औरत मर्द का मिलन भी तो बहार बन जाता हैं । वरना इस मतलबी दुनिया में रखा ही क्या हैं । मानवता के माथे की तिलक और ममता समता की प्रतिरूप्ा भी तो औरत ही हैं । अरे औरत आदमी का गहना भी तो हैं ।

सोनरी-तुम भी गहने के मोह में पड गये ।
इतने दीवाने ना बनो सजनवा ।
गढवा गढवा कर थक जाआगे गहनवा ॥
मैं बावली प्यासी छमछम करे पयलवा।
गहने का मोह भारी शोर मचावै कंगनवा ॥
तन बौराये बसन्त की हैं अंगडाई ।
हंसुली लगे हल्की अब लो गले लगाई ॥

प्रेमनाथ-अरे वाह तुम तो मोरनी सी लगने लगी हो तुम्हरी गुनगुनाहट से मेरी प्यास बढने लगी है।

सोनरी-छोडो कुछ मीठी मीठी राग तुम भी छेडो ना ।

प्रेमनाथ- कितना अच्छी बाते चल रही थी । मीठी मीठी बातों को छोडकर मेरा मजाक बनाना क्यों सूझ रहा हैं ।अरे कोयल रानी तुम ही कुछ गुनगुनाओ ना ।

सोनरी- सुनोे आम के पेड पर कोयल गा रही हैं ।

प्रेमनाथ-हमारी कोयल के आगे सारी कोयलों के सुरों फीके पड जायेगे ।

सोनरी-नही जी कोयल तो कोयल ही हैं । देखो आम के पेड पर कोयल दिखायी तो नही पड रही हैं पर मधुर मधुर स्वर सुनाई पड रहा हैं।आम भी बौर से लदा हैं भौरे भी खूब मडरा रहे हैं । ऐसे समय में कोयल का सुर और रिमझिम बारीस में मोर का नाचना तन मन में गुदगुदी पैदा देता हैं ।

प्रेमनाथ-भागवान मुझे तो घुघुरू की झंकार सुनायी पड रही हैं ।

सोनरी-कैसी झंकार । कान तो नही बज रहे ।

प्रेमनाथ-ऐसा ना कहो भागवान ।

सोनरी-क्या कहूं । आसपास तो कोई बारात भी नही आयी हैं कि ाहनाई के सुर तुम्हारे कानो का गुदगुदा रहे हो ।

प्रेमनाथ-आ तो रही हैं ाहनाई की झंकार कानों को सकून मिल रहा है दिल में कुछ कुछ होने लगा है ।

सोनरी-बसन्त की मस्ती तुम पर चढ गयी हैं ।

प्रेमनाथ-अच्छा ।

सोनरी-आम महुवा सभी बौरा रहे हैं । तुम क्यो ना बौराओगे । तुम पर भी तो असर चढेगा ही । तुम भी भौरे की तरह मडराओगे ही ।

प्रेमनाथ-अरे वाह आज तो हम फूल भौरा हो गये ।क्या किस्मत बदल गयी अपनी ।

सोनरी-नही जी तुम पति ही हो हमारे । हर क्क्त तो भौरे जैसी दिलगी करने लगे हो । सरसांे के खेत जवान क्या हुए तुम भी भौरा बन गयेे ।तुमको झंकार सुनायी देने लगी हैं ।

प्रेमनाथ-मधुर मधुर झंकार आ तो रही हैं ।

सोनरी-सरसों के फूल ,आम्रमंजरी या महुवा काहे कि सुगन्ध में बौरा रहे हो । कौन सा जादू चढ गया हैं कि झूम रहे हो बिना साज के ही ।लगता बसन्त के फूलो के गहनों की खुमार तुम्हारे दिल पर चढने लगा है ।

प्रेमनाथ- अरे क्या बसन्त क्या फूल तुम तो हो हमारे जीवन खुश्बू ।

सोनरी-सच तो हैं पर अकेले मैं अस्तित्व बिहीन हूं तुम्हारे साथ से मेरे जीवन के मरूस्थल में झंकार है ।

प्रेमनाथ- तुम मरूस्थल कैसे हो सकती हो । तुम तो सृजनकारी हो ।मनमोहक झंकार हों ।मुझे तो हर ओर से तुम्हारे पायल की झंकार ही सुनायी पडने लगी है ।सच मैं भौरा सा दीवना तो नही हो गया ।

सोनरी-अरे वाह रे दीवाने लो सुनो ये झंकार ......पैर पटकते हुए बोली ।

प्रेमनाथ- यही झंकार तो मेरे जीवन का बहार बन गयी है।

सोनरी-वाह रे भौरे जी कहते हुए सोनरी पायल की झंकार छोडकर चली गयी ।

प्रेमनाथ -पायल की झंकार में जीवन के आनन्द क रहस्य को तलाशता रह गया।

॥ सोलह॥

सोनरी बसन्त फूल,झंकार महक के एहसास मे डूबी मोरनी सी अंगडाईया ले रही थी इसी बीच स्ुाखिया अधपका गेहूं का छोटा सा बोझ दरवाजे के सामने पटकते हुए सोनरी को आवाज देने लगी । सोनरी सास की आवाज सुनकर बाहर आयी । इधर उधर देखी सास का कही अता पता ही नही । अधपका गेहूं सुखिया की आहट दे रहा था ं। सोनरी भी अम्मा की आवाज देने लगी ।

सुखिया-महुवें की छांव में बैठी हूं । एक ग्लिास पानी लेती आ सानरी। बहुत तेज धूप हैं ।
सोनरी पानी लेने चली गयी । सुखिया महुवे के पेड के नीचे ताजे ताजे कुंचे बिनने लगी ।
सोनरी-लो अम्मा पानी ले ।
सुखिया-आयी । क्या सोने के गहने सरीखे कुंचें गिर रहे हैं महुवे से ।ऐसे सुन्दर मौसम में पेड पौधे खेत सभी इतरा रहे हैं अपने नवयौवन पर फूलों के गहनो से लदे ।देखो महुवा भी इतरा रहा है कूंचे के गहने में श्रृंगारित होकर ।
सोनरी-अम्मा गहना बाद में बिनना। पहले पानी पी लो ।
सुखिया-लाआ इधर दाे पानी पहले पी ली हं फिर बाते बाद कर लूंगी यही ना। जा एक कटोरी ला सोनरी। देख कितने सुन्दर सोने के गहने सरीखे कुंचे हैं ।
सोनरी-लो अम्मा कटोरी ।
सुखिया-कटोरी इधर रख बहू ।
सोनरी-अच्छा तो कुंचे की सुगन्ध में गमगमा रही हैं । लगता है इत्र में नही कर आयी है ।
सुखिया-सोनरी महुवे के कुंचे बहुत फायदेमन्द होते हैं । महीने भर दूध के साथ आदमी पीये तो लालमुंगवा हो जाये ।बहू तू एक काम कर घर के सामने ही तो महुवा का पेड हैं खूब कुंचे से लदा भी हैं । सबेेरे सबेरे प्रेमनाथ को दूध में उबाल कर दिया कर । घर में भैस भी तो लग रही हैं । कुंचे के लिये भी कही दूर जाना नही हैं ।बहू जब हम छोटे थे ना हम सभी भाई बहनो को मेरी मां देती थी दूध में उबाल कर । हम लोग तो बिना दूध के भी खूब खाते थे।तू भी देख ना खाकर ।
सोनरी-अम्मा हमने भी खाये हैं मेरे मायके में भी बहुत आम महुवा,जामुन के पेड है । अम्मा वो सामने वाले महुवे पर देखो गहने जैसे गुुच्छे गुच्छे लगे हैं कुंचे के ।
सुखिया-बहू देख थोडा सा गेहूं खेत से काट लायी हूं ।
सोनरी-अम्मा अधपका तो हैं ।क्या बनेगा ।
साुखिया-हाबुस बनाओ और क्या बनाएगी । सीजन तो इसी की हैं । सीजन के बाद कहां मिलेगा । वैसे ही मौसम में बहार हैं । आज हाबुस के साथ गन्ने का ताजा रस पीने की इच्छा हो रही हैं । तू तो एक काम कर हाबुस ही बना सोनरी ।
सोनरी-हां अम्माा हाबुस के साथ गन्ने का रस अच्छा लगेगा । हाबुस की जगह होरहा ।छोला। होता तो और अच्छा होता ।
सुखिया- चल आज तो इसको बना ले । बाद में चना भी भूज लेगे । कहां खरीदकर लाना हैं खेत में से ही तो लाना है । प्रेमनाथ की मेहनत से अच्छा चना भी खेत में लगा हैं ।
सुखिया- बहू हरा धनिया मिर्ची में भरा मिर्च डालकर चटनी बना लेना । भरे मिचार् की चटनी अच्छी लगती हैं । तुमको अच्छा लगे तो डालना नही तो बिना भरे मिर्चे की ही

पीस लेना । तू बना मैं प्रेमनाथ से कहकर आती हूं कि खेत से रस पेरने के लिये गन्ना भी थाडा सा काट लेता आएगा रस लियें ।

सोनरी-ठीक है अम्मा । सोनरी मन ही मन कहने लगी बूढा पर भी मौसम असर करने लगा है ।

सुखिया-क्या कही सोनरी ।

सोनरी-कुछ तो नही अम्मा । कुछ सुना क्या ।

सुखिया-तुमने कुछ कहा हैं जैसे । तभी तो मैं कह रही हूं । मेरे कान तो नही बज रहे हैं । मुझे तो लगा है कि तुमने कहा हैं कि बुढिया पर मौसम असर करने लगा हैं ।

सोनरी-अम्मा भला मैं ऐसे कैसे बोल सकती हूं ।

सुखिया- बहू तुमने कहा तो जरूर हैं कुछ । कही भी हैं तो कोई गलत तो नही कही है। बसन्त में तो साधु सन्तो के मन डोल जाते हैं । हम तो गृहस्त लोग हैं । बूढी तो जरूर हूं पर सोचने समझने पर कोई पाबन्दी नही हैेंं । बूढे भी खुद को जवान समझने लगते हैेंं ऐसे मौसम में । मेरा भी मन कर रहा हैं । वो आम का पेड देख सोनरी जो बौर से लदा है ।मन कर रहा उसी की छांव में जाकर बैठूं ।

सोनरी-देखो अम्मा कोयल भी आ रही हैं भौरे पहले से ही गा बजा रहे हैं । कोयल भी अब राग छेडेगी । इतने में कोयल बोलने लगी ।

सुखिया-अरे वाह रे कितना सुन्दर मौसम हो गया ।खेत सरसों के फूलो से भरे हैं । आम महुवा के पेडो पर मंजरी लदी हैं ।भौरे पंक्षिया सभी मस्त होकर नाच गा रहे हैेंं बसन्त बहार में । सोनरी अपना मन भी विहस जाये तो कितनी बढिया बात है मौसम के साथ।

सोनरी-बहुत बढिया होगा अम्मा जरा गाओ ना ।

सुखिया-सुन वो आवाज जो आम के पेड से आ रही हैं ।

सोनरी-अम्मा वहां तो कौवे कांव कांव कर रहे हैं ।

सुखिया-अरे कौवे वहा कहा है ।कौवे तो बरगद के पेड की छांव में हैं मैं तो आम के पेड की बात कर रही हूं जहां से कोयल की कू कू गूंज रही है ।

सोनरी-अच्छा कोयल ।अम्मा वह तो बहुत देरी से बोल रही हैं ।

सुखिया-ठीक हैं ।अब तो ये सब छोड । हाबुस बना । मैं गन्ना काटकर लाने के लिये प्रेमनाथ से कह कर आती हूं ।

सोनरी-ठीक हैं अम्मा ।मै हाबुस बनाती हूं ।

सुखिया - ठीक है सोनरी ।तू हाबुस भुज । मैं आती हूं ।

सोनरी-तब तक मैं तैयार कर लेती हूं ।

थोडी ही देर में सुखिया लौटकर आ गयी । सोनरी को बुलाने लगी ।सोनरी दौडी दौडी आयी ।सुखिया सोनरी से बोली बहू बाल्टी भी दे दे । जमीदार की बिजली वाली कल चल रही हैं । वही से पेरवा लूंगी । तनिक भर में बोझ पर गन्ना पेर कर रख देती हैं । बैल से चलने वाली कल तो घण्टा भर लगा देती हैं । सुखिया जमीदार की कल से गन्ना

पेरवा कर रस ले आयी और प्रेमनाथ को भी घर आने का बोल आयी । उधर तब तक सोनरी हाबुस और चटनी भी तैयार कर चुकी थी । पूरा परिवार हाबुस खा खाकर झक कर रस पीया ।

सोनरी बोली अम्मा चटनी अच्छी तो हैं कि भरा वाला मिर्चा दूं ।

ुाखिया- अरे क्यों नही ठीक होगी । तुम्हारा हाथ तो सोने पर सुहागे का काम करता है । इस मौसम में अच्छा नही लगेगा तो कब अच्छा लगेगा । जैसे हंसुली हमारे गले का सबसे सुन्दर गहना हैं वैसे ही बसन्त सारे मौसमों का गहना हैं ।

॥ सत्तरह ॥

सोनरी के बनाये हाबुस और चटनी का पूरा परिवार खूब लुत्फ उठाया।छक ताजे गन्ने का रस पीया ।सोनरी ब्याह कर आते ही अपने परिवार में खूब रच बस गयी । परिवार के लोग रास आने लगे ।सोनरी पूरे पिरवार की चहेती बन गयी थी अपनी मेहनत लगन और परिवार के प्रति सदप्रेम एवं समर्पण के कारण ।ससुराल आते ही उसी के माथे पर तो सारी गृहस्ती का भार आ पडा था ।सुखिया भी बहूं के आते ही मानो गंगा नहा ली थी।सोनरी अपना फर्ज बखूबी निभा रही थी । उसके अल्हडपन के दिन गये तो नही थे पर वह ससुराल में छोटी उम्र में आकर भी परिपक्व नारी की भांति अपने फर्ज पर खरी उतरने लगी थी ।सुखिया भी घर की चाभी बहू को सुपुर्द कर चैन की सांस ले रही थी । सुखिया गांव की औरतो से यह कहते नही थकती थी कि बहन सोनरी के आने से मानो चारो धाम की तीर्थ कर लिया हमने । भगवान सबको ऐसी बहूं दे । सुखिया को अपनी बहू सोनरी पर नाज था । वह कहती भगवान मेरी बहू जैसे ही बहू गांव वालों को देना ताकि पूरे गांव में सामंजस्य और परिवार का आपसी प्रेम बना रहे । सुखिया कहती मेरी बहू तो मेरे परिवार की हीरा हैं । सुखिया की बात सुनकर गांव की औरते कहती बहन तेरी बहूं हैं तो हीरा तो होगी ही ।सुखिया सोनरी की बहुतबडाई करती और खूब दुआये देती कहती बहूं दूधो नहावो पूतो फलो । आंचल उठा उठाकर खूब दुआ करती ।

उधर प्रेमनाथ के ब्याह में जिस सोनार के यहां से गहना खरीदा गया था वह प्रेमनाथ को उधार गहना देनो को तैयार था । सोनरी के गहना प्रेम को जानकर । प्रेमनाथ सपूत तो था ही गाय बैल भैस बकरी बकरा पालने का भी उसे खूब ललक थी।प्रेमनाथ को जानवरो से अधिक मोह था । भैस का तो वह पारखी था ही । प्रेमनाथ अपनी मेहनत मजदूरी के बल पर घर बाहर अपनी हैसियत के मुताबिक चमका कर रखा था ।गांव में प्रेमनाथ की साख भी अच्छी बन गयी थी ।एक बार प्रेमनाथ भैंस बेंचकर गहना बनवाने की गरज से बाजार चला गया ।सोनरी को गहने का उपहार देकर चौंकाना चाहता था ।सोनार एक से बढकर एक कीमती गहना दिखा जा रहा था प्रेमनाथ का जी ललचा रहा था पर करता भी क्या पैसे पास जो ना थे । पैसे पूरे गहने में लगा देता तो दूसरी भैस नही आ पाती ।प्रेमनाथ के पास अधिक रकम तो थी ही नही कि वह कीमती तोहफा सोनरी को दे सके । प्रेमनाथ छाती पर पत्थर रखकर उठना चाहे पर सोनार उठने ना दें । एक के बाद

एक बढिया गहना िदखाने लगे । प्रेमनाथ ऐसे कभी गहने की चमक नजदीक से देखा भी ना था वह पूरी दुकान का गहना अपनी घरवाली के तन पर देखना चाह रहा था परन्तु ऐसा नामुमकीन न था । प्रेमनाथ सोनार से बोला सेठ जी अपनी औकात के बाहर की बात हो गयी गहना खरीदना । वह सोनार से पीछा छुडाना चाह रहा था ।सोनार था कि छोडने को राजी ना था ।पुनः प्रेमनाथ बोला सेठ जी दूर जाना हैं मुझे रात हो जायेगी ।

सोनार-बोला अरे गहना खरीदने आये हो तो देख लो । हम जर्बदस्ती तो दे नही सकते ।देखने के कोई पैसे भी नही ले रहा हूं । भइया प्रेमनाथ भैसे बेचकर घरवाली का दिल जीतने के लिये गहना खरीदने आये हो तो ले जाओ बढिया सी कोई जेवर वह भी नाच उठेे ।क्याे प्रेमनाथ घरवाली के लिये कंजूसी अच्छी बात नही हैं ।

प्रेमनाथ-सेठ जी घरवाली को ही लेकर आऊंगी किसी दिन उसकी पसन्द मुझे मालूम नही हैं ।

सोनार-अपनी ही घरवाली को नही समझ पाये प्रेमनाथ ।अरे औरत तो गहने की भूखी होती हैं । तुम भी तो यह बात जानते ही होगे । औरतों के लिये ही तो गहने बने हैं । औरत ना होती तो ये गहने किस काम के होते । ना गहनों का ही कोई औचित्य होता और ना ही किसी सांज श्रृंरगार की वस्तु का ही आर ना ही ैं यह दुकान सजाकर बैठता। दुनिया कितनी निरस होती औरतें के बिना ठीक वैसे ही जैंसे बिना फूल पतों के कोई बगिया । औरत को तो कोई भी गहना दो कम ही रहता हैं । जितना गहना औरत पर लाद दो उतनी ही खुश रहती हैं ।प्रेमनाथ इतना सोच विचार क्यों कर रहे हो। अरे हम तो बैठे हैं नही पसन्द आये तो वापस कर दूसरा ले जाना । अपनी औरत को खुश कर दो आज एक नई गहना पहना कर ।महिला का पत्नी का स्वरूप मनमोहक होता हैं ।उसे संवार कर रखों ।पत्नी के बिना मर्द अधूरा है ।जिन घरों ें पत्नी को सम्मान और अधिकार के साथ उसके गहने की ख्वाहिशों पूरी की जाती है । उस घर में लक्ष्मी पालथी मारकर बैठ जाती है ।भइया प्रेमनाथ अपनी घरवाली को गहने का तोहफा तो जरूर दो ।गहना पाकर खूब प्यार निछावर करेगी ।ले जाओ आज काई ना कोई नया गहना ।

प्रेमनाथ-क्यों फंसा रहे हो सेठ जी । मेरे पास अधिक पैसे नही हैं । मैं तो सौ पच्चास की समान खरीदने की गरज से आया था । आप तो चन्द्रहार दिखा रहे हो जो खरीदना मेरे बस की बात नही हैं । अब तो मैं बाद में खरीदूंगा वह भी अपनी घरवाली के साथ ही आऊंगा ।

प्रेमनाथ की बात सुनकर दलाल बोल उठा अरे प्रेमनाथ भइया क्यों नाक कटवा रहे हो । अरे तुम को जो चाहिये ले जाओ मैं हूं ना ।पैसा भले ही दो चार महीने में दे जाना । भैंस बेचकर घरवाली के लिये गहना खरीदने आये हो । इंतनी कंजूसी कर रहे हो अपनी ही घरवाली के लिये गहना खरीदने में । अच्छी बात नही हैं । मुगलराजा ने अपनी

घरवाली के लिये ताजमहल बनवा दिया तुम एक नन्ही सी जेवर नही खरीद रहे हो पैसे होने के बाद भी । वाह रे प्रेमनाथ भइया वाह । क्या पत्नीप्रेम तुम में हैं ।अरे कोई बढिया जेवर ले जाते घरवाली भी खुश हो जाती । माना कि हम लोग ताजमहल नही बनवा सकते ।अरे अपनी औकात में जो हैं उतना तो कर ही सकते हैं । तुम हो कि प्रेमनाथ कंजूसी कर रहे हो ।

प्रेमनाथ दलाल की मीठी मीठी बातों के मरम को जान गया । दलाल की जासूसी पर प्रेमनाथ को बहुत अचम्भा हुआ । दलाल की चाल उल्टी पड गयी । प्रेमनाथ चांदी की सिकडी का भाव पूछा तो उसको जैसे झटका लग गया । वह बोल उठा इतनी महंगाई

सोनार-प्रेमनाथ सौ रूपये की रकम बहुत ज्यादा हैं।

प्रेमनाथ- हां सेठ जी बहुत महंगी हैं यंेें सिकडी ।

सोनार-कहा महंगी हैं बाजार भाव से सस्ती दे रहा हूं ।

प्रेमनाथ-मेरे बस की बात गहने की खरीदारी नही हैं सेठ जी ।चांदी का भाव आसमान छू रहा हैं तो सोने का क्या हाल होगा ।

सेठघसीटालाल-प्रेमनाथ रूपये का मुंह ना देखो । ले जाओ बढिया जेवर घरवाली खुश हो जाये । घरवाली को जेवर पहना कर भर आंख देखना सारे पैसे वसूल हो जायेगे ।

प्रेमनाथ-नही सेठ जी । अब तो मैं चांदी की सिकडी भी नही खरीद पाउूंगा । प्रेमनाथ दुकान से एकदम उठा और सडक पर आ गया ।घबराहट से पसीने पसीने हो रहा था । सडक पर आकर वह खुद को सुरक्षित महसूस करने लगा था जैसे चाईयों से बचकर आया हो । उसे लग रहा था कि दलाल उसे लूटवा देगा । प्रेमनाथ तुरन्त अपने गांव की ओर चल पडा । अंधेरा पसरने लगा था ।घरों के चूल्हो से उठ रहा धुआ आकाश को धुधला कर रहा था । सोनरी भी चूल्हे को गरम करने का बन्दोबस्त कर डयोढी पर खडी खडी प्रेमनाथ की बाट जोह रही थी ।

॥ अट्ठारह ॥

प्रेमनाथ के आने में हो रही विलम्ब से सोनरी के दिल की धडकन बढ गयी थी । वह बार अन्दर बाहर कर रही थी ।सोनरी पूर गांव की चहंेंती बन चुकी थी ।सभी अपने अपने दुख सुख में सोनरी को पूछते बडे बूढों की तरह । प्रेमनाथ शहर गया हैं देर रात हो गयी पर नही लौटा है ।यह बात पूरी बस्ती में फैल गयी । सुखिया भी हडबडा रही थी। उसे डर लग रहा था कि बाजार से आने में इतनी देर क्यो हो गयी । कही कोई ठग चोर की नजर तो उस पर नही पड गयी । सुखिया और सोनरी के मन में कई तरह की दुविधाये उपज रही थी । वे दोनो सास पतोह सोच सोच कर आंसू बहाये जा रही थी । प्रेमनाथ का गौना हुए बहुत साल तो अभी बिता भी नही था । जितने लोग उतनी बाते । लोगो की बाते सुन सुन कर सास बहू का दिल बैठा जा रहा था । कोई लूटपाट की बाते तो कोई हत्या की बाते कर रहा था । सोनरी और सुखिया के ाथे की सिक्क्न बढती जा रही थी ।इसी बीच पे्रमनाथ भी आ गया । प्रेमनाथ घर के सामने जमा भीड को देखकर

घबरा गया उसके मुंह से निकल पडा-अरे बाप रे ये क्या हुआ। सोनरी ये भीड कैसी । क्या बात हो गयी ।

सोनरी-सब लोग तुम्हारी इंतजार कर रहे हैं ।

प्रेमनाथ -मेरी इंतजार क्यों।मैं कोई गौने की दुल्हन तो हूं नही कि सब लोग पलके बिछायें हुए हैं मेरी इन्तजार कर रह है कि दुल्हन के आने पर ही पूडी बखीर मिलेगी ।

सोनरी-ऐसे ना कहो लोगो को बुरा लगयेगा । ऐसा नही कहते । यहां लोग तुम्हारी इंतजार में अपना कामधंधा छोडकर बैठे हैं ।तुम हो कि जले पर नमक छिडक रहे हो ।

प्रेमनाथ -इसमें बुरा लगने की क्या बात हैं । सच तो हैं मै कोई दुल्हन तो हूं नही । दुल्हन तो तुम हो ।अरे शहर पल्हना की बाजार इतना कम दूरी पर तो नही है।ं बहुत दूर हैं और बडा भी गलियों से निकलने शरीर छिल जाती हैं इनी भीड रहती है । आने जाने में तो देर होगी । जाते समय ट्रैक्टर में बैठकर चला गया था तहसील तक कस्बे की जाने के लिये फिर बस मिली थी । कस्बे की गली गली छानकर थक गया पर काम नही बना तो नही बना । लूटते लूटते बचा । बडी कठिनाई से जान बचाकर आया हूं । वहां से फिर कान वाले डाक्टर के पास गया ।कान का चेक डाक्टर साहब किये । समय तो लगता ही हैं कही आओ जाओ तो वह भी शहर में ।कहने को छोटा शहर हैं पर बहुत बडा ाहर हैं दुनिया भर के लोग आते हैं । आदमी तो भेड बकरी सरीखे सडक पर भागते रहते हैं । कोइ्र पिण्ड्दान करने जा रहा हैं तो कोई गंगा स्नान करने जा रहा हैं कोई भूत प्रेत बैठाने जा रहा हैं । बाप रे इतनी भीड ।

ुाखिया-बेटवा कही रास्ता तो नही भूल गया था ।

प्ेामनाथ-ना मां ना ।रास्ता तो भूलने का सवाल ही नही उठता । अगर रास्ता भूल जाता तो गली गुंचों में से निकलना बहुत कठिन हो जाता । रिक्शा वाले ही दबा डालते । इतनी संकरी गली उसी में रिक्शा पैदल गाडी मोटर सब कुछ । बेचारे दूर दूर से अन्तिम संस्कार के लिये अपने मृत परिवजनों को कंधे पर लिये लोग उन्ही तंग गलियों में भागते रहते हैं ।

ुुाखिया-प्रेमनाथ तू गया ही क्यो था ।

प्ेामनाथ-कान की दवाई के लिये ।कान का दर्द चैन छिन रखा हैं । रात की नींद दिन का चैन खो गया हैं । तुम तो ऐसे पूछ रही हो जैसे जानती ही नही हो मां ।

सुखिया-समझ गयी । तेरी मुटठी भी तो गरम हैं । आसपास डाक्टर नही थे क्या ।

प्ेामनाथ-मां अपजस ना मढ। तुम भी जानती हो मेरे कान के दर्द के बारे में । नीम हकीमो से तंग आ गया हूं ।सब पैसे ऐठना जानते हैं गांव के नीम हकीम लोग । मैं मालिक के कहने पर ही गया था। कान का आपरेशन भी करवाना सकता हैं । कान में बारीक भूसा धीरे धीरे जम गया हैं । वही दर्द का कारण हैं । आपरेशनन करके निकालना होगा । डांक्टर बोल रहे थे कि वे धीरे धीरे मशीन से पानी के प्रेशर से निकाल देगे ।इसमे समय लग सकता हैं मां। यदि ऐसे नही निकला तो आपरेशन करवाना पडेगा ।

ुाखिया-बेटा बताकर तो जाना था ।
प्रेमनाथ-तुम सब बहुत जल्दी घबरा जाते हो इसलिये नही बताया ।शहर से बस तहसील तक के लिये बस मिलती हैं तू भी तो जानती है मां। इसके बाद तो घण्टों का इन्तजार करो या पैदल आओ । चार पांच कोस की दूरी पैदल चलकर आ रहा हूं । मां तुम हो कि सवाल पर सवाल दागे जा रही हो । अरे गहना तो गढवाने गया नही था ।
ुाखिया-गहना गढवाओ अच्छी बात है ।पाहू पहन कर दमकेगी तो मेरा भी मन विहसा करेगा। अच्छी बात हैं । तू तो दिन दूनी रात चौगूनी तरक्की कर मेरे लाल । रोज गहना गढवाओ । हमें भी खु ाी होगी । कही जाया करो बता कर जाया करो । मेरा इतना ही कहना हैं । चिन्ता होती हैं । सोनरी तो आंसू बहा रही थी । तुमको देखकर उसमे जान पडी हैं । तुम्हारे ब्याह में भी तो पूरा गहना नही बन पाया था । अब तू खूद कमाकर मेरी पतोहू ू को पहनाओ । खूब गहने से लाद दो बहुत बढिया बात हैं बेटा । बहू गहने से लद जाती तो मेरी भी तमन्ना पूरी हो जाती ।सोनरी मां बेटे की बात को अनसुना करते हुए धीरे से उठी और कुये से बाल्टी भर लायी पानी की ।
सोनरी-देरी बहुत कर दिये।चलो उठो हाथ मुंह धो लो।खाना खाओ अम्मा भी भूखी प्यासी बैठी हैं
प्रेमनाथ -तुम लोग क्यों बैठी हो खाना तो खा लेना था । कितनी रात हो गयी । मैं आकर खा लेता । इन्तजार करने की क्या जरूरत थी ।तुम लोग भूखे मर रहे हो । मैं आकर खा लेता । तुम लोग जैसे व्रत ले रखे हो ।
सोनरी- अरे तुम खाना नही खाओ इसके पहले हम खानाा खाले ।ऐसा तो नही होता ।
प्रेमनाथ -मां को तो खिला देना था । चलो हाथ पांव धो लिया । खा लेते हैं ।
साेनरी-चलो रसोई में बैठ जाओ । वही खा लो । दीया तो वही जल रही हैं । अम्मा को कितनी बार बोली पर वे टस से मस नही हुई बोली कि बेटवा आ जायेगा ।तभी अन्न जल ग्रहण करेगी ।
प्रेमनाथ-चलो मां को खाना दो ।मेरे पेट में भी चूहे कूद रहे हैं ।
सोनरी-लो खाओ ना । क्यों चूहे कूद रहे हैं ।
प्रेमनाथ -सोनरी का हाथ पकड कर बोला तुम भी साथ ही खा लो ना ।
सोनरी-नही तुम खाओ । लोग क्या कहेगे । लोक लाज है कि नही ।
प्रेमनाथ -कोई देख तो नही रहा है तुमको ।
सोनरी-कोई नही देख रहा हैं तो क्या हुआ मैं तो देख रही हूं ना । मैं अपने मां बाप का दिया संस्कार नही भूलूंगी । तुम जल्दी खा लो । मुझे तो भगवान के सामने जबाब देना होगा यदि अपने धर्म को तोडा तो । मैं ऐसा नही करूंगी ।तुम खाओ ।मैं अपने फर्ज पर कायम रहूंगी ।

प्रेमनाथ -ठीक हैं अटल रहो अपने धर्म पर । अब तो मुझे जल्दी जल्दी खाना होगा वरना मुझे भी भगवान के दरबार में जबाब देना होगा कि मैंने अपनी घरवाली को भूखा क्यों रखा । कहते हुए प्रेमनाथ जल्दी जल्दी खाने लगा ।

सोनरी-चूल्हे चौके की सफाई में जुट गयी ।

प्रेमनाथ -खाना खाकर दांत साफ करते हुए बोला देवी जी विस्तर बिछा है क्या ।

सेनरी-हां जी । विस्तर इन्तजार कर रहा हैं । जाओ सो जाओ । मुझे खा लेने दो ।तुम को तो इतनी जल्दी नींद आने वाली नही हैं । ाहर की चकाचौध जो देखकर आ रहे हो ।

प्रेमनाथ -विस्तर बिछा हैं क्या।

सोनरी-हां जी बिछा हैं जाओ सोओ । मुझे आैर भी काम करना हैं ।

प्रेमनाथ -अरे वाह बहुत ख्याल रखने लगी हो आजकल मुझे तो मालूम न था ।

सोनरी-ठीक हैं जाओ सो जाओ । बकबक ना करो । हमें और भी तो काम हैं ।घर मंदिर की जिम्मेदारी भी तो निभानी है। तुम सो जाओ थके हो । आराम करो ।मेरी फिक्र ना करो ।

प्रेमनाथ ा-ठीक हैं भागवान तुम घर मंदिर में सुगन्ध बिखेरो । रात तो अपनी हैं सो लेगे । भागवान मेरी एक बात सुनोगी ।

सोनरी-क्यो नही । मैं तो तुम्हारी बात पर कुर्बान हो जाऊंगी । ना सुनने जैसी तो कोई बात कसे हो सकी है प्राणनाथ ।

प्रेमनाथ -जरा आंख बन्द करो ।

सोनरी-क्या खास हैं आज ।

प्रेमनाथ -बन्द तो करो ।

सोनरी-लो बन्द कर ली ।

प्रेमनाथ -हाथ फैलाओ तब ना ।

सोनरी-लो हाथ भी फैला दी ।

प्रेमनाथ-सोनरी के हाथ पर गुलाबी रंग की एक पुडिया रख दिया ।

ेाानरी-पुडिया में क्या हैं ।

प्रेमनाथ -खोलकर देखो ना । तब पता चलेगा क्या हैं ।

सोनरी-क्या है बताओ ना ....

प्रेमनाथ - ुाद देख लो । तुम्हारे लिये ही तो शहर से लाया हूं।तुम्हारी जरूरत की चीज लाया हूं ।

सोनरी-गुलाबी रंग के कागज में तो सोने के गहने लपेटे जाते हैं । ऐसा ही कुछ है क्या ।

प्रेमनाथ -सवाल जबाब ही करती रहोगी या खोलकर देखोगी भी ।

सोनरी-अरे वाह झुलनी है ।

प्रेमनाथ -अच्छी हैं कि नही ।

सोनरी-तुम लाओ अच्छी ना हो ।ऐसा हो सकता है क्या ।तुम तो घासफूस की माला गले में डाल दोगे तो मैं समझूगी कि तुमने मुझे चन्द्रहार पहना दिया ।

प्रेमनाथ -देखो मेरी गरीबी का मजाक ना उडाओ । मन में हलचल मच रही हैं तुम हो कि ताने मार रही हो । अरे बिना मतलब की बाते छोडो ।झुलनी नाक में पहन कर दिखाओ ।

सोनरी-लो पहन ली । देखो ना झुलनी तो नाक में ही पहनी जाती हैं ना ।मुझे भी मालूम हैं फुरकी नाक में ही पहनी जाती हैं ।दुर्भाग्य है कि तुम वक्त से लड रहे हो मैं गहने को तरस रही हूं ।सच गरीबी आदमी का बेबस बना कर रख देती है ।

प्रेमनाथ -सच तुम बहुत जंच रही हो।

सोनरी-अम्मा को दिखाकर आऊं ।

प्रेमनाथ -ना बाबा ना । मुझे तो भर आंख देख लेने दो ।

सोनरी-कैसी बात कर रहे हो ।पीकर तो नही आये हो ।

प्रेमनाथ -पीकर तो नही आया हूं पर बिना पीये लगता हैं पी लिया ।मैं शहर पीने पिलाने तो गया नही था ।झूठमूठ में अपजस मढ रही हो बेचारे निहायत पत्नीव्रता आदमी के माथे। मां को दिखाने को तो हमने मना नही किया । रात बहुत हो चुकी हें मां सो गयी होगी ।

सोनरी नई झुलनी पहनकर विहस उठी। वह प्रेमनाथ की छाती पर हाथ फेरते हुए बोली तुम कितने अच्छे हो । कुछ ही देर में बातो का सिलसिला खत्म हो गया और दोनो नीद की गोद में समा गये ।

॥उन्नीस ।।

सोनरी की नाक में प्रेमनाथ द्वारा लायी गयी झुलनी चांद की तरह दमकने लगी थी ।वह रह रह कर प्रेमनाथ से पूछती क्यों जी कैसी लग रही हैं तुम्हारी दी हुई जेवर । सोनरी घर परिवार में रच बसा गयी थी । उसे खाली बैठना अब अच्छा नही लगता था । जब वह पहले पहल इस घर में आयी थी तो झुईमुई थी । अब उसका स्वाभाव भी बदल गया था । वह पक्की गृहस्त बन चुकी थी । पति का प्रेम भी तो भरपूर मिल रहा था । यही आपसी प्रेम तो सम्बन्धाे में और निखार लाता हैं । उसे लगने लगा था कि वह भी प्ेरामनाथ के साथ श्रम की मण्डी में कूद पडे । उसने वही किया जो सोची थी पर कुछ साल के बाद ही । वह परिवार रूपी गाडी की मजबूत पहिया बन चुकी थी । लक्ष्मी जी रूठी रूठी थी उसके अथक परिश्रम के बाद भी ।गरीबी गले में फांसी के फंदे की भांति पडी हुई थी ।सोनरी और प्रेमनाथ दिन भर मेहनत मजदूरी करते । सोनरी की कोई भी उम्मीद पूरी नही हो रही था । ना गहने की और ना ही अच्छे कपडे की ही परन्तु उसे मलाल न था क्योंकि प्रेमनाथ ऐसा नेक इंसान उसे पति के रूप में जो िमल गया था ।सोनरी हर बात समझती थी । प्रेमनाथ की भी बहुत तमन्ना थी कि वह अपनी पत्नी को रानी की भांति रखे । सोने चांदी के गहने से लाद दे । प्रेमनाथ मजबूर था तो अपनी

आर्थिक स्थिति से । हां कभी कभी जानवरों के बेंच से कुछ आमदनी हो जाती तो कुछ ना कुछ छोटा मोटा जेवर जरूर ला देता । प्रेमनाथ भी बहुत प्रसन्नचित था सोनरी को पत्नी के रूप में पाकर ।सोनरी के गुणों की चर्चा पूरे गांव में होती रहती ।लोग कहते बहू हो तो सुखिया की पतोहू जैसी ।

एक दिन बाइस्कोप वाला प्रेमनाथ के घर के सामने मजमा लगाये हुए था । लोगो की भीड लगी हुई थी। बाइस्कोप देखने के लिये पूरा गांव टूटा हुआ था । सोनरी की भी इच्छा बलवन्ती हो रही थी । प्रेमनाथ नीम की छांव में बैठा हुआ था । बाईस्कोप पर पुराने दर्द भरे गीत बज रहे थे जिनमें प्रेमरोग की लौ भी सुलग रही थीे । बाइस्कोप पर जब लागल झुलनिया का धक्का बलम पहुंच गये कलकत्ता बजा तो औरतें खिलखिला कर हंस पडी । एक के बाद एक बढिया गाना बज रहा था ।प्रेमनाथ की भी इच्छा होने लगी कि वह सोनरी के साथ बाइस्कोप देखे ।वह नीम की छांव से उठा और सोनरी से बोला क्यो झुईमुई पीचर देख ले साथ साथ तो कैसा रहेगा ।चलो देख ले । दरवाजे पर से बाइस्कोप चला जायेगा । ना जाने कब ऐसा मौका आयेगा । चलो ना देख ले हम भी । क्या अच्छे अच्छे गाने बज रहे हैं ।

सोनरी-लोग क्या कहेगे ।

प्रेमनाथ-क्या कहेगे । कुछ नही सभी तो देख रहे है आरत मर्द।हम देख लेगे तो कौन सा पहाड गिर पडेगा ।

सोनरी-मुझे लाज लगेगी ।

प्रेमनाथ-कैसी लाज कोई बुरा काम तो करने नही जा रहे ।

सोनरी-कह तो रहे हो ठीक पर लोग कुछ ना कुछ कहेगे जरूर ।

प्रेमनाथ-कहते हैं तो कहने दो । कोई गलत काम तो करने नही जा रहे । बाइस्कोप देखना हैं बा । चलो हम एक साथ देख ले ना व सब अपने घर में दा लाआ ठण्डा पानी पीकर करवट बदल लेगे। कितना अच्छा लगेगा हम दोनो साथ साथ बाइस्कोप देखेगे तो ।

सोनरी-गांव वाले कहेगे सोनरी लाज हया धो दी । देखो अपने मर्द के साथ सिनेमा देख रही हैं ।

प्रेमनाथ-भागवान सिनेमा थोडे ही हैं । इसमे तो बस कागज की फोटो हैं । गाना टेपरिकार्डर पर बजता हैं । चलो ना देख ले एक साथ ।ुम्ह भी मालूम हो जायेगा कि बाइस्कोप कैसा होता है । इसी बहाने हम दोनो बाइस्कोप का भी लुत्फ उठा लेगे ।

सोनरी-नही साथ साथ नही ।

प्रेमनाथ-क्यों ।

सोनरी-औरत मर्द सब मजाक उडायेगे । कहेगे देखो सोनरी को बाइस्कोप देख रहे हैं अपनी पति के साथ ।जरा भी लाज नही आ रही है उसको ।

प्रेमनाथ-इसमें बुराई क्या हैं ।साथ में बाइस्कोप देख लेनेे में ।

सोनरी-कुछ तो नही होगा पर.........

प्रेमनाथ-पर क्या । अरे तुम दूसरे के साथ सिनेमा देखने जा नही रही हो । घर के सामने बाइस्कोप आया हैं । देखने में क्या हर्ज है । मुझे तो कोई खामी नजर नही आती साथ देखने में ।कृष्ण लीला साथ देखेगे तो अच्छा लगेगा ना । कृष्ण लीला लैला मजनू ,हीर रांझा की दास्तान के साथ ही सती सावित्री और राजा हरि ाचन्द की कथा के भी चित्र होते हैं बाइस्कोप में । प्रेमनाथ की बात को सुनकर सोनरी के मन के तार झनझना उठे पर उसे लोक लाज की डर खाये जा रही थी ।

वह मायूस होकर बोली देखो जी मेरी भी इच्छा तुम्हारे साथ बाइस्कोप देखने की तो हो रही हैं पर लोग अनाप शनाप सोचेगे । चलो अलग अलग ही देख लेते हैं ।

प्रेमनाथ के सब्र का बांध टूट गया वह बोला देवी जी कहा वहां अपने को रास लीला रचानी हैं ।हां चाहोगी तो बाइस्कोप देखते समय बात कर लेगे । कहां उसमें नाच गाना हो रहा हैं । फोटो तो चिपकाई हुई रहती हैं । टेप बजता हैं फोटो के साथ पर गाने काफी अच्छे और पुराने बज रहे होते हैं ।

सोनरी-अच्छा इतना रसिक ना बनो । अब जाकर देखकर आओ ।

प्रेमनाथ-ऐसा करो तुम देख आओ मुझे बाद मे बता देना । इससे पैसा भी तो बंच जायेगा।

सोनरी-नही। तुम देख कर आओ ।

प्रेमनाथ-तुम देख लो ना ।

सोनरी-नही तुम पहले..........

प्रेमनाथ-तुम कह रही हो तो देखना ही पडेगा । तुम भी बगल में बैठकर देखती तो कितना मजा आता ।

सोनरी-देखो जी जो कुछ कहे बेहत्तर हैं। लोक लाज के लिये अलग अलग ही देख ले ।

प्रेमनाथ- तुम्हारी बात तो मानना ही पडेगा । माथे पर हया का पल्लू जो लटका है ।चलो ठीक हैं मैं ही देख आता हूं पहले ।

सोनरी-ये बात हुई ना मर्दो वाली ।

सोनरी प्रेमनाथ दोनो बाइस्कोप देखे । बाइस्कोप बहुत पसन्द आया सोनरी को । खासकर सती सावित्री की दास्तान तो बहुत ही पसन्द आयी । सती सावित्री की दास्तान चित्रों मे देखकर उसकी आंखों से आसूओ की धार फूट पडी थी ।हरिशचन्द की दास्तान जिसमें अपनी ही पत्नी से वे अपने ही बेटे के अन्तिम संस्कार पर कर और कफन मांगते हुए बाइस्कोप में फोटो था । गाना भी कुछ इसी दास्तान का बजाया था बाइस्कोप वाला । हरिशचन्द की दास्तान देखकर वह चिख पडी थी तब बगल में देख रही एक लडकी ने बोला था भौजी राे रही हो क्या । यह तो बस फोटो हैं । वह एकदम चुप हो गयी थी ।

सोनरी-प्रेमनाथ से पूछी क्यों जी कृष्ण लीला अच्छी थी ना ।

प्रेमनाथ-बहुत अच्छी थी । उस जमाने में कितनी सम्पन्नता थी । आज का जमाना देखाे । हर चीज के लिये तरस रहे हैं उपर से जातीय विद्वेष गरीबो को जीन नही दे रहा है ।

सोनरी -ऐसा क्यो कह रहे हो । सब नसीब का खेल हैं । हम एक दूसरे को देखकर जी लगेगे।

प्रेमनाथ-क्यों ना । ऐसे ही चहकती रहों,

मुबारक हो,यूं फूल सा खिलखिला जाना ,

ठहरी रहे ये,जुडता रहे नित नया तराना !!

प्रसून सा जीवन नाचता रहे ये भौरा ,

आहट से,खिलखिला उठे ये घरौंदा !!

हर रात सुहानी बन जाये ,

जीवन की सुगन्ध से,वक्त गमकता रह जाये!!

मुबारक हो, सोनरी तुम्हे यूं फूल सा खिलखिला जाना.......

सोनरी-अरे वाह तुम तो शायर हो गये । रास लीला देखकर वह भी बाइस्कोप पर ।

प्रेमनाथ-सच सोनरी सबूरी से बडा कोई धन नही हैं ।तुम्हारा यही समर्पण भाव तो अब हमारा गहना बन गया है ।

सोनरी प्रेमनाथ की आंखों में ताकने लगी जैसे राधा ने कृष्ण की आंखों में शायद झांका था ।

॥ बीस ॥

प्रेमनाथ कृष्णलीला देखने के वह बहुत दर तक सोनरी का स्नेह से निहारता रहा । प्रेमनाथ की आंखो के बदलते तेवर को देखकर सोनरी बाली -क्या हुआ अभी तब जी नही भरा क्या ।ऐसे क्यों देख रहे हो जैसे प्यासा कुये को ढूढता है ।

प्ेामनाथ-भागवान मैं भी बहुत प्यासा हूं ।

सोनरी-ऐसी कौन सा प्यास हैं जो बुझती ही नही । तडपाती रहती हैं ।

प्ेामनाथ-तुमको सब पता हैं।

सोनरी-गहने की ।

प्रेमनाथ-तुम भी क्या औरत हो । सोते जागते गहने के ही सपने देखती रहती हो ।

सोनरी-तब कौन सी प्यास हैं तुमको लगी ।

प्रेमनाथ-तुमको सब पता हैं ।

सोनरी-देखो पहाडा ना पढाओ ।दिन भर काम कर थक जाती हूं । अराम के पहाडा पढाने लगे । मन की बात क्यो नही करते। जो कहना हो साफ साफ कह दो । मुझे थोडा अराम कर लेने दो ।

प्रेमनाथ-हमने मना तो नही किया । एक बात तुमको बताना चाह रहा था ।

सोनरी-तब बताते क्यों नही । इधर उधर की बातें कर रहे हो । असली बात बता ही नही रहे हो । बताओ ना क्या बताना चाह रहे हो ।

प्रेमनाथ-जिस दिन मैं शहर गया था ना एक चीज देखा ।

सोनरी-क्या देखा था हे क्या ालूम बताओगे तब ना जानूंगी।

प्रेमनाथ- पुतला ।

सोनरी-पुतला बस..........

प्रेमनाथ-पुतला ही पर वह कोई ऐसा वैसा थोडे ही न था । वह तो एकदम नवविवाहिता दुल्हन की भांति सजाधजा कर रखा गया था । उस पुतले पर कम से कम किलों पर सोना चांदी था । क्या पुतला था लोग धोखा खा जाये । बिल्कुल दुल्हन लग रहा था।

सोनरी-अरे वाह तुम तो पुतले को दिल दे आये हमारा क्या होगा ।

प्रेमनाथ-क्या कह रही हो भागवान ।

सोनरी-ठीक ही तो कह रही हूं । अच्छा ाहर की मेम लोगो को देखकर आये हो इसीलिये खोये खोये रहते हो आजकल । पुतला तो बहाना हैं । यही हैं तुम्हरी बेचैनी का राज । अब समझी ।

प्रेमनाथ-राम राम गरीब के साथ यह अन्याय क्यों ।

सोनरी-अन्याय मैं कर रही हूं ।

प्रेमनाथ-हां भागवान तुम कर रही हो ।इतना बडा इल्जाम ना लगाओ । मैं तो वियोग में ही मर जाऊंगा ।

सोनरी-देखो मरने का नाम न लो । जा कह रही हूं गलत तो नही कह रही ।सही सही बताओ ।

प्रेमनाथ-सोलह आने गलत देवी जी सोलह आने गलत ।

सोनरी-इल्जाम कह रहे हो । क्या गलत इल्जाम हैं । तुम मर्द लोग बाहर जाते हो तो बहुत ताक झांक करते हो । दूसरों की औरतो की सुराहीदार गर्दन देखते हो ।सुराहीदार गर्दन मं चन्द्रहार देखते हो।कसा बदन देखते हो । उनकी सुन्दरता निहारते हो ।अपनी घरवाली को भूल जाते हो । क्या यह अन्याय नही ।

प्रेमनाथ-सचमुच सुराहीदार गर्दन थी ।

सोनरी-घाव पर मिर्च ना रगडाे ।

प्रेमनाथ-सच बहुत सुन्दर थी वह पुतले की दुल्हन न कर रहा था कि उसी को निहारता रहं । उसके गले में क्या भारी भरकम चन्द्रहार गजब ढा रहा था । काश वह चन्द्रहार तुम्हारे सुराहीदार गर्दन में होता ।

सोनरी के हृदय पर सांप लोट गया । वह दूसरे क्षण बोली क्या उसके साथ जाने का मन बन गया था ।

प्रेमनाथ-अरे पुतले के साथ क्यों भेज रही हो । किसी सुन्दर नारी के साथ जाने को कहती । खैर अपनी किस्मत कहा मुझ गरीब का काई रानी महारानी क्यों पसन्द करेगी ।मैने तो खुद अपने दिल की महारानी को पसन्द कर लिया है ।

सोनरी-क्या कहा ।

प्रेमनाथ-क्या अच्छा नही कहा ।

सोनरी-मेरा जी जला रहे हो उपर से कह रहे हो अच्छा नही लगा ।ठीक कह रहे हो मुझ गंवार के साथ तुम फंस गये यही ना । किसी ाहरी मेम के साथ होते तो चूल्ह चौका करते । पीछे पीछे घूमते उसका थैला लेकर । बहुत सुख मिलता । चले जाना था । मैं अपना जीवन तुम्हारी आस में ही काट लेती । जाओ मेरी तरफ से आजाद हो ।

प्रेमनाथ-भागवान क्यो जली कटी सुना रही हो । मैं तो कुछ और ही कहना चाह रहा था । तुमने मेरी बात को बतंगड बना दिया।

सोनरी-कह दो और कुछ जो कहना चाह रहे हो ताकि दिल को और ठण्डक मिल जाये ।

प्रेमनाथ-अरे कहने दोगी तब ना ।

सोनरी-इतनी मेरी परवाह कब से करने लगे । एक दिन ाहर क्या चले गये । सुन्दर सुन्दर सुराहीदार गर्दन वाली औरतों के दीवाने हो गये । उनकी खुश्बू आज तक तुम्हारे नथूनों में भरी हुई हैं ।सुन्दर सुन्दर नारियों के कामल कोमल तन से उडकर इत्र तुम्हारी नाक में समा गया है । तभी तो तुम दीवाने हो गये हो ।

प्रेमनाथ-अच्छी चीज को देखने में बुराई है क्या । भागवान अपनी किस्मत में कहा इतनी सुन्दर गहने से लदी घरवाली । सुन्दर फूल सुन्दर औरत पर हर इंसान की नजर बरबस पड ही जाती हैं । मैं तो औरत की भी बात नही कर रहा था बस पुतले के बारे में कह रहा था । तुमने छोटी सी बात को बढा दिया। उस पुतले के आगे जीवित नारी की सुन्दरता फीकी थी । सच हमने ऐसा पुतला नही देखा था आज तक । एक बार मुझे लगा कि सचमुच की और बन संवर कर खडी हैं । लेकिल बाद में सोचा कि वह तो सन्दूक में में बन्द हैं । यह औरत नही पुतला हैं । मैं क्या गांव का हर आदमी ऐसा ही सोचेगा जो पहली बार देखेगा ।

सोनरी-सच तुम्हारा मन डोल गया था ना ।

प्रेमनाथ- नही बिल्कुल नही ।

सोनरी-कहते हैं विश्वामित्र की तपस्या भंग हो गयी थी । वे भी मचल गये थे मेनका पर।तुम भी ता नही चल आये । क्या हुआ इल्जाममालूम है दुनिया को ।

प्रेमनाथ-भागवान मेरे देखने में अन्तर हैं । मैंने पुतला देखा हैं । वह भी सोने चांदी हीरे जवाहरात से लदा हुआ । वह औरत का पुतला गौने की दुल्हन से कम न था ।

सोनरी-चन्द्रहार भी था उसकी गर्दन में ।

प्रेमनाथ-हां था तो । पुतले की गर्दन देखकर सच तुम्हारी याद आ गयी थी मुझे पर अपने भाग्य में इतना सुन्दर यौवन कहा ।

सोनरी-काश मेरी भी गर्दन में चन्द्रहार होता ।
प्रेमनाथ- हां सोनरी भगवान अपनी भी सुन लेता । तेरा हर अंग सोने चांदी के गहनो से कसा रहता ।क्या करूं अपनी तो औकात ही नही है कि तुमको गहने गढवाऊं ।हम तो ठहरे मेहनत मजदूरी करने वाले ।
सोनरी- देखो भगवान अपनी बिगडी किस्मत कब बनाता है ।
प्रेमनाथ-हां सानेरी पुतले को देखकर मैं तो चौधिया गया था । वह पुतला वैसे ही चमक रहा था जैसे अंधेरी रात में तारे चमकते हैं । गर्दन में चन्द्रहार सोने के हंसुली के साथ खूब छज रहा था । हाथ में कंगन,बाजूबन्द,कडा-छडा,हुमेल और भी ना जाने कौन कौन से गहने थे ।
सोनरी-अब बस करो । नीचे के गहने को मत गिनाना ।
प्रेमनाथ-क्या -
सोनरी-हां ठीक कह रही हूं ।
प्रेमनाथ-क्या खाक ठीक रही हो ।
सोनरी-तुम कमर का बखान करोगे फिर कमर में पहने गहनो का ।फिर कहोगे क्या कमर थी । क्या कमर में कमरबन्द था ।मेरा जी अब ना जलाओ ।
प्रेमनाथ-क्यों जलोगी । भगवान से दुआ करो हमें भी दें हमारी कमाई में बरक्क्त दें।
सोनरी-वो तो रोज ही करती हूं पर भगवान सुने तब ना ।
प्रेमनाथ-जरूर सुनेगा । वही तो दीनदयाल हैं। हम गरीबों का सुनने वाला वही है । बाकी सब तो ठग हैं ।सोनरी पुतले के कमर में क्या मोटा सा चाभी का सोने का गुच्छा लटका था । कमर में गुच्छा लटक कर सच अपनी किस्मत पर इतरा रहा होगा ।
सोनरी-अरे अब तो चुप हो जाओ ।
प्रेमनाथ-भागवान । जो सपने में देखने को नही मिलता । नंगी आंखों से देखा हुआ बयान कर रहा हूं । मुझे कह तो लेने दो । फिर चाहे जो सजा दे देना । बन्दा हाजिर रहेगा ।
सोनरी-अब तुम यही कहने वाले हो पैर में सोने के कडे छडे । अगुंलियों के पोर पोर में हीरे मोती । इसके बाद तोते जैसी नाक का बखान करोगे फिर चेहरे मोहरे की बात । फिर होठ ना बाबा ना मेरे कान बर्दाश्त नही कर पायेगे अब । सब कुछ मैं समझ गयी रहने दो । अब तक बहुत कुछ बता दियो हो । तुम पुतले के सौन्दर्य और उस पर लदे गहने की चकाचौध में मुझे भूल रहे हो । अब आगे कुछ ना कहना । इतना बखान मुझसे सहा नही जा रहा है ।
प्रेमनाथ-सोनरी तुम तो सब कुछ जान गयी । लगता है मेरे साथ गयी थी ।मेरी जासूसी तो नही कर रही थी ।
सोनरी-तुम्हारे साथ तो ाहर नही देखी ।नही कभी गयी भी पर मैं भी जानती हूं । मेरी भी तमन्ना थी सोने चांदी के ढेर सारे गहनो की पर इस जन्म में तो नही हो सका ।

उम्मीद में जी रही हूं बचपन से ही कि हमारे भी अंग अंग में गहने हो । खैर हम इतने किस्मत के कहां धनी ।
प्रेमनाथ-सोनरी मन ना छोटा कर ।
सोनरी-हमने तो ऐसा कुछ नही कहा कि तुम बनवा कर दे दो सोने चांदी के गहने ।
प्रेमनाथ-सोनरी मैं भी चाहता हूं कि तुम्हारी हर इच्छा पूरी कर सकूं पर भाग्य और भगवान साथ दे तब ना । तुम तो देख ही रही हो कर्म में कोई कोर कसर तो नही छोड रहा हूं ।
सोनरी-जान रही हूं प्राणनाथ । यह भी जान रही हूं कि मेरी तमन्ना नही पूरी होने वाली हैं ।
प्रेमनाथ-क्यो नही होगी ।कुछ हम करेगे कुछ अपनी औलादें ।
सोनरी-वाह तुम तो और बडे सपने देखने लगे ।
प्रेमनाथ-हां सोनरी । आशा के भरोसे तो जी रहे हैं वरना ये परायी दुनिया के ठग कहां जीने देते । इतनी हाडफोड मेहनत मजदूरी कर रहे हैं । इसके बाद भी जरूरते पूरी नही हो पा रही हैं । हमारी गलती हैं ।नही ना । यह तो व्यवस्था की गलती हैं । बूढे सामाजिक ताने बाने की गलती हैं । जिसकी वजह से हम कोई दूसरा काम नही कर सकते यदि कर सके तो पजा पाठ करवाते कही किसी मंदिर में बैठ जाते । या काई धन्धा कर लेते पर क्या कर हर ओर से लाचारी। यदि हिम्मत करके करेगे भी तो लोग चलने नही देगे । क्योकि उनका एकाधिकर छिन जायेगा । हम तो विरान में तडप रहे हैं जैसे पानी की तलाश में कोई प्यास से तडपडाती पंक्षी । सोनरी हम कर्म कर रहे हैं ।वह भी पूरी जिम्मेदारी और लगन के साथ पर फल कोई और ले रहा हैं। हम तो बस निराश्रित जीवन जी रहे हैं बूढे समाज में ।मेहनत की मजदूरी भी नही मिल पाती हैं । हां कल से जरूर उम्मीद हैं । भगवान इतना तो निर्दयी नही होगा यदि सचमुच वह हैं तो एक ना एक दिन उसे सुनना ही पडेगा । सब्र रखो ।
सोनरी-क्यों नही सुनेगा जरूर सुनेगा। किस्मत मे जो लिखा होगा मिलेगा बस कर्म पर ही तो अपना जोर हैं ।
प्रेमनाथ-हां सोनरी हम अपने बच्चों को पढायेगे ाहर भेजगे । खेतिहर मजदूर नही बनने देगे । पढ लिख कर अपनी औलादे जरूर सपने पूरी करेगी ।
सोनरी-हां जरूर ।
प्रेमनाथ-गहनों के सुखों से अधिक सुख पायेगे हम ।

॥ इक्कीस॥

सोनरी मन में गहन की लालसा लिये दिन काट रही थी मेहनत मजदूरी करके प्रेमनाथ के साथ।एक दिन प्रेमनाथ हडबडाया हुआ आया और बोला अरे सोनरी कुछ सुनी क्या।
सोनरी-क्या सुना रह हो।पुतले का यौवन ढल गया क्या ।कल तो बडी सुन्दरता का बखान कर रहे थे ।कभी चन्द्रहार कभी झुमका-झुलनी का तो कभी नाखूनों का कभी होठों का

कभी ढोढी का और ना जाने क्या तरसाने वाली बाते कहे जा रहे थे । अब कौन से जलाने वाली खबर सुना रहे हो । क्या हो गया । बताओगे तब तो जानूंगी ।

प्रेमनाथ -क्यों शंका में जी रही हो । अरे वो भाग गयी ।

सोनरी-कौन वो पुतले की दुल्हन । पुतले की दुल्हन भाग कैसे सकती हैं । तुमको किसने बताया । कैसे खबर लग गयी । भला खबर कैसे ना लगती आत्मा तो उसी में बसी थी ना ।

प्रेमनाथ -अरे क्यों बोली से गोली मार रही हो । भला पुतला भाग सकता हैं क्या । लाखो रूपये के गहना पहनाये पुले को सोनार ताले में रखगा कि सडक पर छोडेगा। अरे पुतला की बात नही कर रहा हूं ।

सोनरीः-किसकी बात कर रहे हो । आज कोई नई हूर की परी दिखायी पड गयी क्या ।

प्रेमनाथ -अरे बंगरी भाग गयी ।

सोनरी-क्या ।

प्रेमनाथ -सच भाग गयी ।

सोनरी-जवानी में तो भागी ही नही । सुहागन होकर विधवा सरीखे जीवन बितायी । तुम कह रहे हो भाग गयी ।

प्रेमनाथ -सचमुच भाग गयी ।गहने का मोह जो था ।वह भी ता एक औरत थी ना ।

सोनरी-क्या बात कर रहे हो । तुम्हे कोई झूठमूठ में बहका दिया होगा । जब उसे भागना था तब तो भागी ही नही । पति दूसरी शहरी मेम लाया ।क्या तुम नही जानते हो ।

प्रेमनाथ -अच्छी तरह से जानता हूं पर सचमुच में वह भाग गयी हैं ।

सोनरी-ऐसी कौन से मुसीबत आ गयी कि वह भागी हैं । जब वह घर बसाने लायक थी तब कितना लोगो ने कहा पर उसने दूसरा ब्याह करने को मना कर दिया था हमने तो यही सुना हैं । अभी तक तो विधवा सरीखे जीवन बिता रही थी ।अभी उसकी मां को मरे कितने दिन हुए हैं । बूढी औरत भाग कर कहां जायेगी । बाप कब्र में पैर लटकाये बैठे है । अब मरते है कि तब कोई भरोसा नही । ऐसी हालत में भला वह छोडकर भाग सकती है क्या ।

प्रेमनाथ -मां तो मर गयी । बाप मरे या ना मरे । कल मरना हो तो आज ही मर जाये । बंगरी भाग तो गयी हैं।

सोनरी-भाग कर जायेगी कहा वह भी बूढौती में।

प्रेमनाथ -अपने बूढे पति के घर ।

सोनरी-क्या ।

प्रेमनाथ --हां सच भाग गयी वह भी अपनी मां के सारे गहने लेकर ।बूढी औरत को गहने का इतना मोह मरते हुए बाप को छोडकर भाग गयी ।

सोनरी-क्या कह रहे हो । ऐसा कैसे हो सकता हैं ।

प्रेमनाथ -बिल्कुल ठीक कह रहा हूं । यकीन नही हो रहा हैं ना । जाओ यकीन को पुख्ता कर आओ ।

सोनरी-वे भागी क्यो ।

प्रेमनाथ -गहने के मोह में और क्यों ।

सोनरी-गांव की औरत तो उन्हे सती सावित्री बताते नही िाकती थीं ।

प्रेमनाथ -वो तो थी ही ।कभी पति के चाल चलन की वजह से भाग कर मायक में आयी थी छोटे छोटे बच्चों को छोडकर । अब उसके बच्चे भी जवान हो गये हैं ब्याह गौने लायक । उसका पति उसे ले जाने के लिये आतुर था पर वह गयी नही । बोली सौतन के साथ नही रहूंगी ।वही बंगरी आज भाग गयी हैं ।

प्रेमनाथ -खाली हाथ थोडे ही भागी हैं ।

सोनरी-चोरी से क्यों भागी हैं । जाना था तो सामने जाती चोरी से जाने की क्या जरूरत पड गयी थी ।

प्रेमनाथ -सोची होगी मां तो मर ही गयी । बाप आज मरे चाहे कल। खेतीबारी की जमीन दोहरी काका ने अपने भाई टोहरी को लिख दिया हैं । ऐसा सुनने में आया हैं ।

सोनरी-बूढे बाबा के पास तो खेतीबारी की जमीन के अलावा और था भी क्या ।

प्रेमनाथ -दोहरी काका के पास नगदी के अलावा सोने चांदी के गहने बहुत थे । वह भी अंग्रेजो के जमाने के । कोई बाल बच्चे तो थे ही नही । एक नम्बर के कंजूस भी थे । खेतीबारी भी अधिक थी ।खूब उपज थी । सब बेचंकर रकम ही तो बनवाते थे ।इनके बाप दादाओं के भी अच्छी चलती थी अंग्रेजी राज में ।बडे खेतिहर थे ।

सोनरी-अब नही चल रही हैं तो तब क्या चल रही होगी । तब तो यह समाज जातिवाद से अधिक पोिषत था ।लोग छोटी जाति वालों की परछाईयों से भी नफरत करते थे ।

प्रेमनाथ -कह तो रही हो ठीक पर धन सम्पति तो था ही ।दोहरी दादा के पास कोई खाने वाला तो था ही नही । बस दोनो बूढा बूढा और एक बंगरी ।वह भी दोहरी काका की जांघ से थोडे ही पैदा हुई थी। दोहरी काका के पास सब बचत ही बचत तो थी ।

सोनरी-बंगरी फुआ उनकी औलाद नही थी तो वो कौन थी ।

प्रेमनाथ -बंगरी करमी काकी के दूसरे पति की बेटी हैं ।पति के मौत के बाद करमी काकी की सगाई दोहरी काका के साथ हुई थी ।दोहरी काका की पहली पत्नी भगवान को प्यार हो गयी थी । उनकी कोई औलाद नही थी ।

सोनरी-अच्छा अब बात समझ में आई ।

प्रेमनाथ -क्या समझ गयी ।

सोनरी-बंगरी फुआ बाबा की बेटी नही थी यह तो मुझे आज पता चला हैं ।

प्रेमनाथ -हां सही हैं ।

सोनरी-बाबा अपनी सगी बेटी की तरह मानते थे । बंगरी फुआ ने अच्छा नही किया हैं बाबा को आखिरी समय में छोडकर भाग गयी हैं । वह भी उनकी पूरी जिन्दगी की कमाई लेकर ।

प्रेमनाथ -तुम क्या बहुत से लोग नही समझ पाते थे । बंगरी का गहना मोह सारी हदे तोड गया ।

सोनरी-बाबा बहुत मानते थे ।बूढा के मरने के बाद लाचार तो हो गये थे। उनके स्नेह में कमी नही थी । लेकिन बंगरी फुआ ने बाबा का विश्वास तोड दिया ।

प्रेमनाथ -ठीक कह रही हो । काका खटिया पर पडे हैं । बंगरी धन सम्पति लेकर भाग गयी ।अरे खेती की जमीन टोहरी काका को दोहरी काका लिख दिये है।

सोनरी'-अरे बाकी सम्पति तो उसी के कब्जे में थी लेकर भागना नही चाहिये था । भागी क्यो समझ में नही आ रहा । टोहरी बाबा भी तो उन्हे बीटिया जैसे मानते थे वैसे ही रखते भी ।भाग कर अच्छा नही किया बंगरी फुआ ने ।

प्रेमनाथ -गहने का मोह ले डूबा ।जेवर नगदी और भी जो रकम मिली सब लेकर रात के अंधेरे में फरार हो गयी बंगरी ।दोहरी काका को मरता हुआ छोडकर ।

सोनरी-बाप रे । बंगरी फुआ तो कसाई हो गयी गहने के मोह में ।ऐसा तो नही होना चाहिये था कि गहने के लिये बाप के विश्वास को तोड दें ।

प्रेमनाथ -अधिक रकम जोडे थे दोहरी काका । तुमको मेरी बात पर यकीन नही हो रहा हैं । करमी काकी की हंसुली ही किलो भर चांदी की थी । बाकी गहने को तो छोड ही तो । अंग अंग के लिये करमी काकी ने गहने बनवाये थे । खैर अपना शौक ना पूरा करती तो धन का क्या करती । किसी भीखमंगे को भी कभी एक पैसा नही देती थी ना ही दोहरी काका ही । दोनो एक एक पैसे को दांत से दबा कर रखते थे ।वह भी दोहरी काका के जीते जी बंगरी ले उडी । जरा भी उसे इन्तजार पसन्द नही था ।अरे काका की मौत के बाद तो नगदी जेवर सब उसी को तो मिलना था ।बंगरी के गहने का मोह विश्वास तोडवा दिया ।

सोनरी-अगर बंगरी फुआ भागी हैं तो वे कोई गहना छोडी नही होगी । बाकी कुछ ले जाये चाहे ना ले जाये पर सब गहना बांध ले गयी होगी ।

प्रेमनाथ-बंगरी दोहरी काका के जीवन भर की जमा पूंजी लेकर भागी हैं भोर के अंधेरे का फायदा उठाकर। काका रात भर खांसते रहे भोर में उनकी आंख लग गयी । वैसे भी उनका उठना बैठना भारी हो गया हैं । सब कुछ तो टोहरी काका और उनका परिवार कर रहा था ।वह तो बैठी रहती थी । देखो मुसीबत में बाप को छोडकर सब कुछ समेटकर भाग गयी । उसी पति के पास जिसके पास जवानी में नही गयी और न ही तलाक ही दी ।

सोनरी-बंगरी फुआ को ऐसा नही करना था ।बाप को मरता हुआ छोडकर उसकी जमा पूंजी लेकर भाग गयी। यह तो औरत जात को शोभा नही देता । औरत तो त्याग ममता समता की मूर्ति हैं । आखिर क्षण में बंगरी ने बाप के अरमानो पर पानी फेर दिया।

प्रेमनाथ -बंगरी गहने के मोह में अंधी हो गयी थी । सोची होगी कि बाप के मरने के बाद काका हडप ना ले । वाह रे औरत गहने के लिये कुछ भी कर दो ।

सोनरी- सभी एक जैसे नही होती जी ।

प्रेमनाथ -बंगरी तो हैं ना गहने के मोह में रिश्ते का खून करने वाली ।

सोनरी-बंगरी फुआ का गहने का अंधा मोह तो तुम्हारे शहर वाले पुतले के समान हो गया अंग अंग में गहना पहन घर के एक कोने में पडी सडती रहेगी ।

प्रेमनाथ -सच कह रही हो । बाप की आत्मा भी चैन नही मिलेगा और नही बंगरी को कोई सुख।

॥बाईस॥

बंगरी द्वारा मां बाप की कमाई और गहना लेकर भागने की खबर ने सोनरी की आत्मा को हिला कर रख दी । वह बेचैन सी रहने लगी ।उसकी बेचेनी का देखकर एक दिन प्रेमनाथ बोला क्यों तुम्हारा चैन खोता जा रहा है । अरे बंगरी की चिन्ता छोडो । खुद सावधान रहा करो ।

सोनरी-क्योंं क्या हुआ ।क्यो चता रह हो ।

प्रेमनाथ -ठीक कह रहा हूं ।

सोनरी-क्या ठीक कह रहे हो । बंगरी फुआ की तरह मैं भी भागने वाली हूं क्या।

प्रेमनाथ -अरे नही रे । गांव के अपने देवर और ननदो से बचकर रहना ।

सोनरी-क्यो ।

प्रेमनाथ -होली आ रही हैं ना ।

सोनरी-तब क्या हुआ ।

प्रेमनाथ -सब कीचड के गहने से लाद देगे ।

सोनरी-कीचड का गहना पहनायेगे तुम्हारे भाई बहन गांव के ।

प्रेमनाथ -हां वही मान लो । ये तीज त्यौहार समाज के लिये किसी गहने से कम तो नही ।

सोनरी-चलो इस गहने को भी पहन लूंगी मजे से ।

प्रेमनाथ -बच्चे लोग होली आने से कई हपते पहले से ही तैयारी में जुट हैं पैसा पैसा बचाकर रखे हैं । होली के रंग के लिये मालूम है ना ।

सोनरी-जब बच्चा लोग होली के रंग रूपी गहने की चमक डालने के लिये इतनी तैयारी कर रहे है तो हम क्यो ना आनन्द लेगे । हम समाज के गहना को और अधिक संवारेगे ।तीज त्यौहार सामाजिक गहने हैं । हम कहां समाज से बाहर हैं । हमारे लिये भी गहना ही है ।

प्रेमनाथ-हमने तो मना नही किया हमने तो बस इतना ही कहा है कि बचकर रहना ।कीचड माटी से होली खेलना अच्छा नही लगता । रंग से चाहे जितना खेल लो । कही से कीचड उठाया उपर फेंक दिया । यह तो अच्छा नही है ।

सोनरी-ठीक कह रहे हो ।कीचड चेहरे पर पोत देते हैं ।रंग की बात और हैं । लोग रंग भी तो ना जाने क्या क्या मिला देते हैं । इससे तीज त्यौहारों की रौनक कम हो जाती हैं। मिलावटी रंग बहुत नुकशानदेह होते हैं । चमडी काट कर रख देते हैं ।

प्रेमनाथ-बचकर होली खेलना । किस किस को समझाओगी ।

सोनरी-कौन समझाने से समझता हैं । देखा नही । बसन्त पंचमी के दिन होलिका गाडने के लिये रेंड का पेड गांव के लडके काट ले गये जो फल फूल से लदा था।

प्रेमनाथ-यही तो होली का जनुन हैं।रात में होलिका दहन के लिये लोगो की मडई खटिया कण्डा तक उठा ले जाते हैं । कभी कभी तो लडके सोये हुए भटठा मालिक जैसे लोगो को खटिया पर सोये हुए उठा ले जाते हैं। कुछ दूर तक राम नाम सत्य कहते हुये हंसी मजाक में । भटठा मालिक जैसे लोग गालियां भी ख्ाूब देते हैं।देखा नही पिछली साल होली पर भटठा मालिक कितना उपद्रव मचाये थे ।पूरी मटर का खेत ही उजाड डाले गरीब आदमी का । नग्न धडंग पूरी रात खेत मे दौडते रहे भांग की नशा मेें । मजाक में ही किसी ने भटठा मालिक को धतूरे वाली भांग पिला दिया था ।

सोनरी-देखो जी तुम ऐसा कुछ ना करना और ना ही भाग धूर खाना। बेचारे गरीब की मडई होलिका में जलाना अच्छी बात तो हैं नही । किसी का दिल दुखाने से कोई फायदा नही होता ।तीज त्यौहार तो खुशी के लिये आते हैं ।

प्रेमनाथ -ठीक तो कह रही हो पर मानते नही हैं ना नय लडके लाग। उनके आगे तो होलिका जनून ही होता हैं । इसीलिये तो बडी बडी मडई तक उठा ले जाते हैं जबकि मडई उठाने के लिये पूरा गांव लगता हैं । होलिका के लिये थोडे से लडके उठा ले जाते हैं ।

ेाानरी-अपनी खुशी के लिये किसी का आिशयाना जलाना कहां उचित है ।

प्रेमनाथ और सोनरी की बातचीत चल ही रही थी ।इसी बीच सुखिया आ गयी और बोली बहू सरसों को भूजकर उपटन बना लेना । थोडी ही देर में रात होने वाली हैं । उपटन सबको लगाना होता हैं ना । कहा जाता है कि तन पर लगे उपटन की मैंल के साथ सारी बला भी जल जाती हैं । एक बात याद रखना गन्ने की पत्तियां जो कोठे पर रखी हैं एकादशी के दिन वाली प्रेमनाथ से उतरवा लेना । वह भी होलिका में डालवा देना यह भी ाुभ होता हैं । अब ये सब जिम्मेदारी तुम सम्भालों । मेरा क्या भरोसा पके आम की तरह कब गिर पडूं ।

सोनरी-अम्मा ऐसे ना कहो । हमे किसके आसरे छोडकर जाओगी ।अम्मा काम की चिन्ता ना करना सब सम्भालूंगी । मरने की बात ना करना। आज ऐसी बात नही कहनी थी आपको अम्मा ।

सुखिया-बेटी मरना तो हैं एक ना एक दिन ।अब सब काम छोडकर उपटन बना लो । देखना सील बटटे में मिर्ची ना लगी हो ।
सोनरी-ठीक है अम्मा कह कर उपटन पीसने में लग गयी ।उपटन पीसकर सोनरी सबसे पहले अपनी सासु मां सुखिया को उपटन लगायी ।उपटन की मैल एक बर्तन में इक्टठा कर ली । सोनरी प्रेमनाथ को उपटन लगा ही रही थी तब तक गांव के लडके बडे बडे लुकों।मशाल। लेकर प्रेमनाथ के घर के सामने इक्टठा होने लगे । प्रेमनाथ के घर के सामने लुको का ढेर लग गया।
प्रेमनाथ सोनरी से बोला देखो अब बस करो बहुत लग गया उपटन । देर हो रही हैं सभी लडके इक्टठा हो गये हैं । हेलिका दहन का समय होने वाला हैं । देखो सब कितने उत्साहित हैं ।सचमुच ये तीज त्यौहार समाज के गले की चांदी की हंसुली ही हैं।
सोनरी-हंसुली गहने की बात ना करो तो ही ठीक । बस उपटन लगा देने दो ।
प्रेमनाथ -ठीक हैं जी नही करूंगा पर जल्दी करो । उपटन के साथ सारे बाल उखड गये ।हंसुली का नाम लेकर गलती कर दिया क्या कोई ।
सोनरी-अरे कैसी गलती ।
प्रेमनाथ -गहने की बात करके ।
सोनरी-कोई गलती नही । थोडा तसल्ली रखो । लगा देने दो । मुझे अभी बहुत काम हैं । खाना भी तो बनाना हैं ।रात जैसे भागी जा रही हैं ।
प्रेमनाथ -में कोई मदद कर सकता हूं ।
सोनरी-जी नही । बस होलिका दहन करके आओ । इतना मेरे उपर एहसान कर देना किसी से लडाई झगडा नही करना । गांव में तनिक तनिक बात पर मरने मारने को लोग तैयार हो जाते हैं । ना जाने क्यों गांव के सकून पर किस राक्षस की नजर लग गयी हैं । याद रखना सरहद पार करने की बात पर अडना नही । ज्यादातर सरहद पार करने को लेकर ही लडाई होती है । लडाई झगडा मुझे जरा भी पसन्द नही । सब आपस में मिलजुलकर प्रेम से हालिका जलाना । देखो पूरे परिवार का भार तुम्हारे सिर पर है । जरा सम्भल कर रहा करो अपनी जिम्मेदारी का भी ख्याल रखा करो ।
प्रेमनाथ -ठीक हैं महारानी जैसी आपका हुक्म । बन्दा ख्याल रखेगा और कुछ करना होगा इस बन्दे को आपकी खिदमत में ।
सोनरी-देखो मजाक ना करो । बात को समझों ।
प्रेमनाथ -जी समझ गया ।
प्रेमनाथ होलिका दहन करने चला गया ।ढेर रात के बाद वापस आया। घर में सभी सो गये थे । सोनरी प्रेमनाथ कह बाट जोह रही थी । प्रेमनाथ काफी देर से आया पर किसी से कोई विवाद नही किया था । आते ही वह खाने पर टूट पडा । जल्दी जल्दी वह खाने को पेट में उतारा । इसके बाद लोटा भर पानी । डंकार मारते हुए जाकर बिछौने पर गिर

पडा थकाई में चूर ।प्रेमनाथ जितनी ही देर से सोया था उतनी ही जल्दी उठ भी गया । वह सोनरी को जगाने लगा । सोनरी हडबडा कर उठ बैठी ।

प्रेमनाथ सोनरी से बोला-देखो देर रात तक होली का जश्न चलने वाला है ।नाच गाने के साथ भाग का दौर भी चलेगा रंग तो बरसना ही हैं । देखो भांग नही पीना । इसकी खुमार बहुत खराब होती है। कई दिनों तक छायी रहती हैं । बचकर रहना भांग से याद रखना ।

सोनरी-भगवान किसे समझा रहे हो । यह बात तो मै तुमको कहने वाली थी । तुम मुझे ही समझा रहे हो । खुद बचना मेरी चिन्ता ना करना । मैंने तो कभी मायके में पीयी ही नही भांग ं तुम्हारे घर आकर भांग पीऊंगी क्या । ना बाबा ना कभी ना भांग को हाथ नही लगाऊंगी ।हलक में उतारने की बात तो बहुत दूर हैंं। तुमने कभी मुझे भांग पीते हुए देखा हैं क्या । या कभी नशा उतारने के लिये गुड दही खिलाया है या कोई और जेहमत उठायी हैं ।

प्रेमनाथ -देखा तो नही हूं पर बचकर रहना ।

सोनरी-ठीक है सो जाओ अभी रात बाकी हैं ।

प्रेमनाथ -रात बाकी हैं । ये क्या हो रहा हैं । बिना भांग पीये नशा । पीने पर क्या हाल होगा ।

सोनरी-सुनो कोई चिडिया बोल रही हैं क्या ।

प्रेमनाथ -नही ।

सोनरी-कैसे सबेरा हो गया ।

प्रेमनाथ -चिडिया ना बोले तो सबेरा ही ना हो ।

सोनरी-मैं कहां ऐसा कही ।

प्रेमनाथ -सुना मुर्गा बोला की नही ।

सोनरी-पतिपरमेश्वर जी मुर्गा बोला होगा कोई पर अंधेरा तो देखो पूरी रात हैं ।

प्रेमनाथ -अगर ऐसी बात हैं तो सो लेता हूं थोडी और ।

सोनरी और प्रेमनाथ सो गये । कुछ ही देर में चिडिया चहकने लगी ।सोनरी की नींद टूट गयी । वह उठकी प्ेरामनाथ को जगाने लगी । प्ेरामनाथ उठ बैठा ।वह ज्योहि खटिया से पैर नीचे लटकाया । सोनरी नीचे उतर कर प्रेमनाथ का पांव पकड कर बोली होली मुबारक हो जी ।सोनरी के पैर छूते ही प्रेमनाथ खडा हो गया और सोनरी को गले लगा लिया ।वह बोला मेरे दिल की महारानी को भी होली मुबारक । इतने में प्रेमनाथ अबीर उठा लिया और सोनरी के माथे पर लगा दिया ।

सोनरी बोली अरे वाह तुमने तो होली का चन्द्रहार पहना दिया । इतना कहना था कि प्रेमनाथ खिखिलाकर हंस पडा । सोनरी प्रेमनाथ के गाल पर अबीर मलने लगी होली मुबारक हो कह कह कर.................

॥तेईस॥

होली का खुमार अभी उतरा ही नही था कि रामनवमी के मेले की चहल पहल शुरू हो गयी । रामनवमी के दिन मांता जी के दिर पर कउाही चढान की परम्परा थी । रामनवमी के मेले को नचदीक आता देखकर सुखिया सानरी से बोली बहू होली तो अच्छी से बित गयी ।रामनवमी भी नजदीक हैं । सेर दो सेर भर गेहूं धोकर पीस लेना । सरसो पेरवा दूंगी ।कडाही भी तो पाल्हमेश्वरी मांता के धाम पर चढाना है ।इस दिन कडाही चढाने पर धन सम्पति के साथ पुत्र रत्न की भी प्राप्ति होेती हैं । बहुत बडा मेला लगता हैं तुम तो जानती ही हो । बडे बडे शहरो बम्बई कलकत्ता से व्यापारी आते हैं ।

सोनरी-अम्मा अभी तो हपता भर बाद रामनवमी हैं । अभी से गेहूं पीसकर रखने की क्या जरूरत पड गयी हैं । एक दिन पहले सब काम निपटा दूंगी । चिन्ता ना करो अम्मा ।

ुाखिया-पहले से इन्तजाम करके रखोगी तो तुमको ही अराम रहेगा । मेला के दिन सबेरे सबेर ही तो सभी गांव की औरते गाती बजाती जाती हैं मांता जी को कडाही चढाने ।

सोनरी-ठीक है जैसे कह रही हैं वैेसे ही कर लूंगी ।मुझे कोई तकलीफ नही होगी ।

सुखिया-पल्हना माई के धाम पर कडाही रामनवमी के दिन चढायी जाती हैं । यही पूजा हितकर होती हैं ।

सोनरी-पहले या बाद में कभी भी चढा लेना चाहिये ।साल में एक बार मांता की पूजा ही तो करना है ।कभी भी कर लेना चाहिये ।

ुाखिया-हां सोनरी कह तो रही हो ठीक पर इस दिन पुण्य अधिक मिलता हैं ।इसी दिन तो नात हित सभी आते हैं । । बाकी कहा किसको फुर्सत सब अपने बाल बच्चें में मग्न रहते हैं । जब पूरे गांव की औरते एक साथ बजाते गाते निकलती है मां के धाम जाने के लिये तो उसकी महिमा ही निराली होती हैं। सब औरते नये कपडे जेवर गहने पहनकर निकलती हैं तो लगता हैं सचमुच किसी जलसे में जा रही हैं।

सोनरी-अम्मा इसीलिये तो हम लोगो को आगे पीछे कर लेना चाहिये ताकि नात हितो का ध्यान रखा जा सके । बेचारे नातहित कहां कहा से आते हैं मेला देखने हम लोग कडाही चढाने चले जाते हैं । दाना पानी देने के लिये हमे रामनवमी के दिन घर पर ही रहना चाहिये ।

ुाखिया-यह परम्परा पुरानी हैं ।

सोनरी-बुजुर्गो ने परम्पश बनायी हैं ।जरूर कुछ सोच समझकर ही बनाया होगा । अम्मा समय के अनुसार बदलाव भी तो जरूरी हैं ।

सुखिया-ठीक तो कह रही हो । बदलाव तो एक दिन में होगा नही ।धीरे धीरे होगा । तुम मेले में चोर उचक्के से सावधान रहना । कितनें के पाकेट कट जाते हें । कितनों गहने चोरी हो जाते हैं । कान की बालियों के साथ चोर कान तक नोंच ले जाते हैं। बहू तुम बहुत सावधानी से जाना ।

सोनरी-हां अम्मा ध्यान रखूगी ।

ुाखिया-यदि हो सके तो हंसुली पहनकर ही नही जाना ।अपनी हुंसली का बहुत ध्यान रखना यही तो तुम्हारे ब्याह की एक निशानी है । मेले में चोर चोरनी बहुत होते हैं। हंसुली खीचते ही गायब हो जाते हैं।कोई अता पता नही लगता ना जान कहां चले जाते हैं ।हमारी सास कि बहु साल पहले चोर चारी करके मेहनगर की कोट में घुस गये किसी को पता तक नही चला । कई सालों के बाद पुलिस कपडे के धागे के सहारे चोरो तक पहुंचे थे । पुलिस वाले भी कुछ नही कर पा हैं । चोर लोग मुखौटा बदलने में माहिर होते है । पुलिस वाले हाथ पर हाथ रखे बैठे रह जाते हैं ।

सोनरी-हां अम्मा देखी थी पिछली साल बेचार नई दुल्हन थी उसके गले से सोने की हंसुली ना जाने किस हिकमत से चोरनी निकाल ले गयी । बेचारी दुल्हन का रो रोकर बुरा हाल हो गया था । उसके सास सुर समझा कर थक गये पर बेचारी के आंसू थमें ही नही । पुलिस वाले कुछ नही कर पाये ।चोरनी पहनावे से कोई खानदानी रईस लग रही थी । कुछ दूर तक चोरनी का पीछा भी किये लोग पर ना जाने कहां खोे गयी थी। किसी को नजर ही नही आयी । बेचारी दुल्हन मछली की तरह तडपती रह गयी थी ।

ुाखिया-हां बहू चोर चोरनी तो बहुत ना जाने कहां से आ धमकते हैंं उनकी िगध्द नजरे औरतों के गहने पर ही टिकी रहती हैं । जरा सा मौका पाये कि लेकर नौ दो ग्यारह हो जाते हैं ।एक साल तो मैं खुद कडाही चढाकर परात पीतल की थी कम से कम चार किलो की धो मांजकर रखी चोर लेकर भाग गया ।बेचारा दीनानाथ बहुत दूर तक पीछा किया पर चोर ना जाने किस मांद में घुस गया । पता ही नही चला मैं भी तडपती रोती हुई घर आयी थी ।

सोनरी-यही चोर उचक्के तो आस्था पर भी डाका डाल रहे हैं ।

सुखिया-अरे चोर उचक्के तो मूर्तिया तक चुराने लगे हैं ।कैसा जमाना आ गया हैं भगवान तक को नही छोड रहे हैं । औरतो के गहने कहां छोडेगे चारे उचक्के मेले ठेले में ।

सोनरी-भगवान ऐसे चोरो को सजा तो जरूर देगा । भगवान के घर देर हैं अंधेर नही अम्मा ।

ुाखिया-देता होगा । उसकी लाठी में आवाज नही होती है ।सोनरी तू सचेत रहना । मेले ठेले तो लोगो को इक्टठा होकर खुशी मनाने के मौके होते हैं ।ये चोर उचक्के रंग में भंग डाल देते हैं । व्यभिचारी किस्म के लोग भी ना जाने कहां कहां से मेले ठेले मं आकर आस्था को बदनाम कर देते हैं । न ेडी लोग भी खलल डाल देते है ।सरकार को तो दारू के ठेके बन्द कर देना चाहिये पर कहां बन्द होते हैं । तीज त्योहार के दिन तो ठेके सजाकर रखते है । बहू मेरी बात खूंटे गठिया लो बिल्कुल बेखबर ना होना अपने गहनें गुरिया से । गिध्द चोरो की नजर एकदम गहने पर ही टिकी रहती हैं ।

सोनरी सुखिया की बात पर अम्ल करने का वादा करके गेहूं बनाने धोने में लग गयी । गेहूं बना धोकर हाथ की चक्की से पीसी । चढावे के आटे को मांटी की हडिडयों में

रखकर कोठे पर रख आयी । ताकि कोई छू ना सके ,क्योंकि भगवती माई को कडाही चढाने का आटा जो था और उसमे आस्था कूट कूट कर भरी हुई थी ।
रामनवमी के दिन सोनरी भोर में ही उठ गयी । नही धाकर तैयार हो गयी । कडाही चढाने का सारा समान आटा तेल,गुड,लकडी पानी,आम के पत्ते, हवन सामग्री गंगा जल आदि एक टोकरी में रख ली ।
सोनरी को सजा संवरा देखकर प्रेमनाथ बोला क्या बात हैं आज तो सबेरे सबेरे बनठन रही हो ।
सोनरी-मालूम नही हैं क्या ।
प्रेमनाथ -क्या आज है मुझे मालूम नही हैं ।
 ाोनरी-आस्था की हंसुली चढाने जाना हैं ।
प्रेमनाथ -क्यो घुमा फिराकर कह रही हो।साफ साफ कहो । जो समझ में आ जाये मुझ जैसे को।
सोनरी-कडाही चढाने जाना हैं तुम भी साथ चलो ना । सभी तो जा रहे है ।
प्ेरामनाथ-मेरा जाना जरूरी है क्या ।
सोनरी-कयो नही जरूरी हैं । मेले मे चोर उचक्के बहुत रहते हैं । ओरतों के कान से बाली,गर्दन में से हंसुली नाक की झुलनी यही नही बर्तन तक लेकर भाग जाते हैं ।
प्रेमनाथ -हां यह तो हैं । तुम अपनी हंसुली का ख्याल रखना । चाहो तो घर पर ही रखकर मेले में जाना कडाही चढाने ।
सोनरी-अपने ब्याह की इकलौती पहचान घर रखकर खाली गर्दन लेकर जाऊंगी तो औरते क्या कहेगी । वैसे मै भी ऐसा ही सोच रही थी। तुम साथ चलो ना । अच्छा रहेगा मुझे डर भी नही लगेगी,तुम साथ रहोगे तो चोर उचक्के क्या मनचले भी घबरायेगे ।
सोनरी के निवेदन को प्रेमनाथ ठुकरा न सका ।वह भी चल पडा आगे आगे । पीछे पीछे औरते गाती गाती चल रही थी । मेला पहुंचकर भगवती मां के मंदिर से कुछ दूर पर कडाही चढाने की व्यवस्था हुई क्योंकि बहुत भारी भीड थी । खैर मंदिर से कुछ दूर ही खेतों में सभी दूर दूर से आयी औरते कडाही चढा रही थी । पूजा पाठ कर रही थी ।सोनरी ने भी किया । कडाही चढायी पूजा अर्चना किये । पूडी हलवे का प्रसाद चढायी । इसके बाद सोनरी प्रेमनाथ से बोली चलो मंदिर दशर्न कर मेला भी देख लेते हैं । प्रेमनाथ सोनरी को लेकर मेला देखने चल पडा ।
सोनरी कभी चूडिहारे की दुकान देखकर रूक जाती । कभी बितासे की दुकान । कभी गहनों की दुकानों को प्यासी नजरो से निहारने लगती ।बार बार सोनरी को दुकानों के सामने ठिठकता हुआ देखकर प्रेमनाथ बोला अरे भागवान मेला ऐसे देखोगी तो आज क्या कल तक मेला नही देख पाओगी ।

सेनरी-क्या कह रहे हो मेला ही तो देख रही हूं ।देखो ना चूडिहारे की दुकान में क्याएक से एक बढिया चूडिया भरी पडी हैं । उधर सोनार की दुकान में देखो । क्या दुकान गहने से भरी हैं । सब असली सोने चांदी के हैं गहने ।

प्रेमनाथ -नही रे इतना सोना तो होगा नही । कुछ हो सकता हैं बाकी रोलगोल के होगे । थोडे असली हो सकते हैं।

सोनरी-अपनी किस्मत में कहा असली सोने के गहने हैं ।

प्रेमनाथ -क्यों भरी बाजार में ताने दे रही हो ।दिल ना छोटा करो । कहते हैं घुरे के भी दिन एक दिन बदलते हैं । एक दिन घूरे पर भी दीया जलता हैं ।हम तो आदमी हैं रात दिन मेहनत मजदूरी कर रहे हैं ।अपने दिन क्यों नही फिरेगे ।

सोनरी-खैर तब की तब देखी जायेगी ।चलो रोलगोल की अंगूठी ही देख लेते हैं ।

प्रेमनाथ -चलो जरूर देखो इसीलिये तो मेला लगा है ।

सोनरी अपनी सारी इच्छाओं का दफन कर एक रोलगोल की अंगूठी खरीद ली । प्रेमनाथ दो बीडा पान लगवाया । दोनो पान मुंह में दबा लिये चल दिये ।

प्रेमनाथ बोला चलो अब तो चले परन्तु सोनरी की नजर गहनों की दुकानों से हटने का नाम ही नही ले रही थी । प्रेमनाथ सोनरी का हाथ पकड कर बोला क्यो चलना नही हैं क्या ।

सोनरी-हडबडा कर बोली क्यो नही ।

प्रेमनाथ आगे आगे सोनरी पीछे पीछे चल पडी पर उसकी चाहत भरी निगाहें गहनों की दुकानों पर ही टिकी हुई थी ।

॥ चौबीस॥

सोनरी का मोह गहने के प्रति प्रबल था अन्य महिलाओ की भांति ही पर दुर्भाग्य था कि उस बेचारी की औकात मनचाहा गहना खरीदने की नही थी ।उसकी इच्छी पूरी होने की उम्मीद दूर दूर तक नही दिखायी पड रही थी । प्रेमनाथ की कमाई न्यूनतम थी ।पेट भर जाये तन ढंक बहुत बडी बात थी । श्रृंगार पटार तो सपने सरीखे था उसके लिये । सोनरी मेहनती नारी थी । उसे यकीन था अपने पैरूख पर । वह हार मानने वाली नही थी । वह भी प्रेमनाथ का हाथ बंटाने लगी गृहस्थी की गाडी को सुचारू रूप से चलाने के लिये ।कुछ कठिनाईयां आसान तो हुई । एक जरूरत पूरी होती तो दूसरी मुंह बाये खडी हो जाती । हां जानवरो से कुछ फायदे का भरोसा था । उनके विक्र्रय से कुछ आमदनी हो जाती । सोनरी के सहयोग से प्रेमनाथ का हौसला बढ गया क्योंकि उसे भैंस पालने का बडा ौक था । सोनरी की लगन को देखकर प्रेमनाथ की बाहे खिल उठी । घर में हमेशा दूध दही रहने लगा । दूध से भी कुछ आढत होने लगी थी ।

इधर सुखिया धीरे धीरे कमजोर होने लगी । उम्र की बीमारी उसे घेरने लगी । अन्ततः वह लाचार होकर गिर पडी । भीखानाथ भाईयों का हक हजम कर ससुराल में जा बसा । दीनानाथ की हत्या करवा दी भीखानाथ ने जमीन जायदाद के लिये । सब भाईयों का

हक मारकर भीखानाथ मालिक बन बैठा। प्रेमनाथ अकेला होकर रह गया । सुखिया खटिया पर पड चुकी थी । बेचारी की दोनो आंखो ने एकदम साथ देना बन्द कर दिया । बेचारी अंधी होकर रह गयी । सोनरी सुखिया की सेवा सुश्रुपा में जरा भी कोतहाई नही बरतती । पूरी लगन से अंधी सास की सेवा करती ।

ुाखिया एक दिन बोली देख सोनरी भीखानाथ काशीनाथ स्वार्थ में अंधे होकर किनारा काट लिये है। भीखानाथ के माथे दीनानाथ के खून का इल्जाम भी हैं । भीखानाथ ससुराल जा बसा है । भले ही भीखानाथ हाथ पर गंगाजल लेकर कहे कि उसने दीनानाथ की हत्या नही करवाई हैं कोई नही मानने वाला हैं । जमाना जान गया हैं की दीनानाथ का असली खूनी वही हैं ।भीखानाथ ने सारी जमीन हडप लिया हैं । बहू तू धीरज रख अपने पैरूख पर भरोसा रख तुम्हारे दिन सबसे अच्छे आने वाले हैं । तेरी मदद अपने सगो ने नही किया उपर से हक हिस्सा भी हडप गये । उनका भला नही होगा तू देखना । मैं तो नही रहूंगी । देखने को भगवान ने आंख भी नही छोडा हैं । देखना तू भीखानाथ अपने गुनाह पर रोयेगा ं तब तक बहुत देर हो चुकी होगी ।बहू तेरी मदद भगवान जरूर करेगा । काशीनाथ भी छोड गया तुम लोगो का साथ ।अपनी घरवाली का गुलाम हो गया हैंं। वह भी अपनी ससुराल ही बसेगा ।सुना है साला सालियों के लडके लडकियों के ब्याह में व्यस्त हैं । बूढी अधी मां की उसे फिक्र नही है । उसके लिये तो सब मर गये हैं । अंधी मां की भी कभी खबर नही लिया उस नालायक ने ।भीखानाथ को भगवान भी माफ नही करेगा ।अपने बेटी दमाद के मोह में भाई का खूनी बन गया । क्या ऐसे आदमी को भगवान माफ करेगा । नही कभी नही ।सोनरी अब तुम लोग अपनी कमाई पर भरोसा रखो और कुछ बचाओं । अपने बाल बच्चें के बारे में सोचों । मैं तो अंधी और छूछी ठहरी ।मेरे पास कुछ भी नही बचा हैं जो था बच्चों को पालने में स्वाहा कर दी । देखो वही बच्चे एक लाचार अंधी मां को छोडकर तुम्हारे माथे मढकर चले गये जैसे मैं उन नालायको की कुछ लगती ही नही । नौ माह अपना खून पीलायी वही भीखानाथ और काशीनाथ मुझसे ही किनारा काट लिये । दीनानाथ की हत्या करवा दिया भीखानाथ। बहू तुम लोग भी मुझे नही पूछते तो मैं अंधी लाचार कहां जाती । बहू मेरे पास कुछ नही बंचा हैं चांदी की हंसुली थी वह बिक गयी । मेरे हाथ और पांव में गिलट के कडे छडे हैं धन में बाकी तो कुछ भी नही हैं पर बहू तुम्हारे लिये मेरे पास आशीर्वाद बहुत हैं । तुम्हारी मनोकामना जरूर पूरी होगी । भगवान को पूरा करना ही होगा तुम्हारी मनोकामनायें ।तुम्हारे लिये मेरे पास ाुभकामनायें ही हैं ।मेरी शुभकामनाये तुम्हे जरूर एक ना एक दिन मंजिल दिला देगी बहूं । हौसला रख । लगन से काम कर कहते हैं भगवान भी दीनों के साथ बसता हैं । वह तुम्हारी मदद क्यो नही करेगा ।करेगा जरूर करेगा बहू। भाई तो भाई के हित में जान दे देते हैं पर मेरा बेटा भीखानाथ दीनानाथ की जान ले लिया खुद के हित के लिये । वह कैसे आबाद रह सकता हैं ।

सोनरी-हां अम्मा ठीक कह रही हो ।लेकिन यहां तो उल्टा हो गया जेठ जी ने बडे जेठ जी की हत्या करवा दी और चार भाइयों के हक पर अकेले कुण्डली मार बैठे ।

ुाखिया-हां सोनरी भीखानाथ अच्छा नही किया ।

सोनरी-अम्मा छोडो अपनी किस्मत में मेहनत मजदूरी लिखी थी । राज कहां से मिलेगा। जो होना था हो । इसमें आप क्या कर सकती हैं । जमीन के छिन जाने का गम नही हैं । गम तो जेठ जी की मौत का है । बीमारी से मर जाते तो तसल्ली हो जाती कि बीमारी से मर गये दवादारू जो हो सकता है किये ।उनकी हत्या तो बेचैन करके रख देती हैं अभी भी ।

ुाखिया-जो होना था हो गया । अब कर भी क्या सकते हैं ।लोभी भीखानाथ और उसके दमादो के मन में इतना बडा घटियापन पल रहा था कि दीनानाथ कीे जान लेकर जमीन जायदाद भी हडप लिये । कितना सुख पाता हैं भगवान ही जानें ।बहू तुम लोगो की चिन्ता मुझे खाई जा रही है । इतनी मेहनत कर रहे हो पर जरूरते पूरी होने का नाम ही नही ले रही हैं । मेरे पास तो कोई रकम हैेे ं नही कि तुम्हारी मदद कर सकूं जो कुछ था सठ साहूकार हजम कर गये । मैं छुछी बेचारे प्रेमनाथ उपर से बोझ होर रह गयी हूं ।

सोनरी-ना अम्मा ना ऐसा ना कहना ।भला अपने ां बाप भी बच्चों पर बोझ होते हैं कि आप हमारे लिये बोझ होगी । अम्मा फिर जबान पर यह वाक्य नही लाना । भला अपना अपने का बोझ हो गये तो रिश्ते नाते कैसे जीवि रह पायेगे। सब मझले जेठ जी जैसे थोडे ही हो जायेगे । घरवाली की गहने की भूख मिटाने के लिये भाइयों के हक हिस्से हजम कर हंसुली गर्दन तक काट िदये । ना अम्मा कभी ऐसा नही सोचना । बोझ कैसे हो सकती हैं । अरे आंख ठेहुना भगवान ने ले लिया तो क्या हम तो हैं ना ।आपके पास गहना धन दौलत नही है तो क्या हुआ । हमारे लिये तो आपका आशीर्वाद ही दुनिया की अनमोल दौलत हैं ।

सुखिया-हां बहू में तुम्हारी नेक नियति को जानती हूं । मां बाप ने तम्हे अच्छे संस्कार दिये हैं । बहू ठीक कह रही हो मेरे पास तो वैसे भी कोई धन दौलत बची नही हैं । आशीर्वाद के अलावा । तुमको और क्या दे सकती हैं तुम्हारी लाचार अंधी सासु । मै मरने के बाद सिर्फ गिल्ट के कडे छडे ही दौलत के रूप में छोड कर भगवान के पास जाऊंगी इस बात का मलाल ता रहेगा काश मेरे पास ढेर सार सोने के गहने होते ।ढेर सारी दौलत होती तो मरने से पहले अपनी पतोहू को खुशी खुशी हस्तान्तरित कर चैन से मर सकतीं । सोनरी यही गिल्ट के कडा रूपी मेरे द्वारा छोडी गयी दौलत विरासत समझना । तुम्हारी हर मनोकामना भगवान पूरी करेगा । मेरे हाथ तो खाली है । मै एक लाचार अंधी मां क्या दे सकती हूं। हां मेरी दुआओ की झोली तुम्हारे लिये सदा खुली रहेगी । एक लाचार मां अपने बच्चों के लिये दुआ के अलावा और क्या दे सकती हैं ।

सोनरी-यही चाहिये अम्मा और कुछ नही खामखाह दुखी न होओ ।

ुाखिया-बहू मेरे पास हैं भी तो कुछ देने को नही ।
सोनरी-अम्मा बस दुआ ही देते रहो बाकी कुछ चाहिये भी नही ।
ुाखिया-हां बहू वह तो सदा ही बनी रहेगी मैं रहंूया ना रहूं ।
सोनरी-अम्मा फिर वही बात रहने ना रहने वाली ।
ुाखिया-बहू एक ना एक दिन तो मरना ही हैं । वैसे मै लाचार अंधी धरती का बोझ हूं ।
सोनरी-नही अम्मा मां बाप बोझ नही होते है।नही अम्मा आप बोझ नही हो । यह तो हमारी खुश किस्मती है कि आपका आशीर्वाद मिल रहा है ।
सुखिया-बहू तू इतना बढिया सोचती हैं और बहूयेभी तुम्हारे जैसे सोचने लगती तो बूढे मां बाप दुर्दशा न होती ।
सोनरी-अम्मा सास ससुर तो मां बाप के रूप में भगवान होते हैं । आप भी हमारे लिये भगवान ही हो । आप नही होती तो हम कैसे इस घर में आती । अम्मा उपर वाले की महिमा निराली हैं ।वह जो करता हैं ठोक पीट कर करता हैं बस हम समझ नही पाते । इसमें भी कोई ना कोई अच्छाई ही होगी ।
सुखिया-बहू तू कह तो रही हो ठीक ही धन दौलत भी जरूरी हैं । मेरे पास भी धन दौलत का भण्डार होता तो मै दिल खोलकर गहना बनवाती । बहू उपर वाले को तो मैं नही देख पाई पर इतना जरूर कह सकती हूं की उपर वाला तुम्हारे हृदय में जरूर बसा हैं । बहू सदा फलती फूलती रहो । तुम्हारी औलादे खूब तरक्की करे । तुम सर्वसुख सम्पन्न होओ । सोने चांदी के गहनों से लदी रहो मेरी दुआ हैं । बहू जब सुख के दिन आवे तो किलो भर की चांदी की हंसुली जरूर बनवाना ।मेरा आंख ठेहुना तो भगवान लेकर लाचार कर दिया ।
सोनरी-अम्मा क्या कह रही हें । ऐसा ना कहा करो । मन छोटा क्याे करती हैं । हम ने तो कभी कुछ नही मांगा । अरे आप का दिया हुआ बहुतकुछ है मेरे पास । भरा पूरा परिवार हैं । ठीक है गरीब हैं । अम्मा किसी की खैरात पर तो बसर नही कर रहे । मेहनत मजदूरी करके इज्जत की रोटी तो खा रहे हैं आपके आशीर्वाद से क्या यह कम हैं । अम्मा ऐसा ना सोचा करो कि आपके पास देने को कुछ नही हैं । धन दौलत किसी के साथ गया हैं । अम्मा जितना हैं हम उसी में मगन रहा करेगे । हमें लालच नही सबूरी की दौलत चाहिये । हमें भरोसा हैं अपने पैरूख पर । इसी पैरूख के भरोसे हम सपने का महल खडा करेगे अम्मा । आप तो बस आशीर्वाद दिया करो ।हमारे लिये सबसे बडी दौलत तो आपकी दुआये ही हैं ।
ुाखिया-हां सोनरी । दुआये तो तुम्हारे लिये सदा ही हैं और रहेगी भी ।बहू ऐसी हालत भगवान ने कर दी है कि वही दुनिया नही देख सकती जिसको आखं खुलते ही देखी थी । कितना लाचार हो गयी हूं आंख ठेहुना से । जीने को मन नही करता । दो बेटो ने नाता ही तोड लिया । दीनानाथ बेमौत मारा गया भाई के हाथों । प्रेमनाथ अकेला होकर रह

गया चार भाईयों में । मेरी इच्छा थी कि अपनी पतोहू को कोई मजबूत गहना दे कर मरूं पर मेरी उम्मीदे नही पूरी होगी । मेरी इच्छी मेरे साथ ही दफन हो जायेगी । खैर मुझे भी तो भरपूर गहना नसीब नही हुआ । एक हंसुली मजबूत थी कितना बार गिरवी रखी गयी । याद ही नही पर मुसीबतो में काम भी आयी आखिर में वह भी साथ छोड दी साहूकार के बडे पेट में समा गयी।

सोनरी-अम्मा मुझे बहुत कुछ मिल गया हैं ।मन ना छोटा किया करो । मुझे कोई शिकायत नही हैं आपसे । किस्मत में गहना गुरिया होगा तो जरूर मिलेगा ।

सुखिया-बहू तुझे नही होगी क्योंकि तू एक पतिव्रता नारी हैं । घर को मंदिर मानने वाली नारी है पेट मे भूख लेकर सन्तोष करने वाली है। मुझे तो शिकायत हैं भगवान से कि वह मुझे किसी लायक नही छोडा और छाती पर गरीबी का बोझ रख दिया। इस लायक भी नही छोडा कि दुनिया से कूचं करते वक्त कोई निशानी गहना जेवर अपनी बहू बेटी के लिये छोड जाउूं।

सोनरी-अम्मा चिन्ता ना करो।किस्मत मे जो होगा जरूर मिलेगा । मेरे जीते जी आपको कोई तकलीफ नही होगा । यह मेरा वादा हैं अम्मा ।

सुखिया- बहू इसका मुझे भान हैं।अब दुनिया मैहै ही कौन तुम लोगो को छोडकर।दोनो नालायक अपनी अपनी घरवालियों को लेकर परदेसी हो गये । परित्याग कर दिये एक मां का ।सारे रिश्ते नाते खत्म कर गये मां के दूघ को अपमानित कर गये। जन्मभूमि छोडकर ससुराल में जा बसे । भगवान क्या भला करेगा उन नालायको का ।

सोनरी-अम्मा ऐसा ना कहो । जो जहां हैं वही अपने घर परिवार में मगन रहे । भगवान उनकी तमन्नायें पहले पूरी करे भले ही बाद में अपनी हो । अम्मा अपनी जुबान खराब नही करना बुरा कहकर वह भी अपनी ही औलादों को । जैसा किये हैं फल तो वैसा मिलेगा ही । यह सब तो भगवान के हाथ में है हम अपनी जुबान क्यो खराब करें ।भले ही अपनी घरवालियो के मोह, स्वर्ण आभषूण के मायाफांस में पडकर आपका परित्याग कर दिये तो क्या जन्म तो आपे ही दिया है । अम्मा आपका दिल कसा उनका बुरा चाहेगा । अम्मा अपने मुंह से बुरा क्यों कहती हैं । छोड दो परमात्मा के उपर ।

सुखिया-बहू वे दोनो मेरे लिये मरे समान हैं । जो मेरे बेटे बहू हैं नाती पोता पोती हैं सब सामने हैं । भगवान उन्हे तरक्की दे ।

सोनरी-दुआ देने में क्या कजूंसी । सबको दुआ दिया करो ।

सुखिया-वे सब लोभी हैं । जानती नही हो क्या ।मेरे पास बचा ही क्या हैं । गिलट के कडे छडे यही ना । मरने पर यह भी लेने को टूट पडेगे देखना । अरे मेरे पास भारी रकम होती तो दीनानाथ जैसे मेरा भी गला दबाकर हडप लेते भीखानाथ और काशीनाथ । लाचार अंधी थी इस लिये तुम्हारे जिम्मे छोडकर चले गये और जो कुछ दौलत थी वह भी हडप लिये । उन नालायको के लिये क्या दुआयें निकलेगी मन से । क्या हमने गलत कहा हैं तुम ही बताओ । मां इतना दुख उठाती हैं इसी दिन के लिये कि उसके बुरे वक्त

में फेंक दे उठाकर उसके ही बेटे । अरे ऐसी नालायक औलादो से तो न रहना ही बेहत्तर हैं । भगवान ने प्रेमनाथ जैसे श्रवणकुमार मुझे ना देता तो मेरी हाल क्या होती । कही कुत्ते बिल्ली नोंच नोंचकर खा गये होते अब तक ।

सोनरी-अम्मा सब उपर वाले की लीला है । गुस्सा छोडो ।

सुखिया-क्या छोड़ूं दीनानाथ की याद आते ही कलेजा मुंह को लग जाता हैं । कलमुहवा भीखानाथ जमीन जायदाद हडप कर कैसी चैन की बासुरी बजा रहा हैं ।

सोनरी-ज्यादा ना सोचा करो सिर दुखने लगेगा ।वैसे ही आंख की रोशनी कम हो गयी हैं पास की चीज नही सूझती हैं । चिन्ता करने से और भी सिर चढेगा ।

सुखिया-मेरी जिन्दगी में अब बचा ही क्या है । कल रहूं या ना रहूं ।आज तो मेरी बात सुन लो । देख तू निराश ना हो ठीक हैं तुम्हारे पास सोने चांदी के गहने नही हैं पर तेरा पति ही तेरा सबसे बडा गहना हैं चाहे सोने की मान चाहे चांदी के हुंसली । इसी गहने से सब्र कर । एक दिन तुम्हारे पास भी बहुत गहने होगे । मैं तुमको तब नही देख पाउंगी खैर आज भी तो नही देख पा रही हूं । सब प्रभु की लीला हैं वरना हम भी सोने चांदी में खेलते । सोनरी हौसला रखों तुम्हारी मुरादे जरूर पूरी होगी ।

सोनरी-सुखिया के पैर पर अपनी सिर रख दी ।

सुखिया-दोनो हाथों से जी खोल कर दुआये देने लगी । दुआओ का समन्दर सुखिया सोनरी और उसके परिवार के उपर खाली के खटिया पर ऐसी गिरी की फिर कभी ना उठ सकी । उसके मरने के पहले ही पैर और हाथ से गिलट के कडे निकाल लिये गये जिन गिलट के गहनों को वह मरते दम तक दांत से पकडकर रखी थी अनेको कठिनाईयो का जहर पीकर।

॥ पच्चीस॥

सुखिया के मरने के बाद हल्ला मच गया कि सुखिया ढेर सारे सोने चांदी के गहने छोडकर मरी हैं ।अफवाह यहा तक फैल गयी कि वह गडढा खोदकर पुराने जमाने की सोने की गिन्नियां रखी थी । इस बात का किसी को पता ही नही । मरने से कुछ घण्टे पहले ही वह सोनरी को सब कुछ बताकर मरी हैं । यह अफवाह जंगल की आग की तरह चारो ओर फेल गयी । डाकूंओं के कान भी इन अफवाहों से अछूते न रहे । जबकि सुखिया के जीवन भर की बची पूर्जी सिर्फ गिलट के कडे थे । यही गिलट के कडे तो छोडकर वह मरी थी और कुछ तो उसके पास था भी नही । सोनरी के अगवाडे पिछवाडे अजनवी लोग देखे जाने लगे । एक दिन डकैतो ने सेंध मार दी । जाडे की रात भयंकर गल रही थी । हवा सांय सांय चल रही थी । हवा में इतनी ठण्डक थी कि जैसे तन में तीर चुभा रही हो । जाडे का दिन था कि बरफ पड रही थी ऐसा सम्भवतः पहली बार हो रहा था । बेचारे कुत्ते भौंक भौक कर खुद को गरम करने का अथक प्रयास कर रहे थे । कुछ पुआलों की ढेरो में दुबक कर बैठे थे तो कुछ खुद को बचाने के प्रयास में इधर उधर फिर रहे थे। गांव वाले पहरा के नाम पर जग तो रहे थे पर एक पेड के नीचे

ओलाव सेंकते हुए ।प्रेमनाथ के घर में डकैतों ने सेंध मार दी पता ही नही चला । प्रेमनाथ का घर एकान्त में था । पच्छू की तरफ गन्ने का खेत था जिसमें अपरम्पार गन्ना लगा हुआ था । चोरो ने इसी गन्ने के खेत का फायदा उठाकर सेध मारना प्रारम्भ कर दिया । माटी खोदने और गिरने की आवाज सोनरी को सुनाई पडी वह हडबडा कर उठी भी । वह प्रेमनाथ से बोली सुनो जी कही सं माटी गिरने का आवाज आ रही है ।

प्रेमनाथ-तुमको नीद नही लग रही हैं मुझे तो सोने दो । गन्ने के खेत से आवाज आ रही हैं हवा तेज चल रही हैं । माटी कहा से गिरेगी । सो जाओ आंख बन्द करके ।

सोनरी- चूहे तो घर तो नही खोद रहे हैं ।

प्रेमनाथ -सो जा चूहे ससुरो को इतनी ताक्त हो गयी हैं कि घर खोद देगे । ढाई हाथ चौडी दीवाल चूहो के बस की बात हैं । तुमने तो माटी ढोया हैं । माटी नही गिर रही हैं ।गन्ने के खेत की आवाज हैं पछुवा हवा होती हैं खतरनाक खेत का सारा गन्ना लोट गया होगा ।सबेरे देख लेना । अभी तो सो जाओ । माटी नही तुम्हारे कान बज रहे होगे ठण्ड तो नही लग रही है।दुबक कर सो जाओ ।

सोनरी-सुनो आवाज आ तो रही हैं ।

सोनरी और प्रेमनाथ की आवाज सुनकर चोर सेंध मारना रोक दिये ।

सोनरी-अरे लगता हैं माटी के गिरने की आवाज बन्द हो गयी।

प्रेमनाथ-भागवान इतनी तेज बर्फीली हवा चल रही हैं । चूहे बिलों में घुस गये होगे ।इनी ठण्ड तुम्हारी दीवाल खोदने आ रहे हैं ।सो जाओ नीद ना खराब करो । अभी तो रात का दूसरा पहर शुरू ही हुआ है ।

सोनरी-माटी खोदने की आवाज तो मुझे आयी थी चाहे चूहा रहा हो या सियार ।

प्रेमनाथ-सियार होता तो गन्ना काटता घर में क्यों खोदा खादी करता । उसे यहां क्या मिलेगा ।

सोनरी-तुम सोओ मैं देखकर आती हूं ।

प्रेमनाथ- अरे कहा जा रही हो सो जाओ । डरने की कोई बात नही हैं चोर भी अपने घर मे से क्या ले जायेगा । कहां हीरे मोती घर में गडे पडे हैं । यहां से डाकू ससुर क्या ले जायेगे । कहा मांता जी हण्डा मो रकम गाडकर रखी थी कि चोरो को भनक लग गयी हैं । ऐसी जानलेवा सर्दी में डाकू आ रहे हैं । वे भी तो आदमी होते हैं उनको भी तो ठण्ड लग रही होगी ।

सोनरी-क्या बक रहे हो । दीवालों को भी कान होते हैं । कोई सुन लेगा तो सोचेगा सचमुच सोने चांदी से भरा हण्डा गडा है इस घर में ।

चोरो ने इनकी बात सुन तो ली पर सिर्फ सोने से भरा हण्डा सुन पाये बाकी सुन ही नही पाये ।

प्रेमनाथ-ठीक हैं अब सो जाने दो । अब जब मुंह खोलूंगा तो अच्छा अच्छा बोलूंगा जिससे तुम्हे गुदगुदी लगने लगा ।

सोनरी-बहुत मस्स्खरी सूझ रही हैं । मुझे तो भय घेरने लगा हैं ।

प्रेमनाथ-भय की कोई बात नही । सो जाओ ।

सोनरी प्रेमनाथ की बातों को मान गयी । कुछ ही देर में इतनी घोर निद्रा में सो गये कि चोरो ने पूरी दीवाल खोद दी आने जाने की जगह बना लिये । प्रेमनाथ को पता ही नही चला कि उनके घर में चूहे नही बल्कि चोर उपद्रव मचा रहे हैं । चोरो को सेंधमारी में एडी चोटी का पसीना बहाना पडा था । चोर प्रेमनाथ के घर में घुस गये । एक एक कोना छान डाला पर कुछ नही मिला । बर्तन भाडे सब उल्ट पलट डाले । पूरा घर छान डाला चोरो ने पर मिला कुछ भी नही। चोर आपस में बात करने लगे लगता है कही गाडकर तो नही रखा हैं । चोरो ने पूरा घर खोद डाला ।

सोनरी को आहट फिर लगी बातचीत की वह गले में पहनी हंसुली को छू कर देखी । प्रेमनाथ को जगाने लगी । वह नही उठा तो नही उठा जैसे कोई जादू कर दिया हो ।

सोनरी उठते हुए बोली भगवान आज हो क्या रहा हैं कभी मांटी खोदने की आवाज आ रही हैं तो कभी किसी के बातचीत की आज हो क्या रहा हैं ।कुत्ते भी नही भैाक रहे हैं अब । वे भी ठण्ड से बचने के लिये कही जाकर दुबक गये । मुझे ऐसा क्यो लग रहा हैं ।ये हैं कि उठने का नाम ही नही ले रहे हैं ।

सोनरी की बात चोरो का साफ साफ सुनाई दे रही थी । भोर भी होने वाली थी । चोर दबे पांव सेंध के रास्ते निकल गये । भनक ही नही लगी कि घर में चोर खोदाखादी कर चले भी गये । रात में बकरियां भी रोज से ज्यादा बोल रही थी । वे एक कमरे में बन्द थी । कुत्तो ने आज रात न भौकने का जैसे व्रत ले रखा था ।

सबेरो हो गया ।सोनरी उठी काम में लग गयी । प्रेमनाथ नीम पर चढा दातून तोडा । दातून करते हुए वह पिछवाडे की तरफ चला गया । माटी का ढेर देखकर व्ह घबरा गया । वह वही से चिल्लाने लगा अरे बाप रे ये क्यो हो गया माटी का इतना बडा ढेर कैसे खडा हो गया रात में ।

प्रेमनाथ के चिल्लाने की आवाज सुनकर सोनरी दौडी दौडी आयी । कुछ ही देर में पूरा गांव इक्टठा हो गया। सब लोग बाते ही कर रहे थे कि सोनरी चिल्ला चिल्ला कर रोने लगी यह कहकर की चोरां ने घर में सेध मार दिया । अरे हमारी मति मारी गयी थी रात में ही हल्ला मचा देते पर इनकी बातो में आ गयी । यही कहने लगे गन्ने के खेत से आवाज आ रही हैं जबकि चोर घर को खोद रहे थे । माटी के गिरने की आवाज आ रही थी । ये कहने लगे तुम्हारा कान बज रहा हैं। देखो मेरा कान नही बज रहा था । बात मान गये होते तो ये हाल नही होता ।देखा मडई में सोने का नतीजा ।

प्रेमनाथ- कहा दूंर थे पास में ही तो थे। मुझे लगा की गन्ने के खेत से आवाज आ रही हैं । हवा से गन्ने गिर रहे होगे । मुझे क्या पता कि हमारे घर में ही डकैती हो रही है ।आने वाली आवाज गन्ने के खेत की नही सेंध खोदने की थी।

सोनरी-अब जो हाना था हो गया ।ज्यादा सफाई देने की जरूरत नही हैं । चलो देखो कुछ बचा है कि चोर लोटा बर्तन धान पिसान सब ले गये ।

प्रेमनाथ के साथ और लोग घर में आ गये । बच्चे सभी अभी सो रहे थे । बच्चें को चोरो ने छुआ तक नही था । ना ही बकरे को ही ले गये थे । एक बकरा पांच छः सौ रूपये का तो था ही । हां घर का कोना कोना छान मारा था सोने चांदी के गहनों की खोज में । कही कही तो खोद खोद कर देखा था । जहां जहां उन्हे लगा था कि यहां हण्डा गडा होगा । चोरो को तो बस खोज थी सुखिया के छोडे हुये खजाने की ।

सोनरी जोर जोर से रो रही थी । लोग समझा रहे थे यह ककी कर कि अपना सरसमान देखो कुछ बचा है कि नही । बच्चें तो सही सलामत हैं । चोर धन भी ले गये तो ले जाये । बच्चे तो सही सलामत हैं । बच्चों को कुछ कर देते तो बहुत बुरा होता ।इस बात पर गौर करो । प्रेमनाथ सोनरी के पास जाकर बोला भागवान रोना धोना बन्द करो । अपना समान देखो जो कुछ घर मे था । कुछ बचा है कि सब चोर ले गये ।अरे तुम्हारी हंसुली तो तुम्हारे गले में ही हैं । सोनरी ने झट हंसुली के उपर हाथ रखी और उसके आंसू थम गये ।

॥छब्बीस॥

प्रेमनाथ के घर में कटी सेंध के निशान सूखें भी नही थे कि उसके काका के मझले लडके के गौने का न्यौता आ गया,जो दूर गांव जाकर बस गये थे । जिस न्यौते में सोनरी को खासतौर पर बुलाया गया था ।

प्रेमनाथ -सोनरी काका के लडके का गौना पडा हैं । तुमको गौने के न्यौते में जाना है ।

सोनरी-घर की हालत देख ही रहे हो मैं न्यौते कैसे जाऊंगी । तुम दिन में जाना न्यौता करके दिन में ही लौट आना । बारात मत जाना । मुझे अब डर लगने लगा है । खुदा ना खास्ते फिर चोरो ने धावा बोल दिया घर सुनसान पाकर तब क्या होगा घर में तो एक ना एक को तो रहना ही होगा। मुझे तो अब बहुत डर लगने लगा है।

प्रेमनाथ -सोनरी तुम कह तो ठीक पर जाना तो होगा ही बिना गये तो काम नही चलेगा । सगे काका है भले ही दूर गांव जाकर बस गये हैं । हैं तो खून के रिश्ते में ।यही तो मौका होता है जब ब्याह गौने का जब पूरा कुटुम्ब इकट्ठा होता हैं । सब हंसी खुशी मनाते हैं दुख भूल कर । कहां रोज रोज ऐसे मौके आते हैं ।

सोनरी-हां औरते अपने गहनों की नुमाईस भी तो लगाती हैं । यह भी मालूम है ना ।

प्रेमनाथ -हां मालूम तो हैं । ठीक हैं अपनी औकात नही हैं नुमाइश लगाने की तो क्या न्यौता छोड देगे । अरे काका खुद न्यौता देने आये थे बूढे आदमी इतनी दूर पैदल चलकर ।काका आये थे बोल गये थे कि सोनरी को लेकर आना ।पोता राजू का भी सब लोग भर आंख देख लेगे ।

सोनरी-छोटा बच्च हैं । कहां इसको लादकर ले जाऊंगी । घर की हालत देख ही रहे हो मेरा जाना तो कोई जरूरी नही हैं । तुम अकेले चले जाना न्यौता करके घर वापस आ

जाना ।मैं वहा अभी गयी भी तो नही हूं। ना तो कोई जान हैं ना पहचान । मैं तो किसी को पहचानती भी नही । सिर्फ बूढे बाबा और बूढा को छोडकर ।
प्रेमनाथ -काका तो हम लोगो के जन्म के पहले ही ससुराल में जा बसे । मां कहती थी जब मैं पैदा हुआ था ।उसी साल से जन्मभूमि छोड दिये ।ससुराल के होकर रह गये भीखानाथ भइया की तरह । काकी अच्छे परिवार की हैं ।कोई वारिस नही था सब जमीन जायदाद काका को ही मिल गयी। इसी मोह में वे जन्मभूमि तक को छोड दिये ।
सोनरी-जानती हूं ।चैत के मेले के समय पिछली बार आयी थी । गहने से लदी थी किलो भर की तो उनकी हंसुली रही होगी।बार बार हंसुली पर हाथ फेर रही थी ,हुमेल भी उनका काफी वजनी लग रहा था। और भी ढेर सारे गहने पहनी थी ।
प्रेमनाथ -काका के पास अकूत रकम हैं । काकी तो पहनेगी ही । अपने जैसे गरीब तो हैं नही कि उनके पास जेवर की कमी है । काकी को बाप दादा की इतनी बडी विरासत मिल गयी है । बेटवा दुबई कमा रहा हैं । चारो ओर से तो आ रहा हैं । कहते हें ना भगवान देता है तो छप्पर फाडकर देता है वही हाल काका के साथ हुआ हैं ।
सोनरी-अरे ठीक हैं अपरम्पार धन दौलत हैेें तो दिखाने के लिये है क्या । उनको मालूम नही था कि मेले ठेले में चोर उचक्के घूमते रहते हैं कही कोई अनहोनी हो गयी होती तो । इतना तो ख्याल रखना चाहिये था। हर जगह गहने की नुमाईस तो नही लगानी चाहिये । ठीक हैं भगवान ने दिया हैं सम्भाल कर रखिये । सुना है कि चैत के मेले में गहनो की बहुत चोरियां होती हैं । गर्दन में से ही चोर हंसुली खींच ले जाते हैं ।सब कुछ जानते हुए भी अंग अंग में सोने चांदी का गहना गूथ कर मेला देखने जाने समझदारी हैं क्या । बताओ बेटवा के गौने में तो चन्द्रहार,मांग टीका और भी ना जाने क्या क्या पहनकी दिखायेगी । मुझसे तो देखा नही जायेगा इस तरह का दिखावा । इसलिये और मेरी इच्छा नही हो रही हैं न्यौते में जाने की । तुम ही हो आना ।
प्रेमनाथ -कैसी बात करती हो । अरे काकी के पास हैं तो पहनने दो दिखाने दो हमारा क्या जाता हैं ।ऐसे मौके पर तो गहने पहने जाते हें ।काकी पास है तो पहने हमे क्यों आपत्ति होनी चाहिये ।
सोनरी-अच्छा तुमको भी पता चल गया गहने कब कहा क्या पहने जाते हैं ।
प्रेमनाथ -हां सोनरी जब से तुम आयी हो ।
सोनरी-कभी मेरे बारे में सोचा हैं । गौने में सब औरते गहनो से लदी रहेबी । उनके बीच में मैं कैसी दिखूंगी । बेइज्जती करवाना है क्या ।
प्ेामनाथ-कैसी बेइज्जती ।
सोनरी- सब सिर से पांव तक गहनों से लदी रहेगी । क्या हुमेल ,बाजूबन्द, कमरबन्द, झुलनी, नथिया,कनफूल,चन्द्रहार और ना जाने कौन कौन से गहने । मेरे पास तो कुछ भी नही है ।एक नन्ही सी झुलनी एक हंसुली को छोडकर।

प्रेमनाथ -देखो तुम किसी नुमाइस मे जा नही रही हां । तुम तो न्यौते मं जा रही हो ।क्यों इतना माथा पच्ची कर रही हो ।

सोनरी-हां जी मुझे भी मालूम हैं न्यौते में जाना हैं ।

प्रेमनाथ -फिर इतना सोच विचार क्यों ।

सोनरी-सोच विचार क्यो नही । मैं अपनी हाल पर मर रही हूं । तुम हो कि कह रहे हो कि सोच विचार क्यों । नाक कटवानी है वहां जाकर ।

प्रेमनाथ -तुम ही नही रो रही हो मैं भी तुम्हारे साथ हूं । क्या करे किस्मत तो नही बदल रही हैं दिनरा हाडफोड ेहनत के बाद भी । मैं क्या नही रो रहा हूं । मैं भी तुम्हारे साथ बराबर रो रहा हूं नतीजा क्या निकल रहा है रोने सेवही ढाक के तीन पात ।

सोनरी-अच्छा तो तुम मेरी वजह से रो रहे हो ।ऐसी बात हैं तो मुझे मेरे बाप के घर छोड आओ ।

प्रेमनाथ -कैसी बात कर रही हो । क्यो नाराज हो रहा हो मैं ने ऐसा कुछ कहा ही नही । तुम इतना नाराज हो रही हो । मेरी क्या गलती हैं ।

सोनरी-अब कैसे कहोगे । तुमने हो तो कहा हैं अभी अभी कि तुम रो रहे हो ।

प्रेमनाथ -भागवान तुम क्या कह रही हो । तुम जो सोच रही हो वैसा कुछ भी नही है ।ं मेरा मतलब ऐसा कुछ नही था ।

सोनरी- क्या था तुम्हारा मकसद । मक्खन ना लगाओ । जो कहना था कह दिये । मैं जानती थी तुम ऐसा ही कहोगे । ठीक हैं मैं नही जाऊंगी । तुम चले जाना ।

प्रेमनाथ -तुम्हारी िविदाई काका करेगे । इसीलिये तुमको बुलाया हैं ।

सोनरी-तुम्हारे काका क्या विदाई करेगे । बहुत मेहनत करेगे एक साडी दे देगे । ब्लाउज पेटीकोट की ब्यवस्था खुद को ही करनी पडेगी ।गहना गढवा कर देने से रहे । मैं नही जाने वाली । तुम ही जाओगे ।

प्रेमनाथ -देखो जिद ना करो ।खानदान परिवार का मामला है । घर की बात हैं ।चले जाना । नही जाओगी तो अच्छा नही लगेगा । काका काकी बुरा मान जायगे ।

सोनरी-मुझे झुमका लाकर दो तब जाऊंगी ।

प्रेमनाथ -क्या तुम सिर्फ एक झुमके की बात कर रही हो । मेरा पास रूपाया होता तो तुम्हारे अंंग अंग के लिये गहना गढवा देता । क्या करू किस्मत ने गरीब बना कर रख दिया है । हार जाता हूं अपनी गरीबी से । यही तो उम्र थी खाने पहनने की पर लाचार हूं । कुछ नही कर सकता चाहकर भी। एक जोडो तो दूसरा टूट जाता हैं । इसी जोड तोड में जिन्दगी कटी जा रही हैं । ना जाने कब अपने दिन फिरेगे । मुझे भी तकलीफ होती हैेंं। दूसरी औरतो को गहनों से लदी देखता हूं तो मेरा भी मन होता है कि हमारी भी घरवाली के तन पर तरह तरह के गहने होते बस सोचकर ही रह जाता हूं । कुछ कर नही पाता हूं ।चलो मैं प्रयास करता हूं न्यौता जाने से पहले सोने का नही तो चांदी का ही झुमका बनवा लूं पर.........

सोनरी-पर का मतलब ।अपनी किस्मत में गहना पहनना नही लिखा हैं तो कैसे बनेगा।
प्रेमनाथ -सोनरी तू चिन्ता ना कर सोने का नही तो चांदी का ही पर बनवाऊॅगी जैसे तैसे करके । तुम तो जानती ही हो सोने का मैं बनवाने से रहा क्योंकि अपनी औकात ही नही हैं । चांदी के लिये भी उठक पटक तो करनी ही पडेगी । हां तुमको उदास नही होने दूॅगा ।
प्रेमनाथ -नगद उधार करके चांदी का झुमका बनवा लाया ।सोनरी हंसी खुशी न्यौते गयी । वहां उसके झुमके का उपहास हो गया ।औरते पूछती अभी नया बनवाया है क्या । कोई कहता सस्ता लग रहा है । कोई कहती भारी रकम बेचारा प्रेमनाथ कहां से बनवायेगा। कहां वह दुबई कमा रहा हैं । सेर भर मजदूरी में क्या करेगा।ं साल भर के खाने की व्यवस्था हो जाये बडी बात हैं । हां प्रेमनाथ दुबई कमाता तो जरूर सोने का भारी झुमका चन्द्रहार सब कुछ बनवा लेता । गरीब हैं ना ।जितना कमाई हैं उतने में ही काम करना बेहत्तर रहता है । समझदारी से काम करना चाहिये । कोई अपने गले में पहना हार दिखा कर कहती एकदम सोने का हैं ।शहर से बनवाया हैं । गांव वाले तो पुरानी डिजाइन के बनाते हें । इसलिये हमने अपने उनसे कहकर शहर से बनवायी हूं । बढिया डिजाइन है । जो औरत देखती हैं पूछती है कहां से बनवायी हो । अब कहां से बनवायी हूं किसको किसको बताऊं । शहर के सोनार का पता भी तो मेरे पास नही हैंें कि उठा कर दे दूं । सोनरी औरतो की बात सुनकर जलभुन जाती । वहां की औरतों ने सोनरी के गहने का जनाजा निकाल दिया । वह खुद के उपर नाराज हो रही थी । करे भी तो क्या पराया गांव पराये लागे । किस किस का मोह पकडे । अपने कान को बन्द कर लेती ।जैसे तैसे दो दिन बितायी दुल्हन आते ही वह भी अपने घर आने की तैयारी में जुट गयी । हजारो झूठ बोलकर वहां से विदा हो पायी । सोनरी न्यौते से आयी । घर में घुसी भी नही कि उसके आंखों के आंसूओं का बाढ का बांध टूट पडा ।वह फफक फफक कर बहुत रोयी । वह रोते हुए प्रेमनाथ से बोली अब मैं कभी किसी न्यौते में नही जाऊंंगी ।
प्रेमनाथ -क्यों । क्या हो गया हमने तो तुम्हारे लिये रीन कर्ज किया भी । अब ऐसी कौन सी बात हो गयी कि नताई हिताई ना जाने की कसम ले रही हो ।
सोनरी-तुमको क्या पता है कितनी जिल्लत झेलनी पडी हैं मुझे औरते बेइज्जत करके रख देती हैं ब्याह में बस उनको तो अपना शरीर और खुद के भारी भरकम गहने ही अच्छे लगते हैं । अपने ही मुंह से खुद की तारीफ करती नही थकती । दूसरों को बेवकुफ समझती हैंं ।उन्हे तो अपने गहनो और तन की नुमाईस ही भाती है । दूसरी कितनी सुन्दर क्या ना हो पर जरा भी नही सुहाती उनकी सुन्दर काया ना ही गहने ही ।
प्रेमनाथ -दिल ना छोटा करो अपने भी दिन आयेगे ।
बदलते हैं दिन घुरवा के एक दिन ।
झूम जाता हैं दीया की ज्योति में लीन ॥
हम क्यो करे मन मलीन ।

बरसेगी खशी चौखट पर नाच उठेगा ये दीन ॥
रख हौसला   ना हो आसविहीन   ।
बित जायेगे दिन कसैले आएंगे अच्छे दिन ॥
घुर   भी मुस्काये हैं एक दिन   ।
हम कर्मयोगी क्या सदा रहेगे भाग्यहीन॥
खुशी अायेगी चाखट बदलेगे दिन   ।
बदले है घुरवा के अपने भी आयेगे अच्छे दिन॥

सोनरी-अरे वाह बहुत खूब । तुम तो कवि हो गये । स्कूल तो कभी गये ही नही कविताई करना कैसे सीख लिये ।

प्रेमनाथ-बस खेत,खलिहान,बरगद की छावं,तालाब के किनारे, रहट की घर्रघर्राहट सुनकर और तुमको तवा पर रोटी डालते देखकर।सच ऐसे ही तो सीखा हूं ।तुम्हारा साथ पाकर भरोसा रखो अपनी हाडफोड मेहनत पर तुम भी एक दिन सोने चांदी के मनचाहे गहने पहनकर इतराओगी ।

सोनरी-कब आयेगा वो दिन ।उसी की इन्तजार में तो बूढी होती जा रही हूं ।पहनने ओढने के दिन तो अभी हैं । बुढौती में क्या खायेगे क्या पहनेगे जब आंख ठेहुना ही जबाब सवाल करने लगेगे ।देखो इच्छा कब परमात्मा पूरी करते हैं या ऐसे ही आशा में ही दुनिया से कूंच करवाते हैं ।काश सपने साकार हो जाते ।

प्रेमनाथ-होगे ।हौसला रखो । अपने राजू को प्ढ लिख जाने दो । वही अपने सारे सपने पूरा करेगा । भगवान उसे खूब तरक्की दें ।

सोनरी-तुम अपने माथे के बोझ बेटवा के माथे रख रहे हो अभी से ।

प्रेमनाथ-हां राजू की मां । राजू बडा आदमी बनेगा पढ लिखकर। देखना जिस दिन बडा साहेब बन गया दुनिया की सारी खुशी मिल जायेगी । तुम्हे गहने की कमी नही खलेगी ।सबसे बडा तो हमारा गहना बेटवा ही तो हैं ।देखना सारी हसरते पूरी होगी एक दिन । बेटवा को बडा होने दो । पढ लिख जाने दो ।अपने भी बुरे दिन बित जायेगे राजू की मां ।भेद की बंदिषो जो है काष वह भी खत्म हो जाती । सच तब विपमावादी समाज के गले में समानता की हंसुली दमक उठती । समानता और सम्पन्ता का साम्राज्य छा जाता इस धरती पर ।

गर बंदिषों का जाल ना होता,
षोपितो के सपन का नंगा दफन ना होता ॥
बडी जतन से सींचे थे जो सपने,
ना फल पाये, जहर घोल दिये अपने ॥
सांस भरने में अडचने खडी की गयी,
विरोधी हैं भेद की खूनी दास्तान ॥
टूट जाती भेद जंजीरे मिल जाती सुघड पहचान ॥

सोनरी- बहुत खूब । बिल्कुल सही कह रहे हो । सामाजिक दीवारे भी हम गरीबो के पतन के कारण हैं । काश अपने भी दिन अच्छे आ जाते । अपना राजू सपना पूरा कर देता । कौन जाने भविष्य की बात राजू क्या बनेगा । भगवान राजू को बडा आदमी बनाना । मेरी सारी ख्वाहि ो बेटवा की तरक्की ही हैं प्रभु जो तु ही पूरी कर सके हो । बेटवा की तरक्कर ही हमे गरीबी की दलदल में से उबार सकता हैं । भगवान कृपा बनाये रखना । सोनरी हसीन सपनों में खो गयी । उसे लगने लगा उसका राजू पढ लिखकर बडा साहेब बन गया हैं । वह सोने चांदी के गहनों से लद गयी है। सोनरी के चेहरे पर खुशी की घटा घिर पडी ।

॥सत्ताईस॥

सपने कहां स्थायी होेते हैं।सोनरी के मन मन्दिर पर आये सुनहरे सपने कुछ ही देर में छंट गये । हसीन सपनो के बादल झंटते ही उसकी खुशी पर जैसे गिध्ददृष्टि पड गयी । सोनरी के मन में खुशी तो थी नन्हे से बेटे राजू के लक्षण को देखकर । राजू ही तो उनके सपनो का साकार करने वाला था । सारी उम्मीदें तो उसी नन्हे बालक के कंधो पर टिकी थी मां बाप की ।वह सोच के समन्दर में हिचकोले खा रही थी । तब तक राजू चिल्ला पडा मां कब से बुला रहा हूं सुन ही नही रही हो। देखो कीचड में गिर गया खेलते खेलते । सब माटी लग गयी । तुम हो कि मेरी बात ही नही सुन रही हो ।

सोनरी-बेटवा ऐसे कैसे खेल रहा था कि कीचड में गिर पडा ।इतनी माठी पोत कर आ रहा हैे । किसी बच्चे ने धक्का तो नही दे दिया । जरा बंचकर खेला कूदा करो ।

राजू-नही मां कोई धक्का नही दिया मैं खुद ही गिर पडा हूं । थपुआ।खपरैल।पाथने की माटी भिगोई थी लम्मरदार काका की उसी ।

सोनरी-थपुआ की माटी में गिर पडा हैं इसीलिये तो सब गोबर माटी लगा हैं ।यही तो मैं सोच रही थी कि मेरे गहने पर गोबर माटी कैसे लग गया ।सोनरी के मुह से अनायास निकल पडा ।

राजू-बोला क्या कह रही हो मां।

सोनरी-कुछ नही बेटा चल नहवा देती हूं । वैेसे तो यह माटी छूटने वाली नही हैं जल्दी।

राजू-मां नहाने का मन तो नही कर रहा हैं ।

सोनरी-बेटा पोछने से यह माटी छूटने वाली तो नही हैं ।ये तो बता तू थपुआ की माटी से खेल तो नही रहा था । मैं समझ गयी तो छुपाछिपी खेल रहा था इसीलिये थपुआ की माटी में जा गिरा ।

राज-सच बताऊं मां ।

सोनरी-पहले क्यो नही बताया क्यों छिपा रहा था । चल अच्छा बता कैसे गिर था ।

राजू-मां गिरा तो नही था ।

सोनरी-फिर कैसे माटी में लथपथ हो ।

राजू-मां वो कमलुवा की बहन और रमुआ,धमुआ,बचनुवा,ललुवा और सारे लडको ने हंसी मजाक में पोत दिया ।

सोनरी-तुमने भी तो पोता ही होगा ।

राजू-हां मां हम क्यो छोडेगे । हमने भी खूब छोपा हैं । ललुवा का तो मुह ही नही पहचान में आ रहा था ।

सोनरी-बेटा इस तरह का खेल नही खेलना चाहिये । याद रख लो आज से फिर कभी ऐसा ना करना आंख में मांटी चली गयी होती तो । बेटा बच कर रहा कर । तुम्हारे उपर तो हमारे सारे अरमान टिके हैं । बेटा पढाई लिखाई पर ध्यान दिया करो । ऐसे खेल बिल्कुल ना खेलना । कमलुवा की बहन को तो माटी में नही फेका था ा । यदि ऐसा हुआ होगा तो उसकी मां झगडने आ धमकेगी ।

राजू-ना मां ना ।उसकी गुडिया टूट गयी थी । गुडिया को माटी की हंसुली भारी सी बना कर पहनाई थी वी टूट गयी मुझसे । मुझे तो पता ही नही चला कब टूटी ।सबने मिलकर मेरे उपर थपुआ की गोबर मिली माटी डाल दिया ।

सोनरी-कमलुवा की बहन के साथ तुम गहने का खेल खेल रहे थे ।बीत्ता भर की लडकी की आंखे भी अभी पूरी तरह से नही खुली हैं । गहने का खेल खेलने लगी हैं । भगवान भी गजब ही करता हैं लडकियों के पैदा होेने से पहले ही उनके कान में गहने का मन्त्र फूंक देता हैं । जिसकी चाह जीवन भर दिल में सजाये रहती हैं ।

राजू-मां नहवाओ ना जल्दी देह खुाजला रही है ।

सोनरी-हां बेटवा नहवाई । रूक जा कुये से पानी भी लाने दो । इसके बाद रगड रगड कर नहवा कर सरसो के तेल में नमक मिला कर पोत देती हूं फिर नही खुजली होगी ।

राजू- जल्दी करो मां थकाई भी लग रही है ।

सोनरी-इतना क्यों खेलता हैं धूल माटी में ।

सोनरी जल्दी जल्दी पानी कुयें से भर लायी । राजू को नहवाने लगी । इतने में प्रेमनाथ आ गया । वह बोला अरे क्यों बेटवा को नहवा रही हो गदाबेला मेंे । ठण्ड लग जायेगी तों क्या होगा । वैसे ही अपना नछतर खराब चल रहा हैं । बच कर रहा करो । गरीबो के ही सारे दुश्मन हैं चाहे आदमी हो या मौसम ।

सोनरी-बेटवा थपुआ की माटी में लथपथ होकर आया था । नहवाना तो पडेगा ही । पूरी देह मे खुजली हो रही हैं । थपुआ की मांटी में गोबर भूसा तो था । उसी से बच्चों ने नहवा दिया था खेल खेल में । अब मैं नहवा कर गलती तो नही कर रही ।

प्रेमनाथ-थपुवा की माटी से क्यों खेलने गया था ।

सोनरी- ये क्या बतायेगा । कमलुवा,मिलवा,दिलवा, पिलवा,बिलवा रमुआ,धमुआ,बचनुवा,ललुवा और भी सारे ढेर लडके लडकियों ने मिलकर राजू को थपुआ की माटी से छोप डाले थे । खैर राजू भी कम नही हैं । तुम्हरे जैसा ही होगा ना । मिलवा की गुडिया ना जाने कैसे टूट गयी थी अपने सपूत से आंख बन्द कर खेल रहे

होगे । मिलवा खूब अपनी गुडिया को गहना गुरिया पहना कर दुल्हन बनायी थी । उसका ब्याह करने वाली थी कि सपूत का हाथ लग गया। गुडिया टूट गयी और गहने भी ।इसी पर वह गुस्सा हो गयी होगी ।सब बच्चों के साथ मिलकर पोत डाली गोबर मांटी ।देखो अभी ीोी ा भूत सरीख दिखायी दे रहा हैं । बाल्टी भर ाटी ा रगड रंगड कर निकाल ही चुकी हूं ।

राजू-मां मुझे तो पता ही नही चला कब गुडिया टूट गयी । गुडिया टूटते ही वह रोने लगी । वह बोली मेरी गुडिया तोड दिया गहना तोड दिया ।मैं मांटी की हंसुली कई रंगो से रंगी थी । सजायी संवारी थी । राजू तुमने तोड दिया । मेरा सारा श्रृंगार पटार बेकार कर दिया । बस इतने में सब टूट पडे ।

प्रेमनाथ-बेटा खेल खेल में झगडा नही करना चाहिये । बच्चों के झगडों में कभी कभी बडे उलझ जाते हैं । अच्छी बात नही है ।बेटा लडाई झगडे से बंच कर रहना चाहिये ।पढाई लिखाइ्र पर ध्यान दो । अब तो स्कूल भी जाने लगे हो ।

सोनरी-लो पांव की माटी तो साफ हो गयी । हाथ इधर कर बेटा हाथ भी साफ कर दूं ।

राजू-लो मां । पत्थर से रगड कर छुडा दो ।

सोनरी-राजू हाथ छुछा ।खाली ।क्यों है । गुजहरा।चांदी का कडा। कहा गया ।

राजू-मां दोपहर में ही नही था । जब सोकर उठा तब ही हाथ में नही था ।

सोनरी- अरे दोपहर में नही था तो बताना तो था ।

राजू-मां मैं सोचा कि तुमने ही रखा होगा ।

सोनरी-बेटवा भला मै क्यों निकालूंगी । यही तो ननिहाल की निशानी तेरे हाथ में था एक गुजहरा । पावं भर चांदी का था । वह भी खाांटी चादी थी । सोनरी आवाज लगाने लगी ।अरे राजू के बापू ये देखो बेटवा का गुजहरा चोरी हो गया । अरे सारी विपत्तियां हमारे ही माथे क्यो आ रही हैं । भगवान हमसे कौैन सी खता हो गयी है।

प्रेमनाथ-अरे भागवान काहे को चिल्ला रही हो । सब्र करो आ रहा हूं ।

सोनरी-अरे बेटवा को हाथ देखो।

प्रेमनाथ-हाथ तो ठीक है बेटवा का ।

सोनरी-अरे हमने कब कहा कि बेटवा का हाथ ठीक नही है । अरे बेटवा के हाथ में गुजहरा नही हैं ।कोई चोर चुरा ले गया ।

प्रेमनाथ-कहीं खेलने में तो नही फेक आया ।

राजू-ना बापू वो तो दोपहर में ही नही था ।

प्रेमनाथ-गुजहरा चोरी हो गया राजू की मां ।

सोनरी- कहां से चोर आ गया । दिन में चोरी होने लगी तो जीना मुिश्कल हो जायेगा । हमारे ही घर में दुनिया भर की दौलत रखी है । सारे चोर यही आ रहे है । कभी सेध कट रही हैं । कभी चोर बेटवा का गुजहरा चुरा ले जा रहा हैं । ये सब क्या हो रहा है । अरे ऐसा होने लगा राजे रोज तो जीना कठिन हो जायेगा ।

प्रेमनाथ-गुजहरा की चोरी करने दूर का कोई चोर तो आया नही होगा । आसपास का ही कोई चोर हैं जो बेटवा का गुजहरा ले उडा है ।

सोनरी-पाव भर चांदी का गुजहरा था । इतने में तो हंसुली बन जाती हैं । ना जाने कहां से चोर आ गया मेरे बेटवा का हाथ खाली कर गया । ऐसे डाकूओ को कीडे पडे ।

प्रेमनाथ- राजू की मां तू गांव में पूछताछ कर ले हो सकता हैं । खेलते वक्त बेटवा के हाथ से कही गिर गया हो । मैं सोखा से नाम निकलवा कर आता हूं।सोखा सही सही बता देते हैं । अगर किस्मत में होगा तो जरूर मिल जायेगा । चोरी तो हो ही गया है गुजहरा । गरीबी में आंटा गिला कर गया चोर भी । उसे भी हमारे ही घर में खजाना नजर आ रहा था ।

सोनरी-ठीक है । तुम नाम निकलवा कर आओ । मैं पूरे गांव में ढिंढोरा पीटती हूं । हो सकता हैं कही मिल ही जाये । ऐसा भी तो हो सकता हैं कोई हंसी मजाक में निकाल लिया हो बेटवा के सोये रहने पर । मैं उन बच्चों से भी पूंछ आती हूं जिनके साथ बेटवा खेल रहा था।

सोनरी पूरे गांव के एक एक बूढे जवान बच्चे सब से तहकीकात कर आयी । कही पता नही चला । इसके बाद अपने घर का कोना कोना छान डाली । गुजहरा कही नही मिला । थक हारकर धम्म से गिर पडी । उसके आंखों से तरतर आंसू बहने लगे । इतने में प्रेमनाथ आ गया । प्रेमनाथ को देखकर आंसूओं की रफतार और तेज हो गयी । वह हिम्मत करके प्रेमनाथ के पास गयी और पूछने लगी सोखा ने क्या बताया । कुछ बताते क्यों नही ।

प्रेमनाथ-अपनी ही नइया में छेद हैं ।

सोनरी-क्या मतलब ।

प्रेमनाथ-घर परिवार का ही चोर हैं । राजू के सोने का फायदा उठाकर चोर गुजहरा ले उडा। अब तक तो बिक भी चुका हैं।साफ साफ बता दिया सोखा ने ।अब नही मिलने वाला हैं गुजहरा ।

सोनरी-अब अपने परिवार में भी डाकू हो गये । नाम बताओ उस डाकू का नाक नोच लेती हूं । बस नाम बता दो ।

प्रेमनाथ-भागवान चोरी गया समान कहां मिलेगा।

सोनरी-चोर का नाम बताओ । उसे साहूकार की दुकान तक खींच कर ले चलते हैं । जहां बेचा होगा । गुजहरा वापस ले आते हैं। हल्का फुलका तो था नही ।इतने में तो हंसुली बन जाती हैं ।

प्रेमनाथ- बन तो जाती हैं ।

सोनरी- तुम डर क्यो रहे हो चोर का नाम बताओ ।

प्रेमनाथ- मैं घुलुवा की दुकान से होकर आता हूं ।

सोनरी-ठीक हैं पर झगडा मोल नही लेना । तहकीकात कर लेना बस ।

प्रेमनाथ-घुलूवा सेठ की दुकान गया । गुजहरे का पता चल गया और बेचने वाला कोई दूसरा नही प्रेमनाथ का ही भाई काशीनाथ ही था। प्रेमनाथ को इस बात का बहुत दुख हुआ कि उसी का भाई चोर हैंं। शहर जाकर बिगड गया। बेटवा का गुजहरा बेचकर चंपत हो गया । सोनरी को तो जैसे सापं सूंघ गया ।

सोनरी-राजू के बापू काशीनाथ का पता लगााओं ।वह ससुराल में जरूर मिल जायेगा ।वह वही गया हो गया खूब मौज उडा रहो होगा ।बेटवा का गुजहरा बेचकर । अरे जाओ पता लगााओ कहां गया का ाीनाथ ।

प्रेमनाथ-अब कुछ नही होने वाला हैं । घुलुवा सेठ तीन का तेरह मांग रहा हैं । उसकी भी नियति खराब हो गयी हैं । वह तो कह रहा था कि का ाीनाथ बोला हैं कि उसके पास परदेस जाने के लिये किराया भाडा नही हैं । गुजहरे के बेंच से वह परदेस कमाने जायेगा । भइया भौजी ने बेचने को दिया है ।

सोनरी-वाह रे चोर । मेरे बेटे का गुजहरा चुरा कर बेच गया ।हम पैसे पैसे के लिये तरस रहे हैं । वह चोर मौज कर रहा हैं ।

प्रेमनाथ- अब तो गुजहरे को भूलना ही पडेगा । अपने पास तो इतनी रकम है कि नही कि सेठ से ले आये ।बेइमान सेठ भी तो चार गुनी कीमत मांग रहा हैं । वाह रे काशीनाथ इतना बडा चोर हो गया । भतीजे के हाथ का गुजहरा बेच कर भाग गया ।

सोनरी-अब उस चोर का कोई भरोसा नही कभी बेटवा को ही ना ले जाकर बेच दे ।

प्रेमनाथ- हां राजू की मां उस चोर पर से भरोसा उठ गया हैं ।चोर अपने ही घर में चोरी कर रहा हैं ।गरीब भाई को लूट रहा हैं ।ना जाने क्या हो गया हैं उस चोर काशीनाथ को दौलत के पीछे अपने बेगाने में कोई अन्तर भी नही कर पा रहा हैं ।

सोनरी-चोरो के कोई ईमान नही होते है उन्हे खून भी करना पडे तो बडे शौक के साथ करते हैं जैसे चोर काशीनाथ ने बेटवा के हाथ के गुजहरे को चुराकर किया साथ ही खून के रिश्ते की छाती में भी खंजर भोंक गया ।

॥अट्ठावीस॥

गुजहरे की चोरी की हतक।दुख। प्रेमनाथ और सोनरी की छाती पर सवार ही था कि इसी बीच उनके सबसे छोटे बेटे शामू को कोई बीमारी लग गयी ।वह रह रह कर दर्द से अचेत होने लगा । बहुत सी देशी दवा दारू हुई पर कोई फायदा नही हुआ । सोनरी को ाामू कर दर्द बर्दाश्त नही हो पा रहा था । प्रेमनाथ भी इससे बेखबर न था ।

सोनरी-अरे राजू के बापू ाामू की तबियत तो दिन पर दिन बिगडती जा रही हैं । कुछ करो नही तो बेटवा हाथ से निकल जायेगा तडप तडप कर । अपने बच्चे ही तो अपनी लाठी हैं ।

प्ेरामनाथ-आसपास के सभी हकीमों को तो दिखा दिये कोई फायदा तो हो ही नही रहा हैं । अब सरकारी अस्पताल ही जाना पडेगा ।

सोनरी- जो कुछ करना हैं जल्दी करो । बेटवा का दुख सहा नही जा रहा हैं । मुझे तो बेटवा के दर्द देखकर डर लगने लगा हैं । जहां भी चलना हैं जल्दी करो ।सरकारी अस्पताल ले चलना है तो वही चलकर दिखा आओ ।गांव में तो डाक्टरी का कोई पुख्ता इन्तजा भी नही है ।देखा राजू के बाबू बेटवा का रोग बढता जा रहा हैं।
प्रेमनाथ-हां यही करना होगा । नन्ही सी जान बहुत दुख झेल रहा हैं नन्हीं सी उम्र में ।ना जाने किस जन्म का करम बिगडा हुआ है इसका कि जन्म से ही दुख भोग रहा है।
सोनरी-भगवान को तो इतना निर्दयी नही होना चाहिये । अभी साल भर ही तो हुआ हैं । इस बेटवा के जन्म में ारीर का नाश हो गया । पेट फाड डाला डाक्टरों ने ।बेटवा को पाकर अपना सारा दर्द भूल गयी थी। जिस बेटवा के लिये इतना सारा दुख उठायी वही बेटवा आज भारी मुसीबत झेल रहा हैं ।कराह कराह कर जान निकल रही हैं बेटवा की । भगवान रहम करो । गरीब पर उपकार करो । बेटवा का दुख हर लो प्रभु ।
प्रेमनाथ -जल्दी करो राजू की मां । ईक्का आने वाला हैं । सरकारी अस्पताल के पास ही उतारेगा । डांक्टर लोग भी आ गये होगे । जल्दी करो अब नीम हकीमों से कोई फायदा ना होगा । महीना भर से झूला रहे हैं । बेटवा को जरा भी आराम नही हो रहा है । दर्द बढता जा रहा हैं हर पल ।भगवान ना जाने क्यों मुझ गरीब से नाराज रहता है ।
सोनरी-तुम चलो ईक्का रूकवाओ । मैं बेटवा को लेकर आयी ।
प्रेमनाथ -भागा भागा गया । ईक्का दूर से ही दिखायी पड गया । तब तक सोनरी भी बिलखती हुई शामू को लेकर ईक्के की ओर सरपट दौड पडी । गांव के लोग ामू के सलामती की दुआ भगवान से कर रहे थे । इतने में ईक्का भी आ गया । पूरे गांव को इक्टठा देखकर ईक्का वाला मूरत बोला पूरा गांव तो इस ईक्के पर नही बैठ पायेगा ।
प्रेमनाथ - पूरा गांव नही जा रहा है ।मूरत भइया हम दो ही चल रहे हैं ।
मूरत ईक्का वाला-क्यों इतने दुखी हो भइया प्रेमनाथ ।
प्रेमनाथ- भइया बेटवा की हालत बहुत खराब हैं । जल्दी करो अस्पताल तक जाना है । बाकी जो लोग आना चाहेगे साइकिल से आ जायेगे । तुम तो जल्दी चलो भइया । बेटवा की हालत खराब होती जा रही हैं ।आज महीने भर से बीमार है । गांव के आसपा से सभी हकीमों को दिखा लिया पर कोई कन-भूसी नही छूटी आज तक । महीना भर से पैसा दूंहते रहे हैं ।
मूरतईक्कावाला- हो क्या गया हैं बेटवा को । वही बेटवा ये है ना जो आपरेशन से पैदा हुआ था ।
प्रेमनाथ-हां भइया । ना जाने कौन से नछतर में पैदा हुआ । जब से पैदा हुआ हैं दुख ही दुख झेल रहा हैं । कभी मां तो कभी खुद। आपरेशन से पैदा हुआ मां जीते जी मर गयी ।शरीर से अपाहिज सरीखे हो गयी।रीन कर्ज का भारी बोझ बढ गया ।अब बेटवा की हाल सामने ही हैं कई दिनों से रात दिन रो रहा है । आसपास के सभी हकीमों की दवाई ले चुका पर कोई आराम नही मिल रहा हैं । भगवान ना जाने क्यो गरीबो को ही दुख

क्यो देता है । रो रो कर बेटवा का पेट फुल गया हैं । पानी तक गले से नीचे नही उतर रहा है ।

मूरत ईक्का वाला- और कोइ्र् चलने वाल हो तो बैठ जाये । अब यहां से ईक्का हांकूंगा तो अस्पताल ही जाकर रोकूंगा । मुझे सवारी की चिन्ता नही हैं । बेटवा की चिन्ता हैं । इसका दुख देखा नही जा रहा हैं । सवारी तो और भी ईक्के में आ सकती हैं । बेटवा की हालत बहुत खराब हैं भगवान रक्षा करना । जय बजरंग बलि कहते हुए ईक्का वाले ने घोडे को चाबुक मार दिया ईक्का गति पकड लिया ।

सोनरी-भईया थोडा और तेज चलो । अस्पताल पहुंच जाये । बेटवा का इलाज मिल जाये । बहुत रो रहा हैं । मेरा दुख तो बेटवा के दुख से बहुत छोटा हो गया हें । जल्दीकरो भइया मेरी जान निकल रही हैं ।

मूरत ईक्कावाला - भौजाई चिन्ता ना करो हम समय से पहले पहुच जायेग अस्पताल । तेरा बेटवा मेरे भी तो बेटवा के बरोबर हैं । मेरा भी तो कोई फर्ज बनता हैं आदमी होने को नाते । मैं जल्दी पहुंचा दूंगा इससे ज्यादा तो ईक्का जा नही पायेगा । भौजाई ईक्का को तो घोडा ही खींच रहा है ना मोटर तो नही लगी हैं । चिन्ता ना करो हम पहुचं जायेगे । बेटवा का रोना सुनकर मेरा दिल रोने लगा है । भगवान तू बेटवा का दुख मेरे को दे दो । बेटवा का सारा दुख हर लो प्रभु । डांक्टर तो अपने समय पर ही आयेगे । अस्पताल में रोगियों की भीड भी तो बहुत होती हैं दस कोस की दूरी में यही तो एक अस्पताल हैं सरकारी। बाकी हकीम लोग जो बैठे हैं सब पैसा लेकर जीवन ले लेते हैं । हमारी सरकार भी तो गांव की तरफ देखती ही नही हैं । ना तो अस्पताल है । ना ही रोटी रोजी के कोई पुख्ता साधन और नही आवागमन के साधन ही । बेचारा गरीब क्या करेगा । तडप तडप कर मरेगा ही ना । तडप तडप कर मरना इस इलाके की किस्मत बन चुकी हैं ।ना जाने सरकार को इस इलाके के गावों की सुध आएगी ।वादा तो हर सरकारे ऐसी करती है कि जैसे इस पिछडे इलाके के गांवो के गले में तरक्की की हंसुली डाल देगी ।

सोनरी-हां भइया कह तो ठीक रहे हो । हम गरीबो की आज तक कौन सुना है । भइया देखो बेटवा अब तो सांस भी नही ले पा रहा है ठीक से । थोडा तेज चलो ताकि पहले पहुंचकर नम्बर लगा लें ।

प्रेमनाथ- हां भइया मूरत । राजू की मां ठीक कह रही हैं । यदि देर से पहुंचेगे तो नम्बर देर से आयेगा । भइया इससे बेटवा के इलाज में दिक्कत होगी । बेटवा की हालत तो खराब होती ही जा रही हैं ।

मूरत ईक्का वाला -बहुत फुरती से दस कोस की दूरी डेढ दो घण्टे में तय कर लिया । सोनरी और प्रेमनाथ अस्पताल पहुंच गये शामू को लेकर परन्तु अस्पताल खुला ही नही था । मरीजो की भीड लगी हुई थी ।कस्बे की बाजार खुल चुकी थी । बाजार में चहल पहल भी अधिक थी पर मरीजो को इन्तजार था अस्पताल के खुलने का । शामू का

दर्द बढता ही जा रहा था । सांस लेने में तकलीफ हो रही थी । वह जोर जोर से हांफे जा रहा था । रोना तो कम हो रहा था पर बेचैनी और भी अधिक हो गयी थी । शामू की हालत देखकर रोना आ रहा था । शामू अचेतावस्था में धीरे धीरे जा रहा था । कुछ लोग सोनरी को डांट रहे थे यह कह कर कि कैसी मां हैं नन्हे से बच्चे को नही सम्भाल पा रही हैं । वे लोग ाामू के दुख से अनजान थे । कुछ लोग उत्सुकताबस पूछने लगे क्या हो गया है बेटवा को क्यो इतनी तेेज तेज सासं ले रहा हैं । हलफा मार रहा हें जैसे । जरा छाती की मालिश करो। लोग तरह तरह की सलाह दिये जा रहे थे ।

डांक्टर साहेब के आने में देर हो गयी । सूरज सिर पर आ गया ।बडी मुिश्कल से शामू का नम्बर आया ।डांक्टर तक शामू को ले जाते जाते सांस उखडनेे लगी थी । डांक्टर भर्ती करने की तथा इलाज चार छः दिन चलने की सलाह एक नजर में दे दिये । रूपये का इन्तजाम करने की भी सलाह डाक्टर ने दे दी । डांक्टर की बात सुनकर सोनरी और प्रेमनाथ एक दूसरे का मुंह देखने लगे ।शामू अचेत हो चुका था पूरी तरह । सोनरी ओर प्रेमनाथ के माथे पर उदासी और आंखों में आसूं का सैलाब उमड रहा था ।ाहर में प्रेमनाथ को रूप्ाया उधार मिलने की गुंजाइस कम थी । कोई ऐसा ना था कि जो उधार रूपया दे दे अथवा दिला सके । वैेसे भी सेठ साहूकार लोग आदमी के बुरे दिन का भरपूर दोहन करना जानते भी हैं ।

पे्रमनाथ-राजू की मां तुम ाामू के पास बैठो । दवा तो दे दी है । भगवान ने चाहा तो अराम हो जायेगा । मै थोडी बहुत जान पहचान है कोई मदद कर दे इस मुसीबत में तोे अच्छा हैं ।मैं उस सेठ के पास जाता हूं जहां से हंसुली बनवायी गयी थी ।

सोनरी-यहा तो हथउधरा मिलने वाला नही । सभी धंधेबाज लोग हैं ।अंगूठा भी लगवाये गवाही भी मांगे । यहां अपनी गवाही कौन देगा ।मुसीबत में तो लाग पहचानते तक नही हैं ।यह तो शहर हैं । यहां कौन साथ देगा ।

प्रेमनाथ-कोिशश करने में क्या जाता है ।

सोनरी-बेटवा की हालत देखो तुम उधारी के लिये कहां कहा और किस किस के सामने हाथ फैलाओगे वह भी व्यर्थ जायेगा ।मेरी मानो ।

प्रेमनाथ- क्या मांनू जल्दी बोलो।

सोनरी-क्या बोलूं कहते हुए गले से हंसुली निकाली और प्रेमनाथ के हाथ पर रख दी ।

प्रेमनाथ-यह क्या हैं ।

सोनरी-बेटवा से ज्यादा कीमती नही हैं । ले जाओ गिरवी रखकर पैसा लाओ । हंसुली गिरवी रखकर कोई भी सेठ साहूकार पैसा दे देगा । बेटवाा ठीक हो जाये बस । हंसुली किस्मत में होगी तो और बन जायेगी । अभी तो बेटवा की जान बचाओ । आगा पीछा मत सोचो जाओ । जल्दी करो । पैसा की वजह से हार नही मानना हैं । अरे इसी दिन रात खातिर तो रकम होती हैं । जाओ जल्दी करो । बेटवा की हाल में कोई सुधार नही हो रहा हैं । अपने पास पैसा रहेगा तो डाक्टर से बोल कर अच्छी दवाई लिखवा कर

अपने बेटवा की जान बचा लेंगे । जाओ अब देर ना करो ।देखो बेटवा को और तेज हलफा मारने लगा है ।

प्रेमनाथ-असहाय सा सोनरी को एकटक देखता रहा । वही सोनरी जो हंसुली को अपनी जान से ज्यादा कीमती समझती थी । वही आज गिरवी रखने को दे रही हैं बेटवा के इलाज के लिये । हंसुली बंधक रख दी गयी । रूपया का इंतजाम हो गया । लेकिन शामू को जरा भी अराम नही हो रहा था ।तकलीफ बढती जा रही थी ।

सोनरी कभी डांक्टर के सामने गिडगिडाती तो कभी कम्पाउण्डर के सा ामने पर नतीजा कुछ नही निकल रहा था। डांक्टर कम्पाउडर सभी ढाढस बधाते बोलते बेटवा ठीक हो जायेगा चिन्ता ना करो पर मां का दिल डर रहा था । जैसे उसके कलेजे में कोई तेज धार हथियार से घाव कर रहा हो । कम्पाउण्डर सोनरी की बेचैनी देखकर बोला देखो धीरज रखो डांक्टर साहेब ने बहुत अच्छी दवाई दी हैं । कुछ ही देर में अराम हो जायेगा । भगवान पर भरोसा रखो । डांक्टर तो अपना काम कर ही रहे हैं । भगवान पर भी यकीन रखो । ठीक ही करेगा । सब कुछ तो उसी के हाथ में हैं । भगवान से प्रार्थना करो । डांक्टर तो पूरी लगन से लगे हुए है । बेटवा तुम्हारा जरूर ठीक हो जायेगा । इससे बढिया कोई डांक्टर क्या दवाई देगा ।

सोनरी-हां साहेब । भगवान पर तो भरोसा है ही पर कुछ दुख तो कम हो । बेटवा को सांस लेने में कितनी तकलीफ हो रही हैं । बेटवा को देखकर कलेजा मुंह को आ रहा हैं । देखो बेटवा अब तो सांस भी नही ले पा रहा हैं ।

कम्पाउण्डर- घबराओ नही । जो डांक्टर के हाथ में हैं । वह बेहतर ढंग से कर रहे है । चिन्ता ना करो बेटवा ठीक हो जायेगा । धीरे धीरे अंधेरा पसर रहा था पर शामू को जरा भी अराम नही हो रहा था । ज्यों ज्यो अंधेरा घिरता जा रहा था ।लोग कम होते जा रहे थे । अन्त में सोनरी प्रेमनाथ और जीवन और मौत से जूझता शामू ही अस्पताल में बचे । रात में डांक्टर तो कोई नही था ।हां एक कम्पाउण्डर जरूर था । ज्यो ज्यो रात बढ रही थी ाामू की हालत और भी खराब होती जा रही थी ।कस्बे का यही सबसे बडा अस्पताल था । जहां एक कमरा रोगी के लिये ।एक डाक्टर का कक्ष एक दवाई घर और एक प्रसूति कक्ष था । जहां दिन में लोगो की भीड होता थी रात होते होते पूरा अस्पताल खाली हो जाता था । बिजली की भी कोई व्यवस्था नही थी ।देश का पिछडा और गरीब इलाका जो था ।

सोनरी और प्रेमनाथ डांक्टर और भगवान पर भरोसा कर डांक्टर द्वारा दी गयी दवाइ्र को संजीवनी की भांति दिये जा रहे थे । लेकिन दवाई कोई कारगर काम नही कर रही थी । हालत बिगडती जा रही थी । बिजली तो वैैसे अनेको बार गयी । जिससे मात्र उजाला हो रहा था पर आधी रात में बिजली ऐसी गुल हुई कि प्रेमनाथ और सोनरी पर वज्रपात हो गया । बिजली के बल्ब की रोशनी बन्द होने के बाद ही ाामू की जीवन ज्योति भी

सदा के लिये बुझ गयी । प्रेमनाथ और सोनरी के खानदान की हंसली सदा के लिये खो गयी । अंधेरा और डंसने लगा था मृत देह के साथ में ।

॥उन्नतीस॥

सोनरी और प्रेमनाथ का बेटा शामू दुनिया को अलविदा कह गया प्रेमनाथ और सोनरी के उपर दुख का पहाड छोडकर। सोनरी की हंसुली बंधक पड गयी । वही हंसुली जिसके लिये वह अपनी मां से बचपन में ही ब्याह करवाने की जिद करती थी ।ब्याह क्या होता उसे मालूम भी न था । इतना ही मालूम था कि ब्याह में ढेर सारे गहने मिलते हैं । इसी गहने के मोह में वह ब्याह करने की जिद अपनी मां से करती थी ताकि उसे भी गहने मिल जाये । ब्याह गौना भी कच्ची ही उम्र में हो गया था ।बेटे की बीमारी पर वह अपनी गले की हंसुली निकाल कर गिरवी रखवा दी जिससे बेटवा के इलाज के लिये पैसे का बन्दोबस्त हो जाये । हंसुली गिरवी रख जाने के बाद भी बेटवा की जान नही बच सकी । दुर्भाग्यवस हंसुली साहूंकार की कैदी हो गयी । बेटा भी बहुत दूर जा चुका था दुनिया को छोडकर अब तो सिर्फ उसकी यादे ही बाकी थी और आंखों में आंसू भी । सोनरी चिन्ता के समन्दर में गोते खा ही रही थी कि इतने में कोई प्रेमनाथ प्रेमनाथ की आवाज देने लगा । सोनरी आसूं पोछते हुए राजू से बोली बेटा देखो कोई तुम्हरे बापू को बुला रहा है ।

राजू-मां देखकर आता हूं ।

सोनरी-बेटा कौन था ।

राजु-मां डांक्टर पछाड का कम्पाउण्डर ।

सोनरी- अब क्या लेने आया था ।

राजू-मां रूपाया मांग रहा था । यह कह कर गया है कि दीवाली के पहले रूपाया भजवा देना । दीवाली के पहले सारे पुराने हिसाब किताब नक्की करने को कह गया हैं । मां एक पुरजा भी दे गया हैं ।

सोनरी-कैसा पैसा । जितनी बार शामू को लेकर गये । पैसा तो दिये थे। अभी भी बकाया निकल रहा है ।यही नीम हकीम तो मेरे बेटवा की जान लिये हैं ।

राजू-मां 250 ाये का बकाया बिल दे गया हैं ।

सोनरी-क्या ।

राजू-हां मां दो सौ पच्चास रूपये बकाया है डां.पछाड का बिल के मुताविक ।

सोनरी-ऐसा तो हो ही नही सकता कि ढाई सौ रूपया बाकी हो ।ठीक से पढ बेटा ।

राजू-मां ढाई सौ ही लिखा हैं ।

सोनरी-बेटा अपने बापू के आने पर बता देना । बिल सम्भाल कर रखना । बापू को जरूर बता देना । क्या नीम हकीम डांक्टर हो गये हैं जीते मरते खून चूसते है । साहूकारो जैसे गरीबो के खून ये डाक्टर वैदय भी चूसने मे लगे हैं । दसवी जमात पास हो गये या फेल हो गये नीम हकीम बन गरीबो से पैसा ऐठने लगे । उपर से जान भी ले लेते हैं ।

गांव की ओर तो सरकार भी नही देखती हैं ना । वरना आज गांवों की हालत ऐसी ना होती और ना ही मेरा शामूं असमय मरता। ना खाने को भर पेट रोटी हैं ना ही दवा दारू की कोई व्यवस्था ।नीम हकीम लोग पैसा लेकर जान ले रहे है । गरीबी चौखट पर पालथी मारे बैठी हैं । जमीन पर बडे लोगो को एकाधिकार हैं । गांव समाज की जमीन पर उनका ही कब्जा है । गरीबो का बसर कैसे होगा सिर्फ रूतबेदारो के खेतो में पसीना बहाकर। अरे सरकार को गरीबो के बारे में सोचना चाहिये की नही ।

राजू-मां क्या कह रही हो । मैं तो कुछ समझ ही नही पाया ।

सोनरी-बेटा कुछ नही । बापू तेरे आ जाये तो डां.पछाड का बिल बता देना ।खोने ना पाये सम्भाल कर रख दो ।

राजू- हां मां ठीक से रख देता हूं ।

प्रेमनाथ काम पर से आया । हाथ पांव धोया । सोनरी एक लोटा पानी और एक ढोका ।टुुकडा। भर गुड देकर हुक्का चढाने चली गयी । इतने में राजू आ गया । राजू बोला बापू डां.पछाड का वो दाढी वाला कम्पाउण्डर आया था ।

प्रेमनाथ-क्यो आया था ।

राजू-बापू पुरजा दे गया हैं जिसमें ढाई सौ रूपया वाकी बताया हैं । दीवाली के जरूर देना हैं । ऐसा कह कर गया हैं ।

प्रेमनाथ-मेरे ख्याल से तो कोई देनदारी नही है। तुम कह रहे हो ढाई सौ रूपया बकाया लिखा हैं । कैसा बकाया हैं ।

राजू-हां बापू लिखा तो हैं ढाई सौ रूपाया बकाया ।

सोनरी-लो हुक्का ।

प्रेमनाथ- हां दे दो।सिर चकरा रहा है । राजू बेटा बिल कहा हैं और कितने का बकाया बिल है ।

राजू- बताया ना कितनी बार बताऊं । ढाई सौ रूपये बकाया हैं बिल के मुताबिक डां पछाड का बापू । बाबू सुनाई पडा कि नही।

प्रेमनाथ-हां सुनाई पडा ।बेटा इतना बकाया तो नही होना चाहिये । तुम्हारे पढने में कोइर्र गलती तो नही हो रही है । कब का बकाया और किसके इलाज का हैं बकाया ।

राजू- बापू शामू की दवाई का हैं ।

प्रेमनाथ- शामू की दवाई का । कैसे बाकी रह गया सब तो हिसाब तो कर दिया था ।अब कहा से निकल रहा हैं बकाया । ये नीम हकीम भी लुटेरे हो गये है । इतने बडे डाक्टर हैं महीने भर पैसा ऐंठते रहे बेटवा की ना कन छूटी ना ही भूसी । जान संग चला गया । उपर से अभी भी बकाया निकाल रहे हैं डां.पछाड। सरकारी डांक्टर को डां.पछाड का परचा बताया तो वह उल्टे हमें ही डांटने लगे थे । डांक्टर साहेब बोले थे तुम गांव के लोग जानबूझ कर मरने जाते हो । इस परचे पर नाम पता कुछ भी तो नही लिखा है डाक्टर का । क्यों खुद चलकर चले जाते हो यमराजो के पास । मरते दम तक पैसा

ऐठते रहते हैं जब मरीज की जान पर आ जाती हैें तो इधर आने को कह कर फुर्सत पा लेते हैं । अरे पहले आ जाते तो मरीज को जान बच जाती अब तो भगवान भरोसे हैं । आखिरी चरण में गांव वाले मरीज को लेकर आयेगे गिडगिडायेगे । अरे डाक्टर के पास कोइर् जादू की झडी तो नही है कि छू मन्तर कहते ही रोग गायब ।अरे ये गांव वाले नीम हकीमो के जाल से जब तक निकलेगे नही तब तक ऐसे ही तम्हारे जैसे गरीब लोग पैसा देकर मौत खरीदे रहेगे । क्या करेगे ये छोला छाप नीम हकीम इलाज । आठवी दसवी फेल लोग छोला लेकर इलाज करने लगे । बीमारी कुछ दवाई दे देते हैं कुछ । बेचारा गरीब बेमौत मार जाता हैं । ऐस ही हैं तुम्हारे डांक्टर पछाड भी ।

सोनरी-अब क्या होगा डांक्टर पछाड के बकाया का । एक हंसुली थी वह भी गिरवी रख दी । कैसे फुर्सत मिलेगी । दीवाली भी सिर पर आ गयी है । डां.पछाड वैसे भी दादा बहादुरो के सरदार हैं । दीवाली से पहले कैसे बन्दोबस्त होगा ।यह भी एक मुसीबत आ पडी ।

प्रेमनाथ-सब मजबूरों को ही तो ठगते हैं । डा.पछाड भी कम नही हैं। देना तो पडेगा ही भले ही दो बार में या चार बार में दे ।कोन दुश्मनी माेल लेगा । अपनी औकात भी तो नही है उनसे मुकाबला करने की । पुलिस का अडडा तो डां.पछाड का दवाखाना ही तो हैं । उपर से मुखविर भी । कही फंसवा दिये तो जेल की चक्की पीसनी पडेगी ।हमारी कौन मानेगा ।सभी कहेगे बेईमानी कर रहा हूं । कहावत है जिसकी लाठी उसकी भैस । अपनी लाठी में तो कोइ्र दम ही नही है । अभी तो निश्प्राण पडी हैं । बाद मं क्या होग किसने देखा हैं ।

सोनरी-अरे यह तो वही बात हो गयी जबरा मारे रोवै ना दे ।

प्रेमनाथ- हां सोनरी यहां तो सदा से ही ऐसा होता आया हें । तभी तो अपनी हालत इस तरह की हैं ।गरीब बेबस पडे हुए है ।तरक्की से दूर दूर तक कोई वास्ता नही हैं । जिम्मेदारी लोग आंख पर पटटी बाधे खुद सुख भोग रहे हैं । बेचारे गरीब आंसू में रोटी डूबा रहे हैं । अरे यहां तो ाेषको का दबदबा सदा से रहा है आज भी बना हुआ हैं । हम गरीबो की दुदशा हो रही है । ना रहने का ठिकाना ना खाने का । शोषकों के खेतो में खून पसीना बहाओ । कुछ पेट काटकर कल के लिये रखना चाहो तो वह भी नही रख पाते । ठग लोग हज कर जाते हैं । अरे डां.पछाड कोइ्र कम तो है नही ।

सोनरी-हां ठीक कह रहे हो । ाेषक लोग गरीबो का खाून पी कर ही पलने बढने के लिये पैदा हुए है धरती पर। ये लोग गरीबो को अपने बाप की जागिर समझते है।

प्रेमनाथ-सच कह रही हो गरीबो को कोई माइर् बाप नही है ।सही को गलत साबित करने में उ्रंची पहूंच वाले जरा भी कोतहाई नही करते खास कर गरीबो का हक हडपने के लिये । कुछ लोग तो अच्छाई का मुखौटा पहन कर गलत सलत काम करते हैं । ऐसे ही हैं डा.पछाड भी । देखना किसी ना किसी दिन कोई बडी पहुंच वाला टपका देगा ।

सोनरी-ऐसी बात ना करो । जिसका जैसा करम वैसा फल पायेगा । हमें अपनी जबान गन्दी नही करना चाहिये । हम उस पर प्रतिबन्ध भी तो नही लगा सकते । जब जिम्मेदार ही लोगो की सह मिली हुई है तो लूट करेगा ही अगला ।हमारी कौन सुनेगा हम कह कह कर मर जायेगे कि कोई बकाया नही हैं । सभी डां.पछाड की बात सही मानेगे । छोटे लोग बिल्कुल सही कहे गंगा जी में डुबकी लगाकर कहे परन्तु बडे लोग बडो की ही बात को तवज्जो देगे हम गरीबो की नही । इसीलिये तो स्वार्थ घूसखोरी काला बाजारी खूब फल फूल रही हैं ।

प्रेमनाथ-देखो महीना भर डां.पछाड की दवाई रीन कर्ज करके किया पर जरा भी अराम नही हुआ । बेटवा से भी हाथ धोना पड गया उपर से डांपछाड का बकाया भी भरना हैं जबकि एक एक पैसा चुकता हो चुका था ।

सोनरी-जाकर बात करना । साफ साफ कह देना क्यो परेशान कर रहे है गरीब आदमी को । सारा पैसा ले लेने के बाद भी बकाया निकाल रहे है । यह तो ठीक नही हैं । गरीब के दुश्मन- शोषको और समाज सेवा की खाल ओढे डां.पछाड में तो कोई अन्तर नजर नही आता ।

प्रेमनाथ-बात तो करना ही होगा पर मानेगा कोई नही।डां.पछाड को भी तो मालूम हैं ाामू भी नही रहा ।कया डा.पछाड का दिल इना पत्थर को हो गया है कुछ तो रहम करेगा ।

सोनरी-क्या रह करगा । वह ता उसके दवाखान जाकर ही मालूम पडेगा। एक हंसुली थी वह भी सेठ की तिजोरी में कैद हो गयी । बेटवा हाथ से निकल गया ।डां.पछाड का कर्ज भी छाती ताने खडा हो गया और साथ ही डां.पछाड के डर का भूत भी साथ लग गया । वाह रे गरीबाे की जिन्दगी । किसी को तरस नही आता सब अपने फायदे के लिये धुल में जेवर बरते रहते है । ना जाने क्यो गरीबों की आह में इन सेठ साहूकारो और नीम हकीमो को नर्तकी के घुघरू के स्वर जैसा आनन्द कैसे आता हैं ।

॥ तीस॥

सोनरी और प्रेमनाथ के सिर से मुसीबत के बादल छंटे ही नही थे कि दीवाली आ गयी । सोनरी मुसीबत की मारी आसूं से अपना आज पोत रही थी । बेटे के असमय मरने का गम । जिस बेटा को पैदा करने के लिये पेट फाडा गया था उस रिसते घाव का दर्द । इन सबके साथ ही गरीबी का दर्द बेचैन कर रहा था । पूरे गांव में दीवाली की तैयारियां जोरो पर थी । लोगो के घरो के रंग रोगन के काम जोरो पर चल रह थे । सोनरी के दरवाजे पर उदासी पसरी हुई थी ।राजू दीवाली के आगाज को देखकर अपनी मां से बोला मां सब के घर तो लिपाई पुताई हो रही हैं । कुछ लोगो के घरो में मिठाईयां बनने लगी हैं । अपने घर तो कुछ भी नही हो रहा है ।

सोनरी-बेटा हम कैसे करे ।कोई खुशी की बात है नही । धन धरम सब चला गया । अरे धन चला जाता तो मन को मना भी लेते पर बेटवा भी तो चला गया ।शामू को दफन

किये कितने िदन हो गये पर आज भी लगता हैं कि वह घुठने के बल भागा आ रहा हैं । बेटा शामू का मरना चैन नही लेने देता हैं रात में तो खौपनाक सपने आते है जो आंख झपकने तक नही देते। लिपाई पुताई कैसे होगी । कौन करेगा । मुझे तो खडा होने में ही चक्कर आ रहा हैं । ारीर में ना जाने कौन रोग लग गया । कुछ करने की हिम्मत नही पड रही हैं ।

राजू-मां चिन्ता ना कर पुताई तो मैं और बहन मिलकर कर डालेगे। सब काम हम भाई बहन कर डालेगे। मां तुम तो सिर्फ बता देना क्या क्या करना है ।

सोनरी-ना बेटा तेरे बस का काम नही हैं ।तुमसे इतना बडा काम नही होगा ।

राजू-नही मां मैं कर लूंगा । तीज त्यौहार का काम हैं । सब के घर जगमगायेगे । हमारा घर बिना पुताई के रहेगा । ठीक हैं मां हमारे घर मिठाई नही बनेगी अच्छा पकवान नही बनेगा पर जो हम कर सकते हैं वह तो मुझे कर लेने दो । तुम बस देखते रहना । मां तुम ही तो कहती हो तीज त्यौहार समाज की हंसुली हैं ।

सोनरी-हां बेटा वो तो हैं ही । बेटा पूरे घर की पुताई तुम बच्चाें के बस की बात नही हैं ।जहां पूजा करना हैं ।वही घर जहां तुम भाई बहन मिलकर लिप लेना । जिद कर रहे हो तो वरना मेरा तो मन नही कर रहा हैं तीज त्यौहार मनाने की ।खानदान की ाामू रूपी हंसुली खाक में मिल गयी । हमेशा चित पर चढा रहता हैं । उतरता ही नही है ।कटोरा कटोरा भर दूध खुद लेकर पी जाता था । अब तो दूध भी वैसे ही पडा रहता हैं ।शाामू था तब दूध भी कम पड जाता था। कोई मानने को तैयार ही नही होता था कि शामू साल भर का ही है । लोग चार साल से कम का मानते ही नही थे । भगवान इतनी बुध्दि उसमें भर दिये थे ।सब का चहेता बन गया था ।सच किसी ने कहा जाने वाली चीज भरमाती बहुत हैं ।वही ाामू ने भी किया ।जब तक था खूब प्यार पाया और किया भी सब को रोता हुआ छोडकर चला गया ।

राजू भी रो पडा । वह मां के आंसू पोछते हुए बोला मां शामू तो चला गया हम भाई बहन तो हैं ना । मां चिन्ता ना कर । जो होने वाला था हो गया । यही भगवान को पसन्द था तो तुम क्या कर सकती हो । काम की चिन्ता ना कर मां सब काम कर डालेगे । मां मेरा भी घर लिप पुत जायेगा । राजू अपनी बहनो के साथ मिलकर धीरे धीरे घर पोत डाला।

सोनरी राजू को देेखकर बैठी ना रही । उसे भी हौसला मिल गया । वह भी जुट गयी बच्चों की खुशी के लिये ।

प्रेमनाथ-सोनरी तू क्यो जान दे रही हैं । अरे लिपाई पुताइ्र्र इतनी जरूरी तो थी नही । अपने ारीर को देख नही रही हो । लिपाई करने में जुट गयी ।पेट का घाव अभी पूरी तरह से सूखा भी नही हैं ।क्यो मुसीबत मोल लेना चाहती हो । एक तरफ कहती हो चक्क्र आ रहा हैं । अरे लिपाई पुताई से कहां लक्ष्मी जी खुश होने वाली हैं । लक्ष्मी जी हमारे घर पालथी मार कर बैठने से रही । अरे लक्ष्मी जी को हम गरीबो की चिन्ता होती

तो आज हमारी ऐसी दयनीय हाल होती क्या । हमारी चिन्ता उन्हे नही हैं तो हम क्यों ढकोसला में जीये । गरीबो की सबसे बडी पूंजी तो परिश्रम होता हैं । अभी वह अपने पास हैं । लक्ष्मी तो अपने आसपास ही नही फटकती । वह भी कमजोर मानकर दूर भाग जाती है । अरे अपने उपर तो वैसे ही मुसीबत मडरा रही हैं । बच कर रहा करो । घाव पूरी तरह सूखी नही है जरा भी घाव में घाव लगती है तो दुखदायी हो जाती हैं शामू के बिछुडने का गम सता रहा हैं दीवाली क्या मनेगी । दिल में घाव ही घाव तो पल रहे हैं । उपर से तुम्हारे पेट की जख्म भी तो रिस रिस कर दर्द दे रहा है ।

सोनरी-राजू के बापू दीवाली तो मानानी ही पडेगी बच्चों के खुशी के लिये । अरे बच्चो की खुशी के लिये । हम हर गम का जहर पीने को तैयार हैं।देख नही रहे हो राजू दिन रात पुताई में लगा हैं । अगर दीवाली नही मनेगी तो उसका मन रो उठेगा । वह बोल रहा हैं कि हम दीवाली नही मनायेगे ठीक है । घर की साफ सफाई तो कर ले ।अब तो आसूं बहाना किस्मत बन चुका हैं । शामू तो लौटकर आने से रहा ।यह गम तो जीते जी नही भूलने वाला ।शामू के गम को गले लगा कर रखने से काम तो नही चलेगा । शामू नही था किस्मत में राजू अपना सहारा तो हैं । उसकी खुशी के लिये हमें आसूं पोंछना होगा । राजू के बापू । बेटवा के भरोसे घर में रौनक तो आ जायेगी । पूजा पाठ कर बेटवा की पसन्द का कुछ बना लेगे । दीवाली के दिन पाव भर कोई मिठाई लेते आना । मिठाई राजू को बहुत पसन्द हैं ।

प्रेमनाथ-ठीक हैं मन को समझाने के लिये कुछ तो करना ही होगा ।

सोनरी दीवाली के कामो में लग गयी । अपने गम को भूलाने का प्रयास करने लगी । पर रह रह कर शामू की याद दिल को छेद ही जाती । नौ महीना पेट में पाली और पैदा होते समय लाख मुश्किलों का सामना करना पडा ।जच्चा बच्चा दोनो के जान को खतरा देखकर पेट का आपरेशन कर शामू को निकाला डाक्टरो ने ।वही शामू दंगा दे गया ।काल के गाल में समां गया । भगवान न शामू को मेरी गोद में डालकर खुशी का एक झोंका दे दिया था।यह खुशी ज्यादा दिनों तक ना टिकी रेत के टीले की तरह उड गयी ।यमराज की ऐसी गिध्द नजर लगी कि शामू सदा के लिये बिछुड गया ।

सोनरी दीवाली के दिन दीया जलाने के लिये सरसो दो किलो राजू को भेजकर पेरवाई । दीया बाती सब इन्तजाम कर ली ।

राजू-मां दीवाली पर दीया जलाने के बाद सब दीया बिन कर रख देगे ।

सोनरी-क्या करोगे बेटवा । अगली साल नई दीया जलायेगे पुरानी थाडे ही जलायेगे । पुरानी दीया नही जलाते हैं । हर साल नई दीया लगती हैं ।

राजू-जलाने के अलावा और काम में तो आ सकती हैं दीया मां।

सोनरी-और कौन से काम में आयेगी ।

राजू-मां हम तराजू बनायेगे ,खेलेगे । और भी तो खिलौने बनते हैं दीया से ।

सोनरी-हां बनते तो हैं मैं बता दूंगी । बेटा ध्यान रखना जलती दीया मत उठाना ।

राजू- हां मां याद हैं । मुझे मालूम है पिछली साल देखा नही धनुवा जल्दी दीया चुराकर भाग रहा था उसका हाथ जल गया था । हमें आग से डर लगता हैं मां ।
सोनरी- बेटा आग पानी से बचकर ही रहना चाहिये । बेटा दीवाली के दिन तो और अधिक सावधानी बरतनी चाहिये ।
राजू-हां मां याद रखूंगा ।
दीवाली का त्यौहार भी आ गयी । पूरे गांव में चहल पहल थी । सोनरी के घर में उदासी साफ साफ नजर आ रही थी । सोनरी का दिल था की मानती ही नही था ाामू की याद रह रह कर रूला देती थी ।जबकि राजू मां के गम को भूलवाने का खूब प्रयास कर रहा था ।
राजू- मां अंधेरा घिरने लगा हैं । दीया पानी से निकाल लूं ।
सोनरी- भीगो कर रखा है क्या बेटवा ।
राजू-हां मां एक बाल्टी साफ पानी मे भीगो दिया था इससे कम तेल लगेगा ना ।
सोनरी-बेटा यह काम तो ाम को भी कर सकते थे । दिन भर दीया भीगों कर रख दिये । अब तो निकाल ही लो । दीया जलाने का वक्त हो रहा हैं ।
प्रेमनाथ-राजू वो राजू कहां चला जाता हैं सुनता ही नही । राजू तू कहा हैं तेरी मां कहा हैं ।
राजू-मैं तो यही हूं मां भी बेसन पीस रही है ।
प्रेमनाथ-चल फिर उसे राकन की हिम्मत नही हैं । कौन सी ऐसी जरूरत थी बेसन की । बेसन पीस रही हैं । अरे क्या जरूरत पड गयी थी बेसन की । इतना लम्पट करने की क्या जरूरत । सोनरी के सामने प्रेमनाथ खडा हो गया और बोला क्यों भागवान बेसन पीसना इतना जरूरी तो था नही ।
सोनरी-कौन पीसेगा। त्यौहार का दिन हैं । बेटवा कितनी भागा दौडी कर रहा हैं । बेचारा पुताई किया है घर की इसी त्यौहार के लिये ना । थोडा पकौडा ,दाल पूडी और गुड चावल की बखीर बना देती हूं । दाल तो रख दी हूं चूल्हेपर । राजू को बहुत पसन्द हैं तुमको भी तो ।
प्रेमनाथ-पसन्द ना पसन्द का इतना ख्याल । कोई जरूरी तो था नही ये सब करना अपनी सेहत का ख्याल रखों ।
सोनरी-ठीक हैं अपना भी ख्याल रखूंगी और अब तुम्हारा भी ।ं अब तो खुश । अच्छा काम कर लेने दो ।दीया बाती निकालने का वक्त हो रहा है ।
सोनरी दीवाली की रात स्नान आदि करके दीया बाती की पूजा पाठ की ।घर बाहर हल चौखट ,कुआ, कुदाल, फावडा ,हौदी,पेड पौधे,तुलसी हर जगह दीया जलाकर रखी । राजू से बोली बेटा खाना खाकर ाढाई कर लेना । आज पढने वाले बच्चों को जरूर पढाई करना चाहिये । इससे ज्ञान की देवी बहुत खुश होती हैं । बच्चा पढाई में आगे निकलता हैं । आज कलम किताब ज्ञान की देवी की भी पूजा की जाती हैं । पढने लिखने वाले

बारह बजे के बाद पूजा पाठ कर पढाई करते हैं ।राजू पूजा अर्चना करके पढाई जरूर करना ।इतने में प्रेमनाथ भाला निकाल लाया बोला आज हथियार की भी तो पूजा होती हैेंं । राजू कलम की पूजा करेगा मैं हथियार की।

सोनरी-धन की देवी की पूजा हमे करनी हैं यह भी याद हैं ।

प्रेमनाथ -हां यह तो सबसे जरूरी हैं आज के दिन ।

सोनरी पूजा की ही तैयारी कर रही हूं ।आओ सभी धन की देवी की पूजा आरती कर लेते हैं । अपने पास तो सोेने चांदी के सिक्के हैं नही। एक हंसुली मजबूत थी वह भी सेठ की तिजोरी में कैद हैं ।

॥ इक्कतीस॥

शामू की मौत के दुख पर दीवाली के पटाखों की गूंज प्रेमनाथ के परिवार पर कोई रौनक के निशान नही छोड पायी ।दीवाली की मिठाई भी आयी पर मिठास का दूर दूर तक कोई नामोनिशान न था । प्रेमनाथ का परिवार विपत्ति की आंधी स जण् रहा था। बचेनी के शूल चैन ही नही लेने दे रहे थे । इसी बीच एक दिन सुबह सुबह कल्शु बाबू की मां ने एक कम्हारिन दादी के माध्यम से प्रेमनाथ के घर एक नई देनदारी का तगादा भेजवा दिया ।

कम्हारिन- प्रेमनाथ के दरवाजे पर खडी होकर प्रेमनाथ भइया प्रेमनाथ की गुहार लगाने लगी ।

सोनरी-कौन हैं । क्यो गुहार लगा रहे हैं ।

कम्हारिन-अरे मैं हूं कम्हरिन दादी ।

सोनरी-आओ दादी बैठो । क्यो बाहर से बुला रही है ।

कम्हारिन-प्रेमनाथ कहां है।

सोनरी-दादी वो तो काम पर गये हैं । घर काटने को जैसे दौड रहा है । बाहर थोडा मन बहल जाता है । काम पर गये हैं । वैसे भी मजूदरों का बैठना काफी मुिश्कल भरा काम हैं । घर में बैठ गये तो खायेगे क्या। चाहे कितना बडा दुख क्यो नही हो मालिक लोगो को तो काम से मतलब हैं ।काम करो तो सेर भर मिलेगा । नही तो भूखो मरने की नौबत ।

कम्हारिन-ठीक कह रही है तू सोनरी। यही मालिक -मजदूर,ऊच-नीच और अमीर-गरीब का भेद तो तरक्की के रास्ते का कांटा हैं ।बेचारा गरीब मजदूर हाड फोडकर भी पेट भर रोटी नही पा रहा हैं चैन से । मालिको की देखो अराम से घर में बैठे हैं और सोने की डाल मजदूरो से कटवा कर खुद मौज कर रहे हैं । बेचारे मजदूर के पेट में ना तो रोटी हैं ना ही तन पर कपडा । सोनरी यही तो रोना है ।गरीबो का कौन सुनेगा।अभी तक तो कोई नही सुना हैं।सब खून चूस कर ही बढे हैं ।

सोनरी-दादी ठीक कह रही हैं।गरीबो का कोई सहारा नही होता सब उत्पीडन करने को लालयित रहते हैं । चाहे छोटा आसामी हो या बडा । खैर छोडो दादी आप तो ये बताओ कि राजू के बापू को क्यों खोज रही हैं कोई काम हैं उनसे ।
कम्हारिन-सोनरी मुझे तो कोई काम नही हैं कलशु बाबू की मां ने बुलाया हैं प्रेमनाथ को । मरने वाली हैं ना वो बूढियां । कोई भरोसा नही कब मर जाये कब्र में तोपैर लटकाये साल भर से बैठी हैं पर पापी प्राण है कि निकलने का नाम ही नही ले रहा हैं । अब ज्यादा दिन तक नही चलने वाली है कभी भी टपक सकती हैं ।
सोनरी- इसमें हम लोग क्या करेगे । मेरा बेटा ाामू भी तो मर गया असमय । जीवन मरन तो उपर वाले के हाथ मे हैं । हम लोग तो ब्रहमा के रिश्तेदार तो नही है कि बूिढया को जीवन का वरदान दिलवा देगे । अरे मेरा बेटा तो साल भर का ही बिछुड गया सदा के लिये ।वे तो सौ साल के उपर की हैं । सब कुछ तो देख सुन ली हैं । धनाढय परिवार है कोइ्र कमी तो नही हैं । राजू के बापू के हाथ का पानी भी तो नही पीयेगी के मरते वक्त गंगाजल की दो बूंद उनके मुंह में डाल में टपका देगे। अपने लोगो के छू जाने भर से वे नरक को जा सकती है । जिन्दगी भर तो परछाई से भी परहेज किया मरते वक्त इतना लाड । कोई रहस्य जरूर होगा इस बुलावे में ।दादी मुझे तो डर लगने लगा हैं बुलावा का ही सुनकर ।क्यों बुलावा भेजवायी हैं मरते वक्त ।
कम्हारिन-सोनरी मुझे तो पता नही हैं ।हो सकता हैं कोइ्र पुराना हिसब किताब हो । चुकता करवाना चाहती हो मरने से पहले ।
सोनरी-दादी क्या कहा हिसाब किताब ।
कम्हारिन- हां सोनरी हिसाब किताब और क्या तुम्हारे हाथ का पानी पीकर स्वर्ग जाने के लिये । ये बडे लोग बडे खतनाक होते हैं । एकाध नया कभी का आकी बाकी रह गया होगा । कभी तगादा नही की   ाायद इसलिये कि एकाध पैसा सौ दौ सौ रूपया हो जाये । रूप्ाया हजारो में बढ जाये ।यही तो इन लोागो का खासियत होती हैं ताकि गरीब उनकी चौखट पर सिर पटकता रहे ।
सोनरी-ऐसा कौन सा लेनदेन बाकी रह गया हैं । हमे तो जरा भी याद नही है कि कभी उनसे कोई लेनदेन हुआ हो । यदि कुछ था तो पहले बताना था । पहले तो कभी बताया ही नही । आज कैसे याद आ गयी । सच दादी कोई चाल तो हैं ।
कम्हारिन-सोनरी देखो चिन्ता ना करो । जो होगा ठीक होगा । अभी तेरा बच्चा मरा हैं । मन ठौरीक रख । अब चिन्ता फिक्र ना कर जो तुम्हारे सामने हैं अब वही तुम्हारे हैं ।वो ाामू निर्मोही तुम्हारा नही था ।इतने दिन की सेवा करवाने आया था । निर्माेही सेवा करवा कर चला गया । देख कलशु की मां के बुलावा की भी चिन्ता ना करना अभी से वह तो उनसे मिलकर बातचीत करने पर ही पता चलेगा कि माजरा क्या हैं।ंप्रेमनाथ आये तो भेज देना । मैं जाती हूं । सोनरी फिक्र ना करो दुख उपर वाला दिया हैं तो एक

दिन सुख भी वही देगा । बेटे के गम को भुलाओ दिल से ना लगाकर रखा करो । मैं चलती हूं ।

सोनरी-ठीक हैं दादी । रात में आयेगे तो कह दूंगी मिल आयेगे । किसी मुश्किल का आगाज लगता है यह बुलावा ।ठीक हैं दादी आप आयी हैं तो चले जायेगे जो होगा सो होगा क्या करेगे । पानी में रह कर मगर से बैर भी तो नही हो सकतें । जाना तो पडेगा ही ।

कम्हारिन-ठीक हैं सोनरी भेज देना मैं जाकर बता देती हूं कि प्रेमनाथ काम पर गया हैं आते ही आ जायेगा ।

सोनरी-ठीक हैदादी चला।आप तो हमारे घर का पानी भी तो नही पीओगी क्या खातिरदारी करूं ।

कम्हारिन-हां चलती हूं । देखू बुढिया मरी तो नही । मर गयी तो तेरह दिन खोटी हो जायेगा ।

कम्हारिन दादी चली गया । कलशु की मां के बुलावे से सोनरी को घबराहट होने लगी। वह बार बार सोचती अरे मरते वक्त कलशु बाबू की मां कोई मुसीबत तो नही खडी करने वाली हैं । सोनरी का मन बार बार सोचता और वह भगवान से विनती भी करती । कहता भगवान अब कोइ्र नई मुसीबत मत देना । बहुत रोयी हूं अब तक । जरा चैन दो भगवान ।सोनरी का मन आशंकित था । अंधेरा धीरे धीरे पसर रहा था । सूरज भी बादलों में खो चुका था । लोगो के घरो में चूल्हे गरम होने शुरू हो गये थे । पक्षिया भी अपने अपने घोसले की ओर तीव्रगति से भाग रही थी ।प्रेमनाथ भी अंधेरा के पूरी तरह पसर जाने पर आ गया ।

सोनरी की बेचैनी से वह घबरा उठा और पूछ बैठा राजू की मां इतना घबरायी हुई क्यो हो।

सोनरी-मै तो कुछ बोली ही नही मेरी घबराहट का अन्दाजा कैसे लग गया ।

प्रेमनाथ- क्या बात है बतोगी की नही ।

सोनरी-पहले हुक्का पानी करो । मेरी घबराहट को छोडो ।

प्रेमनाथ-नही पहले बताओ ।

सोनरी-बैठो मैं हुक्का पानी लाती हूं ।

प्रेमनाथ-प्यास लगी नही हैं और अभी हुक्के की तलब भी नही है ।

सोनरी-रा ेज तो जर्बदस्ती हुक्का चढवाते थे आज तलब नही हैं । रूको मैं चढाकर लाती हूं ।

प्रेमनाथ-हुक्का गुडगुडाते हुए बोला अब तो बताओ ।

सोनरी-कलशु बाबू की मां का बुलावा आया है। सुना हैं मरने वाली हैं ।

प्रेमनाथ-मरना तो सबको एक दिन हैं । वे तो ढेर सारा धन दौलत भरा पूरा परिवार छोडकर मर रही हैं । उनके परिवार वालो को क्या तकलीफ । तकलीफ तो गरीबों को होती हैं । जिनकी रोटी का सहारा छिन जाता हैं ।
सोनरी-मेरी समझ में नही आ रहा है कि तुमको क्यो बुलवायी हैं ।
प्रेमनाथ-मुझे भी भय लग रहा हैं । कोई झूठमुठ की लेनदारी तो नही निकाल रही हैं ।
सोनरी-चलो मैं भी साथ चलती हूं ।
प्रेमनाथ-ठीक हैं चलना हैं तो चलो ।
सोनरी और प्रेमनाथ बच्चों को खिलाये खुद खाना खाये । जानवरो को हौदी से हटाकर अलग बांधी। इसके बाद सोने गये । प्रेमनाथ और सोनरी की आंखों से नींद भी दूरी बना ली आज और भी अधिक ।प्रेमनाथ को नींद नही आ रही थी। वह कुछ बेचैनी महसूस कर रहा था । वह सोनरी से बोला अरे राजू की मां सो गयी क्या ।
सोनरी-नही तो । नीदं कहा आ रही है ।
प्रेमनाथ वही हाल तो मेरा भी हो रहा हैं ।
सोनरी-सो जाओ दिन भर तो काम किये हो अराम कर लो सुबह चले चलेगे । कलशु बाबू के घर दूध का दूध पानी का पानी हो जायेगा । क्या बात हैं सब पता चल जायेगी । मन तो घबरा ही रहा हैं । किसी मुसीबत के भय से ।
सुबह सुबह सोनरी और प्रेमनाथ कलशु बाबू के दरवाजे पर पहुंच गये । प्रेमनाथ और सोनरी को देखकर कलशु बाबू बोले आ गये तुम लोग ।
प्रेमनाथ-हां बाबू दादी मां ने बुलाया है तो आना ही था ।
कलशु -ठीक किया ।मां की तबियत तो काफी दिनो से कुछ ज्यादा खराब हो रही हैं । उनके दिल पर एक भार हैं वह मरते मरते उतारना चाह रही हैं इसीलिये तुमको बुलवायी हैं ।
सोनरी और प्रेमनाथ बडी दादी मां ,जो बडी मालकिन भी थी ,से कुछ दूर बैठ गये ।
दादी मां-प्रेमनाथ से बोली तुम्हारी मां की एक अमानत मेरे पास सवाइ्र् पर गिरवी हैं उसे छुडा लेना ।तेरी मां की आत्मा को चैन मिल जायेगा । बेचारी की आत्मा अभी भी भटक रही होगी । बेटा प्रेमनाथ जल्दी करना ।मां बाप का कर्जा तो औलाद ही भरती हैं ।
प्रेमनाथ मन ही मन सोचने लगा मेरी मां को मरे तो कई बरस बित गये । दादी मां आज बता रही है कि मेरी मां ने कुछ गिरवी रखा हैं उनके पास वह भी सवाई पर । प्रेमनाथ पूछ बैठा क्या गिरवी रखा हैं मेरी मां ने दादी मां ।
दादी मां -फुले की थाली । कुछ कम करके अपनी मां की अमानत ले जाओ बेटा ।
सोनरी-हमे तो पता ही नही था ये सब ।
दादी मां-अब तो पता चल गया ।तुम्हारे परिवार की धरोहर मेरे पास गिरवी और सुरक्षित हैं । तुम्हारे लिये तो इस थाली की कीमत लाखों में हैं क्योंकि तुम्हारे पुरखों की

धराहर हैं । तुम हजार देकर ले जाओ । मैं भी बंधन मुक्त हो जाऊंगी। मुझे भी तो भगवान के पास जबाब देना होगा ।

सोनरी-दादी मां अपने पास तो कुछ भी नही हैं । हम हजार कहां से देंगे ।

दादीमां- बीस साल से उपर हो गया ।जोड लां सौ रूपये का ब्याज कितना बनता हैं । दो हजार से कही अधिक हो जायेगा। अरे छुडा ले जाओ वरना तेरे परिवार की अमानत डूब जायेगी ।

सोनरी आंखों से बहते आसूआं को पल्लू में पोछते हुए प्रेमनाथ से धीरे से बाली क्यों जी हमारी हंसुली के साथ तो ऐसा नही होगा ।

प्रेमनाथ-नही ।चलो यहां से कहते हुए कल्शु की हवेली से दिल पर एक और बोझ लेकर चल पडा अपने घर की ओर।

।।बत्तीस॥

प्रेमनाथ के उपर मुसीबत के बादल मडरा ही रहे थे । ामू की मौत का गम । घर में जो कुछ रकम थी वह भी गिरवी रख गयी थी । ये सब दुखदायी था प्रेमनाथ और सोनरी के लिये । इन्ही गमों में एक गम और ुमार हो गया दादी मां के पास रखी थाली की रकम वह भी हजारो में । जिसे चूकता कर पाना फिलहाल प्रेमनाथ के बूते की बात न थी । प्रेमनाथ और सोनरी मुसीबत से जूझ ही रहे थे कि इसी बीच भीखानाथ की लडकी के ब्याह का न्यौता आ गया ।

प्रेमनाथ-भीखा भइया अपनी सैतेनी बीटिया का ब्याह कर रहे हैं । न्यौता भी आया हैं ।

सोनरी-न्यौता तो आया हैं । लेकिन तुम सौतेली बीटिया क्यों कह रहे हो । हैं तो खून के रिश्ते से ही ना।

प्रेमनाथ-वह तो है ही । कलूटी भौजाई की बीटिया तो उसके पहले वाले पति की निशानी हैं । खैर इस बात का रंज नही हैं । अपनी भी बीटिया हैं । दुख तो इस बात का है कि कलूटी भौजाई आते ही इस घर परिवार को खण्ड खण्ड करके रख दी । रिश्ता तो नाममात्र का हैं । इस खून के रिश्ते को नकार भी नही सकते । धन दौलत जमीन जायदाद सब पर कब्जा कर लिये भीखा भइया ने । भाई होकर भाई के साथ इतना बडा धोखा । ब्याह में जाना तो होगा ही । नही जाने पर खानदान की नमूसी होगी । भीखा भइया को देखकर नही जाना हैं । लडकी को और खून के रिश्ते को देखकर जाना है ।

सोनरी-ऐसा क्यो कह रहे हो । हैं तो तुम्हारे सगे भाई ही ।

प्रेमनाथ -भाई तो ठीक हैं पर बेइर्मान कितना बडा हैं । भीख मांगने लायक बना दिया ।

सोनरी-देखो जी जो हुआ बहुत बुरा हुआ । सब कुछ वापस मिल तो सकता हैं पर अपने पास इतनी रकम तो नही है कि कोर्ट कचहरी करे । उनके पास पटठे भी तो हैं । वे भी जीने नही देगे । खैर गुण्डा बदमास भी तो भेजे । कहां कुछ छोडे ।छोडो वे सब बाते। आगे की सोचो ।

प्रेमनाथ-कुछ दिन मुकदमा भी तो चला पर कुछ हला भला होता हम आर्थिक तंगी से हार गये उपर से ेे भीखा के गुण्डे भी तो जान के पीछे पडे थे । सब छोड दिये । दीनानाथ ाइया की जान तो भीखा और उनके गुण्डो ने ही तो लिया था । हमें भी मार डालते किसी को पता ही नही चलता । जब सब हडप लिया तो भैयप्पन जोडने के उतावले होने लगे हैं ।

सोनरी-देखो लडकी का ब्याह हैं चले जाना । विदाई होते ही चले आना । बाकी सब भगवान के भरोसे छोडो मुंह दिया हैं तो आहार भी देगा ।

प्रेमनाथ -बस भगवान की कृपा हो जाये । ना जाने कब भगवान मुसीबतो से पीछा छुडवायेगा ।

सोनरी-ठीक कह रहे हो हाडफोड मेहनत के बाद भी अपने दिन नही फिर रहे हैं । उपर से कोई ना कोई मुसीबत आ टपकती हैं। ना जाने किस जन्म के अपने करम बिगडे है कि इस जन्म में भोग रहे हैं ।

प्रेमनाथ -मेहनत की कुछ फल भी मिला हैं । ये भैसे बैल जो बंधे हैं अपनी मेहनत की बरक्कत ही तो हैं । मेहनत मजदूरी से नमक रोटी तो मिल ही जा रही है । हां दो चार बीसा अपने पास भी जमीन होती तोे भूमिहीन तो नही कहे जाते । कहते हैं अपने बाप दादा के पास भी बहुत जमीन थी पर ाोषको ने हडप लिये । अपनी हुकुमत के बल पर जर्बदस्ती अगूंठा लगवाकर भूमि मालिक से भाूमिहीन बना दिये । आज रोटी रोजी के लिये संघर्ष कर रहे हैं ।

सोनरी-वैसे ही जैसे बडी मालकिन एक थाली के बदले हजारो मांग रही हैं ।ऐसे ही पुराने जमाने में हमारी जागीरे शोषको ने हडप लिया और हमें भूमिहीन बना दिये ।

प्रेमनाथ -हां ऐसे ही ठगो ने हमारी जमीन जायदाद पर कब्जा कर लिया ।जैस अंग्रज अपने देश में छोटा मोटा व्यपार करने आये थे ।धीर धीरे करके देश को ही गुला बना दिया । यही हाल हमारे पुरखों के साथ भी हुआ है शोषको हम आज उनके खेतो में मजूदरी कर रहे है जो खेत कभी हमारे थे । क्या नसीब है अपनी ।

सोनरी-पुरानी बाते छोडो जेठ जी के लडकी के ब्याह में जाना है कि नही।

प्रेमनाथ -तू कह रही है तो जाना ही पडेगा । वहां जाना खतरे से खाली भी तो नही लगता ।जब अपने सगे नही हो रहे हैं तो पराये क्या होगे ।वहां सभी तो पराये ही होगे । अपने गांवपुर का तो कोई होगा नही । इसी बात का डर हैं ।

सोनरी-तुम्हारे भइया तो सचमुच हैं बेइमान है । अब हमें उनके मुंह पर थूकना होगा उनकी बेटी के ब्याह में जाकर । हमे ब्याह में देखकर लाज से तो मर ही जायेगे तुम्हारे भाई साहेब । कन्यादान तो देना ही चाहिये । लोग दूसरों की बेटी का कन्यादान करते हैं। यहा तो तुम्हारे भाई की बेटी का ब्याह हैं। भले ही तुम्हारी कलूटी भौजाई अपने पहले पति की निशानी लेकर आयी हैं । अब तो वह इसी खानदान की हो गयी हैं ।

प्रेमनाथ -हां वह तो हो ही गयी । ब्याह में खाली हाथ जाना भी तो ठीक नही हैं ।

सोनरी-क्या हंसुली गढवाने का मन हो रहा हैं । अपनी हंसुली तो साहूकार की तिजोरी में कैद हैं । वह छूट ही नही पा रही हैं । अरे पांच दस देकर कन्यादान कर देना और क्या करना हैं। हम तो खानदान के होने के नाते मर रहे हैं वरना उनके दरवाजे पर पेसाब करने लायक नही है ।

प्रेमनाथ चलो तुम्हारी बात तो मानना ही पडेगा । खानदान का खून जो इतना जोर मार रहा हैं नही तो तुम ही कहोगी कि क्या खून के रिश्ते को ठुकरा दिये । बेटी के ब्याह में नही गये वह भी भाई की । उन्होने तो गलती किया ही हम क्यों करे । उनकी गलती की वजह से ही तो दुनिया उन्हे बेईमान कह रही हैें ।

साेनरी जेठ की सौतेली बेटी के ब्याह की तैयारी में जुट गयी । अपने गम को भूलकर । दाल, चावल, आटा, आलू प्याज कपडा लता जो हो सका रीन कर्ज करके । इज्जत का सवाल जो था ।बेटी के लिये एक चांदी का मीना भी ले ली सोनरी । चांदी की हंसुली बनवाने की औकात तो थी नही पर उसे पछतावा था कि बीटिया को हंसुली नही बनवा पायीे । सोनरी भी प्रेमनाथ के साथ न्यौते में गयी ।बरात आने वाली थी औरते श्रृंगार पटार में व्यस्त थी । बेचारी सोनरी मुसीबत की मारी एक कोने में बैठी थी ।

औरते बोली बोलकर गहने पहन रही थी कोई कहती अरे हंसुली भारी हो गयी तो कोई कहती चन्द्रहार का वजन ज्यादा लगने लगा । कोई कहती हंलुसली गले में अब कसने लगी है । गहनों की तारीफ सुनकर सोनरी की पलके गीली होने लगी । इतने भी भीखानाथ की घरवाली कलूटी आ गयी और बोली क्यों रे सोनरी ऐसे ही रोनी सूरत बनाकर बैठना था तो आयी ही क्यों । यही बैठी रहोगी क्या ।

सोनरी-बहिन बताओ क्या करना हैं ।

कलूटी -तू क्या करेगी । तू तो न्यौतहरी हैं आराम कर ।

सोनरी-क्यो नही कर सकती काम तो बताओ ।

कलूटी -बरात दरवाज पर लगने वाली हैं।तू है कि मुंह गिराये बैठी हैं। अरे जरा बन संवर जाती ।

सोनरी-मैें तैयार हूं बहिन ।

कलूटी -क्या रूप बना रखी हो । ऐनक देखी हो क्या ।दूसरी अच्छी साडी पहन लो । गर्दन खाली क्यों हैं । हंसुली तो पहन लेती । किस दिन रात के लिये गहने होते हैं । यही हमारी इज्जत बढा रही हो । अरे और भी तो दूसरी औरते आयी हैं नातेदारी से । सब गहने से लदी हैं । तू तो गुमसुम बैठी हो जैसे हंसुली भी बेचकर खा गयी हो । अरे हंसुली पहने ले यहां चोर नही है कि चोरी चली जायेगी तेरी हंसुली दो किलो की ।

सोनरी-बहिन वो बात नही हैं ।

कलूटी- फिर क्या बात हैं ।

सोनरी-हंसुली नही हैं ।

कलूटी-क्या कह रही हैं तूं । हुंसली नही हैं मेरे पास । चोरी चली गयी । या बेचकर खा गयी ।

सोनरी-नही बहिन शामू की बीमारी में गिरवी रख दी थी । छुडा नही पायी । मुसीबत के दिन कट ही नही रहे हैं । कोई ना कोई मुसीबत माथे आ ही जाती हैं ।

कलूटी अब नही छूट पायेगी तेरी हंसुली । कहती हुई हवा के वेग के समान कलूटी चली गयी और सोनरी आंखों में आंसू बसाये कलूटी को निहाररती रह गयी ।

॥ तैतीस॥

सोनरी भीखानाथ के बेटी के ब्याह में तो हंसी खुशी गयी थी लेकिन लौटी दिल पर एक घाव लेकर चांदी की हंसुली बेच खाने की ।खैर मजबूरों को सभी परेशान करते हैं । लेकिन यहां तो उसकी सगी जेठानी ने इल्जाम मढ दिया था जबकि सोनरी हंसुली बेटवा के इलाज के लिये गिरवी रखी थ । बेटा शामू भी नही बचा और हंसुली भी गिरवी पड गयी । सोनरी राजू को स्कूल का काम पूरा करने को कह रही थी तभी प्रेमनाथ आ गया वह सोनरी से बोला राजू की मां कल सबेरे कस्बे जाना हैं मालिक के काम से । तुम दो रोटी जल्दी बना देना खाकर चला जाऊंगा । घर से खाकर नही जाऊंगा तो दिन भर पुटपुटाना पड़ेगा । घर के खाने का कोई मुकाबला नही हैं भले ही नमक रोटी हो । यह भी तो कहते हैं कि घर से खाकर जाओ तो बाहर भी मिलता हैं ।

सोनरी- मुझे भी मालूम है शहर में रोटी मंहगी मिलती हैं । तुम तो घर से खाकर जाना और दो रोटी लेते भी जाना दोपहर में खा लेना । दूर का रास्ता हैं सबेरे जाओगे तो रात तक वापस आओगे । मैं जल्दी उठकर रोटी बना दूंगी । तुम थोडा चारा काट लो । मुझसे मशीन खींचती नही हैं । घाव अभी पूरी तरह ठीक नही हुआ है । साडी से अचानक रगड जाने पर कभी कभी तो जान निकल जाती हैं । तुम चारा काट दोगे तो बच्चों को भी जरा सहूलियत हो जायेगी ।

प्रेमनाथ-ठीक है चारा काट दूंगा । मैं रोटी बांधकर नही ले जाऊंगा । अरे वहां कहां खाऊंगा । घर से ही खा कर जाऊंगा ।शाम तक नही तो रात तक तो आ ही जाऊंगा । लेकर तो नही जाऊंगा रोटी खाकर ही जाऊंगा शहर वाले गंवार समझते है वसे ही हम गांव वालों को ।मुझे पड की छांव में रोटी खाता देखकर तो जाक उडान लगेगे। वे लोग गांव की रोटी का क्या स्वाद जाने । उन्हे तो बासी-कुसी सडक पर ही खडा होकर खाने में मजा आता हैं । इसी में वे अपनी तरक्की समझते हैं । हम गांव वाले बासी-कुसी खाते नही चाहे भूखे ही क्यो ना रह जाये ।

सोनरी-दो रोटी लेकर जाना । दोपहर में खा लेने कही छोटी मोटी होटल में ही बैठकर । दो रूपये की ताजी सब्जी ले लेना वही होटल से ।

प्रेमनाथ -होटल का खाना नही खाऊंगा चाहे सब्जी हो या कुछ और ना जाने कब का रहता हैं । बस गरम करके देते रहते हैं । कोई खाने लायक नही रहता हम गांव वालों के लिये । हां शाहरी बाबू लोग ही चाव से खाते है । हम तो अपने घर से नमक रोटी ही

खाकर जायेगे ।देर सबेर आकर घर का ही खाना खायेगे तुम्हारे हाथ का बना हुआ ।ठीक है अब कुछ ना कहना ।

सोनरी-जैसा तुम्हे ठीक लगेगे वैसा ही करना । मैं क्या कर सकती हूं ।

प्रेमनाथ - शहर चला गया मालिक के काम से । सोनरी गोरू चौवा के काम में लग गयी । वह ऐसे काम में उलझी की उसे पता ही नही चला कब दिन बित गया । अंधेरा घिरने लगा था । दिन को अंधेर की चादर में ढंकने लगा था । प्रेमनाथ का की अता पता न था । सोनरी डयोढी के पास बैठी प्रेमनाथ की बाट जोह रही थी । सोनरी को बेचैन देखकर समकली ठिठक पूछ बैठी अरे बहन सोनरी क्यो उदास हो।खुश रहा करो जो भगवान को मंजूर था हो गया । कब तक दिल पर बोझ लिये बैठी रहोगी । बहन इस तरह बैठे रहने से जीवन नही चलेगा । गृहस्ती में मन लगाओ । ाामू को भूला दो । वह अपना नही था । अपना होता तो मरता ही क्यो निर्मोही ।

सोनरी-हां बहन भूलाने की ही तो कोिशश कर रही हूं ।अभी राजू के बाबू आये नही उन्ही की इन्तजार कर रही हूं । ना जान क्यों डर लगा रहा है ।

समकली-प्रेमनाथ कही गये है क्या ।

सोनरी-मालिक के काम से ाहर गये हैं । क्या करूं दिन कटता ही नही हैं ।बहन किस्मत में ही दुख भगवान ने लिख दिया है तो सुख कहां से मिलेगा । गरीबों की जिन्दगी तो तिल तिल कर मरने के लिये ही होती हैं ।

समकली-ऐसा क्यो कहती हो ।

सोनरी-क्या कहूं बहन तुम तो देख ही रही हो दुख है कि साथ छोड ही नही रहा है । बेटवा बिछुड गया सदा के लि। उसको पैदा करने के लिये डाक्टरो ने पेट भी फाड डाला ।अभी तक वो घाव सूखा ही नही । तन्दुरूस्ती सलामत रहती तो मेहनत मजदूरी करके राजू के बापू का कुछ सहारा ही बनती । अकेले आदमी क्या क्या करे । तुम तो जानती ही हो मालिक लोग काम भरपूर लेते हैं । मजदूर पूरी नही देते । मजदूरी में अनाज मिलता हैं उसमें भी सडा गला मिला देतेे हैं । ना जाने कब हम गरीबो के दुख के दिन बितेगे ।ना जाने कब तक गरीबो की किस्मतां पर ये अमीर लोग नाग की भांति बैठे फुफकारते रहेगें ।गरीबो की आसंओ पर इन अमीरां का रोशन जहां होता रहेगा ।हम गरीब अपनी कैद जिन्दगी को आशा के रंग से रंगने की कोशिश करते हैं और रोटी कपडा के लिये तरसते रहते है ।गौना ब्याह का चलन ना होता तो ये छोटे मोटे गहन भी नसीब ना होेते ।जरूरत पडन पर गहने भी गिरवी पड जाते हें कभी कभी तो साहूकारों की कैद से ये गहने बाहर ही नही निकल पाते हैं ।हर ताकतवर हग गरीबों के ही खून का प्यासा होता हैं ।

समकली-हां सोनरी ठीक कह रही हैं । सच गौने ब्याह का चलन ना होता तो गरीबों की औरो को गहनों के दीदार ही ना होते । भला हो हारे पुरखों की आत्मओा का जिन्होने गहने को आस्था से जोड दिया ।परम्परा से जोड दिया ।बहन ना दुखी हो । तेरी इतनी

बुरी किस्मत तो नही हैं । दुख तकलीफ तो आते जाते रहते है ।बहन हर दुख के बाद सुख आता हैं । जैसे रात के बाद दिन । अरे हमारी किस्मत देखो एक जना हैं उनको बस गांजा पीने को चाहिये । घर में रोटी नही है उसकी चिन्ता नही पर गांजा नही हो तो जीना मुश्किल कर देते हैं ।बेटवा है सबके सब नालायक । कमाई अठनी खर्चा रूपइया । क्या करूं हंसू की रोऊं । बहन तुम्हारा आदमी ठीक हैं बच्चे ठीक है क्या यह किसी सुख स कम हैं । अरे जीवन मरन तो आदमी के हाथ में नही हैं । जो आदमी कर सकता हैं वही नही कर रहा हैं । ना जाने इन मरदों को कहां से लत गाजे दारू की पकडती जा रही हैं पूरी बस्ती के लोग नशे के पीछे भाग रहे है । ना बच्चों के स्कूल जाने की चिन्ता । ना रोटी की चिन्ता दिन भर मालिको के खेत में काम करते हैं शाम को उडा देते हैं दिन भर की कमाई गांजा दारू में ।कभी रूपये की जरूर पडी तो तन से गहना उतरवाकर साहूकारों के यहां गिरवी रख आते हैं । इस गहने के गिरवी रखने पर जो पैसा मिलता हैं पहले ठीके पर परसाद चढाते हैं।

सोनरी-हां बहन ये तो आदमी लोगो का ौक हैं ।नशापती के लिये घरवाली का गहना तक कुछ लोग गिरवी रख देते हैं। बेंच देते हैं । बेचारी औरतों को मारे ठोकते हैं । न देने पर बेचारी घरवाली का जीवन नरक हो जाता है ।दारू तो बर्बादी लाता हैं पर न ोडी सुनते समझे कहा हैं । उपर से कहते हैं तुमको क्या पता नशा कितनी ताकत देती हैं । न ो में विपति का आभास नही होता हाथी भी छोटी नजर आने लगती है । भले ही न ोेडी लोग मैले की ढेर पर मुंह रगते रहे पर आता हैं आनन्द । वाह रे दारू । आदमी अपना दे के आदमी बौराता हैं इसके बाद भी अच्छाई ढूढता हैं । ऐसा ौक किस काम का जिससे बाल बच्चे के लालन पालन में अवरोध खडा हो । बच्चों की रोटी छिन जाये । लेकिन दरोडियों को यही भाता है । गांव की पूरी औरतों को संगठित होकर नशा के खिलाफ आवाज बुलन्द करनी चाहिये । जरूर पडने पर इन मरदांे की खबर झाडू मूसर बेलन से लेने ें जरा भी संकोच नहीं करनी चाहिये । तभी उनका सकून बचेगा और गहना हंसुली भी ।

ामकली-हां सोनरी तु बिल्कुल ठीक कह रही है ।अपनी किस्मत तो फूट गयी हैं । गजेडी नशेडी के पाले पडकर ।खैर सोनरी बहन यह तो रोज का रोना हैं । तू अपनी उदासी का कारण बता क्यों हैरान लग रही है ।

सोनरी-बहन राजू के बापू शहर गये हैं । अभी तक लौटकर आये नही । सबेरे के गये हैं ।पक्षी भी अपने अपने घोसले को लौट चुके हैं । उनका कही अता पता ही नही हैं कब तक आयेगे । बोल के तो गये हैं देर रात तक आने का पर देखो अभी तक नही आये । ना जाने क्या बात हो गयी । कोई साधन हो सकता हैं न मिला हो ।यहां तो आने जाने के साधन भी तो नही हैं । जो हैं भी भूसा जैसे भर लेते हैं तो चलते हैं । चलने को कहो तो लडाई करने को तैयार हो जाते हैं । इधर जो छोटी मोटी मोटरे चल रही हैं सब दादा किस्म के लोग चला रहे हैं । किराया भी मनचाहा लेते हैं । भूसा जैसे सवारी भी भरते हैं

। कभी कभी तो सवारियों के साथ मारपीट तक भी कर जाते हैं ।जर्बदस्ती पैसा भी छिनने लगते हैं । इसीलिये डर लग रहा हैं बहन ना जाने अभी तक क्यो नही आये ।

ामकली-सोनरी बहन आ जायेगे राजू के बापू । चिन्ता ना करो वे भी जल्दी जल्दी में ही होगे पर साधन नही मिल रहा होगा । बेचारे खुद हैरान हो रहे होगे । तुम खाना बना लो । आते ही होगे । उन्हे भी जरा भी चैन नही होगा । सोनरी चिन्ता ना कर आते ही होगे । तुम्हारे बिना तो उनको भी चैन नही मिल रहा होगा ।

सोनरी-बहन क्यों मजाक कर रही हो ।

समकली-तनिक भर की बात से मन विहस जाये तो कितनी अच्छी बात है । चलो तुम भी अपना काम निपटाओ । राजू के बापू आते ही खाना मांगेगे दिन भर के भूखे होगे ।कहते हुये समकली अपने घर चली गयी ।

सोनरी डयोढी छोडकर चूल्हे में मूडी गाड. दी ।अंधेरा खूब घिर गया समाने वाला व्यक्ति ही पहचान में नही आ रहा था ।इतने में दरवाजे पर दस्तक हुई ।

सोनरी-राजू के बापू आ गये क्या ।अरे बोलते क्यो नही ।कोई जबाब नही मिला ।सोनरी इधर उधर देखी कोई नही दिखाई पडा । हां दरवाजे पर दो कुत्ते जरूर बैठे थे।कुत्ते भी झटके से उठे और भौकते हुए चले गये ।सोनरी अपने काम में लग गयी ।कुछ देर में फिर आने की आहट हुई ।

सोनरी चूल्हे के पास से ही बोली अरे फिर आ गये । अभी रोटी ही नही बनी । बैठो रोटी बन जायेगी तो दे दूंगी ।

प्रेमनाथ-अरे राजू की मां मैं हूं । तू रोटी दे रही हो । चलो हमे भी दे दो। बहुत जोर की भूख लगी हैं ।

सोनरी-राजू के बापू तुम ।

प्रेमनाथ--हां मैं ।

सोनरी-तुम्हारी बाट जोह जोह कर थक गयी । कहां इतनी देर लगा दिये ।

प्रेमनाथ-- ाहर गया था भागवान पांच घण्टे तो आने जाने में ही लगते हैं । बस से उतरने के बाद ईक्के की सवारी रात के वक्त आधा घण्टे का रास्ता पूरे एक घण्टा में तय हआ ।सडक की हाल कितनी खराब हैं गढडे गढडे ही तो हैं पूरी सडक मेंं ।सडक भी तो कच्ची है ।शहर की क्या सडके हैं । सरसों छिट कर बिन लो । गांव का तो उध्दार ही नही हो पा रहा हैं और ना ही हम गरीबो को ही । बहुत जल्दी जल्दी किया तब जाकर अब पहुंच पाया हूं ।

सोनरी बोली चलो अंगना में खटिया पर बैठो । थाली में पानी भर लाती हूं । पैर धो देती हूं थकाई मिट जायेगी ।

प्रेमनाथ-धीरे धीरे मुस्करा रहा था ।

प्रेमनाथ की मुस्कराहट देखकर सोनरी बोली क्यों जी बहुत खुश लग रहे हो । आज कोई दूसरा पुतला देख आये सोने की हंसुली से सजा हुआ ।या पुतले जैसी कोई नारी गले में किलो भर की हंसुली और छनछन पैजनिया बजाने वाली ।

प्रेमनाथ-क्यों रंग में भंग डाल रही हो । तुम भी मुस्करा जाओगी ।

सोनरी-क्या पुतला भी साथ लाये हो ।

प्रेमनाथ-नही और कुछ ।

ेोानरी-क्या लाये हो बताओ तो सही ।

प्रेमनाथ- छोटा सा तोहफा हैं ।

सोनरी-अरे वाह तुम तो तोहफा भी लाने लगे ।बताओ क्या लाये हो ।

प्रेमनाथ-गहना ।

सोनरी-क्या । गहना ।

प्रेमनाथ-लो थैला ।खोलकर देख लो ।

सोनरी-तुम ही दिखाओ ना ।

प्रेमनाथ -दिखाओ क्या । लाओ पहना दूं ।

सोनरी-तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे चन्द्रहार ले आये हो ।

प्रेमनाथ-भागवान चन्द्रहार भी इसके सामने नही लगता ।

सोनरी-ऐसा कौन सा गहना लाये हो जिसके सामने चन्द्रहार भी फीका पड रहा है ।

प्रेमनाथ-आओ पहना ही देता हूं कहकर थैले में ब्यह की निशानी आस्था की प्रतीक हंसुली निकाला और सोनरी को पहना दिया ।अपने ब्याह की चांदी की हंसुली जो गिरवी रखी गयी थी, पाकर सोनरी गुलाब की कली की भांति खिल उठी । ।

सोनरी-सच अपने बालपन के ब्याह की आस्था का पत्रीक यही हंसुली तो हैं। कभी कभी इसे भी साहूकार की कैद का सफर तक कर पड जाता है। इसके आगे तो कोई भी गहना कहा टिकेगा ।

प्रेमनाथ-चलो आज इसी बहाने जरा सी हंसी तो आयी।

सोनरी-इतना पैसा आया कहां से ।

प्रेमनाथ-भागवान कोई चोरी नही किया हूं । एक एक पैसा दांत से पकड कर रखता रहा । तब जाकर वापस ला पाया हूं। यह अपने ब्याह की इकलौती धरोहर चांदी की हंसुली । सोनरी काका के बेटे के ब्याह की बात । कलूटी के बीटिया की बात सब मुझे मालूम हो गयी थी ।

सोनरी-हमने तो तुमको कुछ बताया ही नही तो मालूम कैसे हो गयी ।

प्रेमनाथ-दीवारों के कान हो सकते हैं तो ।क्या मुझे मालूम नही पड सकती कोई बात । खैर ये सब बाते तो घाव पर नमक डालने वाली थी । मुझे भी बहुत तकलीफ हुईर् थी सुनकर । तभी से हमने प्रण कर लिया था कि हंसुली छुडा कर ही दम लूंगा ।

सोनरी-तुम वो सब बाते दिल से लगा लिये ।

प्रेमनाथ-हां तभी तो आज तुम्हारे चेहरे पर मुस्कराहट आयी है ।

सोनरी की आंखों से आंसू छलक पडे ।

प्रेमनाथ-ना बहुत आंसू बहे हैं । अब ना.........

सोनरी-गरीब की हंसी तो बीमार की हंसी के बरोबर ही होती हैं ।

प्रेमनाथ-अरे नही रे ।हमारे ही हिस्से दुनिया भर के गम लिखे हैं । चलो उठो देखो क्या चंादनी रात अपने शबाब पर है ।

सोनरी-मैं क्या करूं ।

प्रेमनाथ-माथे से साडी नीचे करके खडी हो जाओ । मैं चांदनी रात के उजाले में देखता हूं कैसी लग रही हैं हमारी घरवाली के गले में बचपन के ब्याह की निशानी आस्था परपरा की प्रतीक चांदी की हंसुली ।

प्रेमनाथ की शहद सी बाते सुनकर सोनरी खिलखिला पडी ।

॥च।ैतीस॥

सोनरी -राजू के बापू कल से नककटनी मेरी हंसुली देखकर ना जाने गाली क्यो दे रही हैं चोरनी चोरनी कहकर । बात मेरी समझ में ही नही आ रही हैं कि वह मुझेे गाली दे रही हैै या किसी और को । लेकिन वह जब भी मुझे देखती है गाली देने लगती है ।

प्रेमनाथ--राजू की मां उससे बात करना बर्रो के खोतने में हाथ डालना हैं । गाली देती हैं तो देने दो अपना काम करो तुम ।उसके मुंह लगना अपनी इज्जत खराब करना हैं । छोडो उसकी बात ही मत करो । पानी पी पीकर गाली देती रहे अपना क्या जाता हैं ।

सोनरी-मुझे ांका हो रही है ।

प्रेमनाथ--वह क्यों। शंका कुशंका की तो कोई बात ही नही हैं ।

सोनरी-ऐसा तो नही कि नककटनी की हंसुली चोरी चली गयी हो ।

प्रेमनाथ--चोरी होती तो पूरा गांव अब तक जान गया होता ।

सोनरी-कोई ना कोई बात तो जरूर है । वह बार बार मुझे ही क्यो घुरघुर कर देखती रहती है ।

प्रेमनाथ--छोडो उसकी बात । बिना किसी कारण के झगडा कर बैठेगी ।

सोनरी-कैसी बात कर रहे हो । पूछने में क्या जाता हैं । किसी तकलीफ में तो नही हैं । पता तो लगाना चाहिये ।

प्रेमनाथ--सोच रही हो अच्छा पर बुराई हाथ लगेगी । देख लेना ।

सोनरी नककटनी की रोज रोज की गाली सुनकर एक दिन हिम्मत करके नककटनी के घर गयी। नककटनी सोनरी को देखकर मुंह फेर ली पर उसकी गाली बन्द नही हुई ।

सोनरी-क्यों क्या हो गया हैं आजकल तुमको नककटनी । जब देखो तब गाली देती रहती हो । किसी से झगडा तो नही हो गया । क्यो इतनी हैरान हो । कौन सी ऐसी बात हो गयी । ।

नककटनी-अच्छा चोरनी को गाली कलेजे में छेद कर रही हैं अब ।तभी दौडकर आयी हैं हाल पूछने और कभी तो आयी नही ।
सोनरी-क्या कह रही हो नककटनी मैं और चोरनी ।
नककटनी-हां तुम चोरनी नही तो और क्या हो ।
सोनरी को काटो तो खून नही ।वह जहर का घूंट पीकर बोली तू अच्छा नही कर रही हैं ।
नककटनी- अब क्या कर लोगी हंसुली तो चुरा ही ले गयी ।
सोनरी-तुम्हारी हंसुली मैं ने चुरा ली ।भगवान को डरा कर ।
नककटनी-मेरी हंसुली चुराकर हंसुली वाली बनी है ।
सोनरी-मेरे गले में मेरे बचपन के ब्याह की आस्था हैैं । तेरी हंसुली मेरे गले में कैसे आ गयी ।
नककटनी-पहले कहां गयी थी ये आस्था ।
सोनरी-गिरवी रखी थी बेटवा ाामू की बीमारी के वक्त ।
नककटनी-अच्छा बडी चालाक हो गयी हैं । मेरी हंसुली बेंचकर अपनी गिरवी वाली हंसुली छुडवायी हैं । मुझे ही समझा रही हैं । उल्टा चोर कोतवाल को डांटे ।
सोनरी-तेरी हंसुली चोरी हो गयी ।
नककटनी-मेरी हंसुली चोरी गयी हैं तब ना तेरी आयी है ।
सोनरी-कुछ तो लोक लाज किया कर नककटनी ।भगवान से डरा कर । मुझे चोरनी कह रही है ।
नककटनी-चोरनी को और क्या कहूं । सबूत तुम खुद ही लेकर आयी हो ।
सोनरी-देखो नककटनी तुम मेरी छोटी बहन के समान हो । क्यों मेरी इज्जत लेने पर तूली हो । क्यो मेरे उपर इल्जाम मढ रही हो । कब तुम्हारे घर डकैती पडी थी । हमे तो मालूम ही नही । तुम मुझे इतने दिन से गाली देती रही । अरे उपर वाले से डर । क्यों बेकसूर के माथे कलंक थोप रही हो ।
नककटनी-तुमको दलीले भी खूब देने आती है रे चोरनी ।
सोनरी-देख नककटनी बहुत हो गया अब अपनी जबान पर लगाम दे ।
नककटनी सोनरी की बात सुनकर आग बबूला हो गयी और घसपीटना लेकर सोनरी को मारने को दौडायी ।बेचारी सोनरी जान बचाकर भाग आयी । सोनरी सारी दास्तान प्रेमनाथ से कह सुनायी ।
प्रेमनाथ मेरी बात तू मानी नही । मैने तो पहले ही मना किया था ना । चली थी बडी हमदर्दी दिखाने । नककटनी तुम्हारे सिर पर चोरी का इल्जाम रख दी वह भी चांदी की हंसुली का । लोग क्या कहेगे । नककटनी तो हमारी बरसो की तपस्या को माटी में मिला दी चोरी का इल्जाम लगा कर । यह इल्जाम प्रेमनाथ को चैन नही लेने दे रहा था ।
नककटनी को प्रेमनाथ की कही गयी बात सुनायी पड गयी । वह उग्र रूप धारण कर गालियों की बौझार करते हुए प्रेमनाथ के दरवाजे पर चढ आयी । प्रेमनाथ की तरफ

इशारा करते हुए बोली क्यों चोर की दाढी में तिनका । मेरी गाली छेद कर रही हैं ना बदन में ।मेरी हंसुली बेंचकर घरवाली की हंसुली छुडवाया हैं । बहुत ईमानदार बन रहा हैं ।चोरनी का भरतार चोर ही ना होगा ।

प्रेमनाथ-नककटनी मेरी बात मान । राजू के मां की हंसुली गिरवी रखी थी वह छुडाकर लाया हूं । यह हंसुली तुम्हारी कैसे हो गयी ।राजू की मां की हंसुली देखकर तुम इतने दिनो से गाली दे रही थी राजू की मां बेचारी तो तुम्हारी तकलीफ जानने गयी थी और तुम उसे चोरनी बना रही हो । नककटनी अच्छा नही कर रही हो । अरे सेठ की दुकान जाकर पता कर लो । मुझे कोई एतराज नही है ।गाली गलौज बिल्कुल ना करना अब ।

नककटनी-क्या कर लगा मुझे मारेगा । आ मार कर भी देख ले । इतना पैसे वाला हो गया है । पहले क्यो नही छुडा लाया हंसुली । मेरी हंसुली की चोरी के बाद ही क्यो छुडवाया हैं । अरे पहले भी तो छुडवा सकता था । इसका मतलब ये कि मेरी हंसुली चुराकर बेची गयी हैं इसके बाद हंसुली छुडवायी गयी हैं । मामला बिलुकल साफ हैं । चोर और चोरनी समाने हैं ।

प्रेमनाथ नककटनी का इल्जाम सुनकर मन ही मन रो पडा । उसकी आंखों के समने अंधेरा छाने लगा । वह चक्कर खाकर गिर पडा ।बडी मुश्किल से सोनरी प्रेमनाथ को घर लायी । प्रेमनाथ काफी देर के बाद सामान्य स्थिति में आया । प्रेमनाथ सामान्य होते ही पुनः नककटनी के घर गया और बोला तुम्हारी हंसुली की चोरी का हला भला कल पंचायत में होगा ।

नककटनी गाली देते हुये बोली जा रे चोर कही का ।मुझे धमकाने आया है । ठीक हैं चल तेरी पंचायत और तुझे देख लूंगी ।

प्रेमनाथ--राजू की मां यह बेइज्जती बर्दाश्त नही होगी । मैं पंचों को बोलने जा रहा हूं । इस गांव में चोर बनकर कैसे रह सकता हूं । अरे चोरी करनी थी तो मालिक के घर में नही करता । लाखों को समान नगदी ऐसे ही पडा रहता हैं । कभी हाथ नही लगाया । नककटनी चोर बना रही हैं । अरे भले ही गरीब हूं पर गिरा हुआ आदमी नही हूं रे कि अपना ईमान खराब कर दूंगा । यह तो कभी नही होगा भले ही सूरज पश्चिम से उगने लगे पर मैं अडिग रहूंगा ।

सोनरी-हां इस बात का फैसला तो होना ही चाहिये । इतनी गिरी हुई औरत हैं कि हमे चोर कह रही है । जब पंचों के सामने गंगाजल लेकर कसम खायेगी कि मैंने उसकी हंसुली चोरी की हैं तब नानी याद आ जायेगी ।

प्रेमनाथ- पंचायत बुला लिया । गांव से थोडी ही दूर पर देवस्थान पंचायत के लिये नियत किया गया । प्रेमनाथ ने हुक्का पानी सुर्ती सबकी ब्यवस्था किया ।पंचायत की कार्रवाई प्रारम्भ होने से पहले गाय के गोबर से थोडी सी जगह लिपा गया । पंचों ने एक लोटा पानी मंगवाया उस पानी में गंगाजल डलवाया ।

इसके बाद पंचो ने नककटनी को बुलाया और पूछा तुम्हारी हंसुली की चोरी हुई है ।

नककटनी- हां ।
पंच-चोरी किसने की मालूम हैं ।
नककटनी - हां ।
पंच-सोनरी सामने आओ ।
सोनरी- सामने खडी होकर बोली । झूठा इल्जाम हैं पंचों । कभी किसी के खेत में से घास की चोरी की ही नही तो हंसुली की चोरी करूंगी ।जबकि हंसुली के महात्म्य के बारे में अच्छी तरह जानती हूं । हंसुली पवित्र रिश्ते का नाम हैं ।एक सांस्कृतिक पहचान हैं ।एक परम्परा का निर्वहन हैं ।आस्था का मंदिर है हसुली । भला मैं ऐसा अपराध कैसे कर सकती हूं । मेरी हंसुली कितने महीनो तक गिरवी थी इस हंसुली के न होने का कितना दुख मुझे है । मैं ही जानती हूं । पंचो चोरी हुई होगी । मैं यह भी कहती हूं कि चोरी नही हुई होगी पर असली चोर का पता न लगाकर मेरे उपर इल्जाम जो मढा जा रहा हैं सरासर गलत है ।
पंच-लोटे का पानी हाथ में लेकर कसम खाकर कहो ।
सोनरी-लोटे का पानी हाथ में लेकर एक सांस में कह दी पंचों मैंने हुंसली की चोरी नही की है । यह नककटनी की साजिश हैं मुझे बदनाम करने की ।
प्रेमनाथ-पंचो सोनरी बिल्कुल सही कह रही हैं । नककटनी सोनरी की हंसुली देखकर शक कर रही है। साहूकार से भी तहकीकात की जा सकती है ।मुझे कोई एतराज नही होगा ।
पंच-सोनरी बहन अपने बेटे के सिर पर हाथ रखकर कह सकती हों ।
सोनरी-क्यों नही पंचो । कर नही तो डर कैसा । सोनरी राजू को बुलाने लगी ।
पंच-नककटनी भी हाजिर हो ।
नककटनी खडी होकर बोली सोनरी ही हंसुली चुरायी है।चोरनी को चोरनी कहने मे डर कैसा ।
पंच-यह बात अपने बेटे के सिर पर रखकर कहोगी ।
नककटनी-चोरी मेरी हुई मैं अपने बेटे की कसम क्यो खाऊं । यह तो अन्याय कर रहे हो पंचो ।
पंच-कसम तो खानी ही पडेगी ।
बेटे की कसम का सुनते ही नककटनी का पति भोपू हाथ जोडकर खा हो गया । वह बोला पंचो सोनरी भौजाई ने हंसुली नही चुरायी हैं । मैं ही चोर हूं । बाप के इलाज के लिये गिरवी रखा था । कोई उपाय नही सूझ रहा था । नककटनी हंसुली देने से भी मना कर दी थी । तब मुझे लगा कि बाप के इलाज के लिये घरवाली के हंसुली की चोरी कोई गलत न होगी । पंचो गुनाह हमने किया है । सजा सोनरी भौजाई को क्यों भोपू सोनरी के पैर पर अपनी पगडी रखते हुए बोला माफ कर दे भौजाई ।
सोनरी-भोपूं के सिर पर हाथ फेरते हुए बोली जा माफ किया भइया ।

नककटनी को गुमसुम खडी देखकर सोनरी नककटनी के पास गयी और बोली बहन औरत को गहना अधिक प्रिय होता हैं । मानती हूं । इसका मतलब यह नही कि किसी का गला काट दो । अरे औरत तो मर्यादाओ और संस्कारों के संरक्षण में खुद का बलिदान दे देती हैं । तुम मेरे उपर चांदी की हंसुली के चोरी का इल्जाम लगा रही थी । बहन औरत के गले मे हंसुली तभी दमक सकती हैं जब वह समाज एवं अपने परिवार के सम्मान में मर्यादा एवं संस्कार रूपी हुंसली भी पहने ।

॥पैत्तीस।।

सोनरी-देखो जी आज का आदमी कितना स्वार्थी हो गया हैं । अपने भले के लिये आदमी का गला काटने को तैयार हो गया है। देखो हमारी इज्जत लेने में नककटनी कोई कोर कसर तो नही छोडी थी । भोपूं का जमीर कांप गया । अगर वह भी नककटनी की हां में हां मिलाया हो तो लोग बेटवा की कसम को भी झूठ मानते । इज्जत पर अंगूली उठाते पर दूध का दूध पानी का पानी हो गया । सच भगवान के घर देर हैं अंधेर नही ।

प्रेमनाथ--यह तो हैं । भगवान की लाठी में आवाज नही होती । खैर सच तो सच ही हैं भले ही झूठ की कितनी ही परत क्यों ना चढा देती नककटनी सच्चाई तो एक दिन जरूर सामने आती ।

सोनरी-जब तक आती तब तक हम कितनी जिल्लत झेलते । आजकल लोगो को क्या हो गया हैं । बिना सोचे समझे सच्चे को भी चोर समझने लगते हैं । अरे नककटनी ने भी तो यही किया था । ना जाने लोगो में बुरे विचार कहां से पनप रहे हैं । झूठ फरेब फल फूल रहा है ।नेकी पर काले बादल मडराने लगे हैं । लोग अपने सकून के लिये दूसरे के जीवन में जहर घोलने लगे है ।

नेकी पर कहर बरस गया है ।
आदमी आज बैरी हो गया है !!
हक पर जोर अजमान लगा है ।
लहू से आज संवारने लगा है !!
कभी कहता दे दो,नही तो छिन लूंगा ।
कहता कभी सपने मत देखो, वरना आंखे फोड दूंगा !!
मोह की हाला में डूबा आदमी हुआ बैरी अपना ।
आदमियत को लेकर बोया था सपना !!
बिसर गयी नेकी दौलत का भारी दम्भ ।
स्वार्थ के दाव नेकी घायल छाती पर गम !!
ना करो दर्द के रिश्ते के संग हादसे ।
मतलब बस ना करो विप की खेती डरा करो खुदा से .!!

प्रेमनाथ-अरे वाह अब तो तुम भी कविता करने लगी हो ।

ेानरी-तुम्हारी सोहब्बत का असर हैं ।

प्रेमनाथ-चलो अच्छा है । जो हुआ अच्छा हुआ । किसी ने ठीक ही कहा हैं जाको राखो साईंया मार सके ना कोय । नककटनी ने तो खूब चाल चली थी चोर साबित करने की पर सच्चाई जग के सामने आ गयी । भगवान ने हमारी इज्जत बचा ली । अगर भोपू का जमीर नही जागता तो मुंह पर कालिख पुत जाती । कितनों गंगा स्नान कर लेते पर नही धुलती । भगवान ने गरीब की इज्जत बचाकर भारी उपकार किया है राजू की ां ।
सोनरी-ठीक कह रहे हो चोरी नककटनी केे आदमी ने ही की । इल्जाम मेरे सिर रख रही थी । जबकि उसकी हंसुली तो मैं आंख भर ही नही देखी हूंं ।
प्रेमनाथ--ऐसे होने लगा तो सभी चोर हो गये । किसी के कहने भर से आदमी चाेर हो जाता है क्या । आखिरकार सच्चाई भी तो कोई चीज होती हैं ।सत्यता ही तो भगवान है। भगवान के साथ धोखा करके आदमी कही भी चैन से नही रह सकता । चाहे कोई भी हो ॥ भगवान से बडा तो कोई नही हो सकता । ये नककटनी कहां लगेगी ।घर में खाने को लाले पडे हें सेखी तो ऐसे बघारती है जैसे बावन बीघा पुदीना बोया हो ।सोनरी और प्रेमनाथ अपास में बाते ही कर रहे थो कि मास्टर हरीलालजी आ गये । बोले भइया प्रेमनाथ कहा हो । मास्टर जी आवाज देने लगे । मास्टर जी की आवाज सुनकर सोनरी बाहर आयी ।
मास्टर जी-भइया प्रेमनाथ कहां गये है। घर पर नही है क्या ।
सोनरी-है ना मास्टर जी ।आप बैठिये बस आ ही रहे है ।
मास्टर जी-राजू कहां है ।
सोनरी-अभी तो यही था । भैस बांधकर लगता है कही चला गया । वाे भी अभी आ जायेगा आप तो बैठो मास्टर जी । राजू वैसे तो कही जाता नही । थोडी ही देर पहले यही था । आसपास ही गया होगा । आइये बैठिये कहते हुए सोनरी खटिया डाल दी । तब तक घर में से प्रेमनाथ भी निकल कर आ गया ।इतने में राूज भी दौडता हुआ आ गया । मास्टर जी का पैर छुआ ।
मास्टर जी-भइया प्रेमनाथ अपना राजू पांचवी की परीक्षा अव्वल दर्जे से पास हो गया है। मैं मोटी विदाई लूंगा । आज ही गांव जाने वाला था पर सोचा आपको बधाई देकर ही जाऊॅं ।राजू होनहार बालक हैं । इसकी पढाई जारी रखना खूब पढाना । भले ही एक टाइम खाना नही खाना पर राजू को पढाना ।देखना राजू एक दिन नाम राशन कर देगा प्रेमनाथ भइया आपका आपके गांव का भी । इस बालक की पढाई में कोई कोर कसर नही छोडना ।
प्रेमनाथ-हां मास्टर जी बेटवा का तो प्ढाना ही हैं । चाहे जितना भी अपना पेट काटना पडे काट लूंगा पर बेटवा को पढाऊंगा ।आप जैसे गुरूजनों की दुआये राजू पर बनी रहे तो क्यो नही पढेगा ।हम मास्टर जी कोई कोर कसर नही छोडेगे बेटवा को पढाने मेेंं ।बेटवा पर ही तो हमारा गुमान हैं । काश पढ लिखकर बडा साहेब बन जाता ।

मास्टर जी-जरूर बनेगा । मेहनती लडका हैं पढाई पर भी खूब ध्यान देता हैं । हर बात को समझता भी अच्छी तरह से है । इस लडके के लक्षण अच्छी हैं । और भी तो कई बच्चे इस गांव के हैं पर सबसे अलग हैं राजू ।

प्रेमनाथ-अरे राजू की मां मास्टर जी का मुंह तो मीठा कराओ । कितना बढिया शुभ समाचार लेकर आये हैं । वह भी खुद चलकर इस गरीब की कुटिया में मास्टर जी पधारे हैं ।

सोनरी-कटोरे में दही गुड भर लायी बोली लो मास्टर जी मुंह मीठा करो । आप इतनी बडी खशी का समाचार लाये हैं आपके मुंह में घी शक्कर । मास्टर जी लो दही गुड यह शुभ हैं ना । इसी से मुंह मीठी करिये । पास में बाजार हाट तो हैं नही कि कोई मर-मीठा मंगवाती ।

मास्टर जी-अरे बेटा राजू इधर तो आओ ।

राजू- मास्टर जी के पास आकर खडा हो गया और बोला जी मास्टर जी ।

मास्टर जी-बेटा पहले तो तेरा मुंह मीठा करवाया जाना चाहिये । लो मुंह मीठा करो । ऐसे ही सदा तरक्की करते रहना । हम सब की दुआयें तुम्हारे साथ हैं आैर उम्मीदें भी ।

सोनरी- मास्टर जी आप खाअेां मै सब के लिये ले आती हूं । आप राजू के गुरू हैं ।सबसे पहले आपका ही मुंह मीठा होना चाहिये ।

मास्टर जी-बेटा राजू ऐसे ही मेहनत से पढाना । मां बाप का नाम रोशन करना बडा आदमी बनकर । बेटा ऐसे ही आगे बढे रहन मेरी दुआयें तुम्हारे साथ हैं । जहां तुम्हारे कदम पडे तरक्की बरसने लगे । दुनिया वाले कहे वाह रे राजू क्या नेक काम किया ।गरीब मां की गोद में पैदा होकर ,गरीबी ,भूखमरी,, सामाजिक कुरीतियों का दुख झेलकर भी औरो से बहुत आगे निकल गया । चांद सी ाीतलता और सूरज सा उर्जावान बनना राजू । भगवान तुम्हारी मदद करे । सदैव आगे बढते रहना बेटा राजू ....

प्रेमनाथ- मास्टर जी यही तो अपना सपना हैं । जो कुछ पूंजी, जमीन जायदाद थी दबंगों ने हडप लिया । मेहनत मजदूरी करके बसर कर रहा हूं । सामाजिक कुव्यवस्था से भी आप परिचित ही हो आदी आदी ही नही समझता है। आपसे क्या छिपाना । आप भी तो भुगत भोगी ही हो । यही कुव्यवस्था तो हमारी तरक्की की सबसे बडी बाधा हैं किनी पीढयां गल गयी पर यह बाधा अभी भी छाती तान खडी हैं । सिर उठाओ तो कुचलने का प्रयास होने लगता हैं इसी कुरीतियों के वसीभूत होकर ।ना जान कब तक यह कुव्यवस्था हमार साथ देश को भी झलती रहेगी ।

मास्टर जी- प्रेमनाथ भइया आपने अनेको दुख झेलकर भी मिशाल कायम किया हैं । बेटवा को ाढा रहे हैं । यह कम तो नही हैं । ऐसे ही बेटवा को ाढाना । इसकी पढाई बन्द नही करना । यह बालक जरूर आपका आपके परिवार का समाज का और इस गांव का नाम जरूर रोशन करेगा । भइया आपका नाम लोग गर्व के साथ लेगे ।

प्रेमनाथ- मास्टर जी यह तो हमने भी सोच रखा है । बेटवा को खूब पढाना हैं । इसी मेहनत मजदूरी के दम पर खैर अपने को तो सरकारी नोकरी मिलने से रही । अपने को तो मालिको के खेत में हाड निचोडना हैं पर मास्टर जी बेटवा को कभी ना ऐसा करने दूंगा । बेटवा को पढा लिखा कर परदेस जरूर भेजूंगा । बेटवा को बडे स्कूल में भेजूगा । इसके लिये हमें चाहे जितनी मेहनत करनी पडे । करूंगा पर बेटवा को साहेब बनाकर ही दम लूंगा ।

सोनरी-हां मास्टर जी हम लाख दुख उठायेगे पर बेटवा को बडे स्कूल जरूर पढने भेजेगे ।

मास्टर जी -बेटा राजू ।

राजू-जी मास्टर जी ।

मास्टर जी -बेटा सुन रहे हो ना ।

राजू-जी मास्टर जी ।

मास्टर जी -बेटा अपने मां बाप का अरमान पूरा करना । इसके लिये तुम्हे अभी से मेहनत करनी करनी होगी । खूब मन लगाकर पढो अभी से तब आगे निकलोगे बेटा ।

राजू-जी मास्टर जी ।

मास्टर जी -बेटा तुम्हारे ही नही तुम्हारे जैसे अनेकों मांता पिता आज भी जुल्म के शिकार हो रहे हैं । तुम्हारे जैसे लोग पढ लिखकर आगे बढेगे तब ही जुल्मों शितम पर पाबन्दी लग सकेगी । बेटा चाहे वे सामाजिक जुल्म हो या आर्थिक । सामाजिक उत्थान की क्रान्ति तो तुम लोग ही लाओगे ।तभी देश में तरक्की की बयार चल पायेगी । बेटा खूब मेहनत से पढना । मेरे क्र्वाटर पर पहले जैसे पढने आ सकते हो । तुम्हे कोई मनहाई नही होगी । जब चाहे आ जाना । तुम्हे पढाने के लिये मैं तैयार रहूंगा ।

सोनरी-हां मास्टर जी आपने तो मेरे बेटवा को पढाया हैं । वह भी बिना किसी फीस के खैर हम तो फीस देने लायक भी नही रहे । इसके बाद भी आपने मेरे बेटवा को दिन में स्कूल में रात में अपने क्वार्टर पर पढाया । हम आपके एहसानमद रहेगे मास्टर जी ऐसे ही कृपादृप्टि बनाये रखना। मास्टर जी - हमने क्या पढाया । राजू में पढने की लगन हैं पढा और भी दो बच्चे आपके गांव के मेरे पास आते हैं । उनमें और राजू में बहुत अन्तर है । मेहनती बालक हैं तभी तो पढ पा रहा हैं इतने अभाव में भी । एक मेरा बेटा हैं मैं मास्टर हूं पर वह चौथी जमात से आगे पास ही नही हो पाया । थक हार कर खेती के काम में लगा दिया । आप ही बताओ मै क्या कर सकता हूं । जबकि हर सुविधा मुहैया कराया । नही पढा । उसमें पढने की ललक ही नही हैं । एक अपना राजू हैं । अभाव भरी जिन्दगी के बाद भी पढने आगे बढने को उत्सुक हैं । मैं दावे के साथ कहता हूं यह लडका एक दिन जरूर मान बढायेगा इस गांव का । लोग राह चलते पूछेगे भइया राजू भी कभी इसी गांव की माटी में लोट पोट कर पला बढा था । गरीबों के

बच्चों के लिये नसीहत बनेगा राजू । एक ना एक दिन लोग नाज करेगे राजू के नाम पर ।

प्रेमनाथ-हां मास्टर जी आपका ही तो आशीर्वाद हैं । इसीलिये तो पढ पा रहा हैं राजू ।हम अंगूठा छाप क्या पढा पाते । हमें तो पढने लिखने भी नही आता काश हम भी पढे लिखे होते पर नही पढ पाये मास्टर जी सामाजिक कुरीति एवं गरीबी के कारण ।

मास्टर जी और प्रेमनाथ की बात चल ही रही थी कि रामदेई काकी आ गयी । सोनरी से बोली बहू जरा आग तो दे । है भी की नही ।

सोनरी- अम्मा आग तो है ।चिलम चढानी हैं ।

रामदेई काकी- हां सोनरी । मेरे घर में तो आग रही ही नही पाती हैं । ना जाने बहू कैसे रखती हैं । कुछ कहो तो लडने को तैयार हो जाती हैं । तेरे ही आग के भरोसे चिलम पी लेती हूं ।

सोनरी-अम्मा चिलम बाद में पी लेना जरा बैठों कहकर सोनरी बोरा बिछा दी ।

रामदेइ र्काकी- बहुत खुश हो सोनरी कोई खास बात हैं क्या ।

प्रेमनाथ-काकी खुशी की बात ही हैं तो खुश तो होगे ना ।

रामदेईकाकी-बेटा सदा खश रहो मेरी दुआ है तुम्हारे साथ ।

सोनरी-अम्मा अपना राजू पांचवी जमात पास हो गया हैं अव्वल दर्जे से ।

रामदेईकाकी-शाबास बेटा राजू । अरे राजू है कहां ।

सोनरी-बेटा राजू आजी का पांव छुओ ।

राजू झट से रामदेई काकी का पावं छुआ । काकी ढेर सारे आशीर्वाद देेने लगी ।

सोनरी-अम्मा मास्टर जी बेटवा के पास होने की खबर लेकर आये हैं ।

रामदेईकाकी- मास्टर जी आये हैं तो बेटवा जरूर कमाल किया होगा ।

मास्टर जी ी- हां काकी बेटवा अव्वल आया है ।

रामदेई काकी-सोनरी बेटवा तेरा ही नही इस गांव का गहना हो गया है रे ।

सोनरी- हां अम्मा आप बुजुर्गो के आशीर्वाद की ही वजह से तो राजू पढ पा रहा हैं वरना अपनी औकात कहां कि पढा लेते ।

रामदेईकाकी-देखना राजू तुम्हे सोने चांदी की मोटी मोटी हंसुली गढवायेगा ।

सोनरी-अम्मा जैसी प्रभु की इच्छा । बेटवा भले ही हंसुली ना गढवाये पर अपने नेक मकसद में कामयाब होता रहे । गांव समाज का नाम रोशन करे ।

रामदेई काकी-वह तो करेगा ही ।

सोनरी- अम्मा मेरा बेटा अभी तो चांदी की हंसुली हैं मेरे और मेरे परिवार के लिये । पढ लिखकर हमारी ही नही पूरे गांव के लिये हीरे की हंसुली साबित हो मेरी तो भगवान से यही प्रार्थना है । प्रेमनाथ- अरे तुम औरतो को गहने के अलावा और भी कुछ सूझता है कि नही ।

प्रेमनाथ की बात सुनकर मास्टर जी भी बिना हंसे नही **रह पाये ।**

॥छत्तीस॥

राजू के पांचवी परीक्षा अव्वल दर्जे से पास होने की खशी ने प्रेमचन्द और सोनरी के रिसते जख्म पर मलहम का काम की । एक दिन प्रेमनाथ सोनरी से बोला राजू की मां सुनो।

सोनरी-क्या राजू के बापू जरा सी खुशी आयी हैं । तुम्हारी बात सुनकर मैं तो डर गयी । क्या हो गया । क्यों घबराये हुए हो ।

प्रेमनाथ-काशीनाथ आया हैं ।

सोनरी-वो तो सबेरे के ही आये हैं । अपने दोस्त मित्रो के घर हैं । कोई दारू पीला रहा हैं । कोई मुर्गा खिला रहा हैं । परदेसी बाबू हैं । पैसा हैं छान फूंक रहे है ।तुम क्यो इतने उतावले हो रहे हो ।

प्रेमनाथ-भाई हैं सबेरे का आया है अपने घर नही आया ।

सोनरी-कैसा भाई ।कहते हैं ना भाई जैसा भाई नही बनी तो नही तो वह दुश्मनों से भी खतरनाक होता हैं । ऐसे ही हैं तुम्हारे भाई लोग ठग उचके ।न आये तो ही ठीक हैं । अगर आये तो देखना कोई बवाल लेकर ही आयेगा वह ठग । जिन्दगी भर तो परदेस कमाया एक पैसा बेटवा के हाथ पर नही रखा उपर से गुजहरा बेचकर खा गया ।

प्रेमनाथ-क्यो कटी जली सुना रही हो । अब वैसा नही होगा । समय के साथ बदलाव तो उसमे ंभी आया होगा । अब तो बाल बच्चेदार हैं ।

सोनरी-बडी तारीफ कर रहे हो । मेरी बात नही मान रहे हो । देखना कोई्र ना कोई्र बवाल खडा करेगा ही वह तुम्हारा ठग भाई।

प्रेमचन्द-क्या बवाल खडा करेगा ।

सोनरी-सुनी हूं कि वह अपने खास खास लोगो से मिल कर ये माटी का घर जिसको बनाने में सिर के बाल झड गये कई बार हंसुली बंधक रखे । उसके बंटवारे की बात कर रहा हैं तुम्हारा सपूत भाई ।

प्रेमनाथ-क्या ।

सोनरी-हां यही बवाल खडा करने वाला हैं काशीनाथ ठग जो तुम्हारा भाई हैं दुर्भाग्यवस ।

प्रेमनाथ- अच्छा ये मामला है । मैं तो समझ रहा था कि तीस साल के बाद आया हैं भाई की खोज खबर लेने ।

सोनरी-वाह रे भाई का अंधा मोह । अरे तुमसे मिलने आता तो तुम्हारे पास आया नही । वह तो साजिस रच रहा है ।

प्रेमनाथ- सच राजू का मां दाल में कुछ काला लग रहा है ।

सोनरी-कुछ काला नही हमें तो पूरी की पूरी दाल ही काली लगने लगी हैं । दारू मुर्गा कट रहा हैं ।ऐसे ही क्या । जिन लोागे को खिलाया पिलाया जा रहा हैं क्या फोकट । कुछ ना कुछ कीमत तो लेगा ही काशीनाथ भले ही झूठी गवाही दिलवा ले ।

प्रेमनाथ-झूठी गवाही ।

सोनरी-हां झूठी गवाही घर हडपने के लिये ।
प्रेमनाथ-काषीनाथ भाई नही तब तो दुश्मन होगा ।
सोनरी-होगा नही हैं । पूरी तैयारी हैं । इतना बुध्दू तो हैं नही तुम्हारा भाई कि लोगो को दारू मुर्गा की दावत दे रहा हैं ।तुमसे मिलने तक नही आया ।
प्रेमनाथ-मेरी छाती में कटार घोपने आया है क्या ।
सोनरी-तुम्हारे भाई लोग ऐसे ही हैं । मैं क्या कहूं । एक थे बडे जेठजी देवता समान बाकी दोनो तो राक्षस हाे गये स्वार्थ में डूबे । सोर रिश्ते नाते खत्म कर दिये । अब हमारी मेहनत मजदूरी में जरा बरक्त होने लगी हैं तो उनकी आंखे फूटने लगी हैं ।मेरी खुशी उन ठगो से सही नही जा रही है । अरे राजू बेटा कहां गये । जरा भैसे को खूंटे से हटा देते ।
राजू-मां मैं यहा हूं ।
इतने में काशीनाथ भी आ गया नीचे सिर करके खटिया पर बैठ गया । सोनरी तीस साल के बाद भी इस ठग काशीनाथ को भूली नही थी ।
सोनरी-राजू काशीनाथ खटिया पर बैठे है क्या ।
राजू-कौन काशीनाथ में ।
सोनरी-तेरे काका ।
राजू-मेरे काका भी हैं कोई ।
सोनरी-हैं ना बेटा ।काशीनाथ तेरा काका । तीस साल के बाद चौखट पर आया हैं । जाओ उसका पैर छुओ । कुछ दाना पानी कराओ । बेटा अपने दरवाजे पर आया हुआ अतिथि भगवान के समान होता हैं ।
राजू-मां वो मेरे काका हैंं। मेरे काका तो बापू से बूढे लग रहे है ।बाल तो देखो सनकुट हो रहे हैं । मां वो तो दूर से बदबू मार रहे हैं ।दारू बहुत पीते है क्या।
सोनरी-पीते होगे । पैसे वाले लोग है। । दारू नही पीये तो ओर क्या करेगे ।
राजू-क्या मां पैसे वालो के लिये दारू पीना जरूरी होता हैं ।
सोनरी-नही बेटा दारू बूरी चीज हैं । यह तो बर्बादी लाती है पर लोगो शाैक बस पीते हैं । जाकर गंदी नाली में पड जाते हैं । नशा कोई भी अच्छी नही होती हैं । बेटा तेरे काका बडे शहर मेंं रहते हैं । केले का धंधा है। जरूरत से ज्यादा पैसा हो जाता हैं तो दारू के ठीहे पर ही ना जायेगा । भले ही पैसा हो गया है पर बुध्दि तो नही हैं ना । बदबू मार रहे है तो मारने दो ले जाओ दाना पानी दे आओ । मुझे भी बहुत बदबू आ रही है ।
प्रेमनाथ-हां राजू तुम्हारी मां जैसा कह रही है वैसा ही तुम करो । ले जाओ दाना पानी दे आओ ।
राजू-ठीक हैं दे आता हूं ।
प्रेमनाथ भी काशीनाथ के पास खटिया पर जाकर बैठ गया । हालचाल पूछने लगा ।प्रेमनाथ बोला अरे काशीनाथ तीस साल के बाद अचानक मेरी याद कैसे आयी है भइया

। सुना हैं तू सबेरे का आया हुआ हैं । परे गांव में घर घर घूम रहा हैं अंधेरे में मेरे पास आया हैं । क्या मुझसे कोई खता हो गयी है भाई इतने दिनो के बाद गांव में आया हैं भाई से मिलने में संकोच कर रहा हैं ।अरे मुझे तो तुम ही छोडकर गये थे । मैं तेरे से मिलने तेरी ससुराल कितनी बार गया पर तू तो मिलने से इंकार कर दिया था ना । क्या बात हो गयी की तू यहां आया हैं।अंधी मां मर गयी । भाई की हत्या हो गयी इसके बाद भी तू नही आया । तीस साल के बाद आया है वह भी बाहर बाहर घूम रहा हैं । मेरे पास रात में आया है अब अचानक कैसे आना हुआ भाई ।घर में सब तो ठीक है ।

काशीनाथ-घर में सब ठीक हैं । मैं काम से आया हुआ ।

प्रेमनाथ-कौन सा काम आ गया कि यहां आये हो । क्या बिना काम के भाई से मिलने नही आ सकते थे ।

काशीनाथ-क्या करता आकर ।

प्रेमनाथ-अब क्या करने आये हो । पहले भी तो आ सकते थे ।

काशीनाथ -काम पडा गया है तो आ गया हूं। बिना काम का यहां क्या करने आता ।

प्रेमनाथ-ठीक है भइया । मुझसे तो कोई काम नही हैंना जा सो जा बहुत चढा लिया है। मिस्त्रिया क यहां कोई दावत थी क्या । जब तुम से पचती नही है तो इतना क्यो चढा लेते हो । फोकट की तो रही नही होगी ।पैसा तो तमुने ही खर्च किया होगा । मिस्त्रिया तो एक नया खर्च करने वाला नही है । सुना हैं मुर्गा दारू की दावत तुहारी खूब चल रही है। यार दोस्त तो याद है भाई भतीजे नही याद आते ।जरूरत पर अपने ही काम आते है । ये दरोडियें जरूर पडने पर कभी काम नही आयेगे ।अपने भतीजा भतीजियों के लिये दो रूपये की रेवडी भी नही मय्यसर हुई है ।दारू का दौर बदसूरत जारी है । इतना ना पीया करो कि बात तक नही कर पाओ किसी से और एक मां के पेट से पैदा हुए भाई बहन का भूल जाओ। अरे अभी से तेरे हाथ पांव कंप रहे हैं तो बुढौती में तरा क्या हाल होगा । दस साल मुझसे छाटा है । लग रहा है तू ही मुझसे बडा है। खैर छोडो ेरी बात तुका तो अच्छी भी नही लग रही होगी । खैर तुम किस काम से मेरे पास आये हो । अपना काम बताओ ।

काशीनाथ -मैंने तो इतना अधिक नही पीया हैं ।लगता हैं तुमने जरूर पी ली हैं ।

प्रेमनाथ- पीये हो कि नही छोडो ।भइया यहां तो रोटी भर पेट मिल जाये तो किस्मत की बात है।खैर मेरी तकलीफों से तुमको क्या लेना। देखो राजू पानी लाया हैं । गुड खाकर पानी पी लो ।

काशीनाथ -राजू कौन हैं । मेरा लगता क्या हैं कि मैं पानी पीलूं उसका लाया हुआ पानी।

प्रेमनाथ-अरे तेरा भतीजा है। मेरा बेटा राजू है । तू परदेसी क्या हो गया कि सारे नाते रिश्ते भी तोड दिया । तीस साल के बाद आया हैं । कितने लोग इस गांव के बिछुड गये अब तो ये नये बच्चे भी तुमको पहचान नही सकते । आ जाया करता तो जरूर पहचानते । बाप दादा की एक घरोही निशानी थी वह भी गावं के दबंगो ने हडप लिया । जमीन

जायदाद तो पहले से ाोषक ने हडप ही लिया था । आकी बाकी जो था भइया भीखानाथ हडप लिये।भगवान उस भीखा राक्षस का क्या भला करेगा ।मेरे बेटो की हत्या कागज पर करवा दिया।बडे भइया के बेटो की भी । बडे भइया की मौत भी तो संदिग्ध अवस्था में हुई थी ।भाई भीखानाथ ने जमीन हडपन के लिये क्या क्या हथकण्डे अपनाया। अन्ततः हडप भी लिया । सच कहते है पैसा की मां पहाड चढती है।मै गरीब मेहनत मजदूरी कर पट पाल रहा हूं तुमने भी मुझसे किनारा काट लिया । मिलने तक से इंकार कर दिया। क्या भैयप्पन निभाया तुम और भीखानाथ ने ।तुम क्या चाहते हो मुझस अब सारे रिश्ते नाते ता तुमने तीस साल पहले खत् कर दिये ।

काशीनाथ-देखो तुम्हारा प्रवचन नही सुनने आया हूं ।मैं इस घर में हिस्सा लेने आया हूं ।

प्रेमनाथ-क्या ।

काशीनाथ -हां इस घर में मेरा भी हिस्सा बनता हैं ।

प्रेमनाथ-कैसा हिस्सा ।

काशीनाथ -अपना हिस्सा लेकर ही जाऊंगा ।

प्रेमनाथ- हाेश में आ काशीनाथ क्या बक रहा हैं ।

काशीनाथ -होश में हूं । मुझे हिस्सा चाहिये घर में पेड पौधों में गाय भैस बैल सब में ।

प्रेमनाथ-कैसा हिस्सा । जब मैं बेघर था तब तो आया नही । बीसा भर गांव समाज की जमीन पर मडई बनाकर भिखारियों की तरह दिन काटा तुम जैसे पैसे वाले भाईयों के होते हुए भी ।पहले ो ेरी याद नही आयी । धीरे धीरे करके मडई से माटी का घर बनाया । यही तो घर बना पाया जिन्दगी भर की कमाई से । तुम्हारे सरीखे तो मेरे पास ना धंधा हैं ना रूपये का ढेर । अब मुझ गरीब की मडई पर भी तेरी गिध्द नजर पड रही है । बेचारी घरवाली के सिर के बाल झड गये माटी ढोते ढोते । तू हिस्सा लेने आया है ।

काशीनाथ -ज्यादा पैतरेबाजी ना करो । मैं तो हिस्सा लेकर ही रहूंगा ।

प्रेमनाथ-तुमने जो महल अटारी खडा किया है । उसका क्या हम उसमें हिस्सेदार नही ।

काशीनाथ-नही ।

प्रेमनाथ-जब तुम्हारी कमाई में मेरा हिस्सा नही बनता तो इस दो माटी के घरो में तुम्हारा हिस्सा कैसे बन गया भाई ।हिस्सा ही लेना हैं तो जाओ बाप दादा की जमीन पर जो कब्जा कर बैठे हैं उनसे खाली करवा लो । मैं तो अनाथो की तरह बसर किया। गांव समाज की जमीन पर बडी कठिनाई से दो घर का कच्चा मकान बना पाया हूं उसमें भी तुम हिस्सा मांग रहे हो ।

काशीनाथ -मुझे तो हिस्सा चाहिये ।देखता हूं कितना बडा दादा तू बन गया हैं थाने जाऊंगा पुलिस लेकर आऊंगा चार डण्डेपडेगे । खुशी खुशी दे दोगे । मैं तो इस घर में हिस्सा लेकर ही रहूंगा ।

प्रेमनाथ-ज्यादा तमाशा ना बनाओ । अब बहुत हो गया । यहां से अब तुम जाओ । जब होश में आना तो आ जाना ।

काशीनाथ -में खूब होश में हूं तुम बेहोश हुए जा रहे हो । जब पुलिस के डण्डे पडेगे तो सारी पहलवानी छू मन्तर हों जायेगी ।मेरा हक हजम तेरे बस की बात नही है पहलवान ।

प्रेमनाथ-अरे बेशर्म तुम में जरा भी लाज हया बची है कि नही । यदि जरा भी बची हो तो यहां से दफा हो जा । मैं अपने बच्चो का आिशयना नही टूटने दूंगा ।

काशीनाथ -सीधे से नही देगा तो टेढे से भी मुझे लेने आता हैं । क्या मैं तुम्हारा भाई नही हूं । कोई मना कर सकता हैं । तीस साल के बाद आऊं चाहे तीन सौ साल के बाद । मेरा हक तो बनता ही हैं तेरा भाई होने के नाते । और मैं लेकर भी रहूंगा ।

प्रेमनाथ-तेरा कैसा हिस्सा । जिस जमीन पर ये घर खडा हैं गांव समाज की जमीन हें । गांव के मुखिया प्रधान ने मुझे दिया हैं न की तुम्हे। मैंने खून को पसीना बनाया हैं इस घर को बनाने में । मेरी घरवाली का पसीना बहा हैं । कितनी बार तो बेचारी घरवाली की हंसुली गिरवी रखकर सूदी रूपया लाया हूं इस घर को बनाने के लिये । तू हिस्सालेने आया हैं कि आंख में धूल झोंकने । अरे बेइमानी से सुख नही मिलता काशीनाथ ....

काशीनाथ -मैं लेकर रहूंगा । कोर्ट कचहरी जाऊंगा । थाना पुलिस करूगा । पानी पैसे की तरह बहाऊंगा पर इस घर में हिस्सा लेकर रहूंगा। धमकी देते हुये काशीनाथ उठा और रात के अंधेरे में ससुराल की राह पकड लिया ।

इधर काशीनाथ की धमकी से सोनरी की घबराहट बढने लगी ।वह बोली देखो हम तकलीफ में थ तो कोई नही आया पता लगाने की हम लोग जी रहे है या मर गये । आज मेहनत मजदूरी करके दो कच्चे घर खडा कर लिये तो हिस्सेदार खडे हो रहे हैं । पुलिस कोर्ट कचहरी की धौस दे कर जा रहे हो काशीनाथ भइया । अरे ये काशीनाथ भइया रूपये के बोरे का भी मुंह थाने में खोल दोगे तो क्या सच झूठ हो जायेगा । गांव के लोग नही जान रहे हैं कितनी रकम इस घर में लगाये हो।

काशीनाथ -लौट आया और बोला देख भौजाई तेरी गज भर की जबान बन्द कर दूंगा । घर में तो हिस्सा लेकर ही रहूंगा। जा रहा हूं एक नही कई बोरो के मुंह खोल दूंगा पर लेकर रहूंगा हिस्सा।

प्रेमनाथ-अरे जा रे बडा आया हिस्सा लेने वाला । पूरा गांव खरीद लेगा क्या । गांव के लोग तो हैं ।दूध का दूध पानी का पानी करने के लिये ।अरे इतने ही बोरे भर भर कर नोट रखा है तो दिल्ली क्यों नही खरीद लेता । खाने को भूंजी भाग नही चला है रूपये के बोरे का मुंह खोलने वह भी थाने में ।

काशीनाथ -देख लेना । नोट से भरे बोरो का मुंह भी खोलकर दिखा दूंगा और इस घर का दो फांड भी करवा कर ही रहूंगा ।देखना पहलवान तुमको कण्डा भी नहीं मिलेगा आंसूं पोछने के लिये

सोनरी- काशीनाथ की बात सुनकर घबराने लगी और प्रेमनाथ से बोली राजू के बापू काशीनाथ रूपया के भरोसे सच को झूठ साबित करवा दिया तो हम बेघर हो जायेगे । जायेगे कहा । कौन सहारा ढूढेगे । काशीनाथ तो पुलिस थाना कोर्ट कचहरी की धौस दे रहा हैं ।

प्रेमनाथ-कहना बडा आसान है राजू की मां।

सोनरी-अगर काशीनाथ लेकर आ गया पुलिस थाना तो ।

प्रेमनाथ-आस पडोस गांव के लोग तो हैं । अरे सबको तो दारू मुर्गा देकर काशीनाथ खरीदने से रहा ।अभी इंसानियत परी तरह मरी नही है ।लोगो मं करूणा दया भाव अभी भी जिन्दा है ।भले ही लोग जाति धर्म के नाम बंटे हुए हो । राजू का मां सांच को आंच कहां ।

सोनरी-देखो जी मुझे तो डर लग रहा हैं।सचमुच काशीनाथ पुलिस थाना न लेकर आ जाये ।

प्रेमनाथ-कुछ नही होगा । हमारी खून पसीने की कमाई ऐसे कैसे कोई हडप लेगा । अरे पैसे के बल पर मुझे मेरे परिवार को घर से बाहर फेकवा देगा ।अरे पुलिस थाना वालों के पास भी इसांन का ही दिल होता है ।अंधेरपुर नगरी कनवा राजा तो सभी नही हो गये है ।नही तो काई जंगल राज है अपने देश में ।अगर लोग पैसे के भरोसे कानून खरीदते रहे तो न्याय से आस्था ही उठ जायेगी। मुझे विश्वास है मेरी आस्था की पूंजी पर कोई डकैती नही कर पायेगा ।राजू की मां जैसी तुम्हारी आस्था हंसुली को लेकर है वैसे ही मेरी भगवान को लेकर ।भगवान में आस्था नवजीवन देती है ।

सोनरी-मुझे तो डर लग रहा हैं । मुह मांगा दे दिया काशीनाथ थाने जाकर तो।

प्रेमनाथ-अरे इतना मुंह मांगा देने वाला होता तो मेरे कच्चे घर पर उसकी नियति खराब होती । गांव में तो और जमीनें हैं दस बीस बीघा खरीद नही लेता । मुझे डराने आया था । मैं उसकी बातों से डर कर घर बांट दूंगा क्या। देखना अब लौटकर नही आयेगा । किसी ने उसके कान भर दिये होगे । सोचा होगा कि चलो डरा धमका कर घर का बंटवारा करवा लूं । ऐसा न होगा रे राजू की मां बडी मेहनत किये हैं हम दोनों ने इस घर को खडा करने में ।

सोनरी-जिन्दगी भर की मेहनत मजदूरी की कमाई इस माटी के घर को बनाने में लगा दिये ।

प्रेमनाथ-अरे इतनी राहजनी मची है क्या। कोर्ट कचहरी थाना पुलिस काशीनाथ की नीजि जमीदार तो हैं नही । हम भी नही छोडेगे अपने जिन्दगी भी की कमाई इस माटी के घर को और किसी को लूटने नही देगे चाहे राजू की मां तुम्हारी हंसुली फिर क्यो ना एक बार और गिरवी रखनी पडे ।

सोनरी-क्या । हंसुली फिर गिरवी................

॥सैतीस॥

काशीनाथ मुश्किल खडी कर चला गया ।उसके जाते ही कालिया के पंख फडफडाने लगे । वही कालिया जो कभी अनाथ था। जिसे सोनरी और प्रेमनाथ ने पाला पोसा । पढाया लिखाया ब्याह गौना किया ।ब्याह गौने में रीन कर्ज कर हंसुली गहना भी दिया पर वही कालिया कमाने लायक हुआ तो ठेगा दिखा दिया । लोग कहते देखो प्रेमनाथ सांप को दूध पीलाया काटने को दौडा रहा है । कई बार तो कालिया की पढाई के खर्चे के लिये सोनरी की हंसुली भी गिरवी रखी गयी थी पर कालिया पूरी नेकी बिसरा कर अपनी घरवाली के साथ शहर जा बसा । गांव में भी उसने अपने नाम से ढेर सारी जमीन जायदाद भी लिखा लिया ।इस बात का प्रेमनाथ को जरा भी मलाल न था । वह उसकी तरक्की देखकर खुश था । अपनी घरवाली की फरमाईस के अनुसार जेवर गहने बनवाता रहा । जब कभी प्रेमनाथ को चिटठी पत्री देता लिखता काका मैं बहुत बीमार हूं शहर तो प्रेमनाथ ने ही रीनकर्ज करके भेजा था ताकि वह इज्जत की जिन्दगी बसर करे । गांव की जिन्दगी तो कांटो पर चलने के बराबर थी हर ओर उत्पीडन अत्याचार था । प्रेमनाथ भुगत भोगी था । इसलिये कालिया को शहर भेज दिया था । कालिया नेकी का बदला देने के बजाय उसकी भी नजर प्रेमनाथ के घर पर ही जाकर टिकी । गांव के लोग कालिया की करतूत देखकर परहित से डरने लगे थे ।

एक दिन कालिया शाम को आया राजू से पूछा काका कहा हैं ।

राजू-बापू तो मालिक का हल जोतने गये है ।

कालिया-कब तक आयेगे ।

राजू-भइया कब तक आयेगे यह तो मैं नही बता पाऊंगा । जब काम खत्म हो जायेगा तो आ जायेगे । मालिक के काम को तो जानते ही हो ।

कालिया-ठीक हैं काका के आने के बाद आऊंगा ।

राजू-ठीक है भइया।

कालिया ज्यो ही जाने को मुडा प्रेमनाथ आता हुआ दिखाई पड गया ।वह राजू से बोला क्यो राजू झूठ बोल रहा था कि काका देर से आयेगे वो देख आ गये काका । क्यों मुझे बहका रहा था ।

राजू-भइया भला मैं क्या बहकाऊं काम खत्म हो गया होगा तो आ रहे हैं । वैसे भी रात होने को आ गयी है ।

कालिया-आइन्दा झूठ नही बोलना ।

इतने में प्रेमनाथ आ गया । राजू अपनी मां को बुलाने लगा मां बापू आ गये । सोनरी हुक्का चढाने लगी । राजू दौडकर लोटा भर पानी भर लाया ।राजू अपने बापू से बोला-बापू भइया आपको पूछ रहे । मैंने कह दिया कि काम पर गये हैं देर से आये । आपको आता हुआ देखकर बोले झूठ बोलता हैं आइन्दा नही बोलना ।

प्रेमनाथ -कालिया दूर क्यों खडा हैं । क्यो पूछ रहा था । क्या बात हैं ।

कालिया-काका जो तुम्हारी मडई हमारे घर के सामने खडी हैं उससे मेरी पक्की हवेली का नूर उतर रहा है ।

प्रेमनाथ-क्या ।

कालिया-हां काका मेरी हवेली का नूर उतर रहा है ।

प्रेमनाथ-जब अनाथ था । तो नूर नही उतरा अब । अब कमाने लगा हैं तो मेरी मडई तुम्हारी कमाई की हंसी उडा रही है । अरे वाह नेकी के बदले रिसते जख्म दे रहे हो । तुम तो कुछ दिन के बाद बोलोगे की घर ही छोडकर दूर चले जाओ । तुम्हारी पक्की हवेली के सामने कच्चा घर ठीक नही लग रहा हैं । कभी कहोगे कि हम लोग ही तुमको अच्छे नही लग रहे है ।

कालिया-हां काका मडई अच्छी नही लग रही हैं । मुझे दे दो । बढिया हवेली बनवा लूंगा ।कभी कभी तुम भी मेरी हवली ंमे बैठकर सुसता लिया करना। तुम करोगे क्या इतनी जमीन का । दो तो लडके हैं दो घर तो उनके लिये बहुत हैं । इतनी जमीन और दे दो काका ।

प्रेमनाथ-क्या कह रहा है कालिया । तुम ही सब ले लोगे तो हमारी औलादे कहां जायेगी । बडी मेहनत से तो रोटी की जुआड कर पाता हूं । तेरे पास तो रूपया है तू ही कही अच्छी जगह जाकर और बडी हवेली बना ले । क्यो गरीब के आशियाने पर नियति खराब कर रहा है । थोडा सब्र करना सीखो । तुम्हारे लिये हमने कितने दुख झेले तू ही मुझे बेघर करना चाह रहा हैं । यही सिला दे रहा हैं मेरी नेकी का ।मैने हजारो विपदाओं का झेला पर तुमको हर धूप से बचाया ।तुम मुझ विपदा में झोकने पर उतारू हो ।कालिया बेटा मैं विपदाओं में तपकर सुलग चुका हूं । अब मुझे राख ना बनाओ ।बेटा मेरे ख्याल से दुनिया में अब कोई ऐसी विपदा नही है जिससे घबराकर मैं जीना ही छोड दूं। विपदाओ पर हंसने वालो के लिये जीवन आसान हो जाता है । तू भी मेरी जिन्दगी में विपदाओं का जहर घोलना चाहता हैं तो कर ल अपने न वाली । मैने तुम्हारे साथ नेकी ही की है । अब तू बदनेकी पर उतर चुका है । मेरा तो बस भगवान ही सहारा है । तुम से उम्मीद थी उसीे तो तुमने ताड ही दिया । तुम्हारे धोखे ने जख्म सहला सहला कर जीना सीखा दिया है । मेरे उपर तो विपदाओ के बादल हमेशा ही उमडे रहते है । तुम्हे पालपोसकर हमने काई गुनाह तो नही कर दिया ।

कालिया-काका मुझे पाल कर कोई एहसान किया क्या ।

प्रेमनाथ-क्या इसे एहसान नही कहते ।

कालिया-मैं तो नही ही कहूंगा काका । मुझे पालने की क्या जरूरत थी । फेक देते मेरी मां की तरह तुम भी ।

प्रेमनाथ-क्या मैं भी फेंक देता ।

कालिया-हां काका फेंक देते मुझे कुते बिल्ली खा जाते आज का दिन तो नही देखना पडता । काका तुमने सचमुच मेरे साथ नेकी किया है तो एक और नेकी कर दो ।

प्रेमनाथ-अब क्या चाहिये ।
कालिया-काका ये मडई की जमीन दे दो ।
प्रेमनाथ-क्या । हमारे बाल बच्चे कहां जायेगे ।
कालिया-बहुत नेकी गिना रहे हो तो एक और नेकी नही कर सकते ।एक और नेकी बढा लेना अपने हिसाब में ।
प्रेमनाथ-यह तो अन्याय कर रहा है तू मेरे बच्चों के साथ ।क्या नेकी के बदले अन्याय मिलता है । पढाया लिखाया ।तेरा ब्याह गौना किया ।अब तू अच्छा कमा खा रहा हैं । तेरी घरवाली महारानी जैसे सोने चांदी से लदी हैं । हम तो गरीब से गरीब ही रह गये है । तुमने तो इतनी बडी तरक्की कर ली बडी जमीदारी भी खरीद लिया । अभी भी तुम्हारी लालच बढती जा रही हैं । मैंने तुमको मेहनत मजदूरी की कमाई से बनाये घर में से तुमको घर भी दे दिया । अब क्या मेरा जान लेना चाहता हैं ।
कालिया-नही काका तेरा जान लेकर क्या करूंगा । मुझे तो मडई वाली जमीन ही दे दो ।
प्रेमनाथ-मैं कितनी तकलीफ में दिन काट रहा हूं।राजू की फीस तक नही जमा कर पा रहा हूं । तेरे पास तो रूपया है नौकरी धंधा हैं ।क्यो मेरे बच्चो की छांव छिनना चाहता है ।कालिया मैं नही दूंगा अब इस मडई की जमीन को अपने जीते जी ।
कालिया-काका ये जमीन तो मुझे चाहिये चाहे कुछ भी करना पडा पुलिस थाना कोर्ट कचहरी भी ।
प्रेमनाथ-क्यो गरीब का खून पीना चाह रहा है ।
कालिया-जरूरत पडने पर वह भी पी लूंगा ।
प्रेमनाथ-वाह रे कलयुग नेकी किया था कि अपनी गरीबी में सहारा बनेगा । ये तो मेरा सहारा छिन रहा है ।खून पीन पर उतारू हो गया है ।
कालिया-काका यह जमीन तो लेकर ही रहूंगा ।
प्रेमनाथ-कैसे ले लेगा । अरे गांवपुर वाले नही जानते कि जमीन का मालिक कौन है ।
कालिया-मालिक बने रहो कछ दिन। एक दिन मैं इस जमीन को लेकर ही छोडूंगा । इस जमीन के लिये कुछ भी कर सकता हूं । मेरे घर के सामने मडई । कभी नही रहेगी काका । अब यह जमीन मेरी होकर ही रहेगी चाहे पुलिस थाना कचहरी का भी सहारा लेना पडे या और कुछ भी।
प्रेमनाथ-कुछ क्या करेगा मेरा और मेरे परिवार का कत्ल कर देगा ।
कालिया-काका कुछ भी हो सकता है । सीधी अंगुली घी नही निकलेगा तो अंगुली टेढी करनी ही पडती है ।
प्रेमनाथ-धमकी दे रही हैं ।
कालिया-कुछ भी मान लो काका ।
सोनरी-राजू के बापू कालिया क्या बात कर रहा था ।

प्रेमनाथ-मडई की जमीन हडपना चाहता हैं रूपया के भरोसे ।

सोनरी- बहुत रूपाया वाला हो गया है ।

प्रेमनाथ- हां लगता तो ऐसा ही है ।

सोनरी-क्या कह रहा था । कालिया जब से शहर से आया हैं इस बार कमा कर तब से मडई की ओर टुकुर टुकुर निहारता रहता हैं । इस सफोले की नजर हमारे घर पर लग गयी हैं राजू के बापू । इससे बचकर रहना होगा । देखना मौका पाते ही डंस लेगा । मौत की तरह यह भी अपने पीछे पडा हुआ है ।

प्रेमनाथ-हां राजू की मां मडई उसकी पक्की कोठी का सिंगार बिगाड रही है । कालिया पैसे के बल बूते कुछ भी कर सकता हैं । उसकी आंख में मुझे खून दिखाई पडने लगा हैं । क्या जमाना हैं इस कालिया को हमने अपने सगे बेटे की तरह पाला पोसा यह जानकर की कभी सहारा बनेगा पर यह तो सहारा ही छिनने पर तूल गया है । मुझेे डर लगने लगा है राजू की मां ।

सोनरी-हे भगवान इस कालिया को पाल पोस कर हमने कोई गुनाह कर दिया क्या । अपने बच्चों के मुंह का निवाला इस कालिया के मुंह में डाली । नेकी अभिशाप क्यो बन रही हैं ।

कालिया कुछ दादा बहादुरों से मिला ।उनको मुर्गा दारू की दावते देने लगा । कालिया प्रेमनाथ के खिलाफ साजिश रचने लगा ।एक दिन पूरे दल बल के साथ मडई पर कब्जा करने के लिये टूट पडा ।प्रेमनाथ भी अपने कब्जे पर जमा रहा ।इसमें उसे कालिया और उसके गुण्डो की मार भी खानी पडी पर वह पीछे नही हटा । गांवपुर के अधिकतर लोग प्रेमनाथ का साथ देने लगे । कालिया बौखला कर कोर्ट से स्टे आर्डर ले आया । मुंह मांगा रूपया देकर ।

प्रेमनाथ-राजू की मां लगता हैं इस सफोले को दूधा पीलाकर कोई गलती हो गयी हैं ।तभी यह नाग जहर उगल रहा हैं ।

सोनरी- कालिया सब रूपये के बल पर कर रहा हूं । झूठ को सच साबित करने में उसे देर भी नही लगेगी ।

प्रेमनाथ-कालिया तो मडई हडपने की पूरी तैयारी कर बैठा हैं । कोर्ट का स्टे आर्डर,थाना पुलिस की धमकी ये सब क्या हैं । सब आतंक ही तो है । मचा ले जितना आतंक मचाना हो मचा ले कालिया गांवपुर के अधिकतर लोग तो हैं न अपने साथ ।

सोनरी-देखो घबराओ नही । हमने काेई गलत तो किया नही हैं । इस नमक हराम को पालपोसकर ।इसकी पढाई के लिये मेरी हुंसली भी तुमने गिरवी रख दिया था कई बार ।नेकी की क्या सिला दे रहा हैं शैतान ।

प्रेमनाथ-राजू की मां अपने पास है भी क्या घबराहट और हौसला के सिवाय । हां भगवान पर विश्वास हैं वही मुसीबत में साथ देगा । भले ही कालिया खून का प्यासा रहे । हमें तो भगवान का भरोसा हैं । सबका मालिक तो वही है ।

सोनरी-ठीक कह रहे हो । भगवान पर भरोसा रखो वही भला करेगा । आदमी तो बेवफा हो रहा हैं । जब कालिया दुश्मन हो सकता है तो औरो के बारे में क्या कहेगे । भगवान ही अपना मददगार साबित होगा ।

प्रेमनाथ-कह तो रही हो ठीक पर ये पुलिस थाना कोर्ट का स्टे आर्डर और दादा लोग ।

सोनरी-सब किराये के टट्टू हैं ।छान फूंक लेगे फिर देखना किसी का पता नही चलेगा ।तुम भी पुलिस में रपट कर दो । गांव के लोग तो सब जानते ही हैं अरे पूरा गावं थोडे ही कालिया का साथ दे रहा हैं । दारू मुर्गा दादा लोग ही तो छान रहे हैं जिनके पास कोई धरम ईमान ही नही है ।

आखिरकार सोनरी की बात सही साबित हुई । गावं के ज्यादातर लोगो ने प्रेमनाथ का ही साथ दिया । मडई तो बच गयी पर कोर्ट कचहरी के चक्कर में गरीब आदमी बेचारा प्रेमनाथ तबाह हो गया ।

प्रेमनाथ-देखो राजू की मां अन्ततः सच्चाई की ही जीत हुई खैर परशानी तो हुई ।

सोनरी-कालिया मेरी नेकी को भले ही अभिशाप बना दिया हो पर भगवान नही ।स्वार्थीर् रिश्ते के खूनी नेकी को भले ही ना माने पर भगवान के घर तो लेखा जोखा होता ही है ।भगवान के घर देर भले ही हो पर अंधेर नही है । नेकी तो आदमियत के गले की हंसुली है राजु के बापू ।

॥अडतीस॥

प्रेमनाथ और सोनरी कालिया के फरेब से धीरे धीर उबर रहे थे कि एक दिन ग्राम सचिव आ गये और गरीबों के हितार्थ कुछ योजनाये बताने लगे जिसमे से प्रेमनाथ को शमियाने वाली योजना पसन्द आ गयी ।वह सोनरी से बोला देखो तुम बहुत ताने मारा करती थी अब तक पर अब ताना मारने का मौका नही मिलेगा ।

सोनरी-बडे उतावले हो रहे हो । क्या कोई करिश्मा हो गया । या पारस पत्थर मिल गया ।

प्रेमनाथ -अरे हम मजदूरो की ऐसी किस्मत कहां।

सोनरी-फिर कहां से चन्द्रहार गढवा रहे हो ।

प्रेमनाथ -भागवान आज थोडे ही गढवा रहा हूं ।

सोनरी-कब गढवा रहे हो ।

प्रेमनाथ -जब रूप्ाया आने लगेगा ।

सोनरी-कहां से रूप्ाया आने वाला है । कोई लाटरी लग गयी हैं क्या । जब शहर गये थे लाटरी का टिकट खरीदकर लाये थे क्या ।ऐसे कैसे चमत्कार होने वाला हैं । तुम मेरी गहने की शौैक पूरा कर रहे हो सपने दिखाकर ।

प्रेमनाथ-नही रे । मालिक की हलवाही के साथ धंधा करूंगा ।

सोनरी-हमारी बिरादरी और धंधा ।

प्रेमनाथ-हां शमियाने की धंधा ।
सोनरी-क्या शमियाने का धंधा ।
प्रेमनाथ -हां ।
सोनरी- इसमे तो बहुत पैसा लगेगा । इतनी रकम आयेगी कहां से ।
प्रेमनाथ-सरकार के घर से ।
सोनरी-मतलब कर्जा ले रहे हो ।
प्रेमनाथ -हां धंधे से ही दिन बदल सकते हैं।मालिक की हलवाही से नही। देखना तुम भी चन्द्रहार पहनोगी एक दिन अपना धंधा चल पडा तो । इस चौखट पर भी खुशी की बौझारें पडेगी ।

आयेगे दिन भले अपने ।
कांटों की सेज पर देखे है सपने ॥
मौका आया आयेगी बहार ।
दीन की झोपडी में गूंजेगी खुशी हजार ॥
अपना मन्तव्य सफल हो जाये ।
गरीब के जख्म पर मलहम लग जाये ॥
तू भी गायेगी कजरी बार बार ।
सोनरी हंसुली संग पहनेगी चन्द्रहार ॥
दुख कट जाये भगवान को मनाये ।
सुख की आशा पूरी हो जाये ॥

सोनरी-बडी गीत गा रहे हो । लगता हैं अलाउदीन का चिराग हाथ लग गया हैं । जमीन जायदाद,गहना गुरिया सब एक झटके में बनाओ दोगे ।
प्रेमनाथ-अलाउदीन का चिराग तो नही ।हां एक अच्छी सरकारी योजना तो है ही जिससे हम अपनी जरूरते पूरी कर सकते हैं।
सोनरी-राजू के बापू आधा पेट खाकर बसर कर लेगे ।कर्ज का घी नही पीयेगे ।कर्ज भरने की भी तो औकात होनी चाहिये । अपने पास तो कोई और आढत है नही सेर भर मजदूरी के अलावा ।
प्रेमनाथ-भागवान सरकारी कर्ज हैं । किस्त बन जायेगी ।कमाते रहेगे भरते रहेगे । देखना अपना धंधा खूब चलेगा ।तुम सेठानी बनकर रूपया गिना करोगी ।
सोनरी-क्यों सपने दिखा रहे हो । लोग कहते हैं सरकारी कर्जा नही भरे जाने पर घर की कुर्की हो जाती हैं । गोरूचौवा सब सरकारी साहेब लोग हांक ले जाते है ।
प्रेमनाथ- अपना धंधे में नुकशान नही हैं । मछली का व्यापर नही है कि एक दिन में नही बिकी तो सड जायेगी ।यह तो शमियाने का धंधा हैं । आजकल तो बारहो महीना जरूरत लगी रहती हैं गांव में । सुबह ाम का धंधा हैं । सुबह खडा कर देगे रात में उतार लेगे जाकर । अपनी मजदूरी में भी नागा नही होने वाला हैं ।

सोनरी-सपने तो बहुत अच्छे अच्छे दिखा रहे हो ।सोच लो। गांवपुर वालो से रायमशवरा ले लो । फायदे का सौदा लगे तो ले लो पर लोगो से रायमशविरा करके । यदि नुकशान हो गया तो बडी आफत आ जायेगी । कर्जा भरना बहुत कठिन हो जायेगा । कर्जा के बदले कुर्की हो गयी तो बहुत बुरा होगा और नमुसी भी । राजू के बापू नमुसी बर्दाश्त नही होगी । खूब सोच समझकर कदम आगे बढाना ।

प्रेमनाथ-राजू की मां ऐसा क्यो सोचती हो । फायदा होगा देखना । लोग तो शामियाने के धंधे से पूरा परिवार पाल रहे है। ।हम तो मालिक के खेत में भी काम करते ही हैं । खैर हम यह काम भी तो नही छोड सकते हैं चाहकर भी बंधुवा मजदूर जो ठहरे । एक नई कमाई का जरिया खुल जायेगा । बच्चो को पढने लिखने में मदद मिल जायेगी । सभी तो कह रहे हैं फायदे का धंधा है बाकी अपनी किस्मत। पुराना काम भी तो चलता रहेगा उसको कहा बन्द कर रहा हूं । वैसे भी बन्द भी तो नही कर पाऊंगा । मालिक लोगों के जाल में फंस गये तो निकलने कहा देते हैं । यही तो पुरानी परम्परा हम गरीबो के पैर में बेडी साबित हो रही हैं । ना सकून की जिन्दगी जी पा रहे हैं न ही कोई तरक्की ही कर पा रहे हैै ।सरकारी योजना है हो सकता है अपनी किस्मत चमक जाये । अरे आशा पर ही तो दुनिया टिकी हैं । देखना जरूर फायदा होगा ।

सोनरी--ठीक हैं उठा लो फायदा । अगर इससे भला होने की गुजाइस हैं तो ले लो कर्जा ।खोल दो ामियाने का धंधा । मुझसे जो होगा मैं भी कर लिया करूंगी । हिसाब किताब तो राजू भी रख सकता हैं ।

प्रेमनाथ-हां ठीक कह रही हो ।घर भर लगेगे तभी तो कुछ फायदा होगा । किस्त भी समय पर भरनी होगी । इसलिये जो जिस लायक हैं वैसे ही जुटना पडेगा ।

प्रेमनाथ कागजी कार्रवाई पूरी कर जिला मुख्यालय की एक शामियाने के आढती की दुकान से ामियाना ले लिया । पूरे शहर में यही एक दुकान थी ।पच्चीस हजार का कर्जा था दस हजार का समान मिला । पच्चीस हजार का चेक सरकार ने आढती को दे दिया ।

सोनरी-शामियाने को देखकर बोली क्यो जी शामियाने में तो और भी समान रहता हैं कम समान तो नही है ।छोलदारी रस्सी बांस बल्ली ये सब कहा हैं ।

प्रेमनाथ-बांस बल्ली की व्यवस्था तो खुद को करना है । गांव के सेक्रेटरी और आढती दोनो कह रहे थे । छोलदारी और रस्सी सब इसी गट्ठर में है ।

सोनरी-दुकान पर खोलकर पूरा शामियाना देखा नही क्या । एक एक समान देखना था ।

प्रेमनाथ- हमने तो कुछ नही देखा । उतना बडा आढती और गांव के सेक्रेटरी की बातो पर तो विश्वास था । उनके कहने के अनुसार मैं समान ले आया ।

सोनरी-तब तो ठग दिया सबने मिलकर ।

प्रेमनाथ-क्या कह रही हो । सरकारी अफसर और उतना बडा सेठ झूठ बोलेगे क्या ।विश्वास भी तो कोई चीज हैं ।

सोनरी-विष्वास लेकर खाओे । ठगा गये राजू के बापू । पच्चीस हजार कम रकम तो होती नही । ओर शामियाना इतना भी छोटा नही होता जितना तुम ले कर आये हो ।तुम ठगा गये मुझे तो डर लग रही है । गठरी में जो शामियाना हैं उसके अन्दर चिथडा तो नही भरा हैं । खैर थोडा अराम कर लो इसके बाद बच्चों को लेकर पूरा फैलाकर देंखना ।ं एक एक समान देखो अगर कम हैं तो सेक्रेटरी से बात करो जाकर ।

प्रेमनाथ-अब क्या होगा । सेक्रेटरी ने चेक भी तो दे दिया हैं आढती को ।ठीक हैं पहले शामियाना खोलकर देख ले इसके बाद जो कुछ हो सकता हें करेगे । सेक्रेटरी से बात करेगे ।

सोनरी-ठीक है ।अभी तो अराम करो । कल देखना जो होना था होगा ही गया है।

दूसरे दिन प्रातः प्रेमनाथ जल्दी उठा और राजू को लेकर पूरा शामियाना फैला डाला ।छोलदारी पूरी नही थी शामियाना भी पुराने जैसा था इतना ही नही कई जगह बहुत ज्यादा कटा फटा था । शामियाना की हालत देखकर प्रेमनाथ को घबराहट होने लगी । उसकी छाती में दर्द होने लगा । वह गिरते गिरते बचा ।बेचारा माथा ठोकर बैठ गया ।

सोनरी-देखो जी इस तरह से परेशान होने से कुछ होने वाला नही है ।इसकी िशकायत ब्लाक पर जाकर बी.डी.ओ.साहेब से करो सेक्रेटरी से करो । यही एक रास्ता हैं । आढती से तो लडने से रहे ।आढती तो इल्जाम लगा जेल में भी ठूंसवा सकता हैं ।यह भी कह सकता हैं कि सारा समान तो यहां से ले गये ।बेचंकर मेरे उपर इल्जाम लगा रहे हो । वही खोल कर देखना था। यदि वही देख लेते तो यह हाल तो नही होता ।

प्रेमनाथ-राजू की मां यह तो हम बुरे फंस गये । सोचा था क्या हो रहा है क्या ।

प्रेमनाथ ब्लाक आफिस जार िशकायत भी कर आया पर हुआ कुछ भी नही । अन्त कटे फटे शमियाने की मरम्म्त करवानी पडी । बांस अलग से खरीद कर टंगने की व्यवस्था करनी पडी । खैर बडी मुिश्कल से प्रेमनाथ शमियाने का व्यवसाय शुरू कर पाया ।कुछ आमदनी भी होने लगी पर दबंग लोग उपयोग अधिक करते किराया कम देेते । गरीब आदमी कर भी क्या सकता था ।धीरे धीरे करके गांव में भी कई लोग इस धंधे से जुड गये ।अब प्रेमनाथ को लगन भी कम मिलने लगी । लोग के पास और अच्छे और नये शमियाने आ गये थे । लोग नये शमियानो पर ही टूटते पुराने की पूछ परख ही नही रही । कोई आता भी तो पैसा भी महीने दो महीनों में देता । कुछ लोग तो फोकट मे ामियाना लगवाना चाहते ।कई तो पैस भी न देते। कुछ लगवा लेते बाद में कहते तुम्हारा शमियाना तो फटा था । बहसबाजी हो जाती । बेचारे को पैसा भी नही मिलता । बेचारा गरीब आदमी किस किस से लडे । प्रेमनाथ निराश हो गया । नतीजन शमियाना खूंटी पर टंग गया ।

ामियाने का धंध बन्द होते ही सोनरी परेशान हो गयी वह रूअंसाी होते हुए प्रेमनाथ से बोली क्यो जी अब क्या होगा सारा सपना चकनाचूर हो गया । कर्जा कैसे भरेगे वह

भी सरकारी मुझे तो डर है कि सरकार के लोग घरद्वार कुर्क ना कर दे । यदि ऐसा हो गया तो हम बच्चों को लेकर कहां जायेगे ।

प्रेमनाथ- भरना तो पडेगा । सरकारी कर्जा हम गरीब लोग कहां पचा पायेगे । ऐसा तो बडे लोग ही कर सकते है । कुछ तो भर ही गया हैं कुछ ही बाकी हैं ।

सोनरी-मालिक का हल जोत कर इतना पैसा कैसे इक्टठा होगा । यह तो बहुत बडी विपति सिर पर आ गयी हैं ।

प्रेमनाथ-देखो घबराओ नही । जो किस्मत में होगा वह तो होगा ही । मै। भी हर सम्भव प्रयास करूंगा कि कर्ज माफ हो जाये । बडे बडे लोगो के तो बडे बडे कर्ज माफ हो जाते है । हम ने तो कुछ भरा भी हैं ।हमें तो समान ही खराब मिली थी । इस बात की शिकायत ब्लाक पर किया था । मैं कर्ज माफी के लिये आवेदन लगाउूंगा । भगवान ने चाहा तो माफ हो जायेगा । अब कान पकडता हूं ऐसा धंधा कभी ना करूगा ।

कर्ज की माफी का सुनकर सोनरी की आंखों में चमक आ गयी ।वह प्रेमनाथ से बोली जब कर्ज माफी के लिये आवेदन ही लगाना है तो इतनी देरी क्यो कर रहे हो ।जल्दी करो । मालिक से भी सलाह कर लो । बडे लोग हैं कोई ना कोई जान पहचान तो होगी ही ।कर्जा माफ हो जाता तो चैन से सांस भरते । अभी तो नीदं भी आंख से गायब हो गयी है । सौ दौ सौ तो कर्जा हैं नही बीस हजार की बात हैं ।इतना तो घर बेचने पर भी नही इकटठा होगा । देर मत करो जल्दी करो । जितना जल्दी हो आवेदन कर दो ताकि जल्दी से जल्दी छाती का हल्का हा जाये ।

प्रेमनाथ तुम चिन्ता ना करो ग्राम सेवक से मिलकर आवेदन लगा दूंगा । किस्ते भी तो अभी तक लगातार भरता ही आ रहा हूं। अब किस्त कैसे भरू जब धंधा एकदम से बन्द ही हो गया तो । मालिक के खेत मे हल जोतने से तो कर्जा भरा नही जायेगा। इस मजदूरी से बडी मुश्किल से नमक रोटी का इन्तजाम हो पाता है ।

सोनरी-हां धंधा तो बिल्कुल ही बन्द हो गया है । अब किस्त कैसे भरेगे चिन्ता खाये जा रही है । जल्दी आवेदन लगाओ ताकि कर्ज माफ हो जाये । सूद भी बहुत तेजी से बढता हैं ऐसा कुछ लोग कह रहे है । मुझे तो डर लग रहा है कि घर की कुर्की ना हो जाये ।

प्रेमनाथ-मै मालिक के खेत में काम करने कल नही जाउूंगा ब्लाक जाकर आवेदन लगाउूंगा । मैं मालिक से बोल कर आता हूं । कल सबेरे ही ब्लाक चला जाउूंगा । यदि जल्दी कुछ नही हुआ तो बडी मुसीबत हो जायेगी ।जेल भी हो सकती है ।

प्रेमनाथ आवेदन लगा आया पर कई महीनों के बाद पता चला कि कर्ज माफ ही नही होगा । किस्ते तो भरनी ही पडेगी । प्रेमनाथ के उपर एक विपति आ गिरी ।गहना गुरिया बनवाना तो दूर अब आशियाने की कुर्की का भूत सताने लगा । प्रेमनाथ शमियाना बेचने के लिये भटकने लगा । कोई भी खरीददार तीन चार सौ से ज्यादा देने को राजी नही होता बीस हजार के शमियाने की कीमत । सरकारी कागज में तो उसकी कीमत बीस

हजार ही थी । वास्तव में वह इतने का था नही । खैर मरता क्या ना करता ।प्रेमनाथ शमियाना बेच दिया एक शमियाना व्यवसायी को मात्र चार सौ रूपये मे ।

प्रेमनाथ शमियाना बेचंकर माथे पर हाथ रखकर बैठकर सोनरी से कहने लगा राजू की मां किस्मत ने साथ नही दिया नुकसान हो गया । क्या देखे थे सपने सब उजड गये ।

सोनरी-अपनी किस्मत ही खोटी हैं । क्या करोगे प्रयास तो बहुत किये किस्मत बनाने का पर नही बनी ।बहुत गहना गुरिया बनवा रहे थे । अब तो धंधा ही बन्द हो गया ।सरकारी कर्ज तो छाती पर सवार हैं । सपना कहां गरीबो का पूरा हुआ है कि अपना होता । चलो बहुत देख लिये सपने । फोड लिये हाड । गरीबो की किस्मत में कहां चमत्कार होता हैें । चलो माथे पर हाथ रखकर बैठने से काम नही होगा । अब क्या होने वाला है बहुत गढवा दिया तुमने चन्द्रहार ।

॥उन्नालीस॥

शमियाने के धंधें में हुए घाटे और सरकारी कर्ज भरने की चिन्ता में प्रेमनाथ काफी चिन्तित था ।उसका दिन का चैन रात की नींद गायब हो चुकी थी ।वह ाम के वक्त नीम की छांव में चिन्ता की चिता पर सुलगता हुआ हुक्का गुडगुडा रहा था धीरे धीरे ।इतने में राजू ीतल वायु के झोंके के समान आया । साइकिल खडी किया और अपने बापू प्रेमनाथ का चरण छू कर बगल में खडा हो गया ।

प्रेमनाथ-बेटा आज बहुत खुश हो । कोई खास बात हैं ।

राजू-हां बापू । खुशी की बात हैं ना । ये लो ।

प्रेमनाथ-बेटा ये तो रूपाया हैं ।

राजू-हां बापू वही तो हैं ।

प्रेमनाथ-कहां से मिला है रूपाया बेटा ।

राजू-बापू वजीफा का रूपया है ।सरकार की ओर से मुझे मिला हैं पाढाई के लिये ।

प्रेमनाथ-खुशी से चिल्ला उठा अरे राजू की मां जल्दी आ । ये राजू क्या कह रहा है ।अब तो राजू को सरकार पढने के लिये वजीफा देगी । मेरा राजू पढ लिख कर बडा साहेब बनेगा । अरे भागवान जल्दी आओ । क्या कर रही हो । जल्दी करो । मेरी बात तो सुनो ।

सोनरी-आयी क्यो घर सिर पर ले रहे हो । कोई खजाना के चाभी मिल गया क्या । इतने उतावले हो रहे हो जैसे गडा धन मिल गया हो ।सोनरी बोलते हुए बाहर आयी । राजू अपनी मां का भी चरण छूने का झुका ।सोनरी राजू को गले लगा ली और बोली जुग जुग जीओ मेरे लाल ।

प्रेमनाथ-बेटा अपनी मां को तो अपने मुंह से खुशखबरी सुनाओ ।

राजू-हां मां सचमुच खुशखबरी हैं । अब मुझे पढाई पूरी करने के लिये वजीफा मिला करेगा । बापू के हाथ मे जो रूपाया हैं वजीफा का ही है मां । इसीलिये तो बापू तुमको बुला रहे थे ।अब मेरी पढाई के खर्चे की फिक्र करने की जरूरत नही होगी मां ।

सोनरी दुआये देने लगी ।राजू के सिर पर हाथ फेरते हुए बोली क्ह रे भगवान मेरी प्रार्थना कबूल कर लिया । मरो राजू अब खूब पढ लिख सकेगा ।

प्रेमनाथ- राजू की मां आज तो खुशी का दिन है बेटवा के रास्ते तो अब खुल गयो हैं । अब बेटवा की पढाई का खर्चा सरकार दे देगी खैर ज्यादा नही तो कम ही सही इससे मदद तो हो ही जायेगी ।बेटवा की किताब कापी और फीस का काम तो चल ही जायेगा वजीफे से । भगवान भला करे संविधान बनाने वालों का जिसने गरीबो के उध्दार के लिये सोचा । नही तो मेरा बेटा कैसे आगे पढ पाता । बेटा खूब पढाई करो आगे बढो । वजीफा का फायदा उठाओ । वजीफा नही मिलता तो मेरा बेटा कैसे पढाई पूरी कर पाता। हम चाह कर भी नही पढा पाते । बेटा कर दो मिशाल कायम अपने गांव में ।लोग कहे की प्रेमनाथ का बेटा राजू सामाजिक उत्पीडन और गरीबी का जहर पीते हुए भी गांव का नाम रोशन कर दिखाया है ।आज तो मेरा दिल बागबाग हो गया हैं राजू । तू नित तरक्की के शिखर चढता रहे यही मेरी दुआ है ।

सोनरी-बहुत खुशी की बात है। पतझड में बसन्त का एहसास होने लगा हैं ।सोनरी और प्रेमनाथ आपस में बाते ही कर रहे थे कि डरपति आ गये ।सोनरी ओर प्रेमनाथ की खुशी को ताडकर बोले क्या बात है भइया प्रेमनाथ बहुत खुश लग रहे हो । हमें भी तो जरा बताओ । हम भी खुशी में भागीदार बने ।

प्रेमनाथ-भइया अवनी उम्मीद जाग गयी है । खुशी की ही बात है । अब बेटवा की पढाई पूरी हो सकेगी । आज मन को बहुत सकुन मिल रहा हैं ।

डरपति -वह कैसे भइया । कौन सी रोशनी मिल गयी है ।

प्रेमनाथ -बेटवा को ऊची पढाई करने की ।

डरपति-बेटवा तो अभी प्ढ ही रहा है ना ।

प्रेमनाथ -हां पढ तो रहा ही है । अब ऊंची पढाई का भी रास्ता साफ हो गया ना ।

डरपति- वो कैसे भइया हमें भी तो बताओ ।

प्रेमनाथ -बेटवा को वजीफा मिलना शुरू हो गया है अब ।

डरपति-बहुत बढिया खबर सुनाया प्रेमनाथ तुमने आज ।मन खुश हो गया । अपने गांव का भी तो कोइ्र नाम रोशन करने वाला होगा । भगवान भला करे राजू खूब तरक्की करे । इस गांव का नाम रोशन हो । भगवान बेटवा की मनोकामना पूरी करना ।

प्रेमनाथ -भइया आप लोगो के आर्षीवाद का ही परिणाम तो है । अपनी कहा औकात हैं कि बेटवा को पढा पाता ।

डरपति-भइया वो दिन भी हमने देखे हैं । जब हमे स्कूल तक नही जाने दिया जाता था ।आज अपनी औलादो को पढने के लिये सरकार वजीफा भी दे रही हैं ।इससे गरीबो को उध्दार जरूर होगा ।

प्रेमनाथ -हां भइया हमने बहुत सामाजिक उत्पीडन झेले हें । उसी का नतीजा है कि हम इतने गरीब हैं ।हमे और हमारे पुरखों को तो बन्द गली का आदमी बनाकर रख दिया था

सामाजिक उत्पीडन ने पर सरकार ने उस पुरानी बडी को तोड दिया हैं । हमारी औलादे भी पढ लिख कर उूची उडान भर सकती हैं । जिन्हे बूढी सामाजिक व्यवस्था ने कैदी बनाकर रख दिया था अब उनके भी सपने पूरे होेने के दिन आ गये हैं । अपनी औलादे भी मन चाही उूची उडाने भरेगी ।

डरपति-ठीक कह रहे हो प्रेमनाथ सचमुच हम बन्द गली के आदमी होकर रहे गये थे पर अब गली के मुंह पर लटका ताला टूट चुका हैं । हम भी समानता का अमृत चख सकते हैं । इंसान होने का सुख जो मुझ से छिन लिया गया था । अब वह मिल रहा हैं । प्रेमनाथ वक्त तो लगेगा पर हम भी तरक्की की राह पर चल सकेगे जो हमारे लिये बन्द कर दी थी बूढी सामाजिक व्यवस्था ने ।हमारे बच्चों को पढने लिखने का मौका मिलने लगा हैं वे भी पढ लिखकर बडे बडे ओहदेदार बन सकेगे ।सच सरकार ने तो पत्थर पर दूब जमा दिया है ।

प्रेमनाथ - हां भइया ।

डरपति-सचमुच अब लगने लगा है कि हम आजाद देश में रहते हैं । खैर अभी तरक्की तो दूर हैं पर उम्मीद पूरी तरह से है कि हमे भी अवसर मिलेगे ।सामाजिक बुराईयां तो अभी भी जवां हैं ।इस बुराई को समूल खत्म करना होगा । यह काम सरकार और समाज दोनो का होगा । जब तक सामाजिक बुराई खत्म नही होगी तब तक तरक्की की बयार नही चल पायेगी ।सामाजिक बुराई देश और समाज दोनो की तरक्की की बाधक है ।

प्रेमनाथ -हां भइया कुछ भी पर अब अपनी औलादे भी अपना जौहर दिखा सकती है । हमारी औलादो में भी ताकत हैं पर उन्हे जौहर दिखाने का मौका ही नही मिल पा रहा था । अब बन्द गली का दरवाजा खुल गया हैं हमारे लोग भी उूची उूंची उडाने भरने को स्वतन्त्र तो हो गये है ।

डरपति-हां भइया अब वंचितो का भी उध्दार हो जायेगा इस प्रजातन्त्र में ।अब हमारे लोग सोने-हीरे की भांति चमके के भारत मांता के गले में ।

सोनरी-अरे सोने-हीरे के गहने कहां से बीच में टपक पडे ।

डरपति- तुम गहनों की बात कर सकती हो तो हम क्यो नही ।

सोनरी-बात ही नही कर सकते गढवा कर भी तो ला सकते है। किसने मना किया हैं । खूब गहना गढवाओ । अभी तो पढाई लिखाई और उंची उडान की बात हो रही थी । अब गहने का बात चलने लगी वह भी सोने-हीरे मोती के गहनो की ।

डरपति-अरे तुम औरतो को तो बस गहना ही गहना दिखायी पडता है । गहना के और भी कई मतलब हो सकते है ।

सोनरी-और क्या क्या होते है ।

डरपति-क्या हमारे बच्चे अपने और अपने देश के गहने नही है ।

सोनरी-अच्छा तो इस गहने की बात चल रही थी ।हमारे बच्चे क्यो नही देष के गहने हैं । अरे हमारे बच्चों को मौका मिले तो वे भी बडे बडे काम कर दश का नाम दुनिया में

राशन कर सकते हैे ।खैर अब शुरूवात हो गयी हैं । हमारे बच्चे देश के लिये सोन हीरेे का गहना साबित होगे ।

डरपति-जरूर होगे सोनरी।बस तुम्हारे जैसे हर वंिचत अपने बच्चो को पढाना सुनिि‍श्चत कर ले ।

सोनरी-जरूर वंचित लोग भी पढाई लिखाई के महत्व को समझेगे ।अपने बच्चों को पढाये लिखाये उूचे उूंचे ख्वाब देखे ।

डरपति-हां सोनरी ठीक कह रही हैं ।

सोनरी-अपनी औलादे ही तो गहना हैं मां बाप के लिये देश समाज के लिये ।

डरपति-शाबास सोनरी ।तुम्हारी ख्वाहिशे जरूर पूरी होगी । चाहे वे सोने चांदी के गहने की हो या और कोई ।राजू का भविप्य अच्छा दिखाई पड रहा है।

सोनरी को डरपति की बात सकून देने लगी जैसे प्रचण्ड धूप में बरगद की छांव ।बात के सिलसिल को देखते हुए प्रेनाथ बोला राजू की मां बातों बातो में कितनी देर हो गयी । भइया का मुंह तो मीठा करवाओ ।

सोनरी झटपट उठी । कटोरी में गुड लोटे में पानी लेकर आयी औैर बोली लो जेठ जी खुषी के मौके पर मुंह तो मीठा करो ।

डरपति-क्यो नही ।भगवान तुम्हारी मुरादे पूरी करे ।खूब फलो फूलों मेरी दुआये तुम्हारे साथ है । तुम्हारे गले में किलो भर की चांदी की हंसुली हो ।

सेनरी -जेठ जी आप भी..................

॥चालीस॥े

प्रेमनाथ के घर की खुषी की आहट बस्ती से होती हुई दूर दूर के गावं तक पहुंचने लगी कि प्रेमनाथ का बेटा राजू पढाई में अव्वल आ रहा है ।पढाई पूरी होते ही उसे सरकारी नौकरी मिलने की पूरी उम्मीद है । दूर के ढोल सुहावन वाला बाद चरितार्थ होने लगी। नतीजन राजू के ब्याह के लिये रिश्ते आने लगे।कभी बस्ती वाले अपनी जान पहचान के लाते तो के कभी रिश्तेदार।एक दिन दूर के रिश्तेदार गोबरदास रिश्ता लेकर आये और प्रेमनाथ पर चारो ओर से दबवा बनाने लगे राजू का ब्याह करने के लिये । प्रेमनाथ भी बेटे का बालब्याह नही करना चाहता था । बार बार मना करता रहा पर महन्थ ने कहा प्रेमनाथ इस बार मना नही करना । बडी उम्मीद से रिश्ता लाया हूं इज्जज रख लो ।

प्रेमनाथ -देखो गोबरदास बेटा के लक्षण अच्छे दिख रहे हैं । पढने लिखने में उसकी रूचि हैं । पढ लिख लेने दो । बेटा पढ लिखकर सरकारी नौकरी पा जायेगा तब ब्याह करेगे । बालब्याह की परम्परा खत्म होनी चाहिये गोबरदास । बेटवा को पढने दो क्यो उसकी राह रोक रहे हो । ब्याह होने से बेटवा का भविप्य खराब हो सकता है ।ब्याह हो जाने से जिम्मेदारी तो बढ जायेगी । बेटवा के सपनो पर विराम मत लगाओ गोबरदास । ब्याह होने के दो साल बाद ही गौना का चिल्लाने लगेगे लडकी वाले तब क्या होगा ।मैं

राजू का ब्याह अभी नही करना चाहता ।कम से कम पढ लिख तो जाने दो ब्याह तो होता रहेगा । मैं ब्याह करने की मना तो नही कर रहा हूं ।

गोबरदास- प्रेमनाथ बेटवा का ब्याह तो करोगे ही । यह तो मै। भी जानता हूं मानता हूं ।ऐसा रिश्ता बार बार नही आयेगा ।लडकी का बाप सरकारी नौकरी में हैं ।लडकी अच्छी है ब्याह करने में बुराई क्या है । बिरादरी में सभी तो कर ही रहे है ।अरे अपने ब्याह को तो देखो कब हुआ था तुम्हारा ब्याह था ।याद है भी कि नही ।तुम्हारे जैसे राजू भी सम्भल जायेगा । तुम तो स्कूल भी नही गये राजू तो पढ रहा है। खुद अपना बुरा भला सोच सकता हैं । बिरादरी में और भी तो लडके पढ रहे है सभी के ब्याह हो रहे है तो राजू का क्यो नही । देखो आगे बढना किस्मत में लिखा होगा तो कोइर् नही रोक पायेगा । यह भी तो हो सकता हें । इसी लडकी की वजह से राजू की भी किस्मत चमक जाये । कौन जानता है किसके भाग्य में क्या लिखा है ।

प्रेमनाथ -गोबरदास बेटवा के गले में जुआठ डालना अभी ठीक नही होगा ।

गोबरदास-देखो प्रेमनाथ इतना अच्छा रिश्ता तो कभी नही मिलेगा । अच्छे लोग हैं पढा लडकी का बाप हैं । तुम तो कुछ समझते ही नही ।ठहरे ठसबुध्दि ।बढिया रिष्ता हैं ठुकराओ मत । मत इत्मीनान से सोच लो ।

प्रेमनाथ - पढ लिखकर अपने पैरो पर खडा होकर ब्याह करेगा ।उसका मन पढने लिखने में है तो पढ लिख लेने दो गोबरदास क्यो बेटवा की पढाई बन्द करवाना चाह रहे हो । अब तो बेटवा को वजीफा भी मिलने लगा है । पढ लिख लेने दो जिस लडकी का रिश्ता लाये हो उसी से ब्याह करवा देना पर कुछ बरस और ठहर कर ।बेटवा पढ लिखकर खुद अपनी मर्जी से पढी लिखी लडकी से ब्याह करता तो ठीक रहता । ऐसा हमारे घर के सभी सोच रहे हैं । ताकि हमारी आज की पीढी तो पढी लिखी हो ।

गोबरदास- क्या कह रहे हो प्रेमनाथ बेटवा अपनी मर्जी से ब्याह करेगा । मतलब मां बाप अपने फरज से मुक्ति ले लेगे । क्या समाज की नाक कटवाओगे । बेटवा खुद की मर्जी से ब्याह करेगा ।अब तो तुम यह भी कहोगे कि खुद लडकी भी पसन्द करेगा । अरे पे्रमनाथ हम अंग्रेजो के गुलाम जरूर रहे पर अंग्रेज नही हो गये हैं ।

प्रेमनाथ -ऐसे ब्याह में कोई बुराई तो नही है गोबरदास।

गोबरदास-बाप दादा की परम्पराओ का क्या होगा । दो अक्षर लडका पढ क्या लिया पूरा समाज बदलने की बात करने लगे प्रेमनाथ । अरे अभी हमारे समाज को अपने पैरो पर खडा होना सीखना पडेगा । अभी भी तो हमारी बिरादरी के लोग गुलामगीरी कर रहे हैं । जमीदारो के पहले में गुलाम थे आज भी गुलाम हैं । हां पहले दोनों तरफ से गुलाम थे अंग्रेजो और जमीदारों के पर अब सिर्फ जमीदारो के रह गये हैं । अभी इस गुलामी से उबरने के लिये सदियों को समय लगेगा ।

प्रेमनाथ -जमीदारो की गुलामगरीरी और पढाई लिखाई में अन्तर हैं । पढा लिखा जमीदारो का हल जोतेगा नही परदेस जाकर भले ही मेहनत मजदमरी कर लेगा । दूसरे

जमीदार भी पढे लिखों की लिहाज करेगे महन्थ साहेब ।हमे पुरानी और कुप्रथाओ को तोडना चाहिये तभी हमारे बच्चे तरक्की की राह पर चल पायेगे । जो भी परम्पराये समाज की उन्नति में बाधक हो उन्हे खत्म कर देनी चाहिये ।चाहे बाल विवाह हो जातिवाद हो या छुआछूत हो ।इन सब बुराईयों को खत्म कर ही समतावादी समाज की स्थापना हो सकती हैं । बालविवाह भी एक बुराई हैं गोबरदास आप मानो चाहे मत मानो ।

गोबरदास-अरे वाह बेटवा स्कूल जा रहा हैं बाप उपदेश देने लगा हैं ।अरे प्रेमनाथ अभी बेटवा पढ रहा हैं । पढ लिख जाने के बाद ही सरकारी नोकरी मिल सकती हैं वह भी रूपया और पहुंच वालों को ही मिलती हैं । सपना मत देखो । मै ये नही कह रहा हूं कि सपना मत देखो । देखो पर अपनी हैसियत को देखकर ।वही सपना देखो जिसे पूरी करने की औकात हो ।अभी तो दो रोटी का पुख्ता इंन्तजाम भी नही हैं । पढे लिखे सरकारी नौकरी वाले बाप की बेटी से ब्याह करवा रहा हूं । सिर्फ सपनों से पेट नही भरता ।मेरी बात पर गौर करना मैं जा रहा हूं । बाद में आ जाऊंगा तुम्हारा आखिरी विचार जानने । मैं जा रहा हूं ठण्डे दिमाग से सोच विचार लेना ।इसके बाद ही बात आगे बढाऊंगा ।लडकी वाला को राजू पसन्द आ गया हैं । बेटा दो जमात पढ क्या लिया जैसे बीए पास कर लिया हो ।बी.ए. करने के बाद क्या गारण्टी है कि तुम्हारा बेटा कलेक्टर बन जायेगा । हो सकता है आज जिस रिश्ते को ठुकरा रहे हो । कल वही मना कर दे । अरे इज्ज्त बनाओ प्रेमनाथ । झूठे सपने से कुछ नही होता ।

प्रेमनाथ -गोबरदास मैं तो यही नही समझ पा रहा हूं कि तुम मेरे और मेरे बेटे की भले की सोच रहे हो या बुरे की ।

गोबरदास-प्रेमनाथ तुम्हारे जैसे मेरी मति तो नही मारी गयी है ।मैं तुम्हारे बुरे की सोचता तो इतना अच्छा रिश्ता लेकर आता । इतनी सुन्दर लडकी का रिश्ता राजू के लिये लाया हूं इस गांव में वैसी लडकी कोई नही होगा । खैर बेटवा तुम्हारा हैं मालिक तुम हो । तुमको हक है भइया सोचने विचारने का । अपनी मर्जी के मालिक हो । ठण्डे दिमाग से सोच लेना फिर मैं आ जाऊंगा । तुम्हारी आखिरी राय जानकर ही लडकी वालो को जबाब दूंगा ।

प्रेमनाथ -ठीक हैं मैं भी सोचूंगा गोबरदास। घर में सलाह करूंगा जब आओगे तब अपना अन्तिम फैसला सुनाऊंगा वैसे आप इसे भी मान ही सकते हो पर जब इतना जर्बदस्ती कर रहे हो तो सोच समझ कर बता दूंगा आपके आने पर गोबरदास।

अब क्या था प्रेमनाथ के उपर बेटवा के ब्याह के लिये दबाव बढने लगा ।लेकिन प्रेमनाथ बेटवा का ब्याह करने से बच रहा था क्योंकि बेटवा की ऊंची उड़ान का ख्वाब था प्र्रेमनाथ को ।वह राजू की लगन को देखकर गुनगुनाता ।

बेटवा छू ले आसमान मेरा, मिट जायेगे जख्म के निशान सारे ।
बडी तम्मना पाली है हमने दिल में, आंसूओ से सींचकर प्यारे ॥

महक जाये बगिया मेरी, यही हैं अरमान,गुजारिस हैं खुदा तुमसे ।
गरीबी पडी है पीछे,देख रहा है प्रभु, हाल बयां करू किससे ॥
भूल जाऊंगा दुनिया के गम सारे सुन ले भगवान अरज हमारे ।
ना मांगा अब तक कोई वर प्रभु तुमसे, कष्ट हर ले सारे ॥
कबूल कर ले मेरी अराधना,गरीब के चौखठ खुशियां बरसे ।
ख्वाब यही प्रभु राजू की देख ऊंची ऊंची उडान्हर मन हरसे ॥

प्रेमनाथ को अपने और आपने परिवार का उज्जवल उज्जवल भविप्य अब सिर्फ राजू में दिख रहा था । वह अब तक अपने और परायों के दर्द से विहवल था ।लेकिन राजू की पढाई को लेकर सजग । लेकिन वह चिन्तित रहने लगा था बेटे के ब्याह के बढते दबाव को देखकर ।जातीय लोग परजातीय लोगो के माध्यम से दबाव बनाने लगे थे ताकि प्रेमनाथ बेटवा के ब्याह के लिये राजी हो जाये । कई लोग तो ऐसे भी रिष्ते लेकर आये कि ना गहना चढाना ना कोई और खर्च करना सब लडकी वाले करेगे इतना ही नही राजू की पढाई का खर्च भी लडकी वाले ही उठायेगे । प्रेमनाथ का गरीब मन ऐसे लालचो से भी विचलित नही हुआ । जातीय लोगो के साथ परजाति के लोग राजू की पढाई का मजाक करने लगे । एक दिन गांव के एक जमीदार सोनरी से बोले अरे सोनरी अभी से रियाज करने लगी है जूता चप्पल पहन कर ऊंची जाति के लोगो के घर आने जाने का । बेटवा तो अभी पढ रहा है । ब्याह भी तो नही किये हो कि मोटी रकम मिल गयी हैं कि बनठन कर घर से निकलने लगी हो । अरे दूसरों के खेतो मे काम करने वाली हमारी कोठी चप्प्ल पहनकर आने लगी है अभी से । इन्द्रलोक की परी ना बनो । बेटवा दो अक्षर पढने क्या लगा हैं । भाव बढ गये हैं । ब्याह करने से मना कर रहे हैं । कोई ऊची जाति की दुल्हन लाने का इरादा है क्या । ऐसा सोचा भी ना कभी सपने मे ।इतना घमण्ड अभी से अच्छा नही हैं ।अभी तो बेटवा पढ रहा हैं । तुम्हारा ही बेटवा नही प्ढ रहा हैं और भी बहुत सारे लडके इस गांव में पढ रहे हैं छोटी ही नही बडी बडी जाति के बडी बडी कक्षाओं में । जिनका ब्याह भी हो गया हैं । तुम बेटवा को कलेक्टर बना रहे हो । अरे अच्छी बात हैं पर जिस दिन बेटवा तुम्हारा कलेक्टर बन गया तो तुम्हारा पैर तो जमीन पर ही नही पडेगा ।

सोनरी-क्या कह रहे हो मालिक । क्यों मेरी गरीबी का मजाक उडा रहे हो ।भगवान करे मेरा बेटवा कलेक्टर हो जाये ।मालिक आपकी बात सच हो जाती तो मैं मंदिर मस्जिद गुरूद्वारे हर भगवान की चौखट पर मत्था टेकती।मालिक आपके मुंह में घी शक्कर आपके वचन सच हो जाये ।

मालिक तूफानचन्द-अरे सोनरी बडी बडी बाते अभी से ना कर । अभी तो दूसरो के खेतो में तुमको क्या तुम जैसे औरो को हाड फोडना हैं । क्यो अपनी औकात भूल जाते हो तुम लोग । सुना हैं तेरे बेटवा को देखने वाले आये थे तुमने भगा दिया । अरे ऐसा करोगे तो कोई तेरे बेटे का ब्याह भी नही करेगा अपनी लडकी से । इतना अभिमान ठीक नही हैं ।

सोनरी-कैसा अभिमान मालिक ।हम गरीबो के पास अभिमान नही होता बस होता हैं तो परिश्रम जिसके भरोसे रोटी की जुआड हो जाती हैं । अिभ्‍ामान तो बडे लोगो को होता हैं । ना जाने क्यो मेरे बेटवा की पढाई लोगो से देखी नही जा रही है ।

मालिक तूफानचन्द्र-अरे इतनी उन्नति कम हैं चप्पल पहनकर हमारी चौखठ तक आ गयी ।तेरा बेटवा कलेक्टर बनेगा । तू चुनाव लडेगी । मन्त्री प्रधानमन्ती बनेगी । सोचो कितना अच्छा होगा । हम भी तुम्हारे सामने गिडगिडाया करेगे कभी जैसे तुम गिडगिडाया करती हो ।बेटवा का ब्याह मत करो । पढने दो । अच्छी तरक्की तुमने कर ली सोनरी बेटवा को चार छः जमात पढा कर । सुना हैं अब तो तेरे बेटवा को वजीफा भी मिलने लगा है । जहरीले वाक्य प्रहार से सोनरी को घायल करते हुए ाोपक समाज का झण्डा उूंचा रखने वाले मालिक तूफानचन्द आगे बढ गये ।

सोनरी मूक सोचने लगी ये बडे लोग ना जाने क्यो गरीबो वंचितो को रौदना चाहते हैं। हम वंचितो की तनिक भी खुशी ना जाने इनसे क्यो सह जाती है ।ये लोग वंचितो का लहू पीने को सदा ही तैयार रहते है ।आज तक मेरे खानदान में कोई पढ नही पाया सामाजिक कारणबस। पहली बार मेरा बेटवा मेरे खानदान का पढा लिखा व्यक्ति बनना चाह रहा है पर लोगो को ना जाने जलन क्यो होने लगी है । पढ लिखकर आगे बढना कोई बुराई तो नही हैं अरे ठीक है हम वंचित हैं ।हमे वंचित किसने बनाया ।इन्ही लोगो ने ना जो खुद को बडा समझ रहे है ।इन लोगो को इतनी तकलीफ क्यो हो रही है ।मै अपने बेटवा को जरूर पढाउूंगी । मेरा राजू मेरा ख्वाब है । मेरे खानदान का गहना है ।

॥इक्कातालीस ॥

प्रेमनाथ राजू की पढाई को लेकर बिल्कुल सजग था जबकि वह कभी भी स्कूल कालेज नही जा सका था ।उसके बचपन में तो मंदिर कुये तालाब तक प्रतिबंधित थे ।बेचारा स्कूल कैसे जाता ।उसके चौखठ पर तो चौबीसो घडी अभाव उत्पीडन की दर्दनाक गूंज थी पर उूंची नाक वाला अंधा बहरा समाज बेखबर था इन चीखो से ।

अपनी अभिलाषा को पूरा करने के लिये सोनरी और प्रेमनाथ दृढसंकल्पित थे । राजू भी पढाई पर काफी ध्यान देता था ।स्कूल में भी राजू को परेशान किया जाता था । कुछ शरारती किस्म के लडके राजू की साइकिल पंचर कर देते । कभी हवा निकाल देते । िशक्षको से उसकी ि ाकायत लेकर कोई ना कोइर् छात्र खडा रहता जबकि राजू का किसी झगडे से लेना देना नही होता था । िशक्षक लोग भी राजू के बारे में अच्छी तरह जान गये थे । कुछ खुरापाती छात्र राजू को रास्ते में रोककर गाली गलौज तक करते रहते थे ।

स्कूल के पास खजेरा गांव बदमाशी के क्षेत्र में बहुत तरक्की कर चुका था । राजू के जाने का रास्ता उसी गांव से होकर जाता था । खजेरा गांव के उदण्ड लडके स्कूल को स्कूल ना समझकर दादागीरी का क्षेत्र समझते थे । इस गांव के छात्र स्कूल पर हावी रहते थे । दूसरे गांवों के छात्र इनसे भयभीत रहते थे । जब चाहे किसी को मार देते थे । अगर

कोई छात्र विरोध करता तो बुरी तरह से पीट डालते । इतना ही नही इस गांव के गुण्डे लोग भी आकर छात्रों को धमकाते । कई बार तो प्रिसीपल तक को मार दिया था पर कुछ नही हुआ इन गुण्डा किस्म के लडको का ।राजू के गांव का ही पियासानन्द राजू की क्लास में प्ढता था । वह भी खजेरा गांव के बदमाश किस्म के लडको से मिला हुआ था ।वह रह रह कर राजू पर धौंस जमाता रहता था ।

एक दिन शाम को घर आते वक्त पियासानन्द अपने गुण्डे साथियों के साथ सुनसान रास्ते पर रोकने लगा । राजू समझ गया वह खूब तेज साइकिल चलाकर भागने लगा वे लोग उसका पीछा करने लगे । बडी मुष्किल से राजू इन गुण्डो से बच पाया था । राजू को सदा इन गुण्डो से डर बना रहता था पर राजू पढाई नही छोडा भले ही पीट गया । पियासानन्द की आर्थिक स्थिति अच्छी थी । वह ्ाढाई पर कम मस्ती पर ज्यादा ध्यान देता था बाप भी उसके सरकारी नौकर में थे भाई भी । पियासानन्द नवीं क्लसा तो पास कर गया पर दसवी वह कभी नही पास कर पाया । भाईयो ने ठोकर मार दिया । वह शहर जाकर साइकिल रिक्शा चलाने लगा । सारी गुण्डागर्दी अब निकल चुकी थी । राजू दसवीं अच्छे नम्बरो से पास हुआ ।खजेरा गांव के लडको की निगाहो में राजू चढने लगा था । राजू कभी किसी से लडाई झगडा नही करता था । हां अपने भाई बहनो से लड ले वह अलग बात थी । बाहर तो वह बिल्कुल गांधी बाबा के सिध्दान्त पर चलता । यदि कभी कोई बात भी हो जाती तो उसे टालने की कोिशश करता लोग इसे राजू की कमजोर मान लेते । खैर कमजोर तो था भी यदि वह सम्पन्न था तो सिर्फ ज्ञान से ।राजू समझौता एवं आषावादी था । वह हमेशा बुरी संगत से बच कर रहता था । जब ज्यादा ही मुिश्कल बढ जाती तो वह िशक्षको के आगे गिडगिडा आता ।खेजरा गांव का जीवन जो क्लास का मानीटर था और बदमाष भी । खैर इस गांव को ना जाने किस महात्मा ने अभिशाप है ज्यादातर लोग बदमाश ही होते हैं ।खून खराबे से भी नही हिचकिचाते थे । जातिवाद के नाम पर भी राजू को परेषान करते जिसमे जीवन सबसे आगे रहता था । कभी कभी तो जीवन ब्लैकबोर्ड पर राजू की खिलफत में बुरे बुरे वाक्य लिख देता । कोई कुछ नही कर पाता । स्कूल के िशक्षक और दूसरे गांवों के छात्र खजेरा के बदमाषो से भय खाते थे ।

राजू सारी बाधाये का मुकाबला करते हुए पढाई में आगे बढता रहा है राजू स्कूल बिना किसी नागा के जाता था ।दुर्भाग्यबस एक दिन राजू की साइकिल पंचर हो गयी । पंचर बनवाने में देर हो गयी । स्कूल पहुंचा तो वहां प्रार्थना शुरू हो गयी थी । वह साइकिल खडा कर ही रहा था कि खजेरा गांव का गुण्डा ताडक राजू को बुलाने लगा । राजू ताडक को अनसुना कर प्रार्थना स्थल की ओर बढने लगा।ताडक नाममात्र का छात्र था । वह तो गुण्डई चोरी डकैती के कामो में लिप्त था । वह राजू को दादागीरी के अंदाज में पुनः आवाज दिया । राजू की घिघि बध गयी।वह दौड कर आया और राजू का रास्ता रोक

दिया । वह राजू से बोला क्यो रे राजू तेरी पढाई तो ठीक ठाक चल रही है ना । कोई मास्टर परेशान तो नही करता ना । कोई परशान करे तो बता देना ।

राजू-नही । कोई मास्टर नही परशान करता ।

ताडक-तुमसे राजू एक काम है बाजार तक चलना है । मुझे बस स्टम तक छोड दो बहुत जरूरी काम हैं ।

राजू-भइया गैरहाजिर हो जाऊंगा । प्रार्थना के बाद हाजिरी लगेगी ।

ताडक-तुम्हे तो चलना ही पडेगा तेरी हाजिरी गयी भाड में । बहुत हाजिरी वाला हुआ । मैं कह रहा हूं मुझे बस स्टाप तक छोडना है तो छोडना ही पडेगा ।चलता है कि हाजिरी तेरी भर दूं ।

राजू-साइकिल उठाया । राजू को डर था ताडक का जो कुख्यात गुण्डा था नाममात्र का बारहवी में पढता था सब यही कहते थे । जब राजू पहली बार इस स्कूल में आया था तब भी ताडक उसी क्लास में था और राजू ग्यारहवी में आ गया था तब भी ताडक बारहवीं में ही था । सम्भवतः उसका नाम स्कूल के रजिस्टर में भी नही था । अपनी दादागीरी दिखाने के लिये वह स्कूल में बरोबर आता रहता था । खजेरा गांव के लडको को छोडकर बाकी सभी लडके ताडक गण्डे से खौफ खाते थे । ताडक स्कूल से अनेका साइकिलें चुराकर बेच चुका था । स्कूल आने के कारणो में से एक कारण यह भी हो सकता था । सभी जानते थे ताडक को पर किसी की हिम्मत न होती थी की कोई ताडक को स्कूल आने से रोक दे ।ताडक का चोरी का धंधा चल रहा था । यह भी सब को मालूम था प्रिसिपल साहब को भी।मरता क्या ना करता राजू ताडक को साइकिल पर बैठाकर बस स्टाप ले जाने लगा । स्कूल की बाउण्ड्री से बाहर आधा किलोमीटर गया होगा कि ताडक ने धीरे से साइकिल का ताला फंसा दिया । राजू साइकिल पर से उतरा कि देखे साइकिल में क्या फंस गया । राजू का साइकिल से नीचे उतरना था कि ताडक दनादन लातघूसा चलाने लगा राजू के मुंह पर पेट में घूसों की बौझार करने लगा । आसपास के सभी दुकानदार और राहगीर तमाशा देख रहे थे । कोई भी आदमी छुडाने की हिम्मत नही कर पाया राजू को ताडक गुण्डे के खौफ से ।राजू असहाय सा चिल्लाता रहा । ताडक राजू को मार मारकर साइकिल छिनना चाह रहा था ।राजू लहूलुहान हो गया पर साइकिल नही छोडा तो नही छोडा ।ताडक राजू की साइकिल छिनना चाह रहा था ।राजू की किताब कापियों के चिथडे चिथडे होकर सडक पर बिखर गये । राजू लहूलुहान था । नाक से खून तेजी से बह रहा था पर नपुंसक दुकानदार और आने जाने वाले लोग तमाषा देखते रहे ।ताडक भरी बाजार में राजू को मार मारकर लहूलुहान किये जा रहा था ।ताडक राजू की साइकिल ही छिनना चाह रहा था । राजू को साइकिल का ही सहारा था स्कूल आने का उसे साइकिल जाने से प्यारी था । राजू ताडक की मार खाता रहा पर साइकिल नही छोडा । ताडक राजू की किताबे फाडकर फेंक दिया ।ताडक को जानने वाले राजू के खिलाफ ही बोल रहे थे । कुछ ौतानियत के पुजारी कह रहे थे कि छोटे लोग

दो अक्षर ्पाढ लेते हैं तो ाोेषक समुदाय का मुकाबला करने लगते है । ताडक ठीक कर रहा हैं । वंचितों को कब्जे में रखने का यही तरीका हैं । कुछ अनजान लोग कह रहे थे देखो बेचारे गरीब लडके को पीटता जा रहा हैं रूकने का नाम ही नही ले रहा है वो आदमी और लोग है कि मजे स चटकारे ले रहे है । भरी बाजार में कोई एक आदमी रोकने का हिम्मत नही कर पा रहा हैं । ऐसे ही तो बदमाशाेें के हौसले बढते है और बुराईयां जवान रहती है ।

ताडक मार मार थक गया तब जाकर राजू को छोडा । बेचारा लहूलुहान गरीब राजू सरकारी अस्पताल गया । वहां मरहम पटटी हुई । इसके बाद वह थोडी देर अस्पताल में ही एक पेड की छाया में कुछ देर तक साइकिल को पकड कर लेटा रहा । जब दवा का असर हुआ दर्द कुछ कम हुआतब वह 15 किलोमीटर दूर अपने गांव चल पडा ।

राजू बडी मुश्किल से घर पहुंचा उसका बदन दर्द के मारे टूट रहा था ।वह घर पहुंचते ही खटिया पर गिर पडा । राजू को इस तरह से गिरता देखकर सोनरी दौडकर आयी राजू से पूछने लगी क्या हो गया बेटवा ।कैसे घाव लगी हैं । इतनी पटटी क्यो लगी हैं बेटवा । कुछ तो मुंह से बोलो । राजू कुछ बोल नही पा रहा था । उसकी नाक से अभी भी रह रहकर खून निकल रहा था । माथे के लगे घावों से भी खून रिस सहा था । सोनरी बेहाल हुए जा रही थी राजू के घाव को देखकर पर राजू था कि मुंह खोलने को तैयार ना था । सोनरी रोने लगी राजू की हालत को देखकर तब वह बोला मां परेषान ना हो जाते समय बाजार में साइकिल से गिर गया था । गिरने से घाव लग गयी हैं । सरकारी अस्पताल जाकर मरहम पटटी करवा लिया हूं । ठीक हो जायेगा । क्यो परेष्षन हो रही हो । चिन्ता ना करो मां बस खरोंच लगी हें । ज्यादा गहरा जख्म नही हैं । मां जरा भी चिन्ता ना करो ।सब ठीक हो जायेगा । डांक्टर ने खाने की भी गोली दी हैं । जरा बेना। हाथ का पंखा। लाओ हवा कर दो ।

राजू ने छिपा लिया किसी के सामने ताडक के मार की जिक्र नही किया क्योंकि स्कूल जाने पर रोक लगने का डर भी था । सभी लोग खजेरा गांव की बदमाशी से परिचित थे । असहनीय दर्द राजू सहता रहा पर मुंह नही खोला ।

सोनरी- बेटा कुछ छिपा रहे हो ।

राजू- नही मां कुछ भी नही छिपा रहा हूं । तू क्या समझती हैं किसी से लडा करके आ रहा हूं । नही मां मैंने किसी से लडाइ्र नही किया हैं । साइकिल से ही गिरा हूं ।

सोनरी-बेटा ये तो मैं भी जानती हूं कि तुम लडाई झगडा नही करोगे पर मेरा मन नही मान रहा हैं । मुझे लग रहा हैं कि तुम्हारे साथ कुछ बुरा हुआ हैं। तू कह रहा है कि साइकिल से गिर गया है ।

राजू-हां मां मेरी बात पर यकीन करो ।

मां बेटे बात ही कर रहे थे कि सुहानी आ गयी और बोली क्या हुआ देवर जी ।

राजू-कुछ नही भौजी गिर गया रास्ते में ।

सोनरी-देख सुहानी राजू को कई जगह घाव लगी हैं । यह कह रहा है कि गिर गया है पर मुझे तो नही लगता है कि साइकिल से गिरने पर इतनी घाव लग जायेगी ।
सुहानी । हां अम्मा देवर जी की तो वैसी ही हाल हो रही हैं जैसे कोई चोर गहने की सफाई करने वाला गहने का सोना चांदी निकाल कर गहना छोड दे । तेजाब में से निकले गहने की तरह देवर जी भी लग रहे हैं ।कोई देवर जी तुम्हारी चमक को चुरा तो नही ले गयी ।क्यो देवरजी किसी लडकी को दिल तो नही दे आये ।
राजू-भौजाई हमारी किस्मत में तो सघर्ष करना ही लिखा है ।
सुहानी-देवरजी जो सघर्ष करता है वही आगे बढता है।काल के गाल पर अमिट दस्तक करता है।परिश्रम का फल मीठा होता हैं निराश न होओ । बहुत तरक्की करोगे ।
सोनरी-भगवान बेटवा की हर मुराद पूरी करना ।

॥बयालीस॥

राजू की नाक का घाव तो कुछ दिना में ठीक हो गया पर दिल में आग सुलगती रही कहते है कि दीन दुखियों की बददुआये बेकार नही जाती । वही हुआ ताडक के साथ भी । कुछ महीनों के बाद पता चला कि ताडक कही डकैती करने गया था वही गोली का िशकार हो गया । राजू सबसे बेखबर अपनी पढाई में ही जुटा हुआ था परन्तु राजू की समस्याये खत्म नही हो रही थी । आर्थिक संकट भी बढने लगा था।राजू के मां बाप आर्थिक संकट के बाद भी राजू को आगे पढाने का सपना सजोये हुए थे । उधर राजू के ब्याह का मामला भी नही दबा था। लडकी वालें के आने जाने का सिलसि जारी था ।ब्याह का दबाव निरत्तर बढ रहा था । कुछ लोगो को तो राजू की पढाई फूटी आंख नही सुहा रही थी।ं वे कहते घर में खाने को नही प्रेमनाथ बेटवा को पढा कर कलेक्टर बनाना चाह रहा हैं । अरे लगा देना था हरवाही चरवाही में । चला है कलेक्टर बनाने ।
एक दिन प्रेमनाथ नीम की छांव के नीचे खटिया पर बैठा हुआ था । इसी बीच बिन बुलाये मेहमान गोबरदास फिर आ गये । और प्रेमनाथ से ब्याह का आग्रह करने लगें।
प्रेमनाथ-देखो गोबरदास क्यो बेटवा की पढाई छुडवाना चाह रहे हो ।अरे जैसे तैसे पेट काटकर बेटवा को पढा रहा हूं ताकि मेरा बिगडा हुआ आज कल बन जाये पर गोबरदास आप तो ब्याह की कसम खाकर बैठ गये हो ।
गोबरदास-प्रेमनाथ मान जाओ बेटवा का ब्याह कर दो फायदे में रहोगे । मैं कहां कह कर रहा हूं कि बेटवा को मत पढाओ ।
प्रेमनाथ-अरे बेटवा का ब्याह हो जायेगा तो दोहरी जिम्म्दोरी कैसे निभायेगा । खर्च बढ जायेगा । घर में एक दूसरे घरक की लडकी आ जायेगी उसका भी खर्च उठाना पडेगा । गोबरदास क्यो नही समझते । ब्याह कर जिद पर अडे हो ।
गोबरदास-देखो प्रेमनाथ भइया मैं भी चाहता हूं कि बेटवा पढे । सरकारी अफसर बने । गांव समाज का गहना बने । ब्याह करने से कोई अडन नही आयेगी । अरे मेरे बेटवा को देखो रेलवे में नौकरी कर रहा हैं । उसकी आंखे भी नही खुली थी ।तब ही ब्याह हो गया

था। लडके में कुछ बनने की लगन होगी तो कोइ्र् नही रोक सकेगा । भइया प्रेमनाथ मेरी बात मानो ब्याह के लिये राजी हो जाओ ।अच्छा रिश्ता है। मैं बार बार यही कह रहा हँू । बाद में पछताओगे । सोच लो ।

प्रेमनाथ-क्यो धरम संकट में डाल रहे हो गोबरदास ।

गोबरदास-देखो ऐसे मौके बार बार नही आते । लडकी का बाप सरकारी अफसर हैं । अच्छा दान दहेज देगे । तीन भाईयों में एक ही लडकी है । मालामाल हो जाओगे ।मत ठुकराओ इस रिश्ते को । बेटवा की पढाई में तो मदद करेगे और नौकरी धंधा लगाने मदद करेगे ही । सरकारी अफसर जो ठहरे ।लडकी भी बहुत किस्मत वाली है ।उसके पैदा होते ही उसके बाप को सरकारी नौकर मिली थी । हो सकता हैं ब्याह होते ही राजू के भी भाग्य बदल जाये ।सोच लो देरी मत करो ।

प्रेमनाथ-देखो गोबरदास बेटवा को अभी मुझे बहुत आगे तक पढाना हैं । वो क्या कहते हैं एमए बीए करवाना हैं ।ब्याह हो जाने पर जिम्मेदारी तो बढ ही जायेगी क्यो नही मानते ।

गोबरदास-प्रेमनाथ भइया पहले ही हमने कहा था कि ब्याह होने से लडके की पढाई बन्द नही हो जाती ।अरे लडकी पढाई बन्द करवाने थोडे ही आती हैं । मेरा बेटा तुम्हारे सामने ही हैेंं । मैंने पहले ही बता दिया था कि राजू जैसे उसकी भी हाल थी पर मैंने तो ब्याह कर दिया । भइया तुम्हारे जैसे इतना सोच विचार नही किया । अब देखो वही लडका सोने की डाल काट रहा है आज रेलवे में बडा साहेब हो गया है। ब्याह हो जाने से लडकी लडके दोनो के सितारे मिलकर कुछ अच्छा ही करते हैं । देख लो मेरा बेटे को । मेरी हालत तो तुमसे भी खराब थी भइया । अब देखो बेटवा अच्छा कमा रहा हैं । अपने दिन बदल गये । तुम्हारे भी बदल जायेगे किस्मत के सितारे बस ब्याह हो जाने दो । ब्याह हो जाने पर राजू की पढाई लिखाई के खर्चे को भार तुम्हारे उपर ही नही रहेगा लडकी वालो का भी तो कुछ फर्ज बढ जायेगा । देखना राजू और तरक्की कर जायेगा ।

प्रेमनाथ-गोबरदास मैं बेटवा को मेहनत मजदूरी करके पढा लूंगा पर ब्यह की अभी ना ही कहो तो अच्छा है ।

गोबरदास-अरे बेटवा का ब्याह नही हरोगे क्या । ऐसे लग रहा है पूरी बिरादरी में बस एक राजू ही है ।अरे लडको का टोंटा नही पडा हैं प्रेमनाथ अपनी बिरादरी में । हां राजू पढ रहा है इसलिये खास बात हैं वरना कोई खासियत नही हैं । ब्याह तो होना ही हैं साल भर पहने यह बाद में बस इतना ही ना ऐसा तो नही कि राजू का ब्याह ही नही हरने का इरादा है।साधु सन्यासी बनाना हैं ।

प्रेमनाथ-कैसी बात कर रहे हो गोबरदास ।

गोबरदास- क्या कहूं कुछ बात भी तो नही मान रहे हो ।

प्रेमनाथ-बेटवा का ब्याह क्यो नही होगा जरूर होगा थोडा कुछ साल बाद होगा बस इतनी सी बात हैं ।अभी नही करना है बेटवा का ब्याह ।देखना बेटवा का ऐसा ब्याह करूंगा कि लोग दांतो तले अगुलियां दबा लेगे ।शानदार तरीके से ब्याह करूंगा बेटवा का अपने ।ब्याह में गोबरदास तुमको भी न्यौता दूंगा चिन्ता ना करना ।

गोबरदास-इसीलिये तो ऐसा रिश्ता लाया हूं । कर दो ना हां प्रेमनाथ । सुन्दर ल्ाडकी अच्छा परिवार बाप सरकारी ओहदेदार । अब क्या चाहिये । गहने गुरिया का कोई झंझट नही । जो गहना चढा सकते हो चढा देना । लडकी वालो की कोइर् मांग नही होगी । वे तो खुद अपनी लडकी को गहने से लादने की औकात रखते हैं ।उपर से मोटी रकम भी मिल जायेगी। बेटवा की पढाई में मददगार साबित होगी प्रेमनाथ । बेटवा को भी घडी साइकिल रेडियों अगूंठी और बहुत कुछ मिल जायेगा । गहनें की चिन्ता ना करना सब लडकी के बाप देगे ।

सोनरी-क्या कहा भइया गोबरदास । लडकी के बाप लडकी को गहना बनवा देगे ।

गोबरदास-हां । क्यो नही बनवायेगे।ं कहां चार छः लडकी उनके पास हैं । एक तो लडकी है ।घर की खेतीबारी अच्छी हैं । उपर से सरकारी नौकरी ंइतना सारा धन कहां ले जायेगे ।सब यही तो छोड कर जाना हैं । एक बीटिया हैं उसको नही तो किसको देगे ।

सोनरी- दहेज की रकम स सुख नही मिलने वाला हैं ।ऐसे सपने ना दिखाओ भइया गोबरदास जो समाज में बुराई का कारण बने ।ब्याह में तो लडकी को लडके वाले ही गहना बनवाते हैं कुछ खास खास जैसे हंसुली, पायल ,नाक और भी बहुत सारे वो तो अपने बस की बात हैं जो बनवा दे । लडकी को तो अपने दुल्हे के घर के गहने की ख्वाहिश होती है ।

गोबरदास-तुमको भी ऐसी ख्वाहिश थी क्या राजू की मां ।

सोनरी-क्यो नही यह तो हर लडकी की ख्वाहिश होती हैं । मै तो जब छोटी थी चल भी नही पाती थी तब से ही अपनी मां कि हंसुली पहनने लगी थी।लोग कहते है कि मैं हंसुली के लिये बचपन में ही मां से ब्याह करवाने की जिद पर अडी थी।गोबरदास आप तो दहेज में गहना दिलवा रहे हो ।

गोबरदास-दहेज तो अलग से मिलेगा । गहना तो सोने चांदी का लडकी को मिलेगा उसके बाप की तरफ से । खैर लडकी भी सोने जैसी ही है । यदि लडकी के बाप गहना बनवा दे तो क्या बुराई है । किसी गैर को नही अपनी बेटी को ही तो देगे । राजू की मां दहेज भी अच्छा मिलेगा । मैं अपनी ओर से वादा करता हूं ।राजू लडकी के बाप को बहुत पसन्द है बिना देखे ही सिर्फ मेरा कहा हुआ मानकर । वे भी राजू जैसे ही पढे है । वे भी पढाई के पीछे बहुत उत्पीडन झेले पर पढ गये । देखो आज साहेब बन गये हैं । गांव में आते है तो सभी इज्जत करते है चाहे जाति का हो या परजाति का । वे तो सिर्फ लडके की पढाई का सुनकर राजू पर फिदा है । राजू की मां राजू के सिवाय तुम्हारे पास कुछ है

भी तो नही । एक बीसा जमीन भी तो नही है कि जीवन बसर करने का आसरा हो लडके की पढाई में रूचि देखकर ता लडकी के बाप ब्याह करने के लिये पूरी तरह से तैयार है। सब कुछ जानते हुए भी लडकी वाले ब्यह के लिये तैयार है क्या यह कम है । तुम लोग हो कि मना कर रहे हो ।प्रेमनाथ एक बार लडकी को देख लो उसका रूप जरूर पसन्द आयेगा । लडकी ना पसन्द आये तो मत करना। मैं दावे के साथ कहता हूं एक झलक लडकी का देखकर तुम मना तो नही कर पाओगे । लडकी देख लो फिर सोचना ब्याह करना है कि नही ।

सोनरी-देखो गोबरदास भइया ब्याह होगा कि नही यह तो तय नही है । भइया दहेज की बात नही करो तो अच्छा हैं। दहेज कर रकम से तो हमारी गरीबी तो खत्म नही हाने वाली है । अरे लडकी वाले भी कौन से राजा महाराजा है । वे भी तो हमारी तरह ही दुख उत्पीडन झेले है ।हां पढ लिखकर नौकरी करने लगे यकीनन तरक्की किये है । हम अनपढ गंवार शोषण के शिकार है।ठीक है गरीब है पर अमानवीय कुव्यस्था के घोर विराधी है । भइया जो कुप्रथा समाज के माथे पर कलंक है उसके प्रोत्साहन दे रह हो । दहेज का प्रलोभन दे रहे हो। यह ठीक नही है । दहेज कितनी लडकियो का जान ले रहा है रोज रोज । दहेज के नाम पर लडकिया घर से बेघर हो रही है तो कही मार दी जा रही हैं । कही तो जला भी दी जा रही हैं ।घृणित प्रथा है यह भी पुरानी जातिव्यवस्था की तरह । भइया आप हो कि इस घृणित दहेज व्यवस्था को हवा दे रहे हो। ना भइया ना भले ही हम गरीब है पर दहेज का प्रलोभन ना दो भइया । अरे दहेज से हमारी गरीबी तो दूर होने से रही । हां अच्छी बहू मिल जायेगी तो जरूर कल्याण हो सकता हैं । अच्छी बहू के साथ पढी लिखी बहू मिल जाती तो मेरे खानदान का उध्दार हो जाता गोबरदास भइया ।दहेज एक भयंकर बीमारी है इसे अपने अपने स्तर पर हर आदमी को रोकने का प्रयास करना चाहिये । भइया हमें दहेज नही पढी लिखी संस्कारवान बहू चाहिये जो हमारे इस घर को संवार दें । भइया गोबरदास अभी बेटवा का ब्याह तो करना नही हैं जब भी करेगे आपको संदेश भेजवा देगे तब खोज देना पढी लिखी सर्वगुण सम्पन्न बहू जो मुझ निरक्षर को भी आंख दे दे । यदि चाहो तो इस ब्यह को कुछ साल रोक भी सकते हो यदि रोकवा सकते हो तो । हम बेटवा की पढाई पूरी होते ही ब्याह कर लेगे पर भइया दहेज की लालच अब ना देना ।

गोबरदास-कैसी बात कर रही हो राजू का मां । आई लक्ष्मी को ठुकरा रही हो ।

सोनरी-भइया गोबरदास दहेज लेना ओर देना दोनो ही ठीक नही है ।अपनी भी तो चार चार बेटिया हैं ।यदि मुझसे दहेज मांगा गया तो हम कहां से देगे ।दहेज तो एक बुराई हैं । इस बुराई को खत्म करने की सोचो भइया।जो लोग गरीब हैं उनकी लडकिया कैसे ब्याही जायेगी कभी गौर किया है भइया गोबरदास । अरे एक बार दहेज का खून मुंह लग गया तो हमेशा मांग बनी रहती है मालूम है। परिणामस्वरूप लडकी की बलि चढ जाती हैं ।बेचारी के सारे अरमान खाक हो जाते है । मैं दहेज लेकर बेटवा का ब्याह नही

करूंगी । दहेज के पैसे से अमीर बनने से बढिया गरीबी ही हैं भइया गोबरदास । मुझे दहेज की जरा भी लालच नही हैं बस पैरूख बना रहे ।खुद रोटी की जुआड कर लेगे पर दहेज लेकर पाप का भागी नही बनेगे ।

गोबरदास-राजू की मां इसे दहेज नही बेटवा को आगे बढाने की मदद समझ लेना ।

सोनरी-नही चाहिये ऐसी खैरात मुझे ।

गोबरदास-क्या कह रही हो राजू की मां । इस ब्याह में हम तुम्हारा जरा भी खर्च नही होने देने की सोच रह थे । उपर से लडकी रूपमती को सारे गहने भी उसके बाप ही गढवा देगे । आप तो बस सौ पच्चास आदमियों की बरात के साथ लडका भेज देना बाकी हम सब देख लेगे ।अरे राजू की मां इससे बढिया रिश्ता नही मिलने वाला है ।

सोनरी-देखो भइया गोबरदास दुल्हन को तो ससुराल से गहने की उम्मीद होती हैं । दुल्हा के साथ दुल्हन को दुल्हा के घर का गहने मिले तो मन प्रसन्न हो जाता हैं । यही तो उसकी इच्छा होती हैं खैर आप क्या समझोगे लडकी का जन्म पाये होते तब ना समझ पाते ।

गोबरदास-क्यो मजाक कर रही हो ।

सोनरी-मजाक नही सच्चाई बयान कर रही हूं भइया गोबरदास मेरी बात मानो।

गोबरदास- ठीक हैं बनवा लेना दुल्हन के लिये हंसुली हुमेलचन्द्रहार और भी जो बनवा सकती हो । बाकी मै लडकी वालो से बनवाने का बोल दूंगा ।

सोनरी-बेटवा का ब्याह ही अभी नही हो रहा है तो गहना कैसा ।जब भी बेटवा का ब्याह करूंगी अपनी औकात के ही अनुसार काम करूंगी । चाहे गहना हो या अौर कोई काम ।

गोबरदास-भइया प्रेमनाथ सोच लो । इस ब्याह से कई्र फायदे है ।

प्रेमनाथ-ब्याह की बात कर रहे हो।रिश्ता जोडने की बात कर रहे हो या नफा नुकसान का सौदा ।

गोबरदास- रिश्ते की बात ही कर रहा हूं ।

प्रेमनाथ- फिर दहेज और इससे बढिया रिश्ता नही मिलेगा । ऐसी कैसी बाते कर रहे हो । यह तो ऐसे लग रहा हैं कि ब्याह की बात नही करके भैस खरीदने की बात कर रहे हो ।

गोबरदास-ठीक कह रहा हूं । बेटवा के पढने लिखने समधी भी तो मदद करेगे । पढाई पूरी होने के बाद नोकरी लगवाने में भी तो मददगार साबित हो सकते हैं । तुम लोग तो मेरी बात को समझ ही नही रहे हो ।

सोनरी-देखो गोबरास भइया मेरी हालत तो तुमसे छिपी नही है और ना मैं कोई ेखी बघार रही हूं । जब भी ब्यह्ह करूंगी अपने बेटवा की बिना दहेज के करूंगी । गहना भी कुछ ना कुछ जरूर चढाउूंगी । लडकी के बाप भले ही ना दे। लडकी को अपनी ससुराल से गहनों की उम्मीद होती है । ब्याह के बाद कहां गहना बन पाता हैं । बेचारी लडकी अपनी गृहस्ती में फंस जाती हैं । फिर वही नून तेल लकडी का चक्कर ।

गोबरदास-राजू की मां आप भले ही अनपढ हैं पर समझदार नारी हैं । गहने के महातम्य को आप अच्छी तरह समझती होेगी। मुझे इस बारे में ज्यादा जानकारी नही है ।देखो अब मैं आपसे एक बार और हाथ जोडकर कहता हूं कि बेटवा के ब्यह में होने वाले खर्च की चिन्ता से उबर जाओ । गहने की भी चिन्ता ना करो बस हां भर दो । मैं इस बार बडी आशा लेकर आपके चौखट पर आया हूं । देखो मुझे निराश ना करना ।हां आप अपने तरीके से जो गहना बनवाना हो बनवाना। जो खर्चा करना हो करना । खूब धूमधाम से ब्याह करना । हम नही रोकेगे । हां लडकी वाले लोग तो पैसे वाले हैं जो दे ले लेना । हां दहेज भले ही ना मानना । उनकी इच्छा पर लगाम नही लगाना । उनकी इकलौती लडकी है अच्छा ब्याह करना चाहते हैं । कर लेने देना । आप अपनी तरह से खुशी मनाना ।लडकी वाले अपनी तरह से । बस हां भर दो ।

गोबरदास की सहृदयता से की गयी बात सोनरी को जंच गयी । प्रेमनाथ की मुश्किल और बढ गयी । गांव,नात हित गोबरदास के दबाव के साथ ही सोनरी का भी दबाब बढने लगा अन्ततः प्रेमनाथ को झुकना पडा ।प्रेमनाथ ने रूपमती से राजू के ब्यह की हामी भर ली ।

॥तिरालीस।।

प्रेमनाथ ने बेटवा के ब्याह की हामी भर ली । इससे दयाल बाबू के घर परिवार में खुशी का माहौल बन गया ।गोबरदास की आवभगत भी दयाल बाबू के घर में बढ गयी । राजू के बडाई की खबर रूपमती के कानो को छूने लगी । उसका हृदय तेज तेज धडकने लगा । रूपमती और राजू की उम्र में दो साल का फर्क रहा होगी । लेकिन रूपमती सजग थी ब्याह को लेकर वह भी तो बहुत सारे गुडे गुडियों का ब्यह करा चुकी थी अब उसके खुद के ब्याह की बारी जो थी ।वह राजू के बारे में हर बात जानना चाह रही थी पर सम्भव ना था । ना राजू को ना ही रूपमती के लिये ही क्योंकि तब तो सचमुच बच्चो का ब्याह गुड्डे गुडिया का ही खेल था मां बाप के लिये । लडका लडकी एक दूसरे को नही देख सकते थे जब तक लडकी का गौना ना आ जाये ।पहली बार लडका लडकी एक दूसरे को गौना आने के बाद ही देख पाते थे वह भी छिप छिपकर ।खैर ब्याह होना तय हो चुका था । दयाल बाबू के घर में राजू की चर्चा चल रही थी । रूपमती दूसरे कमरे में दीवाल के सहारे खडी थी ।कुछ कुछ बाते उसके कान से भी गुजर रही थी ।रूपमती को दीवाल से चिपकी देखकर उसकी भौजाई गीता ताड गयी । वह रूपमती को गुदगुदाते हुए बोली क्यो ननद जी पहुना के बारे में जानकारी ले रही हो ।

रूपमती-धत तेरी कि कहते हुए नाखून चबाने लगी ।

गीता-ननद जी दूल्हा तो अच्छा मिल रहा है तुमको । तुम्हरे भइया से भी बढिया । सुन्दर हैं । पढ लिख रहे हैं । एक तुम्हारे भइया हैं गाते बजाते रहते हैं ।बीच में पढाई भी छोड दिये ससुरजी की कमाई पर आंख गडाये रहते है ।पहुना तो पढ लिखकर साहेब बनेगे एक दिन । मेरी ननद रूपमती मौज करेगी ।

रूपमती-भइया की बुराई क्यो कर रही हो भौजी । मैं भइया से कह दूंगी ।
गीता-ना ऐस गजब ना करना । मैं तो पिया के प्रति प्यार देखना चाह रही थी ।
रूपमती-ये क्या होता हैं ।
गीता-पिया की बाहो में जब खेलोगी तब पता चलेगा । खैर उसके ि‍लये ते‍ा अभी इन्तजार करना पडेगा जवान होने तक ।मेरी ननद का ब्याह होगा ।अपने पिया के घर जायेगी। पिया की बाहों में झूलेगी ।
रूपमती-भौजी क्यों मजाक कर रही हो ।
गीता -नही मजाक नही सच कह रही हूं । ननदजी तुम्हारे मन के भाव समझ रही हूं ।मन में कुछ कुछ हो रहा है ना तुम्हार। तुम्हारी खुशी देखकर मेरा तुम्हारे मन नाचने का हो रहा है । क्यो यही मन में विचार उठ रहे हैं ना ननदजी।
कब होगा ब्याह तोहार ।
कब मन के तारे जुडेगे कब मांग सजेगी ॥
चांदी की हंसुली मोटी ।
पायलिया की झंकार कब गूंजेगी ॥
मन हो रहा मयूर ।
मन में गुदगुदी तन अंगडाई ले रहा ॥
मन विहवल बह रही खुशियो की सौगात।
होगे पूरे फेरे कब आयेगी चांदनी रात ।।
आंख फडफडाये ,होगा बाबा का द्वार ॥
दिल धडके कब होगा पिया से मिलन तोहार ॥
रूपमती-भौजी तुमको मजाक सूझ रहा है ।
गीता-ननदजी मजाक नही सच्चाई्र हैं।मुझे भी ऐसे ही लग रहा था जग मेरे गौने का दिन पडा था । तुम्हारे भइया को मैं भी भर आंख गौने पर ही देखी थी । मुझे भर रात रात भर नींद नही आती थी ।तुम्हारे भइया और अपने भविष्य के बारे मैं सोचा करती थी ।ननदजी तुम्हारे मन की हलचल को पढ रही हूं ।सच कह रही हूं ।
रूपमती-क्या सच्चाई है क्या झूठाई है हमें क्या मालूम ।तुम ही समझो भौजाई ।
गीता-वही तो बता रही हूं सुनो तब ना ।
रूपमती-मुझे कुछ नही सुनना हैं ।
गीता -मैं तो सूना कर रहूंगी ।मुझे तो अपने ब्याह की याद तो नही पर गौना का दिन पडते ही मेरी भी बेचैनी बढ गयी थी रात की नींद दिन का चैन तुम्हारे भइया ने जैसे छिन लिया था। सोते जागते हर ओर वही दिखाई देते थे ।तब क्या बेचैनी थी । खैर ननदजी तुम तो सोचने समझने लायक हो । ननदजी मजाक नही कर रही हूं ।सही कह रही हूं । मालूम है मेरी भौजी चिढाया करती थी यह कहकर कि गीता का दूल्हा तो लडकी जैसा लगता हैं । दूल्हा की आंखे तो बिल्ली जैसी है । देखो क्या संयोग हैं मेरा

गौना आया इधर उधर ननद के ब्याह कर तैयारी शुरू हो गयी हैं। ननद के मन में ब्याह के लड्डू फट रह है ।

रूपमती-भौजी क्यो मजाक कर ही हो।रही भइया के खूबसरतीकी तो व सचमुच बहुत सुन्दर है ।

गीता-अरे ैं कहां ना कर रही हूं । वो तो है ही बुहत सुन्द्रर ।हमारे ननदोई जी तो और भी सुन्दर होगे और ज्यादा पढे लिखे भी ।ननदजी तुम्हारी तकदीर संवर जायेगी । गीता रूपमती को झेडते हुए चली गयी ।

रूपमती को गीता की बाते और विहवल करने लगी । वह सरसों के खेत की मेड पर बैठी सरसों की फसल से भरे खेत की खूबसूरती में खो गयी और मन ही मन गुनगनाने लगी ।

खेतवा में फूली सरसों कोयलिया सुनावै गान ।
मनवा बेचैन अग अंग फरके जैसे खेतवा में धान ॥
अंखियां फरके कनवा बाजैं जैसे गूजे शाहनाई ।
पिया चढरथ बरात अइहैं घर बाहर मंगलगीत सुनाई ॥
चुटकी भर सिन्धूरवा के भार कुर्बान हो जाऊं ।
पिया के संग चल चल दुनिया का हर सुख पाऊं ॥

रूपमती ख्वाब में खोइ्र हुइ्र थी इसी बीच उसकी संखिया आ गयी ।रूपमती को पता ही नही चला वह इतनी बेसुध सी कल के सपनो में खोई हुई थी । ख्वाब में खोइ्र हुई गुनगनाये जा रही थी ।

कब होगी रूपमती सयान ।
कब पिया रूपी भौरा गायेगा गान ॥
कब आयेगा दूल्हा बाबू के द्वार ।
कब ले जायेगा पहना कर हंसुली और चन्द्रहार ॥

रूपमती की सहेलिया खिलखिला कर हंस पडी । अरे आ गयी बरात । सखी का दिल हो रहा बेकरार । तब तक एक सहेली बोली रूपमती अभी से दूल्हे का चैन ना छिन ।तब तक दूसरी सहेली गीत गुनगनाने लगी।

रूपमती रानी ना हो दीवानी ।
रख सब्र गौने तक हो जायेगी तू सयानी ॥
सरसो भी आज गा रही हैं गीत संग तुम्हारे ।
हवा का मतवालापन उडा रहा दुपटा हमारे ॥
रूपमती पिया के संग लूटेगी जग की बहार ।
झोली में बरसे फूल बगिया में गूंजेगी बहार ॥
आयेगी बरात अंगना में बजेगी शहनाई ।
रूपमती तेरी संखियां दे रही तुझे अभी से बधाई ॥

सारी सहेलिया बधाई हो बधाई कहकर तालियां बजाने लगी । सरसों का खेत इन बधाईयो से जैसा मुस्करा उठा ।हवा का एक तेज सा झोंका आया और सभी के उपर सरसो के फूलों की पखुडियां डाल गया।सभी सहेलियां एक स्वर मे़ेंे गाने लगी ।

बयारो सरसो के फूल उडाओं।

देखो रूपमती पर ब्याह का खुमार छाया है ॥

ओढा दो सरसो के फूल की चादर रूप निखर आया है ।

बयारो सरसो के फूल उडाओं..............................

रूपमती-अरे तुम लोग यहां कैसे आ गयी ।मेरे ख्वाब में कांटा बनकर क्यों तुम सबको जलन हो रही हैं ।अरे मुझे सरसों के खेत की सुन्दरता को निहार लेने देती ।

तब तक एक सहेली बोली- सरसो के खेत से तो तुम अधिक सुन्दर हो रूपमती । सरसों के फूल से भरे खेत की सुन्दरता तुम्हारी सुन्दरता के आगे बौनी नजर आ रही है ।

रूपमती-क्यो मेरा मजाक उडा रही हो । तुम्हारा ब्याह तो हो गया हैं ना रेखा । पिया से अभी मिलन नही हुआ सब कुछ जान गयी ।

काजल- हां सखी रेखा के गौना का दिन भी पडने वाला हैं ।

रूपमती-तभी बहुत मजाक सूझ रहा हैं ।

दीया-अच्छा ये बात हैं । मैं भी समझ पा रही थी रेखा की खुशी को । अब तो रेखा का चैन छिन गया होगा । सब और पिया पिया ही दिखाइर् पड रहे होगे ।

पुष्पा- हां सखी अभी अपना ब्याह होगा दो चार साल में गौना जायेगा । रेखा तो जल्दी हमसे बिछुडने वाली हैं ।

इतना सुनना था कि सब लडकिया एक साथ हंसी के बम फोड बैठी । रेखा बगले झांकने लगी ।

रूपमती दूल्हे राजा और अपने ब्याह को लेकर जैसे परेशान सी रहने लगी । वह श्रृंगार पटार के बारे में भी सोचने लगी । घण्टों आइनें के सामने खडी होकर खुद को निहारती । मन ही मन वह खुद से पूछती क्या मैं ब्याह करने लायक हो गयी हूं । एक दिन वह आइने के सामने उधेड बुन में लगी हुई थी कि उसकी भाभी गीता चुपके से आयी और उसके गले में हाथ डालकर डालकर बोली खुदा की कसम गजब ढाह रही हो मेरी जान । अब तो बस दूल्हे का इन्तजार है । कहते हुए गीता जोर से हंस पडी । हंसी की झंकार रूपमती की मां के कानो से टकराई उससे रहा नही गया वह गीता से पूछी बहू क्या हुआ ।

गीता-अम्मा ननद को दूल्हे की बांंहो में सोया हुआ देखकर हुंसी की शहनाई बज उठी । इसमें मेरा कोइर् कसूर नही हैं ।

रूपमती की मां- बहू बीटिया को अभी से क्यो परेशान कर रही हो ।

गीता-कहां परेशान कर रही हूं । इन्हे तो ननदोई जी परेशान करेगे । अम्मा को ननद के परेशानी की इतनी चिन्ता अभी से हैं । ब्याह हो जाने पर कहां कहा रोकेगी । कौन किस समय परेशान कर दे सबका हिसाब रखेगी । वह रूपमती को गुदगुदाते हुए चली गयी ।

रूपमती की मां बोली-गीता जा बर्तन साफ कर ले बर्तन कब से सूख रहे हैं । काम का ध्यान नही हैं। कौवे बर्तनो पर टूट रहे हैं। बीटिया को झेड रही हैं ।वह रूपमती से बालीं जा बीटिया गीता का हाथ बटा दो । तेरी भौजाई हैं ना किससे हंसी मजाक करेगी । उसका तो हक बनता है तुमको झेडने को ।जा गीता की मदद कर दे ।तेरे ब्याह की खबर से कितनी खुश अभी से उसका मन नाचन को कर रहा है ।वह तो ब्याह के गीत भी सीखने लगी है ।इतना ही नही गाली गीत भी गाने लगी है ।

रूपमती-मां तुम भी ।

गीता-अरे ना अम्मा ।ननद जी को अराम करने दो । ननद परायी होने वाली हैं । नाजुक देहधजा हैं।अब इस घर के बर्तन तो नही । पिया के साथ मिलकर खुद का घर सजायेगी । गीता रूपमती को बर्तन नही माजने दी । रूपमती गीता के पास बैठ गया ।गीता रूपमती को सुना कर गुनगुनाने लगी ।

अब तो आयेगी बरात।
ननद रूमपती जायेगी ससुराल ॥
भईया आंसू बहायेगे भौजी गायेगी गीत ।
बाप कन्यादान कर सौपेगे पराये मीत ॥
अब तो आयेगी बरात...............
हाथ सजेगी मेहदी काया पर होगी दुनिया की हूर।
दुल्हा मांग भरेगे भर चुटकी सिन्धूर ॥
अब तो आयेगी बरात...............

गीता के मंगलगीत की आवाज रूपमती की मां के कानों को गुदगुदाने लगी । वह बोली अरे गीता रेडियो किसने चालू कर दिया । इतना सुनते ही गीता चुप हो गयी ।

गीता- अम्मा रेडियो कहां बज रही हैं । ननद जी कहां रेडियो से कम हैं ।क्यो अम्मा ऐसी ही आवाज आ रही थी ना।

आएगी संजकर सजन की बरात ।
दुल्हन सज संवरकर जायेगी ससुराल ॥
दुल्हा मढ देगा माथे सिन्धूर का भार ।
गले मे होगी चादी की हंसुली और चन्द्रहार ॥

क्यो ननद जी ठीक हैं ना कह कर मुस्कराने लगी ।सच है ननद ननदोई के हाथ मांग में सिन्धूर पडते ही सारी दुनिया का सुख मिल जायेगा ।सारी मुरादे पूरी हो जायेगा । गले में चांदी की हंसुली,सोने का हार पांव में पैजनिया हाथ में कंगना नाक में नथुनिया और सोलहो श्रृगार कर ननदोई के सामने खडी होओगी तो उनके दिल के तार बज उठेगे वे भी

गा उठेगे । तुम ननद जी आईना के सामने पिया के कंधे पर सिर रखकर खूबसूरती निहारना अपने दिल को प्यार के समन्दर में रखकर ।गीता के मुंह से गहने की चर्चा और सौन्दर्य का बखान सुनकर रूपमती लजा गयी । धत तेरी की भौजी कहते हुए चली गयी रूपमती ।

॥चौवालीस॥

दयाल बाबू के घर खुशी आ पसरी थी । उनकी इकलौती बेटी रूपमती का ब्याह प्रेमनाथ के बेटा राजू से जो तया हो गया था । राजू को इस बात की खबर कानो कान न थी और ना ही गांव वालों को । इस बात से खफा होकर गांव वाले अंगलुी उठाने से बाज नही आ रहे थे । कोई कहता प्रेमनाथ ने बेटवा को बेंच दिया मालदार पार्टी के हाथो । कोई कहता बहुत ाढाने वाला हुआ था अब कहा गयीं पढाई इतना अच्छा रिश्ता मैं लाया था मना कर दिया । देखो चुपके चुपके ब्याह ठीक कर दिया किसी को कानो कान खबर तक नही होने दिया । प्रेमनाथ को कोई लालच तो न थी पर वह रोज रोज के ब्याह के आने वालो रिश्तो से तंग आकर ब्याह हामी तो भर लिया था पर मन ही मन दुखी भी था ।

प्रेमनाथ सोनरी से बोला-राजू की मां हमने बेटवा के ब्याह की हामी भर कर अच्छा तो नही किया है पर क्या करता । रोज रोज की आवाजा ही से तंग हो गया था । लोग बोली भी बोलने लगे थे ।आखिरकार मुझे सबसे तंग आकर हां भरना पडा । बेटवा की राह कठिन तो जरूर हो जायेगी । खैर घबराने की बात नही हैं । हो सकता हैं रूपमती और राजू दोनो की किस्मत मिलकर अपने खानदान की उन्नति की बुनियाद रख दें ।

इधर राजू को खुद के ब्याह की खबर काफी देर में लगी । खबर सुनते ही उसे लगा जैसे सांप सूंघ लिया हो ।उसको उसके देखे सपने बिखरते नजर आने लगे । वह रो पडा । उसके दिल से चित्कार के स्वर फूट पडे ।

टूंट गये अरमान घिर गया अधियारा ।
तोड तोड छाती से पथरा मैं हारा ॥
नयनो में सपने किस्मत खोटी ।
तरक्की की प्यास, आंसू से तरबतर रोटी ॥
क्या थे सपने लोरी के रंग अपने ।
खडी अडचने फट रहे किस्मत के पन्ने ॥
मरूभूमि में बैठा उम्मीदो के दीप जलाता ।
जख्मी पन्नो पर आंसू के रंग चढाता ॥

राजू नीम की छांव में उदास बैठा हुआ था ।उसे अपने बुने हुए सपनो पर काले बादल मडराते हुए नजर आ रहे थो ।राजू की उदासी को देखकर सोनरी राजू के पास बैठकर सिर पर हाथ फेरते हुए बोली बेटा क्यो उदास हो । क्या बात है । मां की बात सुनना था

कि राजू आग बबूला होकर वह बोला मां बस ब्याह में ही दुनिया की तरक्की छिपी हुई है ।

सोनरी-बेटा हम भी नही चाह रहे थे कि तुम्हारा ब्याह अभी हो पर रोज रोज के लोगो के ताने और नातहित गांवपुर के दबाव के आगे हामी भरनी पडी है । बेटा ब्याह होते ही रूपमती थोडे ही आ रही है । गौना आयेगा तो चार छः साल बाद में आयेगा ना । तब तक भगवान ने चाहा तो तुम आगे बढ जाओगे । बेटा जाति बिरादरी समाज भी तो कुछ है । समाज में रहना है तो समाज की भी तो बात माननी पडेगी । बेटा किसी में हिम्मत हैं जो समाज की खिलाफत कर सके । तेरे बापू लोगो को टाल टाल कर तंग आ गये थे । चारो ओर के दबाव के आगे झुककर वे ब्याह की हामी भरे है । बेटा तुमको क्या मालूम कहां कहा से दबवा पडा रहा था । बेटा तुम ब्याह के बारे में और ब्याह से होने वाले नुकशान के बारे में मत सोचो । तुम तो बस अपनी पढाई पर ध्यान दो । उसी के भरोसे मंजिल मिल सकती हैं । बेटा शादी ब्याह भी जरूरी है मानव जीवन में । सबको साथ लेकर चलना पडता हैं । तुम जरा भी चिन्ता ना करो । पढाइ्र करो आगे बढो । इसी में हमारे परिवार का कल्याण हैं बेटा ।

राजू- मां तुम लोग समाज में अपनी नाक ऊंची रखने के लिये मेरे अरमानों का गला घोंट रहे हो । अभी से गृहस्ती के चक्रब्यूह में क्यो झोंक रहे हो ।मेरा सपना तो टूटता हुआ नजर आने लगा हैं ।

सोनरी-नही बेटा तेरा सपना कभी नही टूटेगा ।तू जरूर अपनी मंजिल हासिल करेगा । मेरा आशीर्वाद है बेटा तुहारे साथ।

राजू-मां मेरा भविष्य सचमुच अधर में लटका हुआ लगने लगा हैं मुझे ।

सोनरी-बेटा ऐसा ना कहो । तेरा भविष्य अधर में लटक जायेगा तो हमारा क्या होगा । दिन रात हाडफोड मेहनत का क्या होगा । बेटा हमारी आंखे तुम्हारी तरक्की देखने को प्यासी हैं ।

राजू-मां ब्याह होने से ही तरक्की हो जायेगी क्या ।

सोनरी-बेटा शुभ शुभ बोलो ।

राजू -क्या शुभ शुभ बोलूं । बोलने से शुभ होता है क्या । मुझे अंधेरे कुएं में ढकेल रहे हो ।

सोनरी-बेटा तेरा भविश्य जरूर उज्जवल होगा । तू चिन्ता ना कर । बेटा रूपमती और तेरा भाग्य मिलकर तरक्की की बाढ भी तो ला सकते हैं । बेटा जो होता है अच्छे के लिये ही होता है । बेटा कहा जाता है हर पुरूष की सफलता के पीछे नारी का हाथ होता है । हो सकता है वह नारी रूपमती ही तुम्हारी जीवन की हो । बेटा तेरी मनोकामना जरूर पूरी होगी ।एक मां की दुआ है ।

राजू-क्या यह जरूारी है कि बाल पति की बाल पत्नी ही सफलता का कारण बन सकती हैं । मां बहन भी तो सफलता का कारण बन सकती हैं । मां अपनी सोच को बदलो ।

सोनरी राजू की दलीलों पर सहमत तो थी पर ना वो और ना ही प्रेमनाथ और ना ही दूसरा कोई जाति समाज औरर परम्पराओ को तोडने को आगे आने की हिम्मत जुटा पा रहा था । सोनरी बेटा की दलीलो से इतनी प्रमावित हुई की उसकी आंखों में आंसू भर आये पर वह अपने आसूं को पीते हुए बोली बेटा ब्यह तो अब नही रूक सकता । तेरे बाप ने जबान दे दी हैं । जबान कटवाना तो नही हैं । हां गौना देर से लाने की सोचेगे । तब तक तू पढाई पूरी कर नौकरी धंधा पर लग जायेगा ।

राजू- तुम लोग अपनी ऊंची नाक बना कर रखो विषमतावादी समाज में । मुझे मर जाने दो ।

सोनरी-बेटा क्या बक रहा है । हम किसके भरोसे रहेगे । तुमको ही देखकर तो जी रहे हैं । इस आशा में की बेटवा हमारे परिवार का नाम रोशन करेगा और तू है कि अशुभ अशुभ बाते कर रहा है । बेटा तू तो इस परिवार का गहना हैं ।मेरी आखो की रोशनी है । बेटा परेशान न हो । सब अच्छा होगा । हो सकता हैं । भगवान यह खेल खेल रहे हो तुम्हारी तरक्की के लिये । बेटा एक ना एक दिन तो ब्याह होना ही है । ब्याह भी तो जरूरी होता हैं । बेटा मुझे भी तेरी उदासी नही देखी जाती । क्या करूं हम सब जाति समाज और परम्परा के आगे मजबूर है ।

राजू-गलत परम्पराओ को तोड दो सभी जाति समाज के लोग मिलकर । मां बचपन में ब्याह के बंधन में बांधना अच्छा नही होता सभी जानते हैं ।

सोनरी-बेटा तेरी सारी बाते मान रही हूं । बेटा इज्जत रख ले । बेटा अब ब्याह का मना करने से इज्जत चली जायेगी । जाति समाज के लोग थू थू करेगे । क्या तुम चाहोगे कि तुहारे बाप के मुंह पर लोग थूके ।यदि ऐसा हो गया बेटा तो हम जीते जी मर गये।

राजू नीम की छावं से टस से मस नही हुआ ।वही बैठा रहा । मन ही मन कुढता रहा । अपनी किस्मत पर रोता रहा । अंधेरा घिर गया । वह चुपचाप उठा मडई में लेट गया । पूरे गांव को अंधेरा अपनी चपेट में ले चुका था । इसी बीच प्रेमनाथ काम से आया । वह राजू को न देखकर वह राजू राजू बुलाने लगा । राजू नही बोला तो राजू की मां राजू की मां की आवाज देने लगा ।

राजू की मां सोनरी हडबडाती हुई आयी ओर बोली - क्या हो गया । क्यो चिल्ला रहे हो । राजू तो नाराज होकर मंडई में पडा हैं । ना कुछ खा रहा हैं ना पी रहा हैं । उदास आकाश को निहारे जा रहा हैं ।बटवा की हाल ता पागल जैसी हो गयी है ।

प्रेमनाथ-अरे भागवान मैं पूछ ही तो रहा हूं । तुम हो कि कह रही हो कि क्यो चिल्ला रहे हो । अरे दीया बत्ती भी तो होनी चाहिये की नही ।चौखट पर अंधेरा पसरा है ।दीया तो जलाना था ।

सोनरी-चौखट पर दीया तो जल रही थी । हवा से बुझ गयी हो । राजू बहुत परेशान हैं । ब्याह करने को मना कर रहा है । अब तो बडे बुरे फंसे । वह तो एकदम गुमसुम हो गया हैं जब से ब्याह का सुना हैं । बेटवा किसी अनहोनी का शिकार ना हो जाये मुझे

तो बहु डर लगने लगा है बेटवा की हाल देखकर ।अंधेरे में देखो पडा है । तुम ही समझाओ हो सकता हैं तुम्हारी बात मान ले ।

प्रेमनाथ-अरे ब्याह ही तो हो रहा हैं । इसमे बुराई क्या है ,जो जाति समाज में चल रहा हैं उसे तोडना हमारे अकेले के बस की बात तो नही हैं इसके लिये तो जनजागरण की जरूरत है। चारो तरफ से दबाव पड रहा था ।नातहित सब पीछे पडे थे क्या करता सबसे रिश्ता नाता तोड देता ।

सोनरी-राजू बहुत नाराज है पानी तक न्ही पी रहा हैं । ब्याह न करने की जिद पर अडा है ।

प्रेमनाथ-राजू की मां दीया लेकर चलो मेरे साथ राजू को समझाता हूं । सोनरी और प्रेमनाथ दीया लेकर राजू के पास गये । प्रेमनाथ राजू राजू की आवाज देने लगा ।

राजू-अभी भी कुछ बाकी हैं क्या । अब तो जहर ही दे दो ।

प्रेमनाथ-बेटा ऐसा नही बोलते । हम जो कि भी कर रहे हैं तेरे भले के ही लिये कर रहे हैं । बेटा तेरी पढाई में कोई अडचन नही आयेगी । बेटा तेरे सहारे ही तो हमे जीना हैं । समाज में रहना हैं तो बात भी माननी पडेगी । क्या तू चाहेगा तेरे बाप के मुंह पर लोग थूके ।

राजू- हो जायेगा नाम रोशन ब्याह होते ही । मैं तो तुम्हारा पालतू बकरा हूं चाहे कसाई के हवाले करो चाहे खुद काट डालो । बापू मेरा भविष्य भले ही बिगड जाये पर तुम्हारा नाम तो रोशन तो हो ही जायेगा ।

सोनरी-बेटा मजबूरी को समझो । तुम तो खुद पढे लिखे हो । तुम्ही बताओ समाज को अनदेखा कर सकते है क्या।

राजू-तुम लोग मेरा ब्याह जाति समाज के दबाव में आकर कर रहे हो यही कहना चाह रही हो ना।

प्रेमनाथ- हां बेटा । मेरी इज्जत तेरे हाथ में हैं ।

राजू-बापू अच्छा नही कर रहे हो मेरे पैर में बेडी डालकर । मेरे भविष्य के साथ खिलवाड कर रहे हों । मेरे सपनो को तोडने की साजिश हैं यह बापू।

प्रेमनाथ-बेटा ब्याह से तुम्हारी पढाई पर कोई असर नही पडेगा । मन से भ्रम निकाल दो । तुम पढाई पर ध्यान दो । ब्याह तो होना अब तय हैं । यदि नही हुआ तो मुंह दिखाने लायक नही रह जाऊंगा ।बेटा मेरी इज्जत रख लो ।

राजू-बापू अपनी नाक ऊंची रखो । मेरा भविष्य तबाह करे दो । कर दो ब्याह । गढवाओ चांदी की हंसुली सोने का चन्द्रहार । कर डालो खडा कर्ज का पहाड । कर लो जाति समाज को खुश मेरे सपनो की उडान को बाधित कर ।

॥ पैतालीस॥

राजू ब्याह से खुश ना था ।उसे कल से भय था ।शहनाई की धुन में उसके अपने भविष्य की तबाही की क्रुन्दन सुनाई देने लगी थी ।घर में ब्याह की तैयारी हाने लगी थी ।उधर

दयालबाबू के गांव के घर घर में यह खबर पहुंच गयी कि बेटी रानी का ब्याह प्रेमनाथ के बेटे राजू से तय हो गया । राजू ने ब्याह का बहुत विरोध किया पर बाप के आगे हार गया । प्रेमनाथ बेटे के भविष्य से बेखबर भी न था । उसे चिन्ता थी ब्याह न करने पर समाज में नाक कट जाने की ।प्रेमनाथ जाति समाज के डर से अपनी तमन्नाओं का हवन कर बेटे के ब्याह के लिये तैयार हो गया था ।राजू की मां भी अभी बेटे के बालब्याह की पक्षधर न थी । समाज में नाक कटने का डर उसे भी था । प्रेमनाथ राजू को उदास देखकर राजू की मां से बोला राजू की मां तुम कुछ सोच रही हो ।

सोनरी-मेरे सोचने ना सोचने से कुछ होने वाला तो नही हैं ।

प्रेमनाथ- बताओ ना क्या सोच रही हो ।

सोनरी-क्यो मस्सखरी कर रहेहो।समधी बनने जा रहे हो।अब तो ओहदा बढने जा रहा हैं तुम्हारा ।

प्रेमनाथ-ऐसा भी सोच रही हो क्या। इसके साथ तुम्हारे माथे की सल्ले और कुछ चुगुली कर रही हैं ।कुछ छिपा तो रही हो । मुझे खुश करने के लिये ऐसा कह रही हो ।देखो सच कहना झूठ नही बोलना ।मैं तुम्हारे भावां का पढ लिया हूं ।

सोनरी-क्या सच क्या झूठ अब तो वचन ही दे दिये हो ।

प्रेमनाथ-सच वचन तो दे ही दिया हूं वह भी तुम्हारी सहमति से । वचन टूट गया तो मालूम है क्या होगा ।

सोनरी-हां मालूम है ना । बेटवा खुश हो जायेगा । वह और ऊंची उडान भरने की सोचेगा ।

प्रेमनाथ-राजू की मां बेटवा की चिन्ता मुझे भी हैं ।उसकी तरक्की देखने के लिये ही तो हम गुलामी कर रहे है। लाख दुख झल रहे है ताकि पढ लिख जायें ।वही तो हमारी आंखो का तारा है । ब्याह से अब मना किया तो सब चारो ओर से थूकेगे नातहित गांवपुर के सभी । अरे ब्याह हो रहा हैं तो होने दो । गहना गुरिया की भी चिन्ता नही हैं । सब समधी दयाल बाबू बनवा देगे अपनी बीटिया के लिये । मुझसे जो कुछ बन गया तो बनवा लेगे । लडकी वालो की गहने की कोई मांग तो हैं नही ।चांदी की हंसुली और कुछ सुहाग की निशानी तो बनवाना ही हो होगा ।तुमने ने चांदी की हंसुली और ना जाने क्या क्या बनवाने का गोबरदास से कह चुकी हो ।

सोनरी-अब बेटवा का ब्याह करने जा रहे हो तो ये सब तो करना ही पडेगा ।

प्रेमनाथ- राजू की मां जो होता हैं भले के लिये होता है । अब मान प्रतिष्ठा पर खतरा तो नही आने देगे ।बेटवा का ब्याह करने जा रहे हैं ।मेरा बेटवा किसी जमीदार के बेटवा से कम तो नही है। होशियार है ।काश हम सामाजिक और आर्थिक रूप् स सम्पन्न होते तो हाथी पर चढकर मोतियां लुटाता बेटवा के ब्याह में ।

सोनरी-दौडा लो मन के घोडे । लुटा लो मोतियां । सपने मत देखो । जमीन पर आ जाओ ।जुट जाओ ब्याह के बन्दोबस्त में ।

प्रेमनाथ- राजू की मां कैसी बहकी बहकी बाते कर रही हो ।
सोनरी-भला मेरी औकात क्या हैं बहकी बाते करने की ।
प्रेमनाथ-तुम बेटवा के ब्याह से खुश नही हो ।
सोनरी-बहुत खुश हूं । अरे बेटवा के आसूं को तो देखते । मैं तो दोनो तरफ से मारी जा रही हूं ।
प्रेमनाथ-ब्याह से बेटवा की प्ढाई में कोइ्र अडचन नही आयेगी बेटवा पढना चाहेगा तो ।रूपमती पढे लिखे बाप की बेटी हैं । क्या वह राजू की तरक्की नही चाहेगी ।
सोनरी-राजू के बापू ब्याह के बाद दिमाग तो बटेगा ही । इसीलिये बेटवा परेशान है ।
प्रेमनाथ-दुनिया उम्मीद पर खडी हैं । अच्छा सोचो ।खुश रहो रूपमती इस घर में बहार बनकर आयेगी ।
सोनरी-यह तो में भी जानती हूं । नारी तो अपने पति को ही भगवान समझती हैं । रूपमती कैसे राजू की राह में बाधा खडी करेगी ।
प्रेमनाथ-सच नारी चाहे तो घर को मंदिर बना दे और चाहे तो उजाड वाटिका भी । तुमने भी तो बहुत मेहनत किया मेरे साथ कंधे से कंधा मिलाकर पर दुर्भाग्य साथ नही छोडा दरवाजे पर गरीबी पसरी रही ।खून चूसने वाला दिन दूनी रात चौगुनी करते रहे ।वक्त बदल रहा है अब ऐसा नही होगा बेटवा पढ लिखकर शहर जायेगा नौकरी धंधा करेगा ।राजू को शोषण उत्पीडन करने वालो के खेतो में हाड कदापि नही फोडने दूंगा ।बडी बात तो नही पर बेटवा को अपनी खानदान की हंसुली तो बना ही दूंगा हाडफोड मेहनत मजदूरी से ।
सोनरी-अपनी बात छोडो । तुम तो अनपढ थे तभी तो भाईयों को कहना मानकर खेतिहर मजदूर बन गये । मेहनत मजदूरी करने लगे थे । अपना राजू तो पढ रहा हैं ।तुम तो ठंस बुध्दि के थे तब भी अब भी । राजू तो समझदार हैं ।राजू से तुम्हारी क्या बराबरी ।राजू तो मेर पर गया है ।
प्रेमनाथ-अरे वाह मैं ठंसबुध्दि हूं । इस ठंसबुध्दि बाप का बेटा तो हैं राजू ।
सोनरी- भले ही ा रंग तुम्हारे पर गया है पर दिमाग तो मेरा पाया हैं । खैर इन बातो को छोडो अभी तो बेटा के बारे में सोचा बेचारा बेचैन उदास हैं । उसकी उदासी देखी नही जाती हैं ।
प्रेमनाथ-अभी उदास हैं ब्याह के बाद सब ठीक हो जायेगा । राजू की मां अब बहुत बाते हो गयी । ब्याह की तैयारी भी तो करनी हैं ।
सोनरी-कैसी तैयारी अभी तो तिलक लेकर आये ही नही । अभी से ब्याह की तैारी में जुट रहे हो । तिलक आयेगी ब्याह का दिन पडेगा । तब ना जाकर ब्याह कर तैयारी शु होगी । हां तुम रूपये के इन्तजाम में लग जाओ । अभी लगन शुरू नही हुई हैं ।एक भारी सी चांदी की ही हंसुली बन जाती तो ठीक होता । खैर अभी सस्ती भी पडेगी । ब्याह में तो जितना गहना चढाओ कम ही रहता हैं । घर और दुल्हन दोनो को जितना

ही सजा दो कम ही लगता हैं। खैर हम तो ठहरे गरीब । हमे तो अपनी इच्छाओ को ही दहन करना होता है बारबार । ये सब तो पैसे वाले के लिये ही है ।सच गरीबी भी बहुत बडी बला हैं हम दीन दुखियों के लिये । इज्जत बचानी हैं तो गहना भी बनवाना ही पडेगा ।

प्रेमचन्द-राजू की मां मुझे धमका तो नही रही हो ।

सोनरी-कैसी बात कर रहे हो । मेरी औकात है धमकाने की । औरत तो गाय होती हैं । तुम मेरे उपर इल्जाम लगा रहे हो ।

प्रेमनाथ- मुझे कुछ ऐसे ही लगा हैं तुम्हारी बातो से ।

सोनरी-अरे बेटवा का ब्याह करने जा रहे हो । गहना तो बनवाना ही पडेगा ।

प्रेमनाथ-गहने की तो कोई मांग नही हैं ।तुम्हारे सामने ही तो गोबरदास की रहे थे । गहना तो दयालबाबू ही बनवा कर देगे ।

सोनरी- क्या बात कर रहे हो बेटवा का ब्याह तुम करने जा रहे हो । गहना समधी बनवायेगे । खैर गोबरदास कह तो रहे थे पर अपना भी तो फर्ज है कि नही ।

प्रेमनाथ-वो तो हैं ।भीखानाथ से मदद मांगूंगा । देखो क्या करता हैं । पैसे वाला भाई है । भतीजे का ब्याह हैं हो सकता है । हंसुली वही बनवा दे ।

सोनरी-मुझे तो नही लगता है ।

प्रेमनाथ-भाई हैं खबर तो करना ही चाहिये । कहते हें भाई से बडा मित्र कोई नही होता और भाई दुश्मनी पर उतर जाये तो उससे बडा कोई दुश्मन भी नही होता । दुश्मनी तो देख ही लिया हूं । पुरानी बातो को भूलकर चिटठी तो लिखवा ही दूंगा ।मुझे यकीन है कि उसका दिल जरूर पसीज गया होगा अब तक ।वह भी तो बडी सी पगडी बांधकर आगे आगे चलेगा । दुल्हे का ताउ जो हैं । ब्याह में तो आयेगा ही । हम भी तो उसकी लडकी के ब्याह में गये थे ।

सोनरी- पडोसी के भरोसे चूल्हा गरम करने की सोच रहे हो । ठीक नही है । ऐसा न हो कि मूल दिन इज्जत ना चली जाये ।

प्रेमनाथ- नही रे उसके भरोसे थोडे ही रहूंगा ।कमासूत भाई हैं मदद मांग लूंगा कर दिया तो ठीक नही किया तो भी ठीक । अपनी इज्जत थोडे ही जाने देगे । खाली हाथ बेटवा का ब्याह तो करने नही जायेगे ।प्रेमनाथ बेटवा के ब्याह की तैयारी में जुट गया ।

राजू मन मारकर रहने लगा । उसके सामने ब्याह का भूत रह रहकर खडा हो जाता । राजू के मन में विचार बनने लगा कि वह ब्याह के दिन ही भाग जाये पर दूसरे पल वह मां बाप की इज्जत के बारे में सोच कर कांप जाता ।अन्ततः वह परिस्थितियों से लडने की हिम्मत बनाया । हर अंधियारे को चीरने का हौसला भी ।उसके कण्ठ से स्वर फूट पडा,

कर लिया पहचान ना कोई सहारा ।
उडाने बाकी फूटा भाग्य हमारा ॥

दर दर पटका माथा ना कोई सहारा ।
अपने हुए स्वार्थी कैसा दुर्भाग्य हमारा ॥
रास्ता रोक रही अडचने कर विनती हारा ।
कुनबे को इज्जत प्यारी टूटा सपना हमारा ॥
उडाने बाकी हैं पसरा बदरा कारा ।
कोई क्यो ना राह रोके दुनिया-
उुची उडान ही उदेश्य हमारा ॥

राजू के मां बाप ब्याह की तैयारी में जुट गये । गहना गुरिया भी रीन कर्ज कर बनने लगा ।चांदी की हंसुली पायल और भी कई गहने ।वह भी राजू की मां की जिद पर। प्रेमनाथ तो गहने के खर्च से पूरी तरह बचना चाह रहा था।गहने के बिना ब्याह सम्भव ना था और बिना गहने की दुल्हन ऐसा ना कभी हुआ और ना होगा भी ,चाहे गरीब का ाादी हो या अमीर की ।

बडी रजगज के साथ बेटे की बरात प्रेमनाथ लेकर गया।अतिशबाजी का बहुत अच्छा इन्तजाम किया था । पूरे क्षेत्र में राजू के ब्याह में हुई अतिशबाजी की बाहबाही हुई ।राजू को राम और रूपमती को सीता की संज्ञा दी गयी । औरते कहती लडका सुन्दर हें होिशयार भी सुना हैं ाढने में बहुत तेज हैं । दयाल बाबू का दमाद भी दयाल बाबू की ही तरह बडा ओहदेदार बनेगा ंसरकारी साहेब बन गया तो रूपमती के भाग्या जाग जायेगा । सोने चांदी के गहनो से लदी हीरे मोतियों से खेलेगी ।

जितने लोग उतनी बाते ।राजू को इन बातो की फिक्र ना थी और ना ही रूपमती से कोई लगाव । वह तो अपने बाप की जबान कटने से बचा रहा था वह भी जर्बदस्ती । उसे तो फिक्र थी अपने भविप्य के सपनो से । गरीबी से निजात पाने के उदयमो से जो उसके बाप जाति समाज की डर से तोडकर ब्याह की कैद मे झोंक रहे थे ।अन्तोगत्वा राजू का ब्याह हो गया नन्ही सी उम्र में बारहवी पास भी नही कर पाया की गौना भी आ गया ।

॥छियालीस॥

प्रेमनाथ ने राजू का ब्याह छठवी कक्षा में था तब ही कर दिया था पर गौना भी जाति एवं समाज के दबाव में आकर कर दिया बारहवीं का नतीजा आने से पहले ला दिया । राजू की मेहनत रंग लाया वह बारहवी की परीक्षा अच्छे अंको से पास कर गया । ब्याह गौना हो जाने से राजू की चिन्ता बढने लगी थी और उसकी प्ढाई पर भी असर पडने लगा था । प्रेमनाथ की स्थिति राजू के गौने के बाद और भी खराब होने लगी थी । ब्याह गौने में कर्ज भी हो गया था इसकी चिन्ता प्रेमनाथ को ही नही राजू को भी खाये जा रही थी ।राजू को पढाई छूटने का भी डर सताने लगा था । राजू को शहर जाकर पढने का सपना वैसे भी पूरा न होने वाला था । गौने के बाद तो और भी मुिश्कले मुंह बाये खडी हो गयी ।राज की पढाई पर ही तलवार लटकने लगी । राजू सोचा न पढने से

अच्छा तो किसी गांव के ही स्कूल में नाम लिखा ले । लेकिन इस पिछडे इलाके में दूर दूर तक स्नातक का कोई कालेज ही न था । जो थे भी तो बहुत दूर पच्चीस से पच्चास किलोीटर की दरी पर । थकहार कर राजू अपने गांव से पच्चीस किलाीटर दूरी वाले कालेज े ंना लिखा लियाा ।गौन में विदाई में मिली साइकिल से कालेज आने जाने लगा । सुबह जल्दी सात बजे घर से कालेज को निकलता देर तक घर वापस आ पाता । बारहवीं तक तो वजीफा भी आराम से मिल जाता था । हां दस पांच रूपया बाबू को देना भी पडता था ।ग्रेजुएट में तो बहुत तकलीफ होने लगी । वजीफा भी मिलना रूक गया । कालेज के दफतर का चक्कर काट काटकर हैरान हो गया । कई महीनों के बाद कालेज के बाबू ने राजू को बताया की मार्क ाीट में ओभरराइटिंग की वजह से वजीफा रोका गया हैं । उस समय फोटो कापी की म ाीन गांवो तक पहुंची नही थी । गजटेड आफीसर से सत्यापित करवाये जाते थे आवश्यक कागजात । वही राजू ने भी करवाया पर जिला मुख्यालय के बाबू ने आबजेकसन लगाकर वजीफा ही रोक दिया ।कालेज के बाबू की सलाह पर राजू वजीफा रीलिज करने वाले कल्याण विभाग के जिला मुख्यालय पैतालीस किलोमीटर दूर साइकिल से गया ।सुबह चार बजे का निकला बारह बजे समाज कल्याण विभाग के जिला मुख्यालय पहुंचा । बडी मुश्किल से सम्बन्धित साहेब की सीट तक पहुंच पाया पर साहेब सीट से नदारत । पूछताछ करने पर पता चला कि साहेब चाय पान करने गये होगे । बैठो ।साहब आ जायेगे । कुछ चपरासी राजू से काम के विषय में पूछताछ करने लगा । राजू गांव का सीधासाधा लडका था सब कुछ बता दिया । चपरासी लोग साहेब से सिफारिस करने के फीस राजू से मांगने लगे । कुछ ने तो चाय पानी की भी मांग कर दी और खुद मंगाये भी और पैसा राजू को देना पडा ।चपरासियो ने भी राजू को लूटा जबकि वह रीन कर्ज करके वहां तक पहुंचा था वह भी नौ घण्टे साइकिल चलाकर। घण्टा भर के बाद साहेब पान चबाते हुए आये ।राजू अपनी गाथा सुनाया पर साहेब ने तीने सौ रूपये की मांग कर दी ।

राजू गिडगिडाते हुए बोला साहेब मेरे पास तो इतने पैसे नही है पैतालीस किलोमीटर की दूरी साइकिल से तय किया हूं । साहेब पस होते तो बस से न आ जाता ।साहेब मेरी मदद कर दो ।मेरी पढाई वजीफे के सहारे ही चल रही हैं ।

साहेब-अरे सरकार भी पगला गयी हैं । तु लोगो को पढने के लिये पैसा दे रही है । एक हम लोग है कि बच्चों को पढान के लिये भारी भरक फीस दे रहे हैं । ससुरे लडके है कि पढ ही नही रहे है ।फोकट का पैसा ता तुम लोगो का लि रहा है क्या हारा हक नही बनता । काम का दाम तो लगेगा । नही देना है तो जाओ ।काम करने का पैसा मांग रहा हूं । कोझ्र भीख तो नही मांग रहा हूं । थोडा कम ही दे दो ।

राजू-मदद कीजिये मुझ गरीब की । मेरा काम कर दीजिये आपका बहुत उपकार होंगा । आपकी नकी कभी नही भूलूंगा साहेब गरीब पर दया करो । साहब मेरा घर भी बहुत दूर

है । साहेब घर पहुुंचते पहुंचते रात के दस बज जायेगे ।साइकिल से जाना हैं दया करो साहेब ेरा काम कर दो ।
साहेब-साहब का पत्थर दिल नही पसीजा व्यंगवाण छाडते हुए बोले पहुंच तो जाओगे । इसमे कौन सी बात हैं । पहले हमारी फीस दो तुहारा काम कर देता हूं । नही दे सकते हो तों मैं काम भी नही कर सकता ।यह मेरी वसूल है कहते हुए साहेब चपरासी को बुलाने के लिये जैसे कालबेल पर बैठ गये ।
चपरासी-राजू की ओर देखते हुए मुस्कराया आर साहेब की ओर मुंह करके बाला हां साहेब कुछ कह रहे थे क्या ।
साहेब-अरे वो रोके गये छात्रवृति की फाइल उठा लाना ।
चपरासी- फाइल लाने में ही घाण्टा भर लगा दिया ।
साहेब-अरे क्या हुआ फाइल ला रहे हो की नही ।
चपरासी-साहेब मिल ही नही रही है ।
साहेब-राजू की ओर इशारे से बोले दे दो दस रूपया का नोट फाइल जल्दी ढूंढ लायेगा ।
राजू-दस रूपया ।
चपरासी-हां यहां कोई काम फ्री फोक्ट का नही होता ।तुम्हारे घर से क्या जा रहा है सरकार से पैसा ले रहे हो ।दस रूपया चपरासी का नही दे सकते हा आधे घण्टे से तुम्हारे काम मे लगा हैं पूरा स्टारेरूम छान मारा । चपरासी दस रूपया लेकर ही फाइल उठाया जो साहेब के पास ही पडी हुई थी ।
राजू-साहेब मेरा काम कर दीजिये ।
साहेब-जरा सांस तो ले लेने दो । पाकेट में से सुर्ती का डिब्बा निकाले सुर्ती बनाने लगे । चपरासी को बोले जा चाय पान लेकर आ । वह मुस्कराता हुआ चला गया ।
राजू-फिर साहेब के सामने गिडगिडाने लगा ।
साहेब-सेवा फीस तो दे ही नही रहे हो काम काम किये जा रहे हो क्या हम तुम्हारे बापके नौकर लगे है।
राजू-मेरे पास तो इतने पैसे है नही ।
साहेब- जाओ जब हो जाये तो आ जाना । काम हो जायेगा । एक बार कह दिया कि कुछ कम बेसी कर लो तो । पैसा नही हैं नही है रोये जा रहे हो । अरे हम भी तो कुछ कह रहे हैं। पैसा नही था तो यहां मुंह उठाये क्यो चले आये। तुमको पता नही दफतर ें काम करवाने के पैसे लगते हैं । पैसे नही थे पास मे तो क्यो चले आये मुंह उठाये हैं । क्या यहां फोकट में काम होता हैं । पैसा तो लगता ही हैं ।
राजू के आंखों में आसं भर आये । वह आसं ापसदे हुए दो सौ रूपये साहेब के साने रख दिया। साहेब छट से पैसा उठाये पाकेट में रखकर फाइल उठाये और बोले दूर से आये हो तुम्हारा काम तो करना ही पडेगा ।अरे हम तो समाज सेवा के लिये ही बैंठे हैं

।सरकार हमें तनख्वाह इसी काम की देती हैं ।ये देखो तुमने ओवरराइटिंग किया हैं मार्कशीट पर । यह तो पुलिस केस का मामला बनता है पर हमने तुमको बचा लिया हैं ।
राजू-साहेब ये ओर्जिनल मार्कशीट देखो ।
साहेब -क्या यहां तो फोरजरी हुई हैं ।
राजू-क्या कह रहे हो साहेब । गजटेड आफीसर से सत्यापित करवाकर जमा किया हूं । जब हमने जमा किया था तो ऐसे स्याही नही गिरी थी ।
साहेब- तुम तो ऐसे चौंक रहे हो जैसे किसी औरत की हंसुली से सोना या चांदी ही गायब हो गया हो । खैर छोडो जो हो गया । अब तुम्हारा काम हो जायेगा । फिर से सत्यापित करवाना होगा । सत्यापित करवाने के और सौ रूपये लगेगे । बडे साहेब के पास जाना होगा । उनकी ही दस्तख्त से तो वजीफा पास होता हैं । सौ रूपया और देकर चले जाओ तुम्हारा काम जल्दी हो हो जायेगा ।तुन जो दो सौ रूपये दिये है वह तो मेरा सवा शुल्क हैं । बडे साहब को भी तो कुछ चाहिये की नही ।जब तक व दस्ख्त नही करेगे वजीफा काई पास ही नही कर सकता । सौ रूपया तो और देना ही होगा।
राजू-मेरे पास तो सिर्फ पच्चास रूपये हैं । वह भी ले लेगे तो घर कैस पंहुचंगा ।
साहेब-अरे भाइ्र 175 ायया हर माह मिलेगा दो चार सौ रूपया खर्च नही कर सकते ।
साहेब न राजू के पच्चास रूपये भी छिन लिये और बोले जाओ अब तुम्हारा काम जल्दी ही हो जायेगा।
राजू समझ गया यह तो साजिस हैं पैसा ऐठने की जो सरकार पढने के लिये वजीफा देती हैं उसी के कर्ताधर्ता लोग हम गरीबो को ठगते है सरकारी खर्चे पर ।
साहेब-क्या सोच रहे हो ।
राजू- साहेब गरीब आदमी तो सोच कर ही खुश हो लेता है । गरीब हंसी तो बीमार की हंसी के बरोबर होती है ना ।
साहेब-अब क्या घर जाओ हंसी खुशी एकाध महीने में तुमको वजीफा तो मिल ही जायेगा ।
राजू-साहेब इसी वजीफे के भरोसे तो मैं पढ पा रहा हूं । इसमें भी व्यवधान खडा हो जा रहा हैं । यदि वजीफा नही मिला तो मैं नही पढ पाऊंगा ।
साहेब-जाओ तुम्हारा काम ओर भी जल्दी हो जायेगा । अब तुम जाओ देर ना करो । तुमको घर पहुंचने में काफी रात हो जायेगी । अब जाओ ।अगले महीने तुमको वजीफा जरूर मिल जायेगा । न मिले तो मेरे पास आ जाना ।
राजू-साहे इतनी दूर आना बहुत कठिन काम हैं । अब तो जितनी जल्दी हो मेरा काम कर देना ताकि मुझे वजीफा मिल जाये । साहेब परीक्षा सिर पर हैं किताब कापी तक नही हैं मेरे पास। घर से कालेज भी बहुत दूर हैं । सुबह जल्दी कालेज को निकलता हूं देर रात तक घर पहुंच पाता हूं । गरीबी की मार झेलकर पढ रहा हूं । आपके मदद की बहुत जरूरत हैं ।

साहेब- जब खाने पहनने को नही है तो पढाई क्यो कर रहे हो । लग जाते ेहनत मजदूरी में । खैर पढ रहे हो तो पढोे । पढकर भी क्या कर पाओगे । नौकरी पाने के लिय भी तो रूपया लगा हैं । तुम पढाई में समय खराब कर रह हो । तुम्हे तो अपनी गरीबी से निपटने के लिये मजदूरी कर लेनी थी। खैर ुम्हारी मर्जी पढना है तो पढो । बाद में तुका मेरी बात की असलियत मालमू पडेगी । मै अब तो तुम्हारी मदद जरूर करूंगा क्या सेवा शुल्क तो तुमने दे ही दिया है। तुम नििश्चन्त हो कर जाओ ।

राजू-साहेब बडी मेरबानी होगी यदि गरीब का काम जल्दी हो गया तो ।

जिलाधीश के दफतर के ठीक सामने रिश्वत लेकर साहेब ने राजू का काम करने का आश्वासन दिया ।राजू भूखा प्यासा दिन भर तडपता रहा । जो पैसे उसके पास थे साहेब ने छिन लिये । दो रूपया भी उसके पास नही बचा था कि वह दो रूपये की पकौडी खरीद कर खा सके । बडी मुिश्किल से राजू रात के ग्यारह बजे तक घर पहुंच पाया । साइकिल भूखे पेट चला चलाकर वह लस्तपस्त हो गया था ।

इधर राजू के घर मातम जैसे छाया हुआ था । राजू की मां सोनरी और रूपमती का रो रोकर बुरा हाल गाया था । राजू के घर पहुचते ही मातम छंटा था । राजू को देखते ही उसकी मां उससे लिपट कर रो रो कर पूछने लगी बेटा इतनी देर कैसे हो गयी ।

राजू-मां दफतर में साहेब लोगो के आगे हाथ जोड जोड कर थक गया । बडी मुिश्कल से तो काम करने का आश्वासन मिला हैं । जो रूपाया था दफतर वालो ने छिन लिया । भूख से बुरा हाल हैं । मुझे पहले खाने को दो रोटी दो फिर कोई बात करना । अभी ता हलक से आवाज ही नही निकल पा रही है।

सोनरी-बेटा दफतर में डाकू लोग रहते है क्या ।

राजू- हां मां शरीफ डाकू ।

सोनरी-बाप रे बदमाशो ने बेटवा को लूट लिया । मै कितनी मुिश्किल से ढाई सौ रूपया रीन कर्ज करके दी थी किताब खरीदने के लिये वह भी लुटेरो ने लूट लिया । बेटा किताब खरीदना तो दूर कुछ खा भी नही पाया दिन भर भूखा प्यासा मर गया ।

राजू-हां मां । अब तो खाना दो ।

सोनरी-अरे बेटी रूपमती बेटवा को खाना दे । बहुत थका हैं । देखो चल भी नही पा रहा हैं ठीक से। इतनी दूर साइकिल चला कर गया था । पैसा रहा होता तो कुछ खा लेता पर डाकूओ की भेट चढ गया जो पैसा था ।

रूपमती आंसू को पोंछकर झटपट खाना लायी । राजू दो रोटी खाया तब जाकर जान में जान आयी ।

वजीफा ही तो था एक ऐसा जरिया जिसके भरोसे राजू को पढाई पूरी करने की उम्मीद थी । राजू निरन्तर कालेज जाता रहा हैं । महीना भर बाद वजीफा भी मिलना शुरू हो गया । राजू लगन का पक्का था । परिश्रम से जरा भी नही डरता था । राजू के मां बाप के हाथ हमेशाा दुआ के लिये उठे रहते थे ।रूपमती भी भगवान के आगे सिर पटकती

रहती थी कि भगवान उस कायाबी दें। घर भर की दुआओ और अपने परिश्रम से राजू स्नातक प्रथम वर्ष की परीक्षा अच्छे नम्बरो से पास कर गया । राजू की मां के सपनो में चार चांद लगने लगे थे ।वह खुशी से कह उठी भगवान मेंरे खानदान की हंसुली को खूब तरक्की बख्शना ।

॥सैतालीस॥

राजू उद्देष्य के प्रति सजग था ।घर की दशा देखकर उसकी चिन्ता बढती जा रही थी । पढाई्र के साथ आर्थिक दिक्कतो का सामना करना पड रहा था साथ ही पारिवारीक जिम्मेदारी का बोझ भी उठाना पड रहा था । जिनके बोझ तले दबकर राजू खुद को ऐसे चौरास्ते पर पा रहा था जहां से आगे बढने का रास्ता ही नही सूझ रहा था। राजू के मां बाप काफी खुश थे क्योकि पतोहू यानि रूपमती सास ससुर को खाना पानी सब खटिया पर ही देने लगी थी । उन्हे घर का कोई काम करने न देती ।घर और परिवार की फिक्र रूपमती को भी सतान लगी थी । गांव के लोग प्रेमनाथ को भडकाने लगे । कुछ कहते क्या प्रेमनाथ तू बूढा हो गया जवान बेटवा घर में बैठा रहता है तू मेहनत मजदूरी में लगा रहता है । अरे बचपन से अब तक तो हाड ही फोडता आ रहा है। । अब तो आराम कर । बेटवा पतोहू वाला होकर तुम दोनो बूढा बूढी जान देकर खटते रहते हो । अरे बहुत पढ लिख लिया तेरा राजू । कब तक इसे पढोगे । अरे जवान है दो पेसा कमाने लायक हैं । अरे खेतिहर मजदूर नही बनाना है तो कही शहर परदेस ही भेज देते।जिसको कमाना चाहिये वह घर में बैठा हैं । जिसको आराम करना चाहिये वह दूसरो के खेत में हाड फोड रहा है ।क्या जमाना आ गया हैं बेटवा खटिया तोड रहा है । बाप हल जोत रहा हैं दूसरो का ।अरे प्रेमनाथ बन्द करवा पढाई लिखाई । तेरा बेटवा कलेक्टर बनने से तो रहा । तुम्हारे पास खान का इन्जा ही नही तो नोकरी के लिये भारी भरकम घूस कहां से दोगे। लगा दे कही किसी बडे जमीदार के यहां काम पर या भेज दो शहर परदेस ।खटिया तोडने से पंेेट नही भरेगा ।दिन भर घर में बैठ कर करता क्या हैं दुल्हनिया का ही निहारता रहता हैं ना । प्रेमनाथ बेटवा कमाने लायक हो गया हैे ।कब तक खटिया पर बैठा कर खिलाओगे बेटवा पतोहू को ।

प्रेमनाथ कहता देखो भइया मेरा सपना हैं खूब पढ लिखकर मेरा बेटा शहर जाये । और जाते ही उसे बडे साहेब की कुर्सी मिल जाये । राजू की मां की दिली तमन्ना है कि बेटवा बडा साहेब बने। और उसको गहनो से लाद दे । भइया बेटवा से हम सब को बहुत उम्मीदे हैं । बेटवा उूंची ापढाई नही करेगा तो हम सबके सपने कैसे पूरे होगे । उसी की पढाई लिखाई के लिये तो दिन रात हाड फोड रहा हूं । लोग तरह तरह से भडकाते । सब की बाते सुनकर प्रेमनाथ सोनरी से कहता तो वह उसे डांट देती कहती ये लोग हमारे बेटे की ्पढाई देखकर जलते हैं । अरे ये किसी की हिम्मत नही होती कि मदद कर दे कोई । जिसको देखो वही ज्ञान बांटने लगता है । अरे हम मेहनत मजदूरी कर रहे हैं अपनी औलाद को सुखी बनाने के लिये दूसरों को छाती क्या फट रही है ।तुम तो किसी की बात

पर ध्यान मत दो अपना काम करो बेटवा को पढने दो ।लोग हमारी तपस्या भंग करना चाह रहे हैं ।ऐसा नही होगा । हम बटवा का खब पढायेगे ।अरे ह बेटवा को दे भी क्या रहे हैं ।किताब कापी का खर्चा तो वजीफ से ेचल जाता हैं ।बेचारा बेटवा छुटटियों मेहनत मजदूरी कर लेता हैं । घर का खर्च चलाने में भी तो मदद कर रहा हैं ।ना जाने लोगो की आंख क्यों फट रही है ।

राजू घर की हालात को देखकर बेचैन था । वह भी कभी कभी पढाई लिखाई छोडकर शहर जाने की बात रूपमती से करने लगता ।रूपमती उसकी हिम्मत बढाती । पढने को प्रोत्साहित करती ।कभी कभी तो वह अपनी हंसुली उतार कर राजू के हाथ पर रख देती कहती ले जाओ । तुम अपनी पढाई में आ रही आर्थिक बाधाओ से निपटो । हंसुली तो कभी भी बन जायेगी पर पढाई छोडने की बात जबान पर ना लाओ । लगे रहे जब तक ग्रेजुएट नही हो जाते हो । मेरे बापू कहते हैं ग्रेजुएट किये लोगो को नौकरी जल्दी और बढिया मिल जाती है । तुम पढो आगे बढो । मैं अपने सारे गहने बेचने को तैयार हूं पर तुम पढाई न छोडो ।मेरी कसम तुमको अब कभी बीच में पढाई न छोडने की बात करना । तुमसे तुम्हारे मां बाप को कितनी उम्मीदे हैं उनकी उम्मीद को ना तोडना । रूपमती अपने बाप के बिते दिनो की दास्तान सुनाती कहती वे भी बडी मुश्किल से बारहवीं पास कर पाये थे । हमारे परिवार में भी बहुत गरीबी थी । बाबू को नौकरी मिलने के बाद ही सब तरक्की हुई है । तुम तो बाबू से बडी क्लास में पढ रहे हो तुमको तो और अच्छी नौकरी मिले जायेगी। पढाई पूरी करो बाकी सारी चिन्तायें छोड दो भगवान पर मुंह दिया हैं तो आहार भी देगा ।

राजू -रूपमती तुम कह तो ठीक रही हो पर सोचने को मन कई बार मजबूर हो जाता है । सामाजिक आर्थिक चारों ओर से तो मुश्किले मुंह बाये खडी है । मैं बेचैन हो जाता हूं । क्या करू । मेरे सिर पर मुश्किलो का पहाड खडा रहता हैं। अब तो लोग ताने भी देने लगे है ।

रूपमती- अरे कुछ लोगो की आदत होती हैं दूसरों के घर में झांकने की । कुछ लोग दूसरो का अच्छा काम पचा नही पाते हैं । लोग तो चाहेगे ही कि तुम भी ससुर जी की तरह दूसरों के खेत में हल जोतो । अरे अपने बाप को देखो वे तो तुमको बडा साहेब बनाने का सपना देख रहे हैं अपनी हाडफोड मेहनत के भरोसे । पढाई पूरी कर लो मेहनत मजदूरी तो करनी ही हैं पर गांव के मालिको के खेत में नही शहर के किसी दफतर में । मेरी कसम को याद रखना तोडना नही । बीच में पढाई छोड दोगे तो ना इधर के होगे ना उधर के । सबके साथ तो अपना भी सबेरा हो रहा हैं । दुनिया वाले मारते हैं ताना तो मारने दो अपने मां बाप के अरमानो को पूरा करने के लिये प्रतिज्ञावान बनो । लोगो का तो काम ही हैं औरो का बनता काम बिगाडना । लोगो को जो कहना है कहना दो । अपने मकसद पर डटे रहो । अरे कौआ कान लेकर जा रहा है तो जाने दो उसके पीछे क्यो दौडते हो पहले अपना कान देखो ।

राजू-ठीक तो कह रही पर मन बेचैन हो जाता है रह रहकर । किस्मत में ना जाने क्या लिखा हैं । बहुत क्श्मकश के दौर से गुजर रहा हूं । तुम्हारी बातो से थोडा सकून मिलात हैं । मां बाप के पसीने को देखकर मन रो पडता हैं ।काश मां बाप के सपनों को पूरा कर पाता ।

रूपमती-देखो जी हौसला रखो ।पढाई पूरी करो । मैं भी मेहनत मजदूरी से नही डरूंगी । जरूरत पडी तो मैंं भी श्रम की मण्डी में कूद पडूंगी । भले ही बडे बाप की बेटी हूं ,हूं तो मेहनतकश परिवार से ही। तुम पढाई पूरी करके ही शहर की ओर रूख करोगे । मेरी बात गठिया लो और मेरी कसम को भी ।

रूपमती की बातों और मां के सपनो ने राजू काे बल दिया । वह पढाई मेु तन मन से जुट गया । छुटिटयों के दिन वह कभी सडक पर तो कभी नहर पर काम कर लेता । इस मेहनत के पैसे से घर परिवार चलाने में भी मदद मिल जाती ।लोग कहते वाह रे लडका इतनी दूर पढने जाता हैं । दूरी का नाम सुनकर लोगो को पसीना आ जाता है। छुटिटयों के दिन भी अराम नही करता है जरा भी। कभी नहर पर तो कभी सडक पर मांटी फेंकते नजर आ जाता है । लगता है प्रेमनाथ और सोनरी का सपना पूरा करके ही दम लेगा । राजू बडा साहेब बन गया तो सोनरी किलो भर चांदी की हंसुली पहनकर इधर उधर इतराती फिरेगी ।

कभी कभी प्रेमनाथ भी लोगो के बहकावे में आकर राजू को बुरा भला कह जाता। राजू को बाप की शिकायत का एहसास तो हो जाता । वह कभी कुछ ना बोलता हां छुपकर कही रो जरूर लेता था ।राजू की मां सोनरी को भी अपन पति प्रेमनाथ की बाते से तकलीफ होती पर वह कुछ ना बोल पाती थी। सोनरी प्रेमनाथ को समझती भी पर वह सानरी की बात कहां मानने वालाथा ।सोनरी कहती लोग बेटवा की पढाई और उसक हौशल को देखकर जल रहे हैं । तुम लोगो की बाते में आकर बेटवा को बुरा भला कहते हो । घर में बहू भी हैं । दूसरो कीे ओछी बाते सुनकर भडक जाते हो। अरे बेटवा की मेहनत को नही देखते । बेचारा इतना दूर साइकिल चलाकर जाने आने मे थककर चूर हो जाता हैं । तुम्हारी शक्ति थी शहर भेज कर पढाने की । एक तो हमारे सपनों को पर लगाने के लिये दिन रात मेहनत करता हैं दूसरे उसी को कसूरवार बनाते हो ।अपनी मजबूरी को देखकर ही बेटवा शहर नाम नही लिखवाया क्योकि खर्चा तुम पूरा नही कर पाते । वजीफा भी तो हर महीने नही मिलता । साल पूरा होते होते तो मिलता हैं । जैसे तैसे दुख झेलकर पढ रहा हैं पढ लेने दो । हो सकता हैं बेटवा के भरोसे अपने भी दिन बदल जाये इसी आशा में तो हम जी रहे हैं । थोडे दिन की तो बात हैं । उसकी पढाई भी पूरी होने वाली है । देखो राजू के बापू तुम पियक्कडों की महफिल में बैठते हो उन हरामखोरो कीे गलत सलाह पर सोचने लगते हो । देखो ऐसी महफिलो से दूर रहा करो । यहां सब बर्बाद करने वाले लोग बैठते हैं । सोनरी प्रेमनाथ को भरसक समझाने की कोिशश करती ताकि वह बेटा बहू पर ना भडके । वह हमेशा सामन्जस्य बनाने में

जुटी रहती । खैर गरीबी से जूझने वाले ही गरीबो की पीडा जान सकते है । बेचारी सब समझती थी ।वह तो बेटवा को बहुत पढाना चाहती थी पर लाचार थी तो आर्थिक तंगी से ।राजू भी अपने मां बाप की तंगी स अनभिज्ञ न था ।

रूपमती के पेट में गोला उठने लगा । वह दर्द के मारे कभी कभी जीवन और मौत से जूझने लगती ।डाक्टरों ने आपरेशन करवान की सलाह दे दी । आर्थिक तंगी ने मजबूर कर दिया । भगवान पर यकीन ने थोडी राहत बरती । राजू की स्नातक की परीक्षा भी खत्म नही हुई थी कि रूपमती ने एक सुन्दर से बेटी को जन्म दे दिया । राजू बाप बन गया । राजू की परीक्षा का रीजल्ट जुलाई क प्रथम सप्ताह में ही आ गया । वह परीक्षा पास कर गया । राजू बेटी के जन्म से खुश था । बाकी घर के लोग भी काफी भी पर काले बादल मंडरा रहे थे तो आर्थिक तंगी को लेकर । वह कभी कभी रो जाता था । गांव में रहकर वह अपनी आर्थिक स्थिति ठीक नही कर सकता था क्योंकि गांव में खेतो में मेहनत मजदूरी के अलावा और कोई काम न था । ना ही कोई पैतृक सम्पति न ही खेती की जमीन थी जिससे परिवार का भरण पोपण कर सके । राजू के सामने एक ही विकल्प था कि वह ाहर जाकर कोई नौकरी तला ो े ।राजू को घर में बैठना खलने लगा था । आगे पढने की आर्थिक स्थिति इजाजत नही दे रही थी । दूर दूर गांव तक कोई स्नातकोत्तर कालेज भी ना था । राजू ाहर की ओर शीघ्र कूंच करना चाह रहा था ।

एक दिन राजू अपनी मां बाप से बोला अब मैं ाहर जाने की इजाजत चाहता हूं ।

प्रेमनाथ बोला बेटा मेरी तमन्ना थी कि तुम और आगे तक ाढ लेता । इसी बीच सोनरी बोली अरे बेटवा ाहर तो जाना ही हैं । थोडी और पढाई कर लेते बेटा ।कमाना तो जिन्दगी भर हैं ।मैं तो पाल्हमेश्वरी मइया से दिन रात सुमिरन करती हूं की बेटवा को तरक्की बख्शें ।सोनरी मन ही मन पाल्हमेश्वरी मइया को सुमिरने लगी ।

जय जय हे पल्हना की मांता

तेरी कृपा से मइया दुख दरिद्र का नाश हो जाता ।

ना उम्मीद की पूरी होती उम्मीदें संकट कट जाता ॥ जय जय हे पल्हना की मांता ....

तेरे द ार्न से मइया बिगडा भाग्य संवर जाता ।

कितनो का किया कल्याण मेरा भी कर दे मांता ॥ जय जय हे पल्हना की मांता ....

ना कुछ मेरा मइया लाया आंसूओ की माला ।

सुन लो विनती बेटवा को नौकरी दे दे मांता ॥ जय जय हे पल्हना की मांता ....

सौपा जीवन तुमको मेरा भार सब तेरे हाथो में मांता ।

उध्दार करो पतवार तुम्हारे हाथों में है मांता ॥ जय जय हे पल्हना की मांता ....

कष्ट घेरा मुझको तेरे बिन अपना कौन है मांता ।
शेर की संवारी अब तो करके आ जा मांता ॥ जय जय हे पल्हना की मांता ....

लाल चोला लाल गुडहल तुमको है भाता ।
भक्त ओढे लाल चुनरिया तेरे गुणगान है गाता ॥ जय जय हे पल्ह्ना की मांता ....

रिध्दि सिध्दि सुख सम्पति की तू ही है दाता ॥
मां करूं आरती तेरी सब जन मिल गाता ॥जय जय हे पल्हना की मांता ....

राजू-मां कहा खो गयी । पाल्हमेश्वरी मइया को मनाने लगी क्या ।
सोनरी- हां बेटा देवी देवताओं के अलावा कोई और तो सुनने वाला नही हैं । बेटा गरीबो का जीवन तो विश्वास पर ही चल रहा हैं वरना ये सबल लोग कहा जीने देते ।
राजू-मां पाल्हमेश्वरी मइया ने ाहर कब जाने को कहा है । मां मुझे शहर तो जाना ही होगा । मैं शहर जाकर नौकरी धंधा करते हुए आगे की पढाई जारी रखूंगा । मां घर की दशा देखी नही जाती । अब तो मेरी जिम्मेदारी और भी बढ गयी है । मां मै यहां रहकर अपनी जिम्मदारी नही उठा पाऊंगा । मां पाल्हमेष्वरी मइया की कृपा से नौकरी मिल जाये और घर की काया कल्प हो जाये । मां तुमको भी मनचाहे गहनो से लाद दूंगा बस एक अच्छी सी नौकरी मिलने भर की देरी है । राजू मां बाप की जीवन भर की ख्वाहिशों को पूरा करने और अपने कल को संवारने के लिये रूपमती और अपने ां बाप को ढाढस बंधाकर शहर को कूंच कर गया ।

॥अडालीस।

राजू शहर तो चला गया पर ना ही शहर में रहने का ठिकाना ना ही कोई जान पहचान । जो अपने भी थे वे भी पराये लग रहे थे । उसे शहर में अपने परायो का नजदीकी से आभास हुआ ।यहां तक कि रूपमती के बाप ने भी कोई मद्द नही की ।वहले भी कभी नही किया था पर राजू को उम्मीद थी कि शहर जाने पर उसके ससुर जरूर मदद करेगे पर वे भी आंखें मूंद लिये । शहर में राजू लावारिस सा होकर रह गया था । बेचारा राजू दिन भर काम की तलाश में भटकता शाम को एक परिचित के घर के एक कोने में आकर गिर पडता पेट में भूख और दिल में नौकरी का सपना लिये । छोटा मोटा काम करने को तैयार रहता ।महीने भर दर दर की ठोकरे खाने के बाद वह एक छोटी सी फैक्टरी में 450 रूपये की नौकरी कर लिया ।इस तनख्वाह से अपनी खुराकी देता और जो कुछ बंच जाता अपने बाप को मनीआर्डर करना नही भूलता। राजू को अपनी चिन्ता से अधिक चिन्ता मां बाप,रूपमती और एक नन्ही से बेटी की थी । जिससे वह बेचैन रहता पर कही कोई आशा की किरण नजर नही आ रही थी । 450 ाये की नौकरी

भी ज्यादा दिनों तक साथ नही दे पायी । फैक्टरी मालिक को जब राजू की निम्न जाति का पता चला तो वह उसे नौकरी से निकाल दिया । उसके उपर फिर संकट के बादल ि ार गये । वह जी जान से नौकरी की तलाश में फिर से लग गया । पढा लिखा होने के बाद भी जातीय अयोग्यता की वजह से फेल हो जाता ।सरकारी नौकरी तो उसकी पहुंच से बहुत ही दूर थी । इश्तहार आते राज अर्जी भेजता पर कोई जबाब नही । उसके पास इतनी रकम भी न थी कि वह नौकरी खरीद सके और ना ही ऊंची पहुंच नतीजन खून के आंसू तो पीना ही था । उसके सामने तो रोटी के लाले पडे हुए थे ।राजू सात साल तक नौकरी की तलाष में बावला सा शहर में घूमता रहा । उसकी ौैक्षणिक योग्यता उसे नौकरी दिलाने में कामयाब नही हो पा रही थी । कभी जातीय भेद के कारण तो कभी घूसखोरी के कारण । सात साल की कठिन संघर्प के बाद एक उपक्रम में नौकरी नन्हे से ओहदे की मिल गयी थोडी सी जान पहचान की वजह से। दफतर के लोगो ने राजू को भी बडी बिरादरी का समझा । बिरादरी का खुलासा होते ही राजू उत्पीडन का िशकार होने लगा।उसे संस्था से बाहर उठा फेंकने की साजि ों रची जाने लगी थी । राजू इन साजिशांें से बेखबर संस्था के कामो में जुटा रहता । मन लगाकर काम करता । वह अपनी नौकरी और भविष्य से भी सजग था । वह बडे ओहदेदारो का दिल अपने काम से जीतने की कोिशश करता पर हार जाता । उसे पता था कि नौकरी में न का कोई रोल नही होता ।इसलिये वह तन मन से नौकरी को समर्पित हो चुका था । वह दफतर के कामों को कर खुद को काफी सन्तुप्ट पाता था । जब वह मानसिक रूप से सन्तुष्ट होतो तो मन ही मन गुनगनाने लगता ।

कहते लोगवा नौकरी में ना पावेै जगह असुर ।
नौकरी है मजबूरी, जहां मिलाना होता सुर में सुर ॥
नौकरी जहां योग्यता के बल अभावो का मुकाबला करता आदमी ।
व्यवस्था चलाने का साज,अधिकार के जाल जब उलझ जाता आदमी ॥
मद में डूबा खुद को खुदा मान गैरआत्मा को झकझोरता आदमी ।
सहमा सहमा कर्मपथ पर चलकल से डरता राजू जैसा आदमी ॥
दुनिया जाने नौकरी दीन वंचित के लिये सावन की फुहार ।
अभावों पर विजय तो श्रम की हैं ललकार ॥
नौकरी जीवन की मुिश्कले करती आसान ।
बची रहे कुदृिष्ट से, नौकरी और नौकर दोनो होते महान ॥

राजू अपने मां बाप के सपनों को पूरा करने के लिये कमर कस चुका था पर अमानुषतावादी व्यवस्था के पोपक राजू की राह में कांटा बोने में जरा भी नही हिचकिचाते । राजू अपने वसूलो पर खरा उतरने को दृढसंकल्पित था ।वह सारी बाधाओ को नजरअन्दाज कर आगे प्राइवेट पढाई करने में जुट गया ।

राजू चारो तरफ से मिश्‍कलो से घिरा हुआ था परन्तु वह अपने मां बाप के सपनो से बेखबर जरा भी न था ।गांव में राजू की मां बीमार रहने लगी । उसकी दवा दारू का भार ।इधर राजू की पत्नी रूपमती की पुरानी बीमारी जान लेवा हालत में उभर गयी । खुद उत्पीडन का ि ाकार होकर भी अपने बाप को मनीआर्डर बराबर करता रहता । राजू का बाप प्रेमनाथ बेटवा से और अधिक उम्मीद रखता जो राजू पूरा करने में अस्मर्थ था । राजू की मां को गहने की भी लालसा प्रबल थी ।रह रह कर वह भी राजू को उलाहना दे ही देती वह कती बेटवा सोने की हंसुली गढवाने की कह रहा था, लगता हैं चांदी की भी नही गढवायेगा ।

राजू खुद तकलीफें उठा लेता पर मां बाप को नही पडने देता ।राजू मुसीबतो से घिरा रहने लगा । रूपमती की बीमारी और बढ गयी । वह खटिया पर गिर पडी । रूपमती राजू को आगे पढने को प्रोत्साहित करती रही । वह पढ भी गया परन्तु कोई तरक्‍की न कर पाया ।

राजू परिस्थितियों से लडते हुए अपनी नौकरी के साथ पूरा इंसाफ करता । लोग थे कि जुल्म करने से बाज नही आते थे । राजू दुधारी लोगो के सामने तो नही भगवान की तस्वीर के सामने जरूर आंसू बहा लेता । जिसके एवज में उसे सहन ाक्ति का प्रकाशपुंज अवश्‍य मिल जाता । इस दैवीय ाक्ति के सहारे वह जीवन की कठिन राह पर चलने में कामयाब हो रहा था पर मुि‍श्‍कले और अधिक बढती जा रही थी ।संस्था में तथाकथित बडे लोगो का राजू की उपस्थिति जरा भी नही भांती । लोग उसकी परछाई से भी परहेज करने लगे थे । भगवान की कृपा ही थी कि उसकी नौकरी बचती जा रही था बडे बडे लोगे के विरोध के बाद भी ।वह व्यथित होकर जमाने की चोट से घायल दर्द के गीत गा उठता ।

गरीब के दामन दर्द,चुभता निशान छोड जाता है
दर्द के बोझ जवां बूढा होकर रह जाता है ॥
दर्द में झोकने वाला मुस्कराता है किनारे होकर ।
बदनसीब थक जाता हैं दर्द का बोझ ढोकर ॥
शोषण वंि‍चत का जुल्म आदमियत पर ।
दर्द का जख्म रिस रहा ऊंचनीच के नाम पर ॥
मातमी हो जाता है,गरीब का जीवन सफर ।
सांस भरता गरीब अभावों के बोझ पर ॥
जंग अभावो से,हाफ हाफ करता बसर ।
चबाता रोटी,आंसूओ में   भीगोकर ॥
उत्पीडित नही कर पाता पार, दर्द का दरिया जीवन भर ।
दिया है दर्द जमाने ने दीन जानकर ॥
गरीब का दामन रह गया जख्म का ढेर हाेकर ।

दर्द भरा जीवन कटते हर लम्हे कांटों की सेज पर ॥
अब तो हाथ बढाओ दीन डूबते की ओर ।
वंचित हैं,उठ जाओगे,नर से नारायण होकर ॥

राजू को जनून था अपने मां बाप के अरमान पूरा करने का इसी चिन्ता में वह बूढा हुये जा रहा था। उत्पीडन सह सहकर वह परेशान था । उसकी ओर किसी ने कभी मदद के हाथ नही बढाये । हां उसे दफन करने की साजिस जरूर रची जाती रही । राजू अपने मां बाप की तकलीफों को पास से देखा था । उनको आंसू बहाते दर्द से कराहते । मालिको के खेत में हाड फोडते सब कुछ देखा था । वह आपने मां बाप के रिसते जख्म पर अपने कर्म का लेप लगाना चाहता था ताकि उनके बुरे दिनो का दर्द आजीवन डंसता ना रहे । इसके लिये राजू दिन रात की मेहनत से जरा भी नही डरता था ।उसे डर तो बस समानता के विरोधियों से दीन वंचितों के रौंदने वालो से । राजू खुद कष्ट उठाकर मां बाप को सुख देने का कठिन प्रयास करता । वह अपने मां बाप के लिये गांव में पक्का क्वाटर बनवाया । मां के लिये कुछ गहने भी बनवाया । अच्छे कपडे लते और कुछ गहने मां को लेकर वह रेल से गांव जा रहा था । लेकिन दुर्भाग्य ने फिर छल लिया ट्रेन में चोरी हो गयी ।राजू कडी मुश्किल से कुछ गहने बनवाया था वह भी चोरी चले गये । नगदी भी चोर ले उडे जो बाप के हाथ पर रखकर उन्हे खुश देखने की लालसा उसके मन में थी। उस पर भी डकैतो की कागदृष्टि पड गया । बेचारा राजू हर ओर से असहाय हो चला जा रहा था । चलती ट्रेन में कब चोर सारा समान लेकर रफुचक्कर हो गये पता ही नही चला ।गांव आने बाद जब बक्शा खुला तब जाकर पता चला कि चोर बक्शा नीचे से काटकर सब कुछ ले उडे थे। नीच से कटे बक्श का देखकर राजू गश खाकर गिर पडा ।रूपमती के भी रो रोकर बुरे हाल थे । राजू की मां सोनरी को चुपकरवाते हुए बोली चुप हो जा बहू गरीबो के ख्वाब कहां पूरे हुए है कि हमारे होगे । अरे अपनी किस्मत में गहना पहिनने को सुख नही लिखा है ।

॥उन्नचास॥

ट्रेन में हुई चोरी ने राजू की कमर तोड कर रख दी । चोरी की वजह से एक बार फिर राजू के सिर मुसीबतों का पहाड टूटने लगा । मां की तबियत खराब होने लगी । घरवाली की हालत तो पहले से ही खराब थी । इसी बीच राजू के बाप प्रेमनाथ की भी हालत बहुत खराब हो गयी । उन्हे उठाकर शहर लाया गया । बडा आपरेशन हुआ । तब जाकर जान बची । राजू की छाती का बोझ और बढ गया । राजू आर्थिक रूप से दिन पर दिन टूटता जा रहा था और मुश्किले बढती जा रही थी । वह मुसीबतो के चक्रव्यूह में तडपने को मजबूर था । उसे कही से राहत नही मिल रही थी ना ही समाज से ना ही श्रम की मण्डी से । चारो से मायूस हो चुके राजू की चिन्ता हर रही थी किताबें जीनका सहारा बनी हुई थी रूपमती ।

राजू की नौकरी भी बडे ओहदे की ना थी ।इतनी कमाई हो जा रही थी कि जीवन बसर हो रहा था । लोगो के विषबाण का दर्द अपने सीने में उतारकर इस उम्ममीद में जी रहा था कि कल उसका जरूर होगा ।राजू चलती लाश बन चुका था इसके बावजूद भी अपनी नौकरी पर जी जान से लगा रहता था परन्तु दम्भी लोग रौदने के लिये हमेशा उतावले थे । शारीरिक मानसिक एवं आर्थिक मुश्क्लिों से जूझ रह राजू की मदद में किसी के हाथ नही बढ रहे थे । अगर कोई राजू की मदद कर रहा था तो वह भगवान ही था। हां जुल्म ढाहने वालो की संख्या अधिक थी चाहे वह चपरासी क्यो न रहा हो । चपरासी भी राजू से श्रेष्ठ बनता था । रहरहकर वह भी घाव दे ही जाता था ।नौकरी करते करते उम्र के पांचवे दशक में प्रवेश कर गया पर तरक्की उसकी पहुंच से बहुत दूर जा चुकी थी । बेचारे का जीवन विरान हो चुका था ।उसकी जिन्दगी में पतझड के अलावा बसन्त का कोई नामोनिशान न था । राजू भगवान के भरोसे ही सांसे भर रहा था ।वह सारे दुख भगवान का परसाद समझकर झेल रहा था । उसकी आंखों से लहू के आंसू बहते रहते पर वह अपने मां बाप के सपनो को साकार करने के लिये दिन रात जी तोड मेहनत मश्कत करता । राजू की घटती उम्र के साथ आदमी द्वारा रचे चक्रव्यूह में फंसकर कब बूढा हो गया पता ही नही चला । राजू के बराबर आहदेदार उूचे पदो पर पहुंच गये ।राजू जिस पद पर ज्वाइन किया था आगे नही बढ पाया भेद के तूफान की वजह से । इस जख्म ने राजू को एक दार्शनिक जरूर बना दिया । वह श्रम की मण्डी के पद रूपी सोने के जंजीर रूपी स्वप्न को भूलकर मानवता रूपी हंसुली को गले लगाने के लिये शीत युध्द में कूद पडा ।वह आदमी द्वारा निर्मित चक्रव्यूह से तिलमिला कर कह उठता,

मुझ अदने के कल का हो गया है कत्ल , तडप रही आशा की तरूणाई ।
भेद की खोट गहने पर करे चोट,ना पद ना ही दौलत की बजी शहनाई ॥
छिन गये सपने सारे,ना पास आ पाई सफेदी और ना ही खाकी ।
मेहनत की सूखी रोटी, चिन्ता के बादल सन्तोष की पूंजी है बाकी॥
हुई तरक्की बाधित,अदने को डंस रहा भेद ना जाने कब से ।
आस थी उूंची उडान भरने की आंख खुली तब से ॥
आहत मन राहत की ना मिलती कोई ठांव ।
विषमतावादी जग बना बैरी कहा तलाशू छावं ॥

राजू चिन्ता की चिता में नित जल जलकर तबाह हुए जा रहा था । नौकरी के दौरान जो कुछ उसके साथ घट रहा था तथाकथित उच्च लोगो पर अंगुली उठाने को काफी था ।बेबस राजू करे भी तो क्या । मुसीबतें सुरसा डायन की तरह चारो ओर से राजू को डंसने के लिये कतारबध्द थी ।वह ना जाने कैसे इन मुसीबतो से बच कर निकल पा रहा था । वह खुद इस बात को समझ नही पा रहा था । राजू चिन्ताग्रस्त रहने लगा । उसकी सारी उम्मीद धराशायी हो गयी । दिल के अरमान आंसूओ में बहने लगे । चिन्ताओ की चिता में सुलगता हुआ राजू ढेर सारी बीमारियों के जाल में फंस गया ।

बीमारी से तो कुछ आराम हुआ पर आदमी द्वारा निर्मित अडचनों से कोई सहूलियत ना मिली ।हां सामाजिक अडचनों के दुष्प्रभावं से उसका आज ही नही कल भी भस्म हो गया । शारीरिक एवं सामाजिक बीमारी से ग्रस्त राजू अब अपने मां बाप के सपने पूरे करने के लिये ही नही वंचितों को भी जुगनू की भांति रोशनी देने का काम करने में जुट गया। मुसीबतो के समन्दर में गोता लगाते हुए राजू खुश रहने की कोशिश करता पर दिल पर जमा घाव मुस्कराने नही देता ।

राजू की चिन्ताये बढती जा रही थी उजडते हुए कल को देखकर । परिवार का बोझ भी बढने लगा था । राजू के मां बाप भी जीवन के सान्ध्य बेला में प्रवेश कर गये पर उनकी मनोकामना पूरी होने की दूर दूर तक कोई आस ही नही दिखाई दे रही थी । राजू इस वजह से अधिक चिन्ताग्रस्त था ।वह चहुंओर से मुसीबतो में फंसता जा रहा था । राजू के मां की मुरादे नही पूरी हो पा रही थी ।उसकी मां ज्यातातर बीमार रहने लगी थी । राजू के मां बाप को अपने बुने सपने टूटते हुए नजर आने लगे थे । राजू का जीवन कांटो की सेज बन चुका था । समाज का ही नही दफतर का भी जीवन दुखदायी लगने लगा था ।राजू यही सोचकर मन काे तसल्ली देने का प्रयास करता पर वह हार जाता ।वह कहता सामाजिक कुव्यवस्था का आतंक हारी तकदीर क्यो बन कर रह गया है ।उधर गांव में राजू की मां की तबियत खराब रहनेे लगी । पहले की तुलना में अब हालत अधिक खराब रहन लगी थीे । राजू मां की बीमारी की खबर सुनते ही गांव की ओर भागा । राजू की दशा को देखकर उसकी मां सोनरी की आंखों में आंसू भर आये । वह राजू के सिर पर हाथ फरते हुए बोली परिवार के चिराग और हमारे गहने पर ना जाने किन अमानुषो की नजर लग गयी है । बेटवा को समाज में ही नही श्रम की मण्डी में उचि स्थान नही मिल पा रहा है ।भगवान हमारा समाज सामाजिक कुव्यवस्था के जहरीले समन्दर में और कब तक डूबता रहेगा ।

॥पच्चास।

राजू दयनीय दशा से गुजर रहा था । उधर गांव में उसकी मां की तबियत और अधिक खराब रहने लगी । गर्दन सिर का बोझ उठाने से अस्मर्थता जाहिर करने लगा था ।वही गर्दन जिस गर्दन में सोनरी ने किलों भर चांदी की सहुली पहनने का ख्वाब सजाये हुये थी । बेचारी गहनों से लदने की जगह दर्द से लद चुकी थी पर आस अभी भी थी ।राजू मां को बीमारी में जकडा हुआ देखकर शहर लाया इलाज बढिया डांक्टर से शुरू हुआ । इलाज से काफी राहत मिली ।जब तक दवा का असर रहता तब तक तो अराम रहता पर दवा का असर खत्म होते ही दर्द के मारे चिल्लाने लगती । काफी इलाज के बाद फायदा तो हुआ पर पूर्णरूप से रोग का निदान असम्भव था । लेकिन राजू को भरोसा था कि उसकी मां ठीक हो जायेगी । ठीक होने के आसार लगने लगे थे । उधर डांक्टर का कहना था कि जीवन भर दवा खानी ही पडेगी। राजू मां के इलाज के लिये दृढ संकल्पित

था ।तन मन अौर धन से भी । राजू की मां को थोडा अराम होने लगा तो वह समझ बैेठी की वह एकदम ठीक हो चुकी है । सोनरी गांव जाने की जिद करने लगती ।

एक दिन सोनरी ाहर की आधुनिक कुछ महिलाओ को अर्धबदन देखकर इतनी विचलित हुई कि ऐसे औरतो पर थू थू करने लगी ।फिर कभी ाहर न आने की कसम खा ली ।वह अपनी बहू रूपमती से बोली अरे कैसी औरते बेशरम हैं नंगी सडको पर विचरती हैं । हमे ऐसी जगह नही रहना हैं । इस बेशरमी को देखने से बिढिया तो मर जाना हैं । बाप रे यहां तो औरते ऐसे कपडे पहनती है कि नंगी लगती है । आदमियो को देखो कपडो से लदे रहते हैं । औरते आधे तन से कम तन ढकने लायक कपडा पहनती हैं । हां गहना ढेर सारा पहनती हैं । मुंह देखो पाव भर रंग से भरा रहता हैं और भर भर आंख काजल ।इतनी बनी ठनी अर्धनग्न सडक पर घूमती हैं जैसे लाज हया सब बेचकर खा गयी हो । बहू मुझे यहा नही रहना हैं मुझे घर पहुंचवा दो ।

रूपमती-यहां तो सभी लोग साथ साथ काम करते हैं । क्या औरत क्या मर्द ।

सोनरी-इसीलिये तो बेचारे पढे लिखे लडको को नौकरी धंधा नही मिल रहा है ।

रूपमती-अम्मा औरते भी अब खूब तरक्की कर रही है ।

सोनरी-अरे इसे तरक्की कहती हैं ।आधी नंगी घूम रही हैं । तरक्की हैं । तरक्की नही बर्बादी की शुरूवात हैं ।तरक्की अलग मसला हैं । अर्धनग्न होना अलग मसला है । खूब पढे लिखे चांद पर औरते जाये । हमे एतराज नही हैं पर अर्धनग्नता से सभ्यता प्रदूिषत होगी । कल इस नग्नता की महामारी ऐसी फेलेगी कि रोके नही रूक सकेगी । औरते यदि इसे ही स्वछन्दता अपनी आजादी और तरक्की समझती रही तो संस्कृति एवं सभ्यता के गले में आस्था की हंसुली न होकर उसके माथे का कलंक हो जायगी ।

रूपमती-अम्मा जमाना बदल गया हैं सब अपनी मर्जी के मालिक हैं । पढी लिखी औरते हैं अपना बुरा भला समझती हैं ।

सोनरी-बहू जमाना बदल गया हैं तो इसका मतलब तो यह नही कि अपनी संस्कृति सभ्यता का नंगा नाच दिखाअेा ।भगवान ने सुन्दर तन दिया हैं तो क्या इसका मतलब ये हो गया कि तन पर से पर्दा ही हटा दो ।तन की सुन्दरता से कुछ नही होता मन भी सुन्दर होना चाहिये । ऐसी तरक्की में तबाही का आगाज हैं । जमाना बदलता है तो बदलने दो । अपनी इज्जत को तो नीलाम मत करो । देखो मुझे गांव जाना हैं । शहर की आहो हवा दूिषत हो रही हैं ।यह सब मुझसे नही देखा जायेगा । मुझे गांव जाना है बस ।सोनरी और रूपमती की बातचीत जोरो पर थी इसी बीच राजू भी आ गया और बोला कहां जाना है मां।

सोनरी-बेटा अब मैं ठीक हो गयी हूं । मुझे गांव पहुंचा दो ।बेटा अब मुझे यहा जरा भी अच्छा नही लग रहा हैं ।

राजू-मां अभी तुम ठीक नही हुई हो । तुम्हे ठीक होने में अभी वक्त लगेगा ।

सोनरी-बेटा यहा मै कुछ दिन और रह गयी तो मर जाऊंगी यहां की बेशरमी देखकर ।

राजू-मां क्या कह रही हो ।
सोनरी-ठीक कह रही हूं ।
राजू-क्या हुआ मा । रूपमती मुझसे या बच्चो से कोई गलती हो गयी ।
सोनरी-नही बेटा ।
राजू- तब ऐसी जिद क्यों मां ।
सोनरी-बेटा मुझे अर्धनग्नता काटने को दौडा रही है ।
राजू-कैसी अर्धनग्नता मां ।
सोनरी-बेटा खुद को फैषन की दीवानी और अपने पांव पर खडी होने वाली नारियो की ।बेटा मैं यहां रहकर और बीमार हो जाउुंगी । मुझे घर पहुंचा दो ।
राजू- मां पहुंचा दूंगा । पहले ठीक तो हो जाओ ।
सोनरी-बेटा मैं तो अब बिल्कुल ठीक हो गयी हूं ।
राजू- मां तुम्हारे कहने से क्या होता है।ं डाक्टर साहेब कहे तब तो मानूंगा कि तुम एकदम ठीक हो गयी हो । मां पूरी तरह ठीक हो जाने पर गांव पहुंचा दूंगा ।
सोनरी रोज रोज जिद करने लगी गांव जाने को उधर डांक्टर जाने की इजाजत नही दे रहे थे । उन्हे डर था कि इलाज बीच मे रोकना जान लेवा हो सकता है । एक दिन सोनरी को चक्कर आ गया वह गिर पडी ।डांक्टर के पास लेकर गये इलाज के बाद अराम हुआ।अब वह गांव जाने की जिद कर बैठी ।अन्न जल छोडने लगी । राजू डांक्टर से बात किया डांक्टर ने छः माह की दवाई का कोर्स बताया और सलाह दिये कि यदि बीच में कोई तकलीफ हो तो आकर दिखाना भी होगा।
राजू मां बाप की खुशी के लिये एक पैर पर खडा रहता पर मुष्किले अडचने खडी कर देती । वह अपने मां बाप की मुरादो से सजग होकर भी पूरा नही कर पा रहा था उसको इस बात का मलाल था । दयनीय दशा से गुजरते हुए भी वह अपन मां बाप को खुश रखने का भरसक प्रयास करता। वह मां बाप को ही भगवान सझता था। उसकी मां सोनरी गांव जाने की जिद पर अडी थी । वह गांव के लिये स्टील के बर्तन चम्मच कटोरी चाय पीने के लिये कप प्लेट और भी कई बर्तन राजू के बाप की पसन्द के खरीदवाई ।राजू अपने बाप भाई बहनों उनके बाल बच्चो के लिये कपडा लता खरीदा मां के लिये चांदी का हार बनवाया खुशी खुशी । रूपमती भी अपनी सासू के कहे अनुसार सरसमान खरीदी । सोनरी के गांव जानेे का दिन भी आ गया ।वह रूपमती से बोली बहू तुम तो मेरी ऐसी विदाई कर रही हो जैसे कोई लडकी गौना जा रही हो कह कर हंस पडी ।रूपमती भी अपनी हंसी नही रोक पायी ।
रूपमती-अम्मा क्या कह रही हो गौना।
सोनरी-हां रे गौना । देखो ना तुमने मुझे हर चीज खरीदवा दी हैं । अपने ससुर के लिये जूते भी । कपडा लता बर्तन सब मिलाकर एक बहंगी का बोझ हो गया है । बेटवा कैसे अकेले उतारेगा चढायेगा ।बेटवा बेचारा खुद मुसीबत में फंसा रहता हैं उपर से हम

मुसीबत बन जाते है । भगवान भी गरीबो की किस्मत में तरक्की लिखने में कजूंसी कर जाता हैं । सुख कम दुख ज्यद्दा लिख देता है ।

रूपमती-बेचारे दिन रात तो मेहनत कर रहे हैं पर बाधाओ को तोड नही पा रहे हैं । अपने उपर तो फालतू का एक नया भी नही खर्च करते फिर भी जरूरते पूरी नही हो पाती हैं । तनख्वाह भी तो बहुत कम हैं । बेचारे सब गम पी जाते हैं । कभी मुंह नही खोलते। और लोग तो दारू सिगरेट और ना जाने क्या क्या शौक करते है ।खुद ऐश करते हैं घर परिवार की कोई फिक्र नही पालते। इनका देखो इतनी सादगी स रहत है दिन रात घर परिवार के लिये सोचते है।इसके बाद भी जरूर पूरी नही हो पाती हैं ।ना जाने गरीबी कब साथ छोडगी ।

सोनरी-बहू गरीब आदमी उबर ही नही पाता हैं एक खर्चे से तब तक चार और सवार हो जाते हैं । वह तो जोडने तोडने में व्यस्त रहता हैं। इतने में राजू आ गया वह बोला मां मेरी िशकायत हो रही है क्या ।

सोनरी-ना बेटा तेरी िशकायत कैसी । तू तो सदा सुखी रह फलता फूलता रह । दुनिया की हर बांधाओ को तोडकर आगे निकलता रह । बेटा मैं दुआ ही कर सकती हूं । बाकी किस्मत में जो लिखा होगा वह तो होकर ही रहेगा । दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर मेरे लाल ।

राजू-रूपमती बातो में ही समय ना गवाओ । अगर ऐसे ही बात का सिलसिला चलता रहा तो गाडी छूट सकती है ।

रूपमती-गाडी क्यों छूटेगी । सारी तैयारी हो गयी हैं बस खाना खा लो ।निकल जाओ । रेल का समय तो छः बजे हैं ना ।

राजू-देवी जी ग्यारह बज रहा हैं ।पांच घण्टे का बस का सफर भी तो हैं ।जल्दी करो ।

रूपमती-अम्मां जी तैयार हो रही हैं । तुम भी कपडे बदल लो कल से तो यही पहने हो ।

राजू-ठीक हैं । आपका हुक्म सरआंखो पर ।

रूपमती-मैं अम्माजी को देखती हूं तैयार हो गयी क्या।

रूपमती -अम्मा जी तैयार हो गयी क्या ।

सोनरी-हां बहूं आ रही हूं ।

रूपमती-अरे आपके पुत्तर बुला रहे हैं ।

सोनरी आ गयी बोली क्या कह रहे हो बेटा ।

राजू- मां तुम तो सब देख ही रही हो............

सोनरी-कुछ आगे भी बोलोगे........

रूपमती-अरे आगे कुछ बोलोगे कि ट्रेन छुडवाना है ।

राजू-नही रे ।

रूपमती-कुछ कह रहे हो तो कहो जल्दी बारह बज गयी हैं ।

राजू- मां के लिये ।

रूपमती-पोलिथीन की थैली ।

राजू-अरे खोलो भी.....

रूपमती- ये क्या है ।

राजू-देख लो खोलकर।

रूपमती-ये लो खुल गया डिब्बा । अच्छा ये है अम्मा के लिये...........

राजू- हां ।

रूपमती सोनरी के हाथ पर रखते हुए बोली ये लो अम्मा आपके पुत्तर जी बनवाये है ।

सोनरी- बेटवा तू ये क्या लाया है मेरे लिये।

रूपमती-सोने का तो नही हो पाया चांदी का है............

सोनरी-बेटा तू मुझे हार दे रहा है चांदी का............

॥इक्कावन॥

राजू मां की जिद के आगे घुटन टेककर को गांव पहुंच आया । कुछ ही दिनां के बाद गांव में मां की तबियत और बिगड गयी । कस्बे के बडे अस्पताल में भर्ती करवाया गया पर अराम नही हो रहा था । तकलीफ बढती जा रही थी । बढती हुई तकलीफ को देखकर प्रेमनाथ सोनरी से बोला राजू की मां बच्चों को बुला दूं । मुलाकात कर जाते ।पो ा पोती सभी से मिल लेती ।

सोनरी-आखिरी मुलाकात करवाने के लिये बुला रहे हो क्या । अरे मैं अभी नही मरने वाली बेटवा को परेशान क्यों करना चाहते हो । मत बुलाओ उसक पास भी बहुत भारी खर्चा है। आन जाने मे कम पैसा लगता हैं ।बहुत किराया लगता है राज के बाबू । ऐसा तो नही है कि बेटवा कोस दो कोस की दूरी पर है। आने जाने में पूरे चार दिन लगते है ।उपर से किराये में मोटी रकम भी उड जाती है । अभी मुझे शहर से आये कितने दिन हुये कि बेटवा को बुलावा भेजना चाह रहे हो । ना जान कैसे कैस रीन कर्ज करके तो मुझ पहुंचाया हैंतुम्हारे बुलावे पर फिर भागकर आयेगा बाल बच्चो सहित कितना महंगा पडेगा । पोता पोती का कुछ दिन के लिये स्कल का नागा होगा। राजू को भी छुट्टी मिलेगी की नही कौन जाता हैं। अभी कितन दिन उस गये हुए हैं ।बेचारे क पास इतना पैसा कहां से आयेगा ।नन्ही सी नौकरी गांव से शहर तक का भारी भरकम खर्चा सब बटवा के ही तो ाथ है । रहने दो मुझे कुछ नही होगा ।ठीक हो जाऊंगी । तुम चिन्ता ना करो ।इतना जल्दी नही मरूंगी पोती पोता का ब्याह देखकर मरूंगी ।

प्रेमनाथ-राजू की मां तुमको मेरी उमर लग जाये ।

सोनरी-क्या कह रहे हो । फिर कभी ये शब्द जुबान पर नही लाना ।

प्रेमनाथ-अच्छा तो यही होगा ।

सोनरी-खाक अच्छा होगा ।मुझे तुम्हारे कंधे पर श्मशान जाकर ही तो स्वर्ग मिलेगा । क्या स्वर्ग नही भेजने का मन है ।

प्रेमनाथ-राजू की मां तुम घर द्वार सब सम्भाल लोगी मैं अकेले रहकर क्या करूंगा ।

सोनरी-पातो पोती नानी नातिन खिलाना दरवाजे पर बैठकर । बहुओ को अराम मिलेगा ।
प्रेमनाथ-एक बेटा बहू तो परदेसी हो गये ।बेटिया अपना घर परिवार सम्भाल रही हैं बेहत्तर ढंग से एक बेटा बहूं गांव में हैं । कितने पोता पोती है कि बैठकर खिलाता रहूंगा ।उपर जाने में ही अब तो अच्छा हैं । अपने फर्ज जो थे लगभग पूरे हो गये । अच्छे दिन की उम्मीद थी वह ायद ही खण्डित समाज में मिले । एक ना एक दिन तो मरना ही हैं । डर कैसी राजू की मां तू ठीक हो जाती तो मैं खुशी खशी मरने को तैयार हूं ।
सोनरी-भगवान मुझे पहले बुलायेगा । भगवान करे मेरी उमर तुमको लगा जाये ।
प्रेमनाथ-राजू की मां जीवन मरन तो उपर वाले के हाथ में है ।तुम ठीक हो जाओ । हम दोनो मिलकर पोते पोतियो नाती नातिनों को खिलायेगे उनके ब्याह गौने में दिल खोलकर खुशी मनायेगे ।कुछ दिन बडे बेटे राजू के पास हर चलकर रहगे तो कुछ दिन गांव में छोटे बेटे के पास रहेगे ।अपनी सेर भर कमाई से कोई सुख नही उठा पाये । कम से कम बेटो की कमाई से जिन्दगी की शाम हंसी खुशी से तो बितेगी
सोनरी- काश तुम्हारी बात सच हो जाती ।
प्रेमनाथ से बात करते करते सोनरी की आवाज फंसने लगी । प्रेमनाथ सोनरी का हाथ अपने हाथ में लेकर बोला राजू की मां ठीक तो हो ना । क्यो आवाज फंस रही है ।
सोनरी-क्यो घबरा रहे हो । गला सूख रहा है । मै अभी मर नही रही हूं । चिन्ता ना करो ।
प्रेमनाथ-अभी तो बहुत कुछ देखना बाकी है राजू की मां ।राजू को बडा अफसर बनना अभी बाकी है । अफसर बनेगा बडी तनख्वाह मिलेगी तभी तो की हंसुली बनवायेगा । तुम्हारी इच्छा तो अभी पूरी नही हुई राजू की मां । मै गरीबी से लडता रहा । बेटवा पढ लिखकर शहर गया हैं कोई छोटी मोटी नौकरी कर रहा हैं । उसकी मुराद पूरी तो हो जाने दो ।
सोनरी-हां ठीक कह रहे हो । मेरे कुल के गहने के गले में बडे पद की हंसुली पड जाती तो मैं भी चैन से मर जाती ।मेरे जीवन की आस पूरी हो जाती राजू के बापू पर बेटवा की किस्मत ना जाने कहां कैद पडी है ।सामाजिक कुव्यवस्था की शिकार हो रही है । ना जाने सामाजिक कुव्यवस्था का विषधर कब तक हम वंचितो की तरक्की को डसता रहेगा ।हम वंचित सपनो के सहारे कब तक सांसे भरत रहेगे । काश सामाजिक कुव्यवस्था का आंतंक खत्म हो जाता ।हम वंचित लोग भी तरक्की कर पाते । हमारे बेटवा के गले बडे पद की हंसुली पड जाती तो जिन्दगी भर की अपनी भी आस पूरी हो जाती ।
प्रेमनाथ-राजू की मां बेटवा की किस्मत भी आजाद हो जायेगी एक ना एक दिन ।तुम्हारी पस्या भी परी होगी भगवान को इतना निर्मोही तो नही हाना चाहिये । हम निरक्षर लोग अपना पेट काट काटकर इतना पढाये लिखाये पर बटवा बडा अफसर नही बन पा रहा है

। आज के युग में भी सामाजिक कुव्यवस्था बेटवा की तरक्की की बाधक बनी हुई है । खैर भगवान की कृपा सेे बेटवा नेक राह पर चल रहा है ।सामाजिक कुव्यव्स्था भले ही तरक्की बाधक रहे पर बेटवा सबको पछाड कर अपने खानदान का नाम रोशन जरूर करेगा ।

सोनरी-राजू के बापू गिलास में पानी है क्या ।

प्रेमनाथ-है ना । पीना है क्या ।

सोनरी-हां दे दो गला बहुत सूख रहा है।

प्रेमनाथ-लो पी लो । गिलास का पानी सोनरी को थमाने लगा ।

सोनरी गिलास का पानी मुंह से नही लगा पायी कि उसका गला रूंध गया वह बार बार कुछ कहना चाह रही थी पर आवाज ही नही निकल पा रही थी ।उसकी आंखो से आंसूंओ की धार फूट पडी ।प्रेमनाथ राजू की मां राजू की मां कहकर बुलाता रहा । बडी देर के बाद राजू की मां टूटे फूटे शब्दो में बोली कुछ कह रहे हो क्या ।राजू क बाबू अब लगता है हसुली की इच्छा नही पूरी हो पायेगी ।बेटवा जरूर नाम रोशन करेगा सारी बाधाये तोडकर ।राज के बापू हौशला रखना........

प्रेमनाथ घबराकर बोला राजू को तार भेज दूं राजूू का मां ।वह कुछ न बोल सकी लाख कोिशशोे के बाद भी ।आंखों से आसूं झराझर बह रहे थे ।कुछ ही मिनटो में वह कोमा में चली गयी । राजू को तार कर दिया गया ।

राजू मां की बीमारी का समाचार सुनकर परेशान हो गया ।राजू शाम को दफतर से घर आया । रूपमती खाना बनायी बच्चों को खिलाई । राजू को देेने लगी वह बोला भूख नही है ।

रूपमती-क्या भूख नही हैं । रोज तो अब तक घर सिर पर ले लेते थे । आज भूख नही है । क्या बात है ।कुछ ना कुछ बात तो हैं मुझसे क्यों छिपा रह हो । अपनी परेशानी एक दूसरे कहने सुनने से कम होती हैं और तुम हो कि मुझसे ही नही बता रहे हो । कहो ना क्या बात है । क्यों खाने का मन नही कर रहा है ।

राजू-सुबह जल्दी गांव को निकलना होगा ।

रूपमती-क्यो ।

राजू-मां...........

रूपमती -अम्मा को क्या हो गया ।अभी चलो ।

राजू-बीमार है ।कोई साधन नही है जाने का ।सुबह जल्दी घर से निकलेगे पैसा कवडी का इन्तजाम हो गया है।खण्डवा से ट्रेन पकडेगे जो भी मिलेगी परसो दोपहर तक तो पहुंच ही जायेगे

रूपमती-कैसे पता चला की अम्मा बीमार है ।

राजू-तार आया है ाम को ही गांव से ।

रूपमती-हे भगवान मेरी अम्मा को क्या हो गया कहकर रोने लगी ।

राजू-देखो रोना धोना बन्द करो ।गांव जाने की तैयारी कर लो इतनी टाइम । सुबह जल्दी ही निकलना हैं ।कुमार बच्चो को सम्भाल तो लेगा ।
रूपमती-हां क्यो नही ।सगे जैसे हैं ।बच्चे भी तो सगे चाचा जैसा ही व्यवहार करते हैं। बच्चो की चिन्ता छोडा । कुमार बच्चो को सम्भाल लेगा । किराया भाडा के साथ गांव में भी और खर्चा होगा । अम्मा को हो बडे अस्पताल भर्ती करवाया गया होगा । दवा दारू के लिये भी पैसा का बन्दोबस्त कर लेना ।ऐसे समय में पैसे की बहुत जरूरत होती हैं । भले ही रीन कर्ज करना पडे। अम्मा की इलाज में पैसे की कमी नही पडनी चाहिये ।वही तो अपने परिवार की हंसुली हैं । उनक इलाज में जरा भी कोतहाई नही करना ।
राजू-तुम पैेसे की चिन्ता ना करो । बस तैयारी कर लो सुबह चलने की ।जल्दी निकलना होगा ।
रूपमती-तार आया था तो पहले ही बताना था ना ।
राजू- आज शाम को ही तो मिला हैं ।रूप्या पसा कीव्यवस्था किया हूं ।घर आते ही बता रहा हूं । अब कैसे बताऊं भागवान ।
रूपमती-क्या अपनी जिन्दगी है ।पापी पेट के लिये दूरदेश आ गये । मां बाप की सेवा का मौका भी नही मिल पाता । अम्मा बेचारी को ना जाने कौन सा रोग पकड लिया ।जिन्दगी भर अभाव का दर्द झेली जरा सा अराम करने का समय आया है तो दुख ने घेर लिया । ना जाने क्या होने वाला हैं कह कर रूपमती रोये जा रही थी । उसके आंसू ही नही बन्द हो रहे थे ।बडी मुश्किल से रात कटी । भोर में ही राजू और रूपमती सबसे छोटे कुंवर को लेकर और बडी बेटी मझले बेटे और भाई रामू के बेटे रमन को कुमार और पडोसी के सहारे छोडकर बीमार मां से मिलने के लिये घर से निकल पडे । पांच घण्टे की बस यात्रा के बाद रेलवे स्टेशन पहुंचे । चार घण्टा के इन्तजार के बाद ट्रेन आयी । बडी मुश्किल से ट्रेन में चढ पाये ।भयंकर भीड थी । पूरी रात एक पैर पर खडे रहे । इसी भीड में रूपमती के कान का बाला चोरी हो गया उधर राजू की मां को अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया यह कह कर कि अब इन्हे दवा की नही दुआ की जरूरत हैं । घर ले जाकर सेवा सुश्रषा करो । प्रेमनाथ के उपर जैसे विपत्ति का पहाड गिर पडा । सोनरी का अधमरा ारीर अस्पताल से घर लाया गया ।आधी रात होते होते सोनरी का बदन बिल्कुल बरफ हो गया । दिल ने एकदम से धडकना बन्द कर दिया ।पूरा गांव नात हित सब लोग पूरी रात बैठे रह गये । राजू की तीनो बहनो,छोटे भाई रामू , उसकी पत्नी सुभौती ,फूआ और नन्ही बीटिया चांदनी का रो रोकर बुरा हाल हो गया था । प्रेमनाथ के घर ही नही पूरे गांव में मातम पसरा हुआ था ।रात कट ही नही रही थी ।सोनरी के मौत के दूसरे दिन का तीसरा पहर भी सिर पर चढ आया । पूरा गाव सोनरी के मृत देह को लेकर बैठा रहा राजू की इन्तजार में ।
इधर रास्ते में राजू और रूपमती का भी बुरा हाल था गाडी में खडा होने भर की जगह न थी । कुछ उदण्ड यात्रियों ने धक्का मुक्की कर दी । राजू ट्रेन से गिरते गिरत बचा

रूपमती से भी कुछ उदण्ड किस्म के यात्रियो ने अभद्रताउका व्यवहार किया । इसी बीच किसी हिला यात्री ने रूपती के कान का बाला खींच लिया कान लहलुहान हो गया । यही ा एक बाला था रूपमती के पास अपनेे बडे बाप की निशानी । वह भी लूट लिया बम्बई आन वाले किसी यात्रा में भीड का फायदा उठा कर । भगवान की कृपा से नगदी सुरक्षित बंच गया था । दूसरे दिन के तीसरे पहर के ढलते ढलते राजू और रूपमती अपने गांव पहुंचे । वे अपने घर के सामने इकटठा भीड को देखकर घबरा गये । उन्हे देखकर घर की औरते चिल्ला चिल्ला कर रोने लगी । सारे नात हित इक्टठा थे । बस इन्तजार था राजू के आने का । राजू को देखते ही सोनरी के मृत देह को मर्निकर्णिका ले जाने की तैयारी शुरू हो गयी । मां की मृत देह के पास बैठकर राजू राेने लगा ।राजू को रोता हुआ देखकर उसका बाप प्रेमचन्द उसका हाथ पकडकर नीम की छांव में ले जाकर बैठाया और बोला बेटा जो होना था हो गया । तेरी मां तुम्हे सदा सुखी का वरदान देर सदा के लिये आंख मूंद ली ।बेटा तेरी मरना तो सभी को एक ना एक दिन है। इसमे किसी का बस नही हैं तरी मां गहन की लालसा लिये ही मर गयी इसी बात का मुझे गम हैं ।भगवान ने उस लायक मुझे नही बनाया कि मैं तेरी मां कि इच्छा पूरी कर पाया।बेटा आंस न बहा तेरी मां की आदमी तरे आंसू का देखकर तडप रही होंगी प्रेमनाथ राजू को धीरज बधंाते हुए उठा हैण्ड् पाइप से एक लोटा पानी भर लाया और राजू से बोला लो बेटा पानी पी लो । तुम्हारी मां की आखिरी विदाई की सब तैयारी हो गयी हैं । हमे पता था तुम आओगे । इसीलिये कल से लेकर बैठे है तुम्हारी ां की मृत देह को ।

राजू-बापू मां की तबियत इतनी खरबा थी तो हमे तो बताना था ।

प्रेमनाथ-बेटा तेरी मां ने ही मना कर दिया था । मैने तुमको और बच्चो को बुलाने के लिये तुम्हारी मां से पूछा था पर वह मना कर दी । बोली मैं अभी नही मर रही हूं । बेटवा परेशान हो जायेगा । ठीक हो जाने पर खबर कर देना । देखो मर गयी । उसे बडी आस थी सब साथ चली गयी । बेटा तुम्हारे हाथ से एक मुटठी मांटी पाकर उसकी आत्मा को ान्ति जरूर मिल जायेगी ।बेटा यह तो दुनिया की गति हैं । आसूं पोछो रज गज से अन्तिम विदाई दो अपनी मां को ।

सोनरी के मृत देह को बढिया बढिया कफनो में लपेटा गया । फूलो से सजाया गया । इत्र से छिडका गया । चांदी की हंसुली सोने चांदी लोहे और तांबे के गहने मौत से पहले ही उतार लिये गये थे सोनरी के तन से । वही गहने जिन्हे सोनरी जीते जी दांत से पकडकर रखती थी और घर परिवार पर मुसीबत आने पर गिरवी रखने से भी परहेज नही करती थी ।सोनरी गरीब मजदूर थी पर उसके गहन की लालसा किसी अमीर महिला से कम ना थी। हां आभषूण सोनरी के लिये आस्था के प्रतीक थे न कि दिखावे की वस्तु। सोनरी कीे गहने की लालसा पूरी नही हुई ।हां उसकी एक लालसा पूरी हुई वह उसकी मृत देह पति के कंधो पर फूलों के गहनो से सजी लदी। सोनरी की मांग सिन्धूर से

दमकती हुई श्मशान तक पहुंची जहां उसकी मृत देह के साथ ही उसकी सारी ख्वाहि ो भी पंचतत्व में विलीन हो गयी ।

॥ इतिश्री॥

जीवन परिचय

नन्दलाल भारती का जन्म उ.प्र.के छोटे से गांव चौकी ।खैरा। जिला आजमगढ ।उ.प्र। में एक जनवरी 1963 को हुआ । स्कूली एवं स्नातक की ि ाक्षा गांव के स्कूल कालेजो में हुई । तदोपरान्त

आजिविका की तला ा में ाहर की ओर रूख किये । सघषर्पूर्ण जीवन ने आन्दोलित किया।सघर्षरत् रहते हुए भी स्नात्तकोत्तर।समाज ाास्त्र। विधि स्नातक, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन ह्यूमन रिर्सोस डेवलपमेण्ट ,दे.अ.वि.वि.इंदौर।म.प्र.। की उच्च ि ाक्षा प्राप्त किये । साहित्य से लगाव बाल्यकाल से ही था अन्तोगत्वा साहित्य से पूरी तरह से जुड गये । अमानत,चांदी की हंसुली दमन और अभिषाप बहुचर्चित साहित्यिक उपन्यास कथा संग्रह लघुकथा संग्रह एवं कई काव्य संग्रह की रचना कर साहित्य के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाये। साहिित्यक याेगदान काे देखते हुए दे ा की अनेक साहित्यिक सस्थाओ ने सम्मानित कर इस लेखक की लेखनी को जीवन्तता एव जीवन को मकसद प्रदान किया । भारती के कथा एवं काव्य ि ाल्प में ग्रामीण समस्यायें ,दीन दुखियों की पीडा एवं साािजक बुराईयों की ज्वाला सुलगती नजर आती है जिसका जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत उपन्यास चांदी की हंसुली है। इसी कारण इस लेखक को ग्रामीण एवं दीन दुखियों का साहित्यकार कहा जाता है । उपन्यास चांदी की हसुली के चरित्रो के दर्द और उस दर्द को अंगीकृत कर उपन्यास के रूप में साहित्य एवं समाज के सामने दृढता से प्रस्तुत करने की इच्छा और क्षमता उन्हे समतावादी समाज के लिये और अधिक मूल्यवान बना देती है । उपन्यास के पात्रो का सघर्ष,गरीबी जातीय व्यवस्था के चक्रव्यूह से जूझकर जीवन सघष को जीतने के लिये हाडफोडने वाला प्रेमनाथ और जीवन के हर मोड पर कंधे से कधा मिलाकर मुिष्कलो का सामना करने वाली जीवन संगिनी सोनरी ,जिन्दगी के हर क्षेत्र में सघर्षरत, राजू-रूपमती और सामाजिक आर्थिक विषमता के रिसते जख्म एवं आभूषण की ख्वाहि ाें मन में लिये पंचतत्व में विलीन होने वाली उपन्यास की मुख्य पात्र सोनरी का दर्द हो सभी के दर्द को उपन्यासकार ने खुद महसूस किया है । चांदी की हंसुली सोनरी की ख्वाहि ोंा की एक जीवन्त कथा है,जिसका हर पात्र मुिष्कलो से जूझ रहा है । भूख,अभाव,गरीबी,बेरोजगारी और जातीय द्वेष ग्रामीण जीवन की व्यथा कथा है । भारती के कथा ि ाल्प में गांव की संकीर्ण गिलयों में सूदखोरो नफाखोरो का आतंक जातिवाद की अमानवीय समस्याओ से जूझते पात्र जब पन्नाें पर उद्घाटित होते हैं तो मन में एक टीस पैदा होती है और अन्र्तरात्मा में एक प्रष्न उठता है क्या दे ा कभी सामाजिक आर्थिक एवं स्त्री-पुरूष के भेदभाव की समस्याओ से उबर पायेगा ?

सम्पर्क सूत्र-द्वारा श्रीमती मनोरमा भारती,
आजाददीप, 15-एम वीणा नगर

इंदौर-452010 । मध्य